Plagiarism Detector v. 2867 - Originality Report 3/27/2025 4:41:24 PM

Analyzed document: CPS-21.pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:

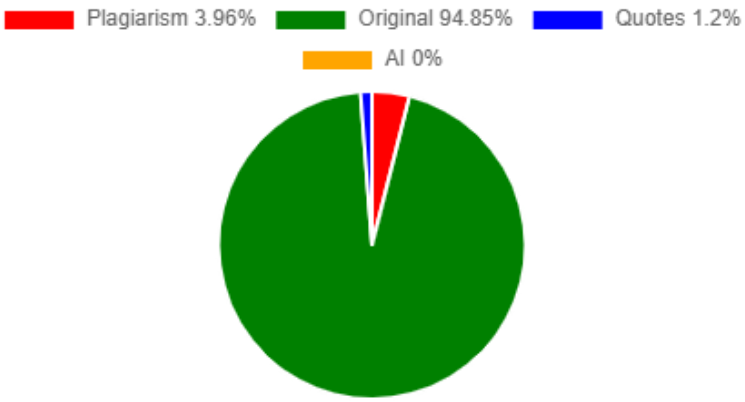

Distribution graph:

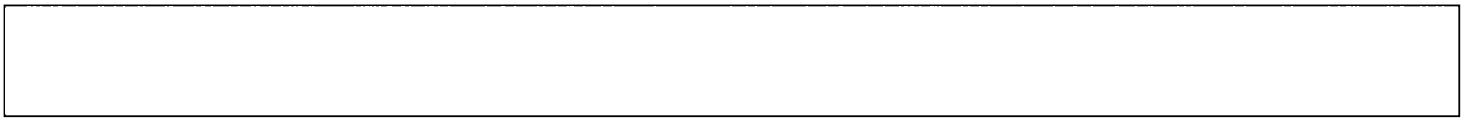

Top sources of plagiarism: 56

3%	3107	1. https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/
0.9%	1057	2. https://ddnews.gov.in/development-linked-to-faith-has-given-new-momentum-to-ups-economy-cm-yogi/
0.8%	922	3. https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-nyay-vyavastha/243577150

Processed resources details: 133 - Ok / 7 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
Wiki Detected!	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

1. Status: Analyzer **On** Normalizer **On** character similarity set to **100%**
2. Detected UniCode contamination percent: **0%** with limit of: 5%
3. Document not normalized: percent not reached 5%
4. All suspicious symbols will be marked in purple color: Abcd...

5. Invisible symbols found: 0

Assessment recommendation:

No special action is required. Document is Ok.

Alphabet stats and symbol analyzes:

UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

BED IV- CPS 21 शान्ति न्शक्षा Peace Education न्शक्षक न्शक्षा न्ि◌भाग, न्शक्षाशास्त्र न्ि◌द्याशाखा उत्तराखण्ड मक्त न्ि◌श्वन्ि◌द्यालय, हल्द्वानी ु ISBN: 13-978-93-85740-92-3 BED IV- CPS 21 (BAR CODE) BED IV- CPS 21 शि$त ि◌श&◌ा Peace Education ि◌श#क ि◌श#◌ा ि◌वभाग, ि◌श#◌ाशा% ि◌व'◌ाशाखा उ

Quotes detected: **0%** id: **1**

"राख&ड म* ि◌वन्ि◌व.◌ालय, ह"

#◌ानी ु अ

Quotes detected: **0.01%** id: **2**

"ययन बोड(ि◌वशेष& सिमित !◌ोफे सर एच◌ पी◌ श#ल (अ"

य$- पदने), ि◌नदशे क, ि◌श(◌ाशा* ि◌व,◌ाशाखा, !◌ोफे सर एच◌ पी◌ श#ल (अ

Quotes detected: **0.04%** id: **3**

"य$- पदने), ि◌नदशे क, ि◌श(◌ाशा* ु ु उ!राख%ड म) ि◌व,ि◌व-लय ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व/ि◌व#◌ालय ु ु !◌ोफे सर मह$मद ि◌मयाँ (बा# ि◌वशषे)- सद#य), पव$ अिध(◌ाता, ि◌श#◌ा सकाय, !◌ोफे सर सी◌ बी◌ शमा$ (बा# ि◌वशषे "-

सद#य), अ&य', रा*+◌ीय ु ू ◌ं जिामया ि◌मि&लया इ)लिामया व पव- कलपित, मौलाना आजाद रा*+◌ीय उद 0 म# ि◌व&◌ालयी ि◌श,◌ा स/थान, नोएडा ू ु ु ◌ं ू ि◌व#ि◌व$◌ालय, हदै राबाद !◌ोफे सर पवन कमार शमा/ (बा# ि◌वशषे)- सद#य), अिध(◌ाता, ु !◌ोफे सर एन◌ एन◌ पा#डेय (बा# ि◌वशषे)- सद#य), ि◌वभागा#य%, ि◌श#◌ा ि◌वभाग, ि◌श#◌ा सकाय व सामिाजक ि◌व,◌ान सकाय, अटल ि◌बहारी बाजपेयी ि◌ह7दी ◌ं ◌ं एम◌ जे◌ पी◌ !हले ख&ड ि◌व*ि◌व+◌ालय, बरेली ि◌व#ि◌व$◌ालय, भोपाल !◌ोफे सर के ◌ बी◌ बधोरी (बा# ि◌वशषे)- सद#य), पव(अिध,◌ाता, ि◌श0ा सकाय, !◌ोफे सर जे◌ के ◌ जोशी (ि◌वशषे आम)◌ी- सद

Quotes detected: **0.04%** id: **4**

"य), ि◌श&◌ाशा(ु ू ◌ं ◌ं एच◌ एन◌ बी◌ गढ़वाल ि◌व'ि◌व(◌ालय, *◌ीनगर, उ/राख1ड ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व/ि◌व#◌ालय ु !◌ोफे सर जे◌ के ◌ जोशी (ि◌वशषे आम)◌ी- सद#य), ि◌श'◌ाशा) ि◌व#◌ाशाखा, !◌ोफे सर र'भा जोशी (ि◌वशषे आम)◌ी- सद#य), ि◌श'◌ाशा) ◌ं ◌ं उ"

राख&ड म* ि◌वन्ि◌व.◌ालय ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व/ि◌व#◌ालय ु ु !◌ोफे सर र'भा जोशी (ि◌वशषे आम)◌ी- सद#य), ि◌श'◌ाशा) ि◌व+◌ाशाखा, उ.राख0ड डॉ◌ ि◌दनेश कमार (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ु ◌ं म# ि◌व&ि◌व'◌ालय ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व/ि◌व!◌ालय ु ु डॉ◌ ि◌दनेश कमार (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ि◌व2ाशाखा, उ5राख6ड डॉ◌ भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ु म# ि◌व&ि◌व'◌ालय ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व/ि◌व#◌ालय ु ु डॉ◌ भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ि◌व2ाशाखा, स#◌ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ु ु उ"राख&ड म* ि◌वन्ि◌व.◌ालय ि◌व#◌ाशाखा एव सह-सम#वयक बी◌ एड◌ काय$%म, उ(राख+ड म. ु ु ◌ं ि◌व#ि◌व$◌ालय स#◌ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (◌ोफे सर, ि◌श/◌ाशा0 ि◌व2ाशाखा एव सह- ु ु ◌ं डॉ◌ !वीण कमार ि◌तवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, सम#वयक बी◌ एड◌ काय$%म, उ(राख+ड म. ि◌वि◌व2ालय ु ◌ं ◌ं ु ि◌श#◌ाशा% ि◌व'◌ाशाखा एव सम-वयक बी◌ एड◌ काय$%म, उ(राख+ड ◌ं डॉ◌ !वीण कमार ि◌तवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक +◌ोफे सर, ि◌श1ाशा2 ु ◌ं ◌ं म# ि◌व&ि◌व'◌ालय ु ि◌व#◌ाशाखा एव सम+वयक बी◌ एड◌ काय$%म, उ(राख+ड म. ि◌वि◌व2ालय ु ◌ं ि◌दशाबोध: (◌ोफे सर जे◌ के ◌ जोशी, पव$ ि◌नदशे क, ि◌श+◌ाशा- ि◌व.◌ाशाखा, उ1राख3ड म7 ि◌वि8व.◌ालय, ह =◌ानी ू ु काय$%म सम#वयक: काय$%म सह-सम#वयक: पाठय&म सम)वयक: पाठय&म सह सम*वयक: ् ् डॉ ◌ आ"◌ाशि& राय डॉ◌ !वीण कमार ि◌तवारी स#◌ी ममता कमारी डॉ◌ !वीण कमार ि◌तवारी ु ु ु ु सम#वयक, ि◌श)क ि◌श)◌ा ि◌वभाग, सह-सम#वयक, ि◌श)क ि◌श)◌ा ि◌वभाग, सम#वयक, ि◌श)क ि◌श!◌ा ि◌वभाग, सह #◌ोफे सर, ि◌विश+ ि◌श,◌ा सकाय, ◌ं ि◌श#◌ाशा% ि◌व'◌ाशाखा, ि◌श#◌ाशा% ि◌व'◌ाशाखा, उ

Quotes detected: **0.01%** id: **5**

"राख&ड ि◌श#◌ाशा% ि◌व'◌ाशाखा, शक$तला ि◌म*◌ा रा,-ीय पनवा3स ु ु उ"

राख&ड म* ि◌वन्ि◌व.◌ालय, म# ि◌व&ि◌व'◌ालय, ह,-ानी, नैनीताल, उ

Quotes detected: **0.01%** id: **6**

"राख&ड म* ि◌वन्ि◌व.◌ालय, ह23ानी, ु ु ु ि◌व#ि◌व$◌ालय, लखनऊ ह"

#◌ानी, नैनीताल, उ+राख.ड उ

Quotes detected: **0.01%** id: **7**

"राख&ड नैनीताल, उ(राख+ड !धान स&पादक उप स$पादक डॉ॰ आ"

ाशि& राय डॉ॰ !वीण कमार ितवारी ु सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश)ाशा- ि व.ाशाखा, सह #ोफे सर, िविश+ िश,ा सकाय, ं उ

Quotes detected: **0.01%** id: **8**

"राख&ड म* ि व-ि व.ालय, ह23ानी, नैनीताल, उ"

राख$ड ु शक$तला ि म*ा रा,ीय पनवा3स ि वि5व6ालय, लखनऊ ु ु िवषयव%त स)पादक भाषा स%पादक !ा#प स&पादक ! फ़ सशोधक ु ू ं डॉ॰ आ

Quotes detected: **0%** id: **9**

"ाशि& राय डॉ॰ आ"

ाशि& राय स#ी ममता कमारी !ीमती मनीषा प)त ु ु सह #ोफे सर, िविश+ िश,ा सकाय, सह #ोफे सर, िविश+ िश,ा सकाय, सहायक &ोफे सर, िश#ाशा% अकादिमक परामशद* ाता, िश#ाशा% ं ं शक$तला ि म!ा रा$%ीय पनवा,स शक$तला ि म*ा रा,ीय पनवा3स ि व#ाशाखा, उ(राख*ड म. ि व#ाशाखा, उ(राख*ड म. ु ु ु ु ु ु ि व#ि व$ालय, लखनऊ ि व#ि व$ालय, लखनऊ ि व#ि व$ालय, ह)*ानी ि व#ि व$ालय, ह)*ानी, उ.राख1ड साम$ी िनमा(ण !ोफे सर एच॰ पी॰ श#ल !ोफे सर आर॰ सी॰ ि म# ु िनदशे क, िश'ाशा) ि व+ाशाखा, उ%राख'ड म+ ि व.ि व/ालय िनदशे क, एम॰ पी॰ डी॰ डी॰, उ

Quotes detected: **0.01%** id: **10**

"राख&ड म* ि व-ि व.ालय ु ु © उ"

राख&ड म# ि व&ि व'ालय, 2017 ु ISBN-13-978-93-85740-92-3 !थम स&करण: 2017 (पाठय&म का नाम: शि$त िश&ा, पाठय&म कोड- BED IV- CPS 21) ् ् ं सवा$िधकार सरि%त। इस प%तक के िकसी भी अश को !ान के िकसी भी मा+यम म - .योग करने से पव5 उ7राख9ड म ि व=ि व ालय से िलिखत अनमित लेना आवCयक है इकाई ु ु ं ू ु ु लेखन से सबिधत िकसी भी ि ववाद के िलए पण65 पेण लेखक ि ज8मदे ार होगा। िकसी भी ि ववाद का िनपटारा उ

Quotes detected: **0.04%** id: **11**

"राख&ड उ(च *यायालय, नैनीताल म 2 होगा। ं ं ू िनदशे क, िश'ाशा) ि व+ाशाखा, उ.राख0ड म4 ि वि5व+ालय 8ारा िनदशे क, एम॰ पी॰ डी॰ डी॰ के मा%यम से उ)राख,ड म/ ि वि2व3ालय के िलए मि6त व 8किशत। ु ु ु !काशक: उ"

राख&ड म* ि व!ि व$ालय; म#क: उ"राख&ड म* ि व-ि व.ालय। ु ु ु काय$%म का नाम: बी॰ एड॰, काय$%म कोड: BED- 17 पाठय&म का नाम: शि$त िश&ा, पाठय&म कोड- BED IV- CPS 21 ् ् ख"ड इकाई स#या स#या इकाई लेखक ं ं 1 1 डॉ ॰ आ"ाशि& राय सह #ोफे सर, ि विश+ िश,ा सकाय, शक(तला ि म-ा रा/ीय पनवा5स ि वि6व7ालय, लखनऊ ं ु ु 1 3 व 4 डॉ॰ सोम िसह ू ं सहायक &ोफे सर, िश#ा सकाय, काशी िह'द ि व+ि व,ालय, वाराणसी, उ3र4दशे ं ू 1 5 डॉ ॰ बजेश कमार राय ृ ु सहायक &ोफे सर, ि विश. ि श/ा सकाय, शक2तला ि म6ा रा7ीय पनवा#स ि व&ि व'ालय, लखनऊ ं ु ु 2 3 डॉ॰ पीयष कमल ू 3 2 पो#ट डॉ'टोरल फे लो, आई॰ ए॰ एस॰ ई॰, जिामया ि मि&लया इ)लिामया, नई ि द&ली 3 3 व 5 डॉ॰ नीलम दलाल सहायक &ोफे सर, &ारि,भक ि श/ा ि वभाग, माता सदरी कॉलेज फॉर ि वमने , नई ि द=ली ं ु 4 1 व 3 डॉ॰ !वेता ि वेदी सहायक "ोफे सर, ि श#ा सकाय, ि मजोरम के ()ीय ि व-ि व.ालय, आइजोल, ि मजोरम ं 4 2 डॉ॰ बिबता ि सह ं अ"य$, ि श#ा ि वभाग, मवे ाड़ इ(टीटयट ऑफ मनै ेजमट3 , गाि़याबाद, उ:र दशे ् ं ू 4 4 डॉ॰ !ेरणा म!"यान सहायक &ोफे सर, सीमाचल मानो*रटी बी॰ एड॰ कॉलेज, किटहार, ि बहार ं BED IV- CPS 21 शि$त ि श&ा Peace Education ख"ड 1 इकाई स॰ इकाई का नाम प# स॰ ृ ं ं 2-23 1 ! यि"गत जीवन, सामिाजक जीवन, रा# $ीय एव अ& तरा#$ %ीय " तर पर ि श%ा के काय*, ं ि श#ा के वैयि*क, सामिाजक, रा# $ीय एव अ!त रा#$ %ीय उ#%े य म " समानता तथा अ)त र; ं !"! , पवा%&ह, आ"ामकता एव ि हसा के !ोत एव कारण, पया'वरणीय सरोकार, मानव एव ु ं ं ं ं !कित के म$य अ"य ो!य ि"त सबध ृ ं ं 2 इकाई: दो - 24-38 3 !यि$गत एव सामिहक !व; अतरवैयि)क, सा$दायक तथा रा#$ीय सदभ % म " !तै तथा !द ू ं ं ं ं ं ं क" अवधारणा 39-53 4 !द क" समझ ं 54-66 5 ि व#ालय म (जीवन का ि वे-षण: !ित$पधा(का वातावरण; शारी%रक द(ड एव उसके ं प

Quotes detected: **0%** id: **12**

"रणाम; प"

रवार क' भिमका; ल"िगक भिमका एव ि-ढ़वाद ू ू ं ख"ड 2 इकाई स॰ इकाई का नाम प! स॰ ृ ं ं 1 इकाई: एक - 2 इकाई: दो - 68-90 3 सवाद: सक$पना और उसके अन.योग (जीवन म," प

Quotes detected: **0.02%** id: **13**

"रवार म,' !कल म & और सिाथय. म)& ु ू ं ं 4 इकाई: चार - ख"

ड 3 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 1 इकाई: एक - 92-118 2 शिात के बारे म + ,ाचीन भारतीय िवचार (बौ# धम & और जैन धम)& ं 119-127 3 गाँधी जी और शिात िश(ा ं 4 इकाई: चार - 128-136 5 िजदद क'णमित, और शिात िश(ा ृ ू ं ु ख"ड 4 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 138-150 1 !याय और शिात: सिवधान, सघष % समाधान के साधन के ,प म . ं ं ं 151-192 2 राजनीितक, आिथ$क, सामािजक सा!कितक और पा*रि!थितक ,े./ म 1 चल रह े सघष 9 के ृ ं ं अ"ययन, शिा$त के िलए सफल सघष / और सवाद क4 चल रही ि89याओ का अ=ययन ं ं ं 193-205 3 रा#$वाद और इसक& आलोचना; य# और बाज़ार; वै#ीकरण का अथ+ और ु इसकाअथ'(यव+था, राजनीितक, तकनीक" िनिहताथ) 206-225 4 बा#याव&था म) *द िव.यासः कछ 467 का के स अ9ययन जहा िविभ.न कार के *द7 ने ु ं ं ं िव#थापन, िहसा अथवा सामािजक अशिात क. ओर े3रत िकया ं ं 5 इकाई: पाँच - शान्ति न्शक्षा CPS 21 खण्ड 1 Block 1 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 1 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई -1 व्य क्तिगत ीवन , सामाक्तीक ीवन , राष्टर वय न अन् रषष्टर वय र रर क्तिक्ा क कायय, क्तिक्ा क नैयक्तिगक, सामाक्तीक, राष्टर वय न अन् रषष्टर वय उद्दश्य म समा ा ा ा अन् र; द्वन्द्व , रुनषग्रह, आक्रामक ा न हहसा क र ो न ृ कारण, रयषनरणवय सरोकार मा न न प्रकक्ति कव अन्य ोन्य ाक्ति Functions of Education for Personal life, social relationships, National and International perspectives. Compatibility and differences in these functions; sources and causes of conflicts, prejudices, Hostility and Violence; Environmental concerns reciprocity between Humans and Nature 1.1 प्रस्ताना 1.2 उद्दश्े य 1.3 व् यवक्ततत ीविन, सामावीक ीविन, राष्टर वय एि अन् तराषष्टर वय स्त र रर वक्ा के ं कायष 1.4 वक्ा के ियवक्तक, सामावीक, राष्टर वय एि अन् तराषष्टर वय उद्दश्े य म समानता ताा ं अन् तर 1.5 द्वन् द्व, रिषग्रह, आक्रामकता एि वहसा के स् रोतएि कार ु ं ं ं 1.6 रयाषिर वय सरोकार मानि एि प्रकवत की अन् योन् यावित ृ ं 1.7 साराक ं 1.8 अभ्यास

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **14**

प्रश्नों के उत्तर 1.9 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 1.10 वनबधात्मक प्रश्न ं उत्तर

ाखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 2 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 1.1 प्रस्त ावना ा वक्ा व् यवक्त की अतवनषवहत ्मता ताा उसके व् यवक्तत्ि को विकवसत करने िालव प्रवक्रया ह ै यहव ं प्रवक्रया उसे समाी म एक ियस् क की र्वमका वन ्राने के वलए समीवकत करतव ह ै ताा समाी के सदस् य ृ ू एि एक वीम् मदे ार नातकरक बनने के वलए व् यवक्त को आिश्य क ्ान ताा कशकल उरल्ध करातव ं ह ै वक्ा मानि

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **15**

विकास का मल ह ै वक्ा के माध् यम से व् यवक्त, समाी, राष्ट र एि विश् ि का विकास

होता ू ं ह ै अत: वक्ा के कायष इन् ह ध् यान म रखकर हव वनधाषकरत वकये ीाते ह ै ितषमान इकाई म आर व् यवक्ततत ीविन, सामावीक ीविन, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय स् तर रर वक्ा के ं कायष, वक्ा के ियै वक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय उद्दके य म समानता ताा अन् तर; द्वन् द्व, ं रिषग्रह, आक्रामकता एि वहसा के स् रोतएि कार , रयाषिर वय सरोकार मानि एि प्रकवत की ृ ु ं ं ं ं अन् योन् यावित का अध्ययन कर त े 1.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के रश्चात आर : 1. व् यवक्ततत ीविन, सामावीक ीविन, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय स् तर रर वक्ा के कायष को बता ं सक त े 2. वक्ा के ियै वक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य म समानता ताा अन् तर का ं विश्लेष कर सक त े 3. द्वन् द्व का अाष बता सक त े ताा इसके ोतों एि कार ों की विचे ना कर सक त े ं 4. रिाग्रष ह, आक्रामकता एि वहसा के स् रोत एि कार का ि नष कर सक त े ु ं ं ं 5. रयाषिर वय सरोकार म मानि एि प्रकवत की अन् योन् यावित की विचे ना कर सक ते ृ ं 6. मानि एि प्रकवत की अन् योन् यावित को समेते हए इस ्ान का अरने ीविन म प्रयोत कर ृ ं सक त े 1.3 व्य क्तिगत जीवना , सामाक्तजक जीवना , राष्टर ीय अवना् त तरषष्टर ीय स्त र रर क्ति

Plagiarism detected: **0.02%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **16**

क्षा के कायय सकवचत अाष म वक्ा वकसव समाीमए क वनवश्चत समय ताा वनवश्चत स् ानों िविद्यालयों, महाविद्यालय

) ु ं म सवनयोवीत ढत से चलने िालव एक सोद्दश्े य सामावीक प्रवक्रया ह ै वीसके द्वारा छार वनवश्चत राठयक्रम ु ं को रढ़कर अनेक रव्ाओ को उत् तव ष करना सवखता ह ै व् यारक अाष म वक्ा वकसव समाी म सदि ं चलने िालव सोद्दश्े य सामावीक प्रवक्रया ह ै वीसके द्वारा मनष्ट य की ीन् मीात कवक्तयों

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **17**

का विकास, उसके ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 3 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ्ान एि कशकल म ि वि एि व

् यिहार म रकरितषन वकया ीाता ह ै रर इस प्रकार उसे सभ्य , ससस् कत एि ृ ृ ु ं ं ं ं योग्य नातकरक बनाया ीाता ह ै वक्ा की कछ रकर ाए वनन्म्ित ह ु ं □ वक्ा का अाष अन् त: कवक्तयों का बाय ीविन से समन् िय स्ावरत करना ह ै हर्बट स्प ेतस र। □ वक्ा मानि की सम् र ष कवक्तयों का प्राकवतक,प्रतवतकवल रर सामीस् यर ष विकास ह ै ृ ू ू ं रेस् तालीव □ वक्ा व् यवक्त के समवन्ित

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **18**

विकास की प्रवक्रया है- वीद्द कष्ट मवम ष ृ ू ू □ वक्ा व् यवक्त की उन सर्व र्वतरव कवक्तयों का विकास

ह ै वीससे िह अरने ितिार रर वनयर ं रखकर अरने उत्त रदावयत्ि ों का वनिाषह कर सके - ीन डविव □ मनष्ट य की अन् तवनषवहत र षता को अवर्व् यक् त करना हव वक्ा है- स् िामव विके ानन् द ु ू □ वक्ा से मरे ा तात्र यष बालक रर मनष्ट य के करवर, मन ताा आत् मा के सिीतव एि स्ित् कष्ट ट ृ ु ं विकास से है- महात् मा तीधं व सामान् यत: ीब हम वक्ा की बात करते ह ै तो उसका अ ाष सा्रता लता वलया ीता ह ै ररन् त, िास् ति ु म वक्ा एक विस् तत सम् प्रत्य य ह ै एि सा्रता एक लु सम् प्रत्य य ह ै वक्ा ीविन रयषन्त चलने िालव ृ ु ं प्रवक्रया ह ै ीब वक सा्रता सववमत अिध तक चलतव ह ै वकव्त होने से तात्र यष है- ससस् कत होना ृ ु ं ीबवक साक् ार होने का अ ाष है- रढ़ा वलखा होना उदाहर के वलए हम कह सकते ह ै वक कबवर सा्र नहीं ो कबवर वकव्त ो अकबर सा्र नहीं ो वकव्त ो वक्ा के द्वारा व् यवक्त, समी रर राष्ट र सर्व का विकास होता ह ै वक्ा व् यवक्त को अरने ीविन के उद्दश्े य ों को प्रात त करने योग्य बनातव ह ै वक्ा मनष्ट य का सामीवकर करतव ह,ै सामावीक वनयन् र ु रखतव ह ै रर सामावीक रकरितषन करतव ह ै वक्ा का कायष्ेर अत् यन् त विस् तत ह ै मानि या समी का ृ कोई ऐसा रहल नहीं ह ै वीस रर वक्ा विचार न करतव हो वक्ा के लक् य व् यवक्त, समी एि राष्ट र के ू ं वहतों को ध् यान म रखकर वनधाषकरत वकये ीते ह ितषमान म ग् लोबलाईीकन का दशर चल रहा ह ै ऐसे म वक्ा अन् तराषष्ट रवयता रर र्व विचार करतव ह ै अी

Plagiarism detected: **0.07%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… + 10 resources! id: **19**

प्रत्य ेक राष्ट र की वक्ा व् यिस् ाा म व् यवक्त, समी, राष्ट र एि अन् तराषष्ट रवयता को स्ा ान वदया ीता ह ै ं व् यन्गति ीवन ें न्शक्षा ै ेायब – प्रत्य ेक व् यवक्त वकसव समी का सदस् य या नातकरक होता ह ै ताा व् यवक्त के विकास से उस समी का विकास होता ह ै अत:प्रत्य ेक समी अरने नातकरकों के व् यवक्ततत ीविन के बहमखव विकास क

ी व् यिस् ाा वक्ा के माध् यम से करता ह ै मनष्ट य का करवर समस् त प्रकार के ु ु ्ान ग्रह करने का साधन ह,ै करवर वीतना अवधक स् िस् ा होता व् यवक्त उतना हव अवधक सवखते ा ीसा वक अरस् ि न े कहा ह ै वक,

Quotes detected: **0.01%** id: **20**

“स् िस् ा करवर म स् िस् ा मवस्तष्ट क का सीन होता ह ै ”

अत: वक्ा मनष्ट य का ृ ू ु कारवकरक विकास करतव ह,ै उसकी इवन्ियों का प्रवक् करतव ह ै रर उसकी ीन् मीात कवक्तयों का उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 4 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विकास ताा उदात्त वकर करतव ह ै मनष्ट य विचारो के आदान-प्रदान ाषा के माध् यम से करता ह ै वरर ु चाह े िह ाषा वलवखत हो, मशवखकहो या साके वतक हो वक्ा का कायष मनष्ट य को ाषा का ्ान कराना, ु ं उसकी मानवसक कवक्तयों का विकास करना रर उसे विविध विषयों का ्ान कराना ह ै मनष्ट य एक ु सामावीक प्रा व ह,ै समी म हव उसका अवस्तत् ि ह,ै अत: वक्ा का कायष मनष्ट य का सामीवकर करना ु रर उसे अरने समी म समायोीन करने योग्य बनाना ह ै हर समी की अरनव एक सस्क वत होतव ह ै ृ ं ताा सभ्य समी म हर व् यवक्त उस सस् कवत का रालन करता ह ै वक्ा हव मनष्ट य को अरने समी की ृ ु ं सस् कवत से रकरवचत करातव ह ै एि तदनकल आचर करने का प्रवक् दते व ह ै ृ ु ू ं ं वक्ा मनष्ट य म नैवतक एि चाकरवरक विकास करके उसम म्यों का वनमाष करतव ह ै वक्ा ु ू ं मनष्ट य को अरनव मलर्त आिश् यकताओ की रवतष करने योग् य बनातव ह ै वक्ा मनष्ट य को व् यिसाय म ु ू ू ू ु ं वनर करतव ह ै रर रोीव-रोटव कमाने योग्य बनातव ह ै वक्ा मनष्ट य को उसके देक के कासनतन् र से ु ु वर रवचत कराकर उसे रा य का िष्ट ठ नातकरक बनाने म सहायता करतवह ै वक्ा मनष्ट य म धावमकष ु सवहष ता एि आध् यावत्मक चेतना का विकास करतव ह ै ु ं इस प्रकार वक्ा का मनष्ट य के व् यवक्ततत ीविन म अत्य न् त महत्ि र ष स् ान ह ै ु ू ें ा न ीवन (व्य न्गति ीवन ें न्शक्षा ै ेायब- □ वक्ा आत् म्ान, आत् म अनव्रता ताा आत् मिचन को दर करता ह ै ं ू □ वक्ा मानि को र ष ीविन ीवने की तैयारव कराता ह ै ू □ वक्ा मानि की समस् त योग् यताओ, ्मताओ ताा कशकलों को प्रोत् साहन ताा रोष दते व ह ै ं ं □ वक्ा व् यवक्त के ा इस योग्य बनातव ह ै वक िह विररवत रकरवस्ावतयों म र्व सामीस् य स् ावरत कर ं सके □ वक्ा व् यवक्त म सहयोत की ि्रान का विकास करतव ह ै □ वक्ाबालक म उवचत म्यों की स् ारना करतव ह ै ू □ वक्ा ीावत, तरवबव रर लैवतकता से ीडव रररातत रूवढयों रर रिषग्रहों का अन् त करतव ह ै ु ू ं ी □ वक्ा ीावत, वलत, रत,आवाषक स् तर रर कम ष का ् याल वकये वबना मिान मार की समानता, ं ं अवधकारों रर तकरमा का सम् मान करने की ि्राना रैदा करतव ह ै □ वक्ा बालक को सशहाद ष के साा वमल-ीलकर ीवने की कला वसखातव ह ै ु □ वक्ा बालक म अधविश् िास को समात त कर ि् ावनक अवि्रवत्त रैदा करतव ह ै ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 5 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ वक्ा बालक म अरनेआचर को उवचत बनाए रखने रर प्रि्राकारव ढत से समय का प्रबधन ं ं करने की योग्य ता रैदा करतव ह ै □ वक्ा बालकम कारवकरक स् िास् ् य एि मानवसक स् िास् ् य, चाकरवरक विकास, आध् यावत्मक ं विकास करतव ह ै वक्ा का ियै वक्तक उद्दश्े य साषक समी की अरे्ा व् यवक्त को बडा मानता ह ै क् योंवक व्य वक्त के वबना ी समी के ारव कर ना ह ै व् यवक्त के विकास से हव समी का विकास होता ह ै वक्ा का ियै वक्तक उद्दश्े य नया नहीं ह ै प्राचवनकाल म ग्रवस, ारत ताा अन् य राश्व ात्य दके ोंम र्व वक्ा के ियवक्तक उद्दश्े य को रमख स् ान वदया ीता ाा ु सों ान्ी ीवन ें न्शक्षा ै ेायब: वक्ा की व् यिस्ा ा समी म सतलन स् ावरत करने हते की ु ु ं ीतव ह ै

वक्ा समी का उत्ा ान करतव ह ै सामावीक ष्वस से वक्ा के कायष ह- समीवकर , सामावीक वनयन् र रर सामावीक रकरितषन वक्ा समी के प्रत्य ेक नातकरक के कारवकरक, ऐवन्ि य रर ीन् मीात कवक्तयों के विकास की व् यिस् ाा करतव ह ै वक्ा समी की ाषा ए ्ान-वि ान का प्रचार- ं प्रसार करतव ह ै वक्ा के माध् यम से समी की सस् कवत सर् , ि षिषन ए स् ानान् तर होता ह ै वक्ा ृ ं ं ं ं समी के व् यवक्तयों म सास् कवतक म्यों

Plagiarism detected: **0.04%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **21**

के विकास करतव ह ै सा हव समी के व् यवक्तयों म नैवतकता ए ृ ू ं ं चाकरवरक विकास करतव ह ै समी म प्रत्य ेक ्ेर म कायषको सचारू रूर से चलाने हते उसे ्ेर के ु ु विक

ेष् की आिश् यक् ता होतव ह ै वक्ा विकषे ्ों का वनमा ष करतव ह ै समी की कासन प्र ालव क् या ह ै वक्ा इसका ध् यान रखतव ह ै ताा नातकरकों को इससे रकरवचत करातव ह ै वक्ा के सामावीक उद्दश्े य का ीन् म ए वक्ा के ियै वक्तक उद्दश्े य की प्रवतवक्रया के ं रकर ामस् िरूर हआ ह ै इसम व् यवक्त की अेा समी को ँच चा मानते ह ै समिीावदयों के अनसार ु ं व् यवक्त के अेा समी ब्रा ा ह ै अत: ि े वक्ा सामावीक उद्दश्े य रर विकषे बल दते े ह ै इनका विश्ि ास ह ै वक व् यवक्त सामावीक प्रा व ह ै ि ह समी से अलत रहकर अरना विकास नहीं कर सकता ह ै अत: उनके अनसार व् यवक्त को अरनव ियै वक्तकता का विकास समी की आिश् यकताओ ताा आदक् को ध् यान म ु ं रखते हए करना चावहए सामावीक ष्वस से वक्ा के उद्दश्े य वनम् न वबन् दओ म रख सकते ह- ं ु □ वक्ा समिीादव समी की स् ारना करतव ह ै इस उद्दश्े य की रवतष हते

Quotes detected: **0.01%** id: **22**

‘ीावतहवन ताा ितहष वन ू ु समी’

की स् ारना की व् यिस् ाा करतव ह ै □ वक्ा सामावीक कप्राओ को समात त करतव ह ै वक्ा दही प्रा, बाल ि ाह, विधि ु ं रनाि ष ाह वनषधे , रदाष प्रा, छआछत, दास प्रा इत् यावद कप्राओ के प्रवत बालक को ीातरूक ु ु ू ु ं करतव ह ै □ वक्ा धावमकष समस् याओ रर र्व कठाराुत करतव ह ै वक्ा हव आडम् बरों, छआछत आवद के ु ु ू ं बारे म बालक को ीातरूक करतव ह ै ताा बालक धम ष ए आडम् बर म र्दे कर सके ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 6 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ समी म कावन्त स् ारना हते बालक म नेतत् ि ताा अनकासन के त ों का विकास करतव ह ै ृ ु ु ु □ वक्ा का सिप्रष मख उद्दश्े य बालक को सयोग् य नातकरकता का प्रवक् दने ा ह ै ु ु राष्ट रवय स् ि र पर न्शक्षा े ेायब – □ वक्ा हर बच् चे म राष्ट र के प्रवत ति ष की ि ाना विकवसत करतव ह ै □ वक्ा धमवष नरेता की ि ाना का विकास करतव ह ै □ वक्ा बालक म लोकतावरक सस् कवत को प्रेकरत करतव ह ै ृ ं ं □ वक्ा समस् त विद्यावाषयों को दके के वि वर्न् न रहलओ का ्ान करातव ह ै ु ं □ समस् त विद्या वाषयों को स् ितन् रता प्रावसे से सम् बवन्धत विकषे बातों से रकरवचत करातव ह ै □ राष्ट रवय एकता के विकास के वलए समस् त ीावतयों, सम् प्रदायों ए रा यों म अवधक मले रैदा ं करने ालव वलखाई-रढाई को प्रोत्स ावहत करतव ह ै □ वक्ा बालकों को इस प्रकार वकव्त करतव ह,ै वीससे उत्र ादन म ि वि हो ृ □ प्राद्योवतकी वक्ा के द्वारा दके के आधवनकीकर को सवनवश्चत करतव ह ै ु ु □ वक्ा प्रीितन् र की सष्ढता प्रदान करतव ह ै ु □ वक्ा बालक म राष्ट रवय एकता

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **23**

का विकास करतव ह ै अति राबष्ट रवय स् ि र पर न्शक्षा े ेायब- □ वक्ा मानि/बालक म विश् िबन् धत्ि की ि ाना का विकास

करतव ह ै ु □ विश्ि ीनों म कावन्त की स् ारना करतव ह ै माकरया माण् टेसरव के अनसार,

Quotes detected: **0%** id: **24**

‘’

सारव वक्ा कावन्त के वलए हव ह ै

Quotes detected: **0%** id: **25**

‘’

ु महात् मा तीधं व के अनसार,

Quotes detected: **0%** id: **26**

‘’

अतर हम विश्ि के ि ास् तविक कावन्त का राठ रढाना चाहते ह, तो ु ी हम करूआत बच् चों से करनव होतव

Quotes detected: **0%** id: **27**

‘’

ु □ वक्ा विविधता के वलए सम् मान की िरना रैदा करतव ह ै वीससे विश्ि म कावन्त स् ाावरत होतव ह ै □ वक्ा बालक का विश् ि नातकरकता क वलए तैयार करतव ह ै □ वक्ा बालककी सकी ष एि अन् धव राष्ट रवयता को समात त करतव ह ै ं ं □ वक्ा बालक म यह ्ान रैदा करतव ह ै वक समस् त राष्ट र एक दसरे रर आवित ह ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 7 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ वक्ा बालको उन सर्व समस् याओ से रकरवचत करातव ह ै ी सर्व दके ों से सामान् य रूर से ं सम् बवन्धत ह ै □ वक्ा सास् कवतक विवर्न् नताओ म मानि वहत के वलए क्या कारव समान तत् िों को खोिने के ृ ं ं वलए प्रोत्स ाहन ताा प्रवक् प्रदान करतव ह ै □ वक्ा बालक को समस् त राष्ट रों की उरलब्धयों का आदर करना वसखातव ह ै वीससे मानि सस् कवत ताा विश्ि नातकरकता

Plagiarism detected: **0.04%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **28**

का विकास होता ह ै ृ ं □ वक्ा बालक म विश्ि समी के वनमाष के वलए म्यों का विकास करतव ह ै ू □ वक्ा बालक म स् ितन् र वचन् तन, वन यष , लेखन ताा ाष की योग्य ता का विकास

करतव ह ै अभ् यास रश - 1. वकसका कान ह की

Quotes detected: **0.01%** id: **29**

“मनष्ट य की अन् तवनषवहत र तष ा को अवर्व् यक् त करना हव वक्ा ह”

ै ु ू 2. वक्ा ीविन रयषन् त चलने िालव प्रवक्रया ह ै िसत्य /असत्य) 3. वक्ा एि सा्रता का अाष वर्न् न नहीं ह ै िसत् य/ असत् य) ं 4. वक्ा मानि को र ष ीविन ीवने की तैयारव कराता ह ै िसत् य/असत् य) ू 1.4 क्तिक्षा के वनौयक्तिक, सामाक्तजक, राष्टर ीय अवना् त त रषष्टर ीय उद्दश्े य म ें समा ता तथा त त र- वकसव र्व दके के वक्ा के उद्दश्े य व् यवक्त, समी एि राष्ट र को ध् यान म रखकर वनधाषकरत वकये ीते ह ं क् येावक व् यवक्त समी म रहता ह ै रर समी व् यवक्त से बनता ह ै व् यवक्त के व् यवक्तत्ि का विकास समी म ं होता ह ै ऐसव वस्ावत म व् यवक्त समी की अिहले ना नहीं कर सकता दसरव ओर हम दखे ते ह वक समी ू व् यवक्तयों का समह ह ै वबना व् यवक्तयों के समी की क्र ना करना उतना हव ्ामक ह ै वीतना वक समी ू के बतरै व् यवक्त की क्र ना करना व् यवक्त अरनव कवक्त रर ककलता को राष्ट र या समी बनाने म व् यय ु करता ह ै रर राष्ट र या समी उन उवचत रकरवस्ावतयों की व् यिस् ाकरने म सलग् न करता ह ै वीसम व् यवक्त ं अरने व् यवक्तत्ि का सिीतव विकास कर सके वक्ा के ियवक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय ं उद्दश्े य एक दसरे के विरोधव नहीं ह ै अवरत एक दसरेके ररक ह ितषमान म ग् लोबलाइीके न कर दशर ह ै तो ु ू ू ू वक्ा म अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य ों को र्व ध् यान रखा ीाता ह ै वक्ा के ियै वक्तक उद्दश्े य के के न् ि म व् यवक्त होता ह,ै ीबवक वक्ा के सामावीक उद्दश्े य के के न् ि म समी होता ह,ै वक्ा के राष्ट रवय उद्दश्े य के के न् ि म राष्ट र हो ता ह ै ीबवक अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य के के न् ि म ररा विश् ि होता ह ै अत: हम वक्ा के इन सर्व काय् के ा एक दसरे के विरोधव नहीं अवरत ररक ू ु ू ू मान सकते ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 8 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अभ् यास रश - 5. वक्ा बालक को समी का योग्य नातकरक नहीं बनातव ह ै िसत् य/असत्य) 6. वक्ा बालक म विश् िबन् धत् ि की िरना नहीं रैदा करतव ह ै िसत् य/असत्य) ु 7. वक्ा के ियै वक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य एक दसरे के ररक ह ै ू ं ू िसत् य/असत्य) 1.5 द्व द्व , रुवनाषग्रह, आक्रामकता अवना् हहसा के स्र ोत अवना् कार द्वतद्व – ीब कोई व् यवक्त अरन े लक् य को प्रात त करन े म रूकिाटों का सामना करता ह ै तो िह तनिाग्रस् त हो ीाता ह ै यह अक्स र व् यवक्त म द्वन् द्व रर वनराका की िरना रैदा करता ह ै प्रबल वनराका वमलने के कार यह द्वन् द्व रर र्व तनिार ष हो ीाता ह ै आमतशर रर व् यवक्त द्वन् द्व म तब ऱा ीाता ह ै ीब उसके सामने ू ररस् रर विरोधव रकरवस्ा वतयी ं हो द्वतद्व ै रश्ेार - िक) प्रस् ति- प्रस् ति द्वन् द्व उदा0 ििवाह ि2) िख) रकरहार – प्रस् ति द्वन् द्व उदा0 कुँ आ-खाई ु ित) प्रस् ति – रकरहार द्वन् द्व उदा0 ििवाह वमवित – अनग्रह ु □ ीावतिाद रर साप्रदावयकता के कार द्वन् द्व ं □ समहों म ीब द्वन् द्व होता ह,ै तब सामावीक तवतकवलता की सिरना बढ़ ीातव ह ै द्वन् द्व स े ू ं ररावीत व् यवक्त म वबखरि र्व आता ह ै द्वतद्व ै ेार – (1) ीब कोई अरनव तलना दसरेा से करता ह ै रर अरन े को अरेाकत कमतर राता ह ै तो ृ ु ं ू इससे िचन या द्वन् द्व की िरना रैदा होतव ह ै ी द्वन् द्व को उद्दवत त करता ह ै ं (2) दोषर ष सप्रेष द्वन् द्व का एक प्रमख कार ह ै ू ु ं (3) रिाषग्रह र्व द्वन् द्व के मल म या ी़ म होते ह ू ू आी समह अनेक प्रकार के द्वन् द्व से वुरा हआ ह ै ये द्वन् द्व ीावत, ित,ष धम,ष ्ेर ाषा आवद स े ू सम् बन् ध रखते ह ताडब र ें रफी ने

Quotes detected: **0.01%** id: **30**

‘इन द माइडस ऑर मने ’

नामक रस् तक वलखव अवधकतर द्वन् द्व व् यवक्त के मन से करू ु ु ं होते ह, इसके रश् चात ि े बाहर आते ह इस तरह के द्वन् द्वों का व् या् यान सरचनात् मक, सामवहक ताा ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 9 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 व् यवक्ततत स् तरा रर वकया ीासकता ह ै सरचनात् मक दकाओ के अनसार वनधषनता की उच् च दर, आवाषक ु ं ं ं रर सामावीक स् तरवकर , असमानता, सववमत रीनववतक एि सामावीक अिसाद इत् यावद वनवहत होत े ं ह ै समह स् तर के कारकों रर वकये तये अध् ययन यह दकाषते ह वक सामावीक अनन् यता, ससाधनों हते ू ू ं समहों के मध् य होने िाले याााषिादव द्वन् द्व ताा समहों के मध् य असमान कवक्त सम् बन् ध द्वन् द्व को बढाते ह ै ू ू ी् व् यवक्ततत स् तर रर विश्ि ास, रिाषग्रहव अवि्वत्तयी ं ताा व् यवक्ततकी विकेषतां महत् ि र ष वनधाषरक होते ृ ू ू ं ह पनाबग्रह- क्द अग्रेीव क्द प्रेीवडस का वहन् दव रूरान् तर ह ै इस क

द को लैवटन ंराषा प्रैीवडवसयस से ू ु ु ं वलया तया ह ै वीसका अंाष ह ै िह वन यष ंी रि ष वनश् चयों रर वनर्रष ह ै प्रैीवडस क्द का अंाष िह व् यवक्त ू ु ंी धमयष ंा ंीवत ि वलत के कार वकसवको ना रसद करना अन् य क्दोंम इसका अंा ष िह वन यष ंी त्य ों ं ं के अरेव्त रर्व्ा से रिष कर वलया तया हो एक अरकररक् ि या ंी् दव म ंरात वलया वन यष रिषग्रह एक ू ू रिकष व्रत विके हवन वन षय हौ अवधतर समी मनी्ि ंावनकों ंीसै े-सेकडष ताा ब कमनै ि1987), ू रे ् डमनै ि1985), मये सष ि1987), बरोन ताा बनष ि1977) ने रिषग्रह को एक तरह की मनोवत्त माना ृ ू ह ै मये सष ि1987) के अनसार,

Quotes detected: **0.02%** id: **31**

“रिषग्रह वकसव समह एि उसके सदस् यों के प्रवत अनवचत नकारात् मक ु ू ू ु ं मनोवत्त को कहा ंीता ह ै ”

ृ रिषग्रहको स् िवकारात्म क एि नकारात् मक मनोवत्त दोनों मानातया ह ै स् िवकारात् मक ृ ू ं रिषग्रह मनोवत्त के रलस् िरूर व् यवक्त स् नेह एि त यार प्रदवकतष करता ह ै ंीबवक नकारात्म क रिषग्रह ृ ू ू ं मनोवत्त के रलस् िरूर व् यवक्त ु ंा प्रदवकतष करता ह ै रिषग्रह म स्ानात् मक, ि्रानात्म क ताा ृ ृ ू ं व् यिहारात्म क ये तवनों तत् ि कावमल होते ह अमवर ितष का तरवब के प्रवत, कहरव ितष का ग्रामव के प्रवत ष्वसको रिषग्रह से यक्

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **32**

त होता ह ै ू ु रिषग्रह की प्रमख विकेषतां – ू ु ं □ रिषग्रह विके हवन होता ह ै ू □ रिषग्रह म सितात् मक रत होता ह ै ू ं ं □ रिषग्रह एक सप्रयास अवीतष मनोवत्त ह ै ृ ू □ रिषग्रह सनव-सनाई बातों रर आधाकरत होतव ह ै रिषग्रह का सम् बन् ध िास् तविकता से नहीं होता ू ु ु ू ह ै □ रिषग्रह का स् िरूर कायाषत् मक होता ह ै ू □ रिषग्रह ष्ढ़ ताा वस्ार सामान् यवकर रर आधाकरत होता ह ै ू □ र

िषग्रह र रूष रे वकसव समहकी ओर सचावलत होतव ह ै ू ू ू ं पनाबग्रह ै स् रि – ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 10 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रश्ि्रीवय – इस रिषग्रह म लोत अरनव प्रैीवतको ि्रष्ट ठ ताा दसरों की प्रैी वत को दोषव मानते ह ै ू ू उदाहर के वलए अमके रका म तोरे लोत नवग्रो को कम बवि ि असभ् य समेते ह ै ंरारत म र्व एक प्रैीवत ु दसरव प्रैीवत के प्रवत नकारात् मक रिषग्रह से ग्रवसत ह ै ताा इसव कार एक प्रैीवत दसरे के प्रवत ू ू ू आक्रामकता का प्रदकनष करतव ह ै ें ौ - विवर्न् न समी्ि ंम ररूष एि मवहलाओ के बवच र्दे ि्रा ष्वसतोचर होता ह ै अवधकाकत: ु ं ं ं ररूषोंकीमवहलाओ के प्रवत नकारात् मक मनोवत्त होतव ह ै ररूषों को यह लतता ह ै वक मवहलाए कमी्ि र, ृ ु ु ं ं कम बवि िालव, कम रकरिमव, नेतत् ि त रवहत होतव ह यवद वकसव मवहला की छवि इसके विररवत होतव ृ ु ु ह ै तो उसे अरिाद समो ंीता ह ै भाषा- हर ित ष अरनव ंराषा को दसरव ंराषा से ि्रष्ट ठ मानता ह ै ंराषा के आधाररर विवर्न् न समहों का ू ू वनमाष हो ंीता ह ै ंीसै े- वहन् दव ंराषव, तवमल ंराषव आवद ंराषा के आधार रर आये वदन दत े होते रहते ह ै ं रंी वन्ि- वकसव र्व राटी का सदस्य अरन े राटीके वसिान्त ों, उसके ईण्े ड ों, उसके सदस्य ों को अच्छ ंा मानता ह ै ंीबवक दसरे दल के वसिान् तों, ईण्े डों की आलोचना करता ह ै ितषमान म हर नेता अरने दल ू के नेता को सार-सारा ताा दसरे दल के नेताओ को ्रष्ट ट मानता ह ै ु ं ू साम्प रश्दायिान्यि- ितषमान समय म असम् प्रादावयकता एक ब़ा व समस् या ह ै एक सम् प्रदाय दसरे के प्रवत ू एक वुनशनव मानवसकता राले बैठा ह ै वीसके रलस् िरूर साम् प्रदावयक दत े होते रहते ह वहन् द, मवस्लम, ु ं ु वसख आवद सर्व एक दसरे के प्रवत रिषग्रह स े ग्रवसत ह ै कश्म वर, रीाब आवद म आये वदन साम् प्रदावयक ू ं ू दत े होते रहते ह ं क्षेरवय - ्रेरवयता र्व रिषग्रह का एक प्रमख आधार ह ै कहरव ्रेर म वनिास करने िाले व् यवक्त ग्रामव ों ू ु को अनरढ़, असभ्य , मखष, ल़ा ाक समेते ह ि्रहीं दसरव ओर ग्रिीं म रहने िाले लोत कहर िालों को ू ू ू चालाक, वदखिा े की प्रिवत्त रखने िाला, ब़ा बोला, अहकारव, असामावीक आवद समेते ह इसव प्रकार ृ ं ब़ा े कहर ताा छोटे कहर िाले एक दसरे के प्रवत नकारात् मक ष्वसको रखते ह ै ू ंीन्ि- समी म अनेक ंीवतयों का ितीकर ह ै प्रत्य ेक ंीवत अरनव ंीवत के प्रवत सकारात्म क मनोवत्त रखतव ह ै ंीबवक दसरव ंीवत के प्रवत नकारात् मक मनोवत्तरखतव ह ै इस नकारात् मक मनोवत्त के ् ृ ृ ू चलते विद्वषे की ि्रीना बढ़ ंीतव ह ै तब यह ंीतवय दतों का रूर धार कर लेतव ह ै ं उम्र- उम्र र्व रिषग्रह का स् रोत ह ै ंीसै े हर यिा रवढव ि्रिों को आलसव, नकाराए वरछडा मानतव ह ै ू ु ं ंी् ंी् ंीब वक ि्रि यिा रवढव को असभ् य, र्टका हआ, आलसव आवद समेते ह इसव रिषग्रह के चलते अनके ु ू ंी् रकरिारों म आये वदन लडाई होतव ह ै ंीबवक न तो हर यिा रर न हव हर ि्रि बरा होता ह ै ु ु ंी् धें ब- रिषग्रह का एक प्रमख आधार/स् रोत धम ष र्व ह ै रवश्वम मनी्िवनक ंीबेलकि1980) ने अरने ू ु अध् ययन के आधार रर राया वक ईसाइयों की रिधष ार ंा नवग्रो के प्रवत अवधक नकारात् मक होतव ह ै वहन् द– ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 11 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 मवस्लम एक दसरे के प्रवत रिषग्रह से ग्रवसत ह ै ये धावमकष रिषग्रह धावमकष दत े का आधार बनते ह ं रर ु ू ू ं ू इनका समी रर कप्रि्रा श़ ता ह ै ु इस प्रकार अनेक स् रोत ह ै ंी रिषग्रह को वनधाषकरत करते ह ू पनाबग्रह ै ंार - ू ऑलरोटष ने रिषग्रहके वनम् न रीचं उरातमों रर प्रकाक डाला ह- ै ू (1) ऐवतहावसक उरातम (2) रकरवस्ावतीन् य उरातम (3) मनोतवतकी उरातम (4) स्ानात् मक उरातम ं (5) सामावीक – सास् कवतक उरातम ृ ं 1- ऐन्िहान्से उपातें - विवर्न् न ऐवतहावसक ुटनाए रिषग्रहका कार बनतव ह ै वकसव ू ं समी म ररतों का यवद प्रतावडत वकया ंीता ंा तो धवरे-धवरे ये रिषग्रह का रूर धार ू ंी् कर लेता ह ै सि ् का हकरीनों के प्रवत ष्वसको अमवर का तरवब क प्रवत, तोरों का नवग्रो लोतों के प्रवत मनोवत्त ऐवतहावसक रिषग्रह रर आधाकरत ह ै ृ ू 2- पररन्स्ि्रन्ि ीत य उपातें - इस उरातम म रिषग्रह विकास से ंीडी् ि े तत् ि होते ह ंी व् यवक्त ू ु के तत् कालवन रकरिक से उत्र न् न होते ह ै रै ् डमनै के क्दों म ,

Quotes detected: **0%** id: **33**

‘’

रिषग्रह के वस्ावत उरातम ू उन तरवकों रर बल डालता ह ै वीसम व् यवक्त के तत् कावलक ितिार रिषग्रहव मनोवत्त रैदा ृ ू करते ह

Quotes detected: **0%** id: **34**

‘’

राकरवस्ावतीन् य उरातम के तवन कारक ह- (i) सों ान्ी अन्धतें – बालक का समवरव ितिार ीसै ा होता ह ै बाल का सामावीक विकास र्व िसै ा हव होता ह ै बालक अरने माता-वरता, ाई-बहन, आस-श ोस आवद स े दसरो के प्रवत व् यिहार करना सवखता ह ै ये ीसै ा वसखाते ह ै बालक िसव हव मनोवत्त ृ ू विकवसत कर लेता ह ै मनी् ावनकों ीसै े कालव प्रसाद ि1964), हसन ि1977), एि ि1980) ने र्व अरन े ं अध् ययनों के आधार रर यह वनष्ट कष ष वनकाला वक बच् चों म रिषग्रह का विकास उनके माता- ू वरता द्वारा रालन-रोष म अरनाई तई विवधयों से कारी प्र ावित होता ह ै (ii) ी सान्ययोय न्नशेषिाए – प्रवसि मनी् ावनक मके े विच ने तोरे अमके रकन म नवग्रो के ां ां प्रवत नकारात्म कता के अध् ययन म तवन ीनसाव्यकीय विकषे ताओ को अवधक महत् ि र ष ू ं ं राया ह ै ये तवन ह- र्शतोवलक ्ेर, कवै ्क स् तर ताा उम्र उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 12 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 (iii) असरक्षा और न्ति ि - असरा रर वचन् ता र्व रिषग्रह का एक प्रमख कार ह ै वीन ु ु ू ु व् यवक्तयों म असरा की िराना अवधक होतव ह,ै िह हमेका उस व् यवक्त की ताक म रहता ह ै ु वीस रर उनकीअसरा का ओर लताया ी सके रलस् िरूर व् यवक्तयों म रिषग्रह बहत ु ू हव तवव्र तवत से उत् रन् न होता ह ै वचन् ता र्व रिषग्रह की उत् रवत्त का एक कार ह ै ीब व् यवक्त अवधक वचवतत ू ं होता ह ै तो रिषग्रह की मारा बढ़ ीतव ह ै वसहि1980), एि इनायत लाह ि1980), ने ू ु ं ं अरने अध् ययनों म वचन् ता ताा रिषग्रह के बवच धनात् मक सहसम् बन् ध बतलाया ह ै ू 3- ें ोतन्ी उपातें - ऐसे अनेक मनी्ावनक कार ह ै वीनसे व् यवक्त के व् यवक्तत्ि म कण् ठा, असरा, वचन् ता आवद उरीतव ह ै रर यहीं रिषग्रह का कार बनते ह ै ु ु ू (i) ेण् ठा एन ्रामों ि – कण् ठा के कार र्व व् यवक्त म रिषग्रह की मनोवत्त रैदा होतव ृ ु ु ू ां ह ै इसे रिधष ार ा का कण् ठा वसिान् त या

Quotes detected: **0%** id: **35**

‘बवल का बकरा’

वसिान् त र्व कहा ीता ह ै वमलर ू ु ताा बग् लसे की ि1947) द्वारा वकया तया प्रयोत इस वसिान् त का समाषन करता ह ै (ii) सत्ि ानादायिव व्य न्ाव – अनेक अध् ययनों म सत्त ि ादव व् यवक्तत्ि ताा रिषग्रह म सवधा ू सम् बन् ध राया तया ह ै इस सन् दर् ष म समी मनी्ावनकों का माननाह ै वक सत्त ि ादव व् यवक्त ं िाले व् यवक्तयों को बचरन म अरने माता-वरता से अनकास् नका स्त प्रवक् वमला होता ु ह ै स्त अनकासन म रले बच् चे अरने माता-वरता से नाखक रहते ह ै ररन् त उनके प्रवत स्त ु ु ु अनकासन का रवचत् य समेकर प्रकट करने म असमाषहोते ह ै रलस् िरूर ि े अरने इस ु बैर िरा की अवर्व् यवक्त अन् य बाहरव समहों या व् यवक्तयों के प्रवत नकारात्म क मनोवत्त ृ ू वदखाकर करते ह ै उदाहर – एक स् रव यवद रहलिान बन ीाये तो लोत कहत से योतिक बन तई ररन् त यवद ु ं स् रव वकसव ुटना को दखे कर सहम ीाए तो ररूष कहत े-स् रव की प्रकवत हव डररोक होतव ह ै ृ ु 4- सज्ञा ात् ें े उपातें – इस वसिान् तया उरातम के आधार रर रिषग्रह म रिषग्रहव व् यवक्तयों ू ू ां द्वारा रिषग्रह के लक् य के बारे म प्रत्य ् ताा उसके बारे म प्रात त सचनाओ के ससाधन रर ू ू ं ं वकया ीाता ह ै स्ानात् मक उरातम के आधार रर रिषग्रह के 2 वसिान् त ह ै ू ं (i) ्रोप न्सद्धात ि – इस वसिान् त के आधार रर रिषग्रहव व् यवक्त द्वारा दसरे व् यवक्त या समह ू ू ू के प्रवत वकये तय े नकारात्म क व् यिहार की िह से उस व् यवक्त या समह म विवदत व् यवक्ततत ू त ों को माना ीाता ह ै ररन् त ीब उसके

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.doubtnut.com/qna/643175761 + 2 resources! id: **36**

द्वारा कोई धनात्म् क व् यिहार वकया ीाता ह ै तो ु ु रिषग्रहव व् यवक्त उनकी प्रकसा करके उसका कार ाग् य, अवधक प्रयास, अरिादात्म क ू ं व् यिहार

आवद बताता ह ै (ii) ौरव ें रश्न्ियोन्ति- वीन ित् म आवाषक सम् रन्न ता ह ै ि े हव लोत अच् छव वक्ा प्रातत करके सरकारव/तरै सरकारव नशककरयी ं प्रात त करते ह ऐसे म यह रिधष ार ा बनव हई ह ै वक ी ू अ् रस्यक या वनम् न ित ष के लोत ह ै उन् ह आर् का वदया ीाने िाला लार् अनवचत ह ै ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 13 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5- सों ान्ी – सास् कवतक उरातम –रिषग्रह के अनेक सामावीक सास् कवतक कार र्व ह ै ृ ृ ू ं ं ये कार वनम् नित ह- (i) सों ान्ी नतब – उच् च सामावीक ित ष मध् य सामावीक ित ष ताा वनम् न सामावीक ित ष एक दसरे के प्रवत रिषग्रह से ग्रवसत होते ह ै ारत म हए अध् ययनों के अनसार मध् यम ताा उच् च ू ु ू स् तर िाले व् यवक्तयों म नकारात् मक मनोवत्त राई ीातव ह ै ृ (ii) न्शक्षा- वक्ा चाह े ररचाकरक हो या अनशरचाकरक व् यवक्त की रिषग्रह मनोवत्त रर प्रि्रा ृ ू डालतवह ै यह प्रि्रा सकारात् म् ाक एि नकारात् मक दोनों हो सकता ह ै वसन् हा (Sinha & ं Sinha 1972), ने 2000 उत् तर ारातवयोंकी रिधष ार ा का अध् ययन करने रर राया वक, ू ररचाकरक वक्ा का स् तर अवधक ँ ु चा होने से व् यवक्तयों के प्रवत मनोवत्त कारी उदार हो ृ ीातव ह ै (iii) धान्ें बे सें ह – एक धावमकष समहके व् यवक्त दसरे धावमकष समह के विषय म तच् छ धार ा ू ू ू ु ू

रखते ह वसह ि1980), हसन एि वसह ि1973), नटरी ि1965) आवद ने अरने अध् ययनों ं ं ं म राया वक वहन् द, मवस्लम, यहदव आवद दसरे धम् के प्रवत रिषग्रह से ग्रस् त ह ू ु ू ू ू (iv) तरवेर – नतरों म यवद कोई समस् या ीसै े तन् दतव, अस ्रा आवद होतव ह ै तो लोत ु वकसव ऐसे ित ष को ीी यादा हव उसको इसका दोषव मान लेते ह ै ीी रिषग्रह के का

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindipunjab.com/र-के-विभिन्न-रूप + 2 resources! id: **37**

र होता ू ह ै (v) ीान्ि – प्रसाद ि1979), ने अध् ययन म रायावक उच् च ीावत के वहन् दओ म ीावत रिषग्रह ू ं ु वनम् न ीावत के वहन्दओ की अरे ा अवधक होता ह ै इस प्रकार

ीावत र्व रिषग्रह का एक ू ं ु कार ह ै (vi) शहरव-ग्रों व क्षेर- कोध से रता चलता ह ै वक कहरव व् यवक्तयों की अरे ा ग्रामव व् यवक्तयों म रिषग्रह का अवधक समिाके होता ह ै इसके अलिा ि े अरे ाकत रूढ र्व होते ृ ू ह (vii) ी सें ह ें ाध यें – रेवडयों, टव0व0, समाचार रर आवद म वकसव ुटनाका इतने ू प्रि ाकारव तरवके से वदखाया सनाया ीाता ह ै वक ये र्व रिषग्रह का कार बन ीातव ह ै ु ू (viii) सों ान्ी सघषब –विवर्न् न काधों से रता चला ह ै वक सामावीक समहों के मध् य होने िाला ू ां सुष ष र्व रिषग्रह को ीन् म दते ा ह ै ू ं ्रामों ि मये सष ि1988) के अनसार,

Quotes detected: **0%** id: **38**

‘’

आक्रामकता एक ऐसा कारवकरक या काव्दक व् यिहार होता ु ह ै वीनका उद्दश्े य दसरों को चोट रहचुँ ाना होता ह ै

Quotes detected: **0%** id: **39**

‘’

अत: आक्रामकता उद्दश्े य के साा की ीातव ह ै ू वबना उद्दश्े य के नहीं ्रामों ि े रश्ें ख न्सद्धात ि(स् रिे – ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 14 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 (1) ं लरश्नन्ि न्सद्धात ि – इसके अनसार आक्रामकता का स्र ोत व् यवक्त म वनवहत ीन् मीत मल ृ ू ु ू प्रिवत्तयी ं ह ै यह आक्रामकता का प्रमख वसिान् त ह ै इस वसिान् त म मलरूर से दो वसिान् तों को ृ ु ू रखा तया ह ै (a) फ्रायडका मनोविश् लेष ात् म् ाक वसिान् त, (b) लोरेन् ी का आचारकास् रवय वसिान् त फ्रायड ने मलप्रिवत्त को दो ्रातों म बीटं ा ीविन मलप्रिवत्त ताा मत् य मलप्रिवत्त ृ ृ ृ ृ ू ू ु ू फ्रायड के अनसार ीविन अक् सर मत् य मलप्रिवत्त के विध् िसकारव लक् य को अिरू कर दते ा ह ै ृ ृ ु ु ू ं ं ह ै लारेन् स न े रकओ रर प्रयोत कर यह वसि वकया वक अवस्तत् ि लक् य की मल म ु ू ं आक्रामकता की मलप्रिवत्तहोतव ह ै ृ ू (2) ेठा-्रामों ि न्सद्धात ि – इस वसिान् त म डोलाडष एि उनके सहयोवतयों ने आक्रामकता ुां ं का कार या कठा या वनराका माना ह ै इस वसिान् त के अनसार लक् य प्रात त करने िाले व् यिहार ु ु ं बावधत या अिरू होने रर व् यवक्त म रहले कठा ताा वरर आक्रामकता उत् रन् न होतव यह कई ु बातों रर वनर्रष करतव ह ै वीस स् रोत या ईन्े ट के द्वारा कण् ठा रैदा होतव ह ै व् यवक्त सवधे उसव के प्रवत ु आक्रामकता वदखाता ह ै व् यवक्त सवधे उसव के प्रवत आक्रामकता वदखाता ह ै इसे प्रत्य ् आक्रामकता कहा ीाता ह ै लेवकन कर्व-कर्व आक्रामकता वदखलाने िाले स् रोत को व् यवक्त अरने से अवधक कवक्त िाला राता ह ै या उससे उसे दण् ड वमलने की स ्राना तवव्र हो तव ह ै या ं स् रोत स् िय उरवस् ात नहीं होता ह,ै तो िसै व रकरवस् ावत म व् यवक्त का आक्रामक व् यिहार वकसव ं दसरे से वमलते- ीलते स्त्रोत या ईण्े ट के प्रवत विस् ाावरत हो ीाता ह ै इसे विस् ाावरत ु ू आक्रामकता की र्व स् ा दव ीातव ह ै ं पररपन्ि ेठा – ्रामों ि न्सद्धात ि – ुां यह कठा आक्रामक वसिान् त का रकरिवतषत रूर ह ै इस वसिान् त म दो रकरितषन हए- ु (i) वमलर ने स् िवकार वकया वक कठा से हमके ा आक्रामकता उत् रन् न नहीं हो तव अवरत कठा के ु ु ु ं ं प्रवत की तई अनेक अनवक्रयाओ म से हमके ा आक्रामकता एक ह ै ु ं (ii) बाकिी ि1965) ने कहा वक कठा से आक्रामक व् यिहार सवधे उत्र न् न नहीं होते ह ै बव्क ु कठा व् यवक्तम आक्रामक व्यिहार करने के वलए कए तत् ररता उत्र न् न कर दते ा ह ै ीी एक ु ऐसव सिावे तक वस् ावत हो तव ह ै वीसे क्रोध की स् ा दव ीातव ह ै इस क्रोध से व् यवक्तआक्रामक ं ं हो ीाता ह ै दसरव तरर ि ातिार म व् यवक्त को कछ ऐसा सके त वमल ीाता ह ै वीससे ु ं ू उसकी वछरव आक्रामकता र्् ा क उठतव ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 15 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 सों ान्ी सवख ा न्सद्धाति - इस वसिान् त का सारतत्ि यह ह ै वक व् यवक्त अन् य व् यिहारों के समान आक्रामकता को र्व सवखता ह ै रर साा हव साा यह र्व सवखता ह ै वकन-वकन अिस् ाओ म ऐसव ं आक्रामकता की अनवक्रया ावछत लक् य को प्रात त करने म मदद करतव ह ै अत: आक्रामक व् यिहार एक ु ं सवखा तया व् यिहार होता ह ै इस वसिान् त के आधार रर तवन प्रश्न ों का उत्त र वमलता ह ै- (1) आक्रामकता की उत् रवत्त के स् रोत क् या ह म्य स् रोतवनम् न ह- ु (i) रश्त्य क्ष न् दायिदेश – कर्व-कर्व व् यवक्त को आक्राम व् यिहार के वलए प्रत्य ् वनदकदेश वदये ीते ह उदा0 यि म सैवनकों को आक्राम व् यिहार वदखाने का वनदकदेश वदया ीताह ै तब सैवनक ु आक्रामकता वदखाता ह ै (ii) रश्त्य क्ष और रन्ट सवख ा – आक्रामकता के प्रमख स् रोत म प्रयत्न एि रवट सवखना प्रमख ु ु ु ु ं माना ीाता ह ै उदा0- ीब एक बच् चा दसरे बच् च े रर आक्राम करता ह ै रर यवद ि ह ू बच् चा नहीं ्रात राता तो ि ह विक होकर रवटन ि आक्रामकता) वरर से सामने आतव ह ै तो ि ह बालक उसव व् यिहार को वदखाता ह ै (iii) रश्ेक्ष ात् ें े सवख ा – यह र्व आक्रामकता का प्रमख स्त्रोत ह ै

Quotes detected: **0%** id: **40**

‘बन्डरा के अनसार’

ीब ु ू ु व् यवक्त दसरों को आक्रामक व् यिहार करते दखे

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **41**

ता ह,ै तो िह र्व िसै ा हव करना प्रारर् कर ं ू दते ा ह ै बन् डरा के अनसार प्र े ात् मक सवखना ीविन रयषन् त ुवटत होता रहता ह ै सामान् य ू ु ीविन म र्व इस प्रकार क

े स् रोत दखे ने को वमलते ह ीसै े- रकरिार म उरल्ध मीडल, चलवचर एि दरदकनष रर वदखलाए ीने ं ू िाले आक्रामकता के ष्य , वक् सस् ान एि अन् य व् यिसायों के सामावीक सन् दर् ष म ं ं उरल्ध मीडल आवद (2) ्रामों े व् यनहार ै उत्ि ीं ेरे- (i) न्नरून्ि न्नवि – दखदायव, कष्ट टकर ताा कवठत अनिों से व् यवक्त न के िल सिावे तक ु ु ं ं ु रूर से उत्त ेवीत हव होता ह,ै बव्क उसम आक्रामकता की र्व प्रिवत्त उत् रन् न होतव ह ै ृ (ii) न् दायिदेश – वकसव के द्वारा आक्रामकता प्रदकनष करने के बाद वनदकदेश वदये ीने रर व् यवक्त आक्रामकता का प्रदकनष करता ह ै (iii) रश्ेक्ष – ीब व् यवक्त वकसव के आक्रामक व् यिहार का प्र े करता ह ै तो उसम िसै ा हव आक्रामक व्यिहार करने की प्रेर ा उत्र न् न हो ीातव ह ै उदा0- टव0ि0 रर आक्रामक वचर/ष्य दखे कर बच्च े िसै ा हव प्रदकनष /व् यिहार करते ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 16 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 (iv) रश्ोत् साह या परस् ोर न्ें ल े ीं ्शा – बण् डरा ि1963) के अनसार, आक्रामक ु ू ु व् यिहार को व् यवक्त बाध् य रनबष लन, आत् म–रनबषलन ताा स् ानारन् न रनबषलन के आधार ु ु ु रर सवखता ह ै ्रामों ि ि न्हसा े ोर – ां ितषमान म चारों तरर समी म वहसा, अरीकता एि आक्रामकता रै लवहई ह ै इसके ं ं प्रमख कार वनम् नित ह ै ु (1) अनैयन्गिो-न्ीनाडो (1969 ि डाइ र (1969 े अ सार, अियै वक्तकता से व् यवक्त ु म आत् मचेतना कम हो ीातव ह ै ताा नकारात्म क म याकन का डर समात त हो ीाता ह ै वीसकी ू ं िह से व् यवक्त आक्रामक एि समी विरोधव व् यिहार अवधक करने लतता ह ै ं (2) भौन्ि नािानर – र्शवतक ितिार की आक्रामकता की ि करता ह ै ीसै े- कोलाहल, ृ तारमान आवद तारमान या कोलाहल म ि होने व् यवक्त की आक्रामकता बढ़तव ह ै कर्व- ृ कर्व कसदायक उच् चस् तरवय तारमान से आक्रमकता की मारा म कमव र्व आतव ह ै (3) व् यन्गति ेार – कम बवि ररन् त लबे डवल-डशल व् यवक्त अवधक आक्रामक होते ह क् योंवक ु ु ं ि े काम करने म स्म नहीं होते लेवकन उनका करवर उनकी आक्रामक व् यिहार के अनकल होता ु ू ह ै (4) रश्त्य क्ष ेे-! – वकसव बालक या व् यवक्त को यवद रोक-टोक की ीाए तो उसम आक्रामकता बढ़तव ह ै तवन ि1968)ने अरने अध् ययन म राया वक यवद प्रयोत्य ों रर काव्दक रूर से आक्रम वकया ीाता ह ै तो इसस उनम आक्रम करने िाले व् यवक्त के प्रवत आक्रामकता उस रकरवस्ावत की तलना म बढ़ ीातवह ै वीसम उन् ह वसरष कवठत वकया ीाता ह ै ु ु (5) उत् ीं स् ि र –कछ व् यवक्तयों म सामान् य व् यवक्तयों की तलनाम उत् तीना स् तर अवधक होता ह ै ु ु कछ स् रोत ीसै े कारवकरक व् यायाम, कछ प्रकार के चलवचर, लैवतक रूर से उत् तीक वचर आवद ु ु ं से ीब व् यवक्त उत्त ेवीत होतव ह ै तो िह अरने उत् तीन के कार समेने के वलए ताा उसे ितीकत करने के वलए ितिार म सके त खीना प्रारम्भ कर दते ा ह ै यवद व् यवक्त की उत्त ीना ृ ं को अनप्रयक् त ढत से विर्क् त वकया ीाए तो ये स्त्रोत व् यवक्त म यादा आक्रामकता उत्र न् न करता ु ु ं ह ै (6) ेठाग्रस् ि व् यनहार ेा उ े य – आक्रामकता को प्र ावित करने म कठा र्व एक कार ह ै ु ु ां ं कठा व् यवक्त म आक्रामकता तर्व उत्र न् न करतव ह ै ीब कठा म स् रोत व् यिहार का उद्दश् े य हव कछ ु ु ु ं ं ऐसा

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 4 resources! id: **42**

होता ह ै व् यवक्त म आक्रामकता की ि ाना तब उत्र न् न नहीं होतव ीब व् यवक्त को इसके स्त्रोत की ीानकारव हो ीातव ह ै (7) नािानर ें ्रामों ि- ितिार म कछ ऐसे तत् ि मशीद होते ह वीनसे मनष्ट य म ु ू ु आक्रामकता बढ़तव ह ै ीसै े-ितिार म हवायार की उरवस्ावत से आक्रामकता बढ़तव ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 17 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 (8) ें न्दायिरा एन ें ादायि औषन्धयों ा रश्भान – ऐसे व् यवक्त ीी मादक रदााष एि मादक रषवधयों ां ं का सिेन अवधक करते ह उनम आक्रमकता अवधक राई ीातव ह ै इसके विररवत ीी मादक रदाा् का सिेन नहीं करते उनम आक्रमकता की कमव राई ीातव ह ै अभ्यास रश्न 8. उम्र रिषग्रह का कार नहीं ह ै िसत् य/असत्य) ू 9. साम्प्रदावयक् ता द्वन् द्व का कार ह ै िसत् य/असत्य) 10. वहसा र्शवतक ितिार से प्र ावित होतव ह ै िसत् य/असत्य) ं 1.6 रयषवनार ीय सरोकार मा वना अवना् प्रकृ क्तत की त य ो य ाक्तित प्रकवत ीविन का आधार ह ै प्रकवत के वबना मानि ीविन की क्रना र्व नहीं की ी सकतव ह ै प्रकवत से ृ ृ ृ हम खाने के वलए ्रीोन,रवने के वलए रानव ताा रहने के वलए आिास वमलता ह ै अाषत हम प्रकवत रर ृ र तष या वनर्रष ह,ै अत: हम प्रकवत का सर् करनाचावहए प्रकवत के सर् हते मनष्ट य हव प्रयास करता ृ ृ ू ु ु ं ं ह ै इस प्रकार प्रकवत र्व मानि रर आवित ह ै प्रकवत मानिसे िष्ट ठ ह ै ररन् त ितषमान म ्ान-वि ान के ृ ृ ु चलते मनष्ट य प्रकवत का विनास कर रहा ह ै िह अरनव कवक्त के नक े म यह र्ल बैठा ह ै वक प्रकवतके ृ ृ ु ू विनाक से उसका र्व अतत: विनाक होता अत: वक्ा ितषमान म यह व् यिस् ा करतव ह ै वक कै से इन दोनों ं के बवच सतलन स् ावरत वकया ीाए मानि प्रत्येक प्रकार के वक्रयाकलारों के वलए रयाषिर रर वनर्रष ह ै ु ं मानि एक कलाकार के रूर म रयाषिर द्वारा प्रदत्त रतमच रर कायष करता ह ै कहीं रयाषिर उसे प्र ावित ं ं करता ह ै तो कहीं िह उसके साा अनकलन ताा रकरितषन करता ह ै इसे रयाषिर समायोीन र्व कहते ु ू ह व्हाइट रर रैनर ने र्शतोवलक रयाषिर के महत्ि को वनम्न क्दों म व्यक्त वकया ह-ै “र्शवतक ितिार मानि के ब्रा े समहों को स्रसतः प्रत्य् रूर म रर प्रावमक तरवके से प्र ावित ू करता ह ै प्रत्येक समह, ीनीावत, राय, राष्टर रर ि्व के सर्व साम्राय इसके द्वारा सवधे तशर रर ृ ू सरलता के साा वनरन्तर रूर से प्र ावित होते ह मानि की कोई र्व ब्रा व महत्ि र ष वक्रया वबना इसकी ू सहायता के , वबना इसकी रुकिाटों रर

वनदकदेश ों के स्ितन्त्र नहीं ह ै प्राकवतक रयाषिर मानि समाी के ृ वलए िहव करता ह ै ीी सामावीक रयाषिर व्यवक्ततत मनष्टय के वलए " मानि रर श़ा न े िाले र्शतोवलक ु प्रिर्ों को चार िव यों म विर्क्त वकया ीा सकता है- i) प्रत्य् र्शवतक प्रिर्ा, ii) मानवसक प्रिर्ा, iii) आवाषक रर सामावीक प्रिर्ा, ताा iv) मानि की ं तवतयों को प्र ावित करने िाले प्रिर्ा प्रत्य् र्शवतक प्रिर्ा- रयाषिर के सर्व तत्िों म ीलिाय का प्रिर्ा सबसे अवधक महत्िर ष ह ै ीी ु ू मानि को प्रत्य् रूर से प्र ावित करता ह ै ीलिाय का प्रिर्ा प्राकवतक िनस्रवत रर वमकियों द्वारा ृ ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 18 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 मनष्टय रर श़ा ता ह ै ीलिाय का प्रिर्ा मनष्टय के कद, करवर की बनिाट, रत, आवद रर श़ा ता ह ै इसव ु ु ु ं प्रकार रयाषिर मनष्टय की कारवकरक कवक्त को र्व अप्रत्य् रूर से प्र ावित करता ह ै वीससे उसके करवर ु का एक ात दसरे की अरे ा अवधक सष्ढ़ रर बवलष्ठ बन ीाता ह ै ु ू मानवसक प्रिर्ा- इस प्रकार के प्रिर्ा मनष्टयों के धम ष उनके सावहत्य, ाषा, आचार-विचार म वदखायव दते े ु ह मनष्टय के धावमकष विचार उसके रयाषिर की हव उरी ह ाषा रर र्व रयाषिर का प्रिर्ा रहता ह ै ु आवाषक रर सामावीक प्रिर्ा- वकसव स्ाान की र्शतोवलक अिस्ााए ुँ हव इस बात का वनधाषर करतव ह वक िहाुँ आिश्यक िस्तओ की प्रावसे सरलता से होतव अिा कवठनाई से, िहाुँ वकस प्रकार के उद्योत ु ं स्ाावरत वकए ीा सकते ह इस प्रकार के प्रिर्ा हव मानि समाी के आकार को, वनधाषकरत करते ह वीन ्ेरों, द्वरों या रितष वय ातों म आवाषक ससाधन कम मारा म राए ीाते ह, िहा मनष्टय र्व छोटे समदायों ु ु ं ं म राए ीाते ह, क्योंवक उन ्ेरों म उनके वलए उरयक्त रयाषिर नहीं वमलता ु मानि की तवतयों को प्र ावित करने िाले प्रिर्ा- मानि समह के आिास-प्रिास को र्शवतक रयाषिर के ू सर्व तत्ि विवकस एि अनेक प्रकार से प्र ावित करते ह इनके अन्ततत ष रहा ों, मरुस्ालों, दलदलों, ं समिों, आवद का प्रिर्ा मानि के प्रिास रर श़ा ता ह ै ये सर्व उसके मात ष का वनधाषर करते ह, उसे ु सहयोत अिा असहयोत दते े ह उदाहर ाष, मानि ने नदव मातों का यातायात के साधनों के रूर म उरयोत वकया, वीससे अनेक मानि ीावतयों ने दर-दर ीकर अरनव बवस्तया स्ाावरत कीं रितष अिरोध ं ू ू उत्रन्न करते ह ारतिष ष के उत्तर म वहमालय रितष ने मध्य एवकया से सम्रकष को सदिै रोकने का प्रयास वकया ह ै अरन े र्शवतक रयाषिर के साा मानि का सामीस्य अत्यन्त प्राचवनकाल से चला रहा ह,ै ं ीबवक िह रत्ार यत म ाा इस यत म मनष्टय ने अरनव स ा के वलए ुर बनाने, प्रकवत की िस्तओ का ृ ु ु ु ु ु ं ्ीन के रूर म उरयोत करने, रत्ार को काट-छाट, वुसकर रीर बनाने, ीतलव रकओ को रालत ु ू ं ं ं बनाने, ीाद आवद रर विश्वास करने रर सामवहक रूर से स ा आवद करने के रूर म मनष्टय ने अरने ू ु ू ू सास्कवतक रयाषिर को ीन्म दने े म योत वदया ह ै तर्व से मनष्टय र्शवतक रयाषिर के साा सामीस्य ृ ु ं ं करता रहा ह,ं मनष्टय ने वि्ान, तकनवकी ्ान रर आवाषक वक्रयाओ म ब्रा े महत्िर ष रकरितषन करके ु ू ं अरने को र्शवतक रयाषिर के साा सामीस्य करने की रववतयों म ब्रा ा प्रसार वकया ह ै

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindipunjab.com/र-के-विभिन्न-रूप id: **43**

इस प्रकार ं सामीस्यों को प्रधानत: तवन िव यों म रखा ीा सकता है- आवाषक, सामावीक एि सास्कवतक रर ृ ं ं ं रीनववतक 1.आवाषक समीन इस प्रकार

का अनकलन समाी द्वारा कायषप्रवतमानों के रूर म वकया ीाता ह ै मनष्टय ु ू ु ं कशन-सा कायष करता ह ै यह उसकी इच्छाओ, विचारों रर उसकी ककलता रर वनर्ष करता ह ै मोटे तशर ु ं रर यह बात र्शवतक रयाषिर म वमलने िालव सम्रदा द्वारा प्र ावित होतव ह ै आवाषक समीन म्यतः ु ं चार िव यों म बाुँटे ीा सकते ह- उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 19 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2. सामावीक एि सास्कवतक समीन - मानि समाी अरने र्शवतक रयाषिर के साा इस प्रकार का ृ ं ं ं सामीस्य र्व स्ाावरत करता ह ै इसके अन्ततत ीनस्या का ुनत्ि, र्वम रर स्िावमत्ि, सामावीक ितष, ू ं ं रकरिार, समाी-सम्बन्ध, आवद बात सवम्मवलत होतव ह इसव प्रकार के समीन म मनष्टय के व्यिहार एि ु ं ं आदत , उनका स्ायव ीमिा ि ुमक्का ीविन, उसके िस्त्र, ्ीन, ुर, आचार-विचार, धावमकष विश्वास ु एि आस्ाए, कला, आवद बातों का र्व समिोक वकया ीाता ह ै ं ं 3. रीनववतक समीन- मानि समाी अरने र्शवतक रयाषिर से नातकरक ताा रीनववतक समीन र्व ं ं स्ाावरत करता ह ै इस वक्रया के अन्ततत स्ानवय, प्रान्तवय या राष्टरवय सरकारों की स्ारना, अन्तराषष्टरवय सम्बन्ध, सैन्य नववतया ताा अन्तराषष्टरवय कानन आवद की व्यिस्ाा सवम्मवलत होतव ह ू ं अभ् यास रश – 11. मानि रर श़ा ने िाले र्शतोवलक प्रिर्ों को बताओ 12. मानि एक कलाकार के रूर म रयाषिर द्वारा प्रदत्त रतमच रर कायष करता ह ै िसत्य /असत्य) ं ं 1.7 सारि् वक्ा के द्वारा व् यवक्त, समाी रर राष्ट र सर्व का विकास होता ह ै वक्ा व् यवक्त को अरने ीविन के उद्दश्े य ों को प्रात त करने योग्य बनातव ह ै वक्ा मनष्ट य का सामीवकर करतव ह,ै सामावीक वनयन् र ु रखतव ह ै रर सामावीक रकरितषन करतव ह ै वक्ा का कायष्ेर अत् यन् त विस् तत ह ै मानि या समाी का ृ कोई ऐसा रहल नहीं ह ै वीस रर वक्ा विचार न करतव हो वक्ा के लक् य व् यवक्त, समाी एि राष्ट र के ू ं वहतों को ध् यान म रखकर वनधाषकरत वकये ीाते ह ितषमान म ग् लोबलाईकन का दशर चल रहा ह ै ऐसे म वक्ा अन् तराषष्ट रवयता रर र्व विचार करतव ह ै अाी प्रत्य ेक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 7 resources! id: **44**

राष्ट र की वक्ा व् यिस् ाा म व् यवक्त, समाी, राष्ट र एि अन् तराषष्ट रवयता को स्ा ान वदया ीाता ह ै ं वकसव र्व दके के वक्ा के उद्दश्े य व् यवक्त, समाी एि राष्ट र

को ध् यान म रखकर वनधाषकरत वकये ीाते ह ं क् येावक व् यवक्त समाी म रहता ह ै रर समाी ि यवक्त से बनता ह ै व् यवक्त के व् यवक्तत्ि का विकास समाी म ं होता ह ै ऐसव वस्ावत म व् यवक्त समाी की अिहले ना नहीं कर सकता दसरव ओर हम दखे ते ह वक समाी ू व् यवक्तयों का समह ह ै वबना व् यवक्तयों के समाी की कर ना करना उतना हव ्ामक ह ै वीतना वक समाी ू के

बतरै व् यवक्त की क्र ना करना व् यवक्त अरनव कवक्त रर ककलता को राष्ट र या समी बनाने म व् यय ु करता ह ै रर राष्ट र या समी उन उवचत रकरवस्ावतयों की व् यिस् ाकरने म सलग् न करता ह ै वीसम व् यवक्त ं अरने व् यवक्तत्ि का सीितव विकास कर सके वक्ा के ियवक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय ं उद्दश्े य एक दसरे के विरोधव नहीं ह ै अवरत एक दसरेके ररक ह ितषमान म ग् लोबलाइीके न कर दशर ह ै तो ु ू ू ू वक्ा म अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य ों को र्व ध् यान रखा ीाता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 20 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वक्ा के ियै वक्तक उद्दश्े य के के न ि म व् यवक्त होता ह,ै ीबवक वक्ा के सामावीक उद्दश्े य के के न् ि म समी होता ह,ै वक्ा के राष्ट रवय उद्दश्े य के के न् ि म राष्ट र हो ता ह ै ीबवक अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य के के न् ि म ररा विश् ि होता ह ै अत: हम वक्ा के इन सर्व काय् के ा एक दसरे के विरोधव नहीं ू ू अवरत ररक मान सकते ह ै ु ू द्वन् द्व – ीब कोई व् यवक्त अरने लक् य को प्रात त करने म रूकिाटों का सामना करता ह ै तो िह तनिाग्रस् त हो ीाता ह ै यह अक्स र व् यवक्त म द्वन् द्व रर वनराका की ि्राना रैदा करता ह ै प्रबल वनराका वमलने के कार यह द्वन् द्व रर र्व तनिार ष हो ीाता ह ै आमतशर रर व् यवक्त द्वन् द्व म तब ग़ ीाता ह ै ीब उसके सामने ू ररस् रर विरोधव रकरवस्ा वतयी ं हो क्द अग्रीव क्द प्रीवडस का वहन् दव रूरान् तर ह ै इस क्द को लैवटन ाषा प्रीवडवसयस से वलया तया ह ै ु ु ं वीसका अाष ह ै िह वन यष ी रि ष वनश् चयों रर वनर्रष ह ै प्रीवडस क्द का अाष िह व् यवक्त ी धमयष ा ू ु ीावत ि वलत के कार वकसवको ना रसद करना अन् य क्दोंम इसका अाष िह वन षय ी त् यों के ं ं अरेव्त ररव्ा से रि ष कर वलया तया हो एक अरकररक् ि या ी् दव म ्रात वलया वन षय रिषग्रह एक ू ू रिकष व्रत विके हवन वन यष हौ ू आक्रामकता मेयसष ि1988) के अनसार,

Quotes detected: **0%** id: **45**

‘’

आक्रामकता एक ऐसा कारवकरक या काव्दक व् यिहार होता ह ै ु वीनका उद्दश्े य दसरों को चोट रहचुँ ाना होता ह ै

Quotes detected: **0%** id: **46**

‘’

अत: आक्रामकता उद्दश्े य के साा की ीातव ह ै ू वबना उद्दश्े य के नहीं प्रकवत ीविन का आधार ह ै प्रकवत के वबना मानि ीविन की क्रना र्व नहीं की ी सकतव ह ै प्रकवत से ृ ् ृ हम खाने के वलए ्रीोन,रवने के वलए रानव ताा रहने के वलए आास वमलता ह ै अाषत हम प्रकवत रर ृ र तष या वनर्रष ह,ं अत: हम प्रकवत का सर् करनाचावहए प्रकवत के सर् हते मनष्ट य हव प्रयास करता ृ ृ ू ु ु ं ं ह ै इस प्रकार प्रकवत र्व मानि रर आवित ह ै प्रकवत मानिसे िष्ट ठ ह ै ररन् त ितषमान म ्ान-वि्ान के ृ ृ ु चलते मनष्ट य प्रकवत का विनास कर रहा ह ै िह अरनव कवक्त के नक े म यह र्ल बैठा ह ै वक प्रकवतके ृ ृ ु ू विनाक से उसका र्व अतत: विनाक होता अत: वक्ा ितषमान म यह व् यिस् ाा करतव ह ै वक कै से इन दोनों ं के बवच सतलन स् ाावरत वकया ीाए मानि प्रत्येक प्रकार के वक्रयाकलारों के वलए रयाषिर रर वनर्रष ह ै ु ं मानि एक कलाकार के रूर म रयाषिर द्वारा प्रदत्त रतमच रर कायष करता ह ै कहीं रयाषिर उसे प्र्रावित ं ं करता ह ै तो कहीं िह उसके साा अनकलन ताा रकरितषन करता ह ै ु ू 1.8 तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. स् ामिव विके ानन् द 2. सत्य 3. असत् य 4. सत्य उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 21 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5. सत्य 6. असत्य 7. सत्य 8. असत् य 9. सत्य 10. सत्य 11. मानि रर ग़ ने िाले र्शतोवलक प्रि्रों को चार ि्वयों म विर्क्त वकया ी सकता ह- i) प्रत्य् र्शवतक प्रि्रा, ii) मानवसक प्रि्रा, ं iii) आवाषक रर सामावीक प्रि्रा, ताा iv) मानि की तवतयों को प्र्रावित करने िाले प्रि्रा 12. सत्य 1.9 स्दर् य ग्रथ सची ू 1. खान,ि्सवम अहमद ि2010), सामावीक मनोविान, नई वद् लव, वडस् किरव रव्लके कन हाउस प्राइिटे वलवमटेड 2. लाल, रमन वबहारव ि2012), वक्ा के दाकवष नक एि समीकास् रवय वसिान, मरे ठ रस्त ोतव ं रव्लके कन 3. कमाष, योतके कमार : कमाष, मधवलका, ि2008), वक्ा के समीकास् रवय आधार नई वद् लव, ु ु कवनष्ट क रव्लकसष, वडस् ट०यटसष ु 4. Aggarwal. J. C. (1992). Development and Planning of Modern Education: New Delhi Vikas Publishing House Pvt. Ltd. 5. Anand, S. P. (1993).The Teacher & Education in Emerging Indian Society, New Delhi: NCERT. 6. Biswas. A. (1992). Education in India, Arya Book Depot. New Delhi 7. Biswas. A., & Aggarwal, J.C. (1992). Education in India, Arya Book Depot New Delhi. 8. Chandra, B. (1997). Nationalism and Colonialism, Orient Longman: Hyderabad. 9. Deshpande, S. (2004). Contemporary India: A Sociological View. Penguin: New Delhi. 10. Dubey, S. C (2001). Indian Society, National Book Trust: New Delhi. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 22 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 11. Jagannath. M. (1993). Indian Education in the Emerging Society, New Delhi Sterling publishers Pvt. Ltd. 12. Sapra. C. L., & Aggarwal, A. (1987): Education in India some critical Issues. New Delhi: National Book Organisation. 13. Saraswathi, T. S. (1999). Culture, Socialization and Human Development, New Delhi: Sage Publications. 14. Steven, B. (1998). School and Society, New Delhi: Sage Publications. 15. Weber. O.C. (1990). Basic Philosophies of Education, New York Holt, Rinehart and Winston. 1.10 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. व् यवक्ततत ीविन, सामावीक ीविन, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय स् तर रर वक्ा के कायों की ं विचे ना कीवीए 2. वक्ा के ियै वक्तक, सामावीक, राष्ट रवय एि अन् तराषष्ट रवय उद्दश्े य म समानता ताा अन् तर का ं विश्लेष कीवीए 3. द्वन् द्व से आर क्या समेते ह वद्वन्द के प्रकारों ् ोतों एि कार ों की विचे ना कीवीए ं 4. रिषग्रह, आक्रामकता एि वहसा के स् रोत एि कार का ि नष कीय े ु ं ं ं 5. रयाषिर वय सरोकार म मानि एि प्रकवत की अन् योन् यावित की विचे ना कीवीए ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 23 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 3 - व्यक्तिगत न सामूक्तिहक न; अ रनैयक्तिगक, सा प्रदाक्तियक ा ा राष्टरवय स दर् म द्वै ा ा द्व द कव य अनधारणा 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 स्ि की अिधार

ा 3.3.1 स्ि के प्रकार 3.3.2 व्यक्ततत स्ि 3.3.3 सामवहक स्ि ू 3.4 द्वतै ताा द्वद ं 3.4.1 द्वतै एि द्वद की अिधार ा ं ं 3.4.2 द्वतै एि द्वद: अतर ियक्तक सदर्ष ं ं ं ं 3.4.3 द्वतै एि द्वद: साप्रदावयक सदर्ष ं ं ं ं 3.4.3 द्वतै एि द्वद: राष्टरवय सदर्ष ं ं ं 3.5 साराक ं 3.6 क्दिालव 3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.8 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 3.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना ा ितषमान समय म प्रत्येक मनष्टय स्ि य से लतातार सुषष कर रहा ह ै आधवनक समाी म आते बढन े की ु ु ं ं हो़ा म मनष्टय इतना व्यस्त ह ै वक कहीं न कहीं िह अरने स्ि अाषत आत्म के विषय म नहव समे या ु सोच रा रहा ह ै स्ि की रहचान से हव हमारव रहचान होतव ह ै ीब तक हम स्ि य अरने विषय म नहव ं ीान ते तब तक रकरिार, समह, या समाी हमारे विषय म नहव ीान सकता व्यक्ततत स्ि ताा समवहक ू ू स्ि का हमारे व्यक्तत्ि विकास के साा-2 रहचान म र्व म्य र्वमका होतव ह ै स्ि का ्ान हव हम ु ू समायोीन म मदद करता ह ै इस स्ि की रहचान हते हव कर्व-2 मनष्टय के मन ताा चेतना म द्वतै की ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 24 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ि्राना ीन्म लेतव ह ै तत्रश्चात द्वद की वस्ावत उत्रन्न हो उठतव ह ै ये द्वद की वस्ावत ीब विकराल रूर ं ं लेतव ह ै तब इसको हम अतियवक्तक द्वद के रूर म अाषत दो लोतों के मध्य उत्रन्न द्वद महसस करते ह ै ू ं ं ं कर्व-2 यहव द्वद की वस्ावत साप्रदावयक रूर ले लेतव ह ै अाषत ीब इसे धावमकष मान्यताओ से ीा़ दते े ह ै ं ं ं तो समाी म अवस्ारता ताा द्वद उत्रन्न हो ीाता ह ै राष्टरवय द्वद , राष्टर म अिा राष्टरों के मध्य वकसव ं ं बात रे एक मत न होने से इस

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **47**

प्रकार का द्वद उत्रन्न हो ीाता ह ै वीससे कावत र्त होतव ह ै ताा उसम रहने ं ं ं िाल लोतों की म्य आधाकरत विचारों का र्व हनन होता ह ै व

ीसके उररात उनके अदर हव अदर ू ं ं ं अविश्वास ताा बदले की ि्राना प्रबल होने लततव ह ै प्रस्तत इकाई म स्ि की अिधार ा ताा द्वद एि ु ं ं द्वतै को अतर ियै वक्तक, साम्प्रदावयक एि राष्टरवय सद ों म समेने का प्रयास कर त े ं ं ं 3.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उररात आर यह स्रस कर सक ते वक ं 1. स्ि क्या ह ै ताा उसके वकतने प्रकार ह?ै 2. व्यक्ततत स्ि ताा सामवहक स्ि म क्या अतर ह?ै ू ं 3. द्वतै ताा द्वद की अिधार ा क्या ह?ै ं 4. अतरियै वक्तक द्वतै ताा द्वद की अिधार ा क्या ह?ै ं ं 5. साप्रदावयक द्वद की अिधार ा क्या ह?ै ं ं 6. साप्रदावयक द्वद के प्रमख कार क्या ह? ु ं ं 7. साप्रदावयक द्वद को कम कने के क्या उराय ह? ं ं 8. राष्टरवय द्वद की अिधार ा क्या ह?ै ं 3.3 स्वना की तवनाधार ा स्ि, एक व्यवक्त द्वारा एक हव व्यवक्त के वलए एक सदर् ष ह ै यह सदर्ष आिश्यक रूर से व्यवक्तररक ह ै ं ं व्यवक्त रकरप्रेक्य अरने व्यवक्ततत रहचान को आत्मवनष्ठा से अलत करता ह ै तवरका वि्रान म आत्म या ं स्ि, इनलसा मवस्तष्टक म एक ्ेर ह,ै ी मवस्तष्टक की वनओकोवटषकल की सतह के नवचे आलोकोटदेशक्स म ू वस्ात होता ह ै दकनष के अनसार, स्ि वकसव व्यवक्त के वलए िह आिश्यक त ह ै ी उस व्यवक्त को ु ु विवकसता प्रदान करता ह ै अिा विकेष बनाता ह ै व्यवक्त की विवकसता हते आिश्यक त ों की व्याया ु ु हते अने

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 4 resources! id: **48**

क प्रकार के उरातम उरवस्ात ह ै स्ि रर विचार करने से हमारे अदर चेतना का सचार होता ह ै ु ं ं व

्यवक्त के विचार ताा वक्रयाएँ उसकी प्रकवत वनधाषकरत करतव ह ै ताा साा हव साा समय के साा चेतना ृ का सचार र्व करतव ह ै मनोवि्रान के अनसार स्ि, वकसव व्यवक्त की व्यवक्ततत रहचान का स्ानात्मक ु ं ं या ि्रात्मक र् का प्रदकनष ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 25 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.3.1 स्र ै रश्ोर स्ि रुँच प्रकार का होता ह ै – i. ररर्न्स्ि्ी स्र :- इस प्रकार का स्ि, र्शवतक ितिार के सबध म दखे ा ीाता ह ै अाषत ं ं व्यवक्त वीस ीतह रर ह ै ताा वीस तवतविवध म वलसे ह ै उसव रकरप्रेक्य म उसके विषय म समो ीाता ह ै ii. अिर नैयन्गे स्र :- इस प्रकार का स्ि का रूर आरवर्क ककै ि्रास्ा से प्रकट

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 2 resources! id: **49**

होता ह ै ीसै ा ां ं वक रकरवस्ावतकी स्ि म होता ह ै यह व्यवक्तयों के मध्य के ुवनष्ठता को प्रदवकतष करता ह ै iii. न्रस्ाररि स्र :- यह स्ि म्य रूर से हमारे व्यवक्ततत चेतना ताा रि ष ्ान रर आधाकरत होता ु ू ह ै यह

अनि्र् कराता ह ै वक मै िह व्यवक्त ह ुँ वीसके रास कछ वनवश्चत अनि्र् ह ै ी वक व्यवक्त ू ु ु ु को वनयवमत रूर से कछ वनवश्चत विवकस वदनचया ष से ी़ा ता ह ै ु iv. न् ीव स्र :- इस प्रकार का स्ि सिप्रष ाम उस समय प्रकट होता ह ै ीब बच्चों द्वारा यह अनि्र् ु वकया ीाता ह ै वक उनके द्वारा प्रत्य् वकया ी़ा रहा अनि्र् दसरों के साा नहीं बाटा ी़ा सकता ु ं ू क्यकी दसरे लोत उसे समे नहीं राएत े ीसै े- वकसव विकेष रकरवस्ावत म बच्च वीन वनयमों या ूं ं ू दद ष के बारे म अनि्र् कर रह े ह,ै दसरा कोई उन वनयमों ताा दद ष को महसस नहीं कर रायेता ु ू ू अाषत बच्चों द्वारा अरने वनीव अनि्र् को स्िच्च समो ीाता ह ै ु v. सेल्प ात्ें े स्र :- सक्रनात्मक स्ि को समेने हते स्ि सक्रना के अाष को समेना ु ां ं ं होता ीसै ा वक रर सक्रना के विषय म ीानकारव प्रासे करते ह ै इसका अाष व्यवक्ततत स्ि के ं रकरक्रनाओ ताा इससे सबवन्धत मान्यताओ म अतवनषवहत होता ह ै स्ि को हम व्यवक्ततत ं ं ं ं ं ताा सामवहक रूर म र्व समे सकते ह ै ू 3.3.2 व्यन्गति स्र ेा अिब व्यवक्ततत स्ि, से अवर्प्राय स्ि्चेतन मन से ह ै ी वक हमारे करवर का ि्रह ात ह ै ी इस र्शवतक ससार म ं स्ि य के प्रवत एक विवकस व्यवक्तत्ि के रूर म चैतन्य रूर से ीातरूक ह ै इसव को ि्रस्तवनष्ठ मन की स्ा ु ं ं दव ीातव ह ै व्यवक्ततत स्ि के कार हम व्यवक्ततत ताा ि्रस्तवनष्ठ रूर से स्ि य को अरने आस-रास के ु ं र्शवतक ितिार के अन्य व्यवक्तयों ताा ि्रस्तओ

से अलत अनिर् करते ह ै स्ि चेतन मन, चेतन मन ु ु ं का िह ंरात ह ै ंी हमारे व्यवक्तत्ि स्तर रर कायष करता ह ै ताा स्ि ंीतरूक चेतना का विस्तार करता ह ै 3.3.3 सों न्हे स्न ेा अिब ू सामवहक स्ि, स्ि का िह र् ह ै ंी वक समह म आरकी सदस्यता ताा सह ंरावतता रर आधाकरत होता ू ू ह ै यह स्ि का प्रत्यकर कछ सामावीक ित् के विवनमये नमने के रूर म करता ह ै न वक एक विवकस ु ू व्यवक्त के रूर मे करता ह ै सामवहक स्ि, दसरे के साा हमारे अनशरचाकरक बधन रर आधाकरत होता ह ै ू ं ू यह अनशरचाकरक बधन सामावीक समह मे हमारव व्यासे रहचान से उत्रन्न होता ह ै इस प्रकार के ू ं अनशरचाकरक बधन बनाने के वलए सामावीक समह के लोतों के मध्य प्रताढ़ व्यवक्ततत सबध आिश्यक ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 26 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 नहव ह ै सामवहक स्ि, उन विकषे ताओ से बना होता ह ै वीनके कार वकसव समह म लोत उस विकषे ता ू ू ं के आधार रर रि ष मे उस व्यवक्त से रकरवचत रहते ह ै अ ाषत समवहक स्ि िह सक्रना ह ै ंी वकसव की ू ू ं रहचान को एक समह से दसरे समह म अलत करता ह ै ू ू ू 3.3.4 व्यन्गति ि ा सों न्हे स्न ेा ें हन्न ू व्यवक्ततत स्ि हमारे अदर चते ना का प्रसार करता ह ै ताा यह चेतना हव हमे अरने अदर उरवस्ात ं ं विवकसताओ से रकरवचत करता ह ै ंी हम े कोई विवकस कायष करने के वलए आत्मविश्वास प्रदान करता ह ै ं व्यवक्ततत स्ि के माध्यम से हव हम अरने विषय म र ष रूर से ीान राते ह ै ताा अरने को इस र्शवतक ू ीतत से अलत कर राते ह ै सामवहक स्ि, सामावीक समह म हमारव विकेष रहचान बनाने म सहायता ू ू करता ह ै सामावीक स्ि, समाी म हमारे अनशरचाकरक बधनों ताा वक्रयाकलार का वनधाषर करता ह ै ं अभ्यास रश्न 1. व्यवक्ततत स्ि से क्या तात्रयष ह?ै 2. समवहक स्ि का क्या अ ाष ह?ै ू 3.4 द्वैत तथा द्वद 3.4.1 द्वि एन द्वदायि ेी अनधार ा ां ां द्वतै दो विररवत बलों के मध्य उत्रन्न द्वद के कवक्तयों की विचे ना करता ह ै अ ाषत ंी द्वद उत्रन्न हआ ं ं ह ै ि ह वकस ि व का ह ै उससे सषु ष उत्रन्न होने की क्या स ंिानाए ुँ बनतव ह ै ताा उसम वकतनव प्रबलता ं ं ह ै ये बल एक दसरे के ररक र्व हो सकत े ह ै या तो वकसव रैमाने के दो अलत-2 वसरे र्व हो सकते ह ै ू ू वकन्त हर रकरवस्ावत म इसम सतलन अिश्य स्ाावरत होना चावहए द्वद की वस्ावत से यह आिश्यक नहीं ु ु ं ं वक कोई वियव बन कर वनकल ीाय अ ाषत यह वस्ावत अवनवश्चतकाल तक बनव रह सकतव ह,ै ीबवक द्वतै एक मध्य मातष के रूर म उरवस्ात हो सकता ह ै वीसके द्वारा अन्य ंों रर ध्यान के वन्ित न करते हए द्वद की वस्ावत से ँरर उठ कर स्ि को प्रासे वकया ी सकता ह ै कर्व -2 द्वतै को ररक अ ों म र्व प्रयोत ू ं वकया ीाता ह ै अ ाषत ीब वकसव एक का अवस्तत्ि दसरे के वबना स ंिर् न हो ीसै े करवर के वबना मन का ं ू अवस्तत्ि नहीं ह ै ि सै े हव मन के वबना करवर का क्या अवस्तत्ि द्वद हमारे ीविन का प्रकवतक वहस्सा ह ै हम सर्व समय रर द्वद का अनिर् करते ह ै अवधकाक ृ ु ं ं ं लोत द्वद को नकारात्मक रूर म लेते ह ै ीबवक द्वद न तो नकारात्मक ह ै न हव सकारात्मक ह ै के िल द्वद ं ं ं का रकर ाम अच्छा या बरा होता ह ै यवद हम ककलतारिकष द्वद से वनरट ले तो हम े अवधक अच्छे ु ु ू ं सकारात्मक रकर ाम प्रासे हो सकते ह ै कर्व कर्व द्वद से वनरटने के अनरयक्त तरवके हम े ि ावछत रकर ाम ु ु ं ं तक नहव ले राते अवरत तनिा उत्रन्न हो ीाता ह ै द्वद एक ऐसव समस्या नहव ह ै वीसको नज़रअदाज़ ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 27 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वकया ीाए अवरत एक प्रवक्रया ह ै ंी व्यवक्ततत रर सामावीक प्रतवत को तवत प्रदान करतव ह ै यवद द्वद ु ं से बविमतार ष तरवके से वनरटा ीाए तो यह हमे दसरों के रकरप्रे को समेने म मदद करता ह ै रर स्िय ु ू ं ू की तलवतयों से र्व रकरवचत कराता ह ै रर इस प्रकार व्यवक्त र्विष्टय के द्वद से रर बेहतर तरवके से ं वनरटने हते अरनव योग्यता म ि वि करता ह ै समाी म रर स्िय के अदर कावत स्ावरत करने के वलए ृ ु ं ं ं द्वद से वनरटन े की योग्यता महत्ि र ष ह ै ू ं द्वद हमारे दवै नक ीविन का अिहले ना न करने योग्य र् ह ै द्वद का सामान्य अ ाष ं ं आिश्यकताओ, इच्छाओ, ष्वसको ों रर म्यों की असतवत ह ै वीसका मतलब ह ै वक व्यवक्तयों की दो ू ं ं ं ं ितषमान आिश्यकताओ अि ा लक्यों की रवतष एक साा नहीं की ी सकतव ह ै ीब र्व हमारव धन, ू ं कवक्त रर ससाधनों की आिश्यकताए का वकसव अन्य व्यवक्त की आिश्यकताओ के साा सुषष होता ं ं ं ं तो ि हाुँ रर वनवश्चत रूर से द्वद होता ीब र्व वकसव र्व व्यवक्त के वक्रयाकलार को बावधत वकया ीाता ह ै ं तो ि हाुँ रर द्वद उत्रन्न होता ह ै कर्व- कर्व व्यवक्त यह सोचते ह वक उनके लक्य असतत ह वकन्त ि ास्ति ु ं ं म ऐसा नहीं होता ह ै यह मार उनका प्रत्यकर होता ह ै यह आिश्यक नहीं ह ै वक द्वद हर समय कायष ं अि ा क्दों म अवर्व्यक्त हो कर्व –कर्व यह अव्यक्त र्व हो सकता ह ै द्वद एक ऐसव रकरवस्ावत ह ै वीसम व्यवक्त को दो या दो से अवधक रर्स्रकरक विल् लक्यों की ं प्रावसे हते दो असतत रास्तों के मध्य वन यष लेना श्र ता ह ै विरोधा ंरासव विक्रों म लतर्त समान ु ं आकषष होता ह ै वकसव एक के चनि का अ ाष होता ह ै वक दसरे विक्र को अस्ि वकार करना इस ु ू कार व्यवक्त वहचवकचाता ह ै रर इस दशरान ि ह बहत तनि की वस्ावत म रहता ह ै द्वतै ि द की उत्रवत्त लैवटन क्द के “डओ’ से हई इसका अ ाष होता ह ै “दो” अ ाषत दो ंरातों की ु वस्ावत को दकाषना इस क्द की उत्रवत्त मल रूर से सहकाश्वत, वद्वयाधारवय विर् को वनरूवरत करने हते ू ु हई ह ै द्वतै ि द का अ ाष आध्यात्म म सरव्त ह ै ताा दाकवष नक द्वतै प्रिचनों म व्यासे ह ै वकन्त इसको अन्य ु ं प्रयोतों म लाने के वलए अवधक सामान्यवकत वकया तया ी वक एक प्र ालव की ओर इवतत करे वीसके ृ ं दो आिश्यक ंरात हों द्वतै दो विररवत बलों के मध्य उत्रन्न द्वद के कवक्तयों की विचे ना करता ह ै ं अ ाषत ंी द्वद उत्रन्न हआ ह ै ि ह वकस ि व का ह ै उससे सुषष उत्रन्न होने की क्या स ंिानाए ुँ बनतव ह ै ं ं ं ं ताा उसम वकतनव प्रबलता ह ै ये बल एक दसरे के ररक र्व हो सकत े ह ै या तो वकसव रैमाने के दो ू ू अलत-2 वसरे र्व हो सकते ह ै वकन्त हर रकरवस्ावत म इसम सतलन अिश्य स्ाावरत होना चावहए ु ु ं द्वद का सामान्य अ ाष आिश्यकताओ, इच्छाओ, ष्वसको ों रर म्यों की असतवत ह ै वीसका ू ं ं ं ं ं मतलब ह ै वक व्यवक्तयों की दो ितषमान आिश्यकताओ अि ा लक्यों की रवतष एक साा नहीं की ी ू ं सकतव ह ै ीब र्व हमारव धन, कवक्त रर ससाधनों की आिश्यकताए का वकसव अन्य व्यवक्त की ं ं आिश्यकताओ के साा सुषष होता तो ि हाुँ रर वनवश्चत रूर से द्वद होता द्वद हमारे ीविन का प्रकवतक ृ ं ं ं ं वहस्सा ह ै हम सर्व समय रर द्वद का अनिर् करते ह ै अवधकाक लोत द्वद को नकारात्मक रूर म लेते ह ै ु ं ं ं ीबवक द्वद न तो नकारात्मक

ह ै न हव सकारात्मक ह ै के िल द्वद का रकर ाम अच्छा या बरा होता ह ै ु ं ं 3.4.2 द्वि एन द्वदायि: अिर नैयन्गे सदायिभब ां ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 28 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अतियै वक्तक द्वतै ताा द्वद दो व्यवक्तयों के मध्य अलत-अलत विचार होने के कार उत्रन्न द्वद

Plagiarism detected: **0.1%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 7 resources! id: **50**

ह ै इस ं ं ं प्रकार का उत्रन्न द्वद यह दकाषता ह ै वक व्यवक्त वकस प्रकार से एक दसरे से अलत ह ै प्रत्येक व्यवक्त का ं ू व्यवक्तत्ि अलत अिाा विवकस ह ै ीी की उस व्यवक्त की असतत चयन ताा मतों के वलए वीम्मदे ार ं होता ह ै िास्ति म दखे ा ीाए तो यह एक प्रकार की प्राकवतक ुटना ह ै ीी व्यवक्त को अरने व्यवक्ततत ृ विकास ताा साा हव साा दसरों के साा सबध बनाने म मदद करता ह ै इसके अलिा इस प्रकार के द्वद ं ं ं ू उत्रन्न होने रर समायोीन करने की ्मता आिश्यक होतव ह ै इस प्रकार क

े द्वद मानि अतःवक्रया का अवर्न्न अत होते ह ै ीी वक कावत वनमाष के वलए ं ं ं ं महत्ि र ष माने ीाते ह ै ऐसे द्वद र्व लक्यों, आिश्यकताओ, म्यों, विश्वासों इत्यावद म असतवत के कार ू ू ं ं ं विद्यमान होते ह ै आइये इसको एक कहानव के माध्यम से समेते ह - “यह कहानव एक स्कल की ह ै ुटना म एक िकरष्ठ वक्क रर एक नि प्रिके व वकव्का सवम्मवलत ह ै ू रचना ीी वक उच्च ितष से सबवन्धत ह,ै स्कल की िकरष्ठ, योग्य रर अनर्ि्व वकव्का ह िह अहकारव ू ु ं ं स्ि्रि की ाव रर स्िय को सम्र ष समेतव ाव सनवता र्व योग्य वकव्का ाव वकन्त उसम आत्मविश्वास ू ु ु ं की कमव ाव रर िह एक ऐसे समदाय से ाव वीसका समी म उच्च दीष प्रासे नहीं ह ै िह ईमानदार, ु सवधव वकन्त सिदे नकवल ाव कछ करुआतव िाताषलार के दशरान यह कवनष्ठ वकव्का अरने िकरष्ठ ु ु ु ं वकव्का के काव्दक एि अकाव्दक व्यिहार से आहत हई धवरे- धवरे उन दोनों के बवच आरसव ं अविश्वास रैदा हो तया कछ समय बाद दोनों के बवच बातवचत लतर्त बद हो तयव दोनों एक दसरे रर ु ं ू बहत कठोर रर आहत करने िालव वटतर व करने लतव दोनों अत्यत अव़ा यल रहव यह ुटना स्कल के ू ं अवधकाकरयों के स्ान म आई वकन्त उन्होने इस सबध म कोई कायषिाहव नहव की यहाँु तक वक ु ं ं ं विद्यावाषयों को र्व इस ुटना की ीानकारव होने लतव स्कल के एक वक्क के द्वारा अनसवचत ीावत- ू ु ू ीनीावत प्रकोष्ठ ने इस मामले म हस्त्ेर वकया रर यह खबर समाचार ररों के माध्यम से बाहर प्रचाकरत हई सर्व सबवन्धत अवधकाकरयों रर व्यवक्तयों को इस मामले म कावत स्ाावरत करने म कारी ं ं प्रयास करने ़ा े वकन्त द ाषग्यर ष तरवके से उन दोनों के बवच विद्वषे ीारव रहा ” ु ू ु उररोक्त ुटना म दोनों वकव्काओ का स्ि्रि असतत ाा यह असतवत उनके ष्वसको , म्यों, ू ं ं ं महत्िाका्ाओ म ाव िकरष्ठ वकव्का अरने उच्च आवाषक स्तर रर िकरष्ठता के कार सम्मान चाहतव ं ं ाव ीबवक कवनष्ठ वकव्का अरमान एि अनादर के बारे म स्िय को असरव्त रर सिदे नकवल महसस ु ू ं ं ं करतव ाव इस कार दोनों के बवच द्वद ाा ं कछ अन्य प्रकार के अतर ियवक्तक द्वद र्व ह ीी अन्याय, अरमान, विवर्न्न व्यवक्तयों रर ु ं ं समहों के बवच व्यासे असमानता, धम,ष ाषा रर ीावत के कार र्व उत्रन्न होते ह ीसै े कछ समह रर ू ु ू समदाय सहव या तलत रूर म यह महसस करते ह वक समी, सरकार रर कोई अन्य सस्ा उनके साा ु ू ं न्याय नहीं कर रहव ह ै ि विवर्न्न स्ानों रर धरना, प्रदकनष रर स़ा क ीाम करते ह वीससे कई अन्य लोतों को असविधा होतव ह ै रर ि ना

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 5 resources! id: **51**

री होते ह इस तरह का द्वद हर प्रकार के समी म विद्यमान ह ै ु ं इस प्रकार क

े द्वदों म रनरिावत्त होतव ह ै ताा बार-2 उसको स ालना ़ा ता ह ै ृ ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 29 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.4.3 द्वि एन द्वदायि: सारश्दायिान्ये सदायिभब ां ां ां ां साम्प्रदावयकता से तात्रयष उस सकी ष मनिोवत से ह,ै ीी धमष रर सम्प्रदाय के नाम रर ररे समी ताा ृ ू ं राष्टर के व्यारक वहतों के विरि व्यवक्त को के िल अरने व्यवक्ततत धम ष के वहतों को प्रोत्सावहत करने ताा उन्ह सर् दने े की ि्राना को महत्ि दते व ह ै यह व्यवक्त म अतरराष्टरवय एि सिमष ान्य सत्य की ि्राना के ं ं ं विरि व्यवक्ततत धम ष रर सम्प्रदाय के आधार रर ररस्र ु ा, द्वद, ईष्टयाष ताा द्वषे को ीन्म दते व ह ै यह ृ ं ि्राना अरने धमष के प्रवत अन्ध र्वक्त ताा ररधम ष ताा उसके अनयावययों के प्रवत विद्वषे की ि्राना ु उत्रन्न करतव ह ै ारत म साम्प्रदावयकता

Plagiarism detected: **0.03%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **52**

के विकास म विवर्न्न कार ों, रकरवस्ावतयों एि तत्िों न े ं सवम्मवलत र्वमका वन ारयव ू ारत म साम्प्रदावयकता का विकास र्व इसव प्रकार का ह ै ऐसा नहीं ह ै वक साम्प्रदावयकता का विकास

वसरष ारत म हव हआ ह ै यह र्व उन्हीं रकरवस्ावतयों का प्रवतरल ाा, वीन्होंने दसरे समीिं म ू साम्प्रदावयकता ीसै व ुटनाओ रर विचारधाराओ को ीन्म वदया ाा ीसै े नस्लिाद, सामविाद विरोध, ं ं रासविाद, उत्तरव आयरल ड म कै ोवलक-प्रोटेस्ट ट सुषष या लेबनान म ईसाई-मवस्लम सुष ष ु ं ं साम्प्रदावयकता को उ ारने िाल े तत्िों ने आवाषक वहतों को दरवकनार कर इसे यादा महत्ि र ष बताया ू ताा ीनमानस म इसके वलय े एक व्यारक आधार तैयार वकया ारत म साम्प्रदावयक चेतना का ीन्म उरवनिके िादव नववतयों ताा उसके विरि सुषष करने की ं आिश्यकता से उत्रन्न रकरितषनों के कार हआ विवर्न्न ्ेरों ताा दके के सामावीक, आवाषक रर प्रकासवनक एकीकर , ारत को एक आधवनक राष्टर बनाने की प्रवक्रया, आधवनक सामावीक ितों एि ु ु ं उरितों का वनमाष ताा ारतवयों के बढ़ते हये अतविरष ोध ीसै े कार ों से लोतों म अरने सोा वहतों ं आयामों का विकास ताा नयव रहचानों का वनमाष आिश्यक हो तया उन्नवसिं कताद्व के उत्तरिाष म रीनववत की वीस नयव अिधार ा का ीन्म हआ उससे र्व साम्प्रदावयकता की विचारधारा को बल वमला नए विचारों को ग्रह करने, नई रहचानों ताा विचारधाराओ का विकास करने ताा

सुषष के दायरे को ं ं व्यारक बनाने के वलए लोतों ने ररातन ताा रि-ष आधवनक तरवकों के प्रवत आसवक्त प्रकट की उसने र्व ु ू ु साम्प्रदावयकता की विचारधारा को सकक्त बनाने म मदद की सकी ष सामावीक प्रवतवक्रयिाादव तत्ंिों ने ं साम्प्रदावयकता को र ष समाषन वदया ू यद्यवर धावमकष ता, साम्प्रदावयकता को बहत यादा प्रोत्सावहत करने का मल कार नहीं ाा वकत ू ु ं ंारत ीसै े दके म ीहा वक्ा का अिरा ाा ताा लोतों म बाय ीतत सबधव चेतना ना के बराबर ाव, ं ं ं धावमकष ता ने साम्प्रदावयकता के वलये उत्प्रेरक की र्वमका वनंराय्व ताा ताकवात तत्ंिों म इसे ू साम्प्रदावयकता के िाहन के रूर म प्रयक्त वकया ु साम्परश्दायिान्यिै े न्नास े ेार - उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 30 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 i. सों ान्ी एन ्न्िबे ेार - कालातर म ंारत म बीआष ित ष ताा व्यिसावयक ितष का ु ं उदय हआ उदय की यह प्रवक्रया वहन्द ताा मसलमान दोनों हव सम्प्रदायों म समान ाव सरकारव ु ू सिाओ, व्यिसाय एि उद्योतों म दोनों ितों के मध्य प्रवतद्ववदता अिश्यिरा्व ाव रर धवरे-धवरे यह ं ं ं ं बढ़तव तयव मवस्लम बीआष ितष ने अरने र्ोष हते वहन्द बीआष ितष के विरि, वनम्न ु ु ु ु ु ु ू मध्यितीय मसलमानों को

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.amarujala.com/photo-gallery/uttar-… id: **53**

प्रोत्सावहत वकया ु ंारत के आवाषक वरछ़ा ेरन ताा र्यिह बेरोीतारव ीसै व समस्याओ ने अग्रेिों को साम्प्रदावयकता ं ं को उर्रने ताा अलतिाादव प्रिवत्तयों को प्रोत्स

ावहत करने का र्रर अिसर प्रदान वकया अग्रेिों ृ ू ं ने इस हते व्यवक्ततत त ों, र्रात का उरयोत साम्प्रदावयकता के उत्ाान म वकया इसके साा हव ु ु मसलमानों म आधवनक रीनववतक चेतना के विकास की प्रवक्रया अरे्ाकत धवमव ाव ताा उन रर ृ ु ु ररम्ररातत प्रवतवक्रयिाादव कारक यादा हिाव ो रलतः इस समदाय म साम्प्रदावयक विचारधारा ु को अरनव ीा े ज़माने के वलए उवचत अिसर वमला ii. अग्रेिों ेी फट डालो और शास ेरो ेी वन्ि- प्रारर् म विवटक सरकार ने मसलमानों को ू ु ां ं ककाल ष्वस से दखे ा 1857 के र्विोह रर बहिाव आदोलन के रश्चात तो सरकार की कका उनके ु ं ं ं प्रवत रर बढ़ तयव रलतः अग्रेिों ने मसलमानों के प्रवत दमन ताा र्दे िरा की नववत अरनायव ु ं वक्ा म अग्रेिव ंराषा के प्रसार से अरबव ताा रारसव ंराषाय वरछ़ा तयीं मवस्लम समी म ु ं इसका प्रवतकल प्रिरा यह हआ वक उनम आवाषक वरछ़ा ारन बढ़ा ताा ि े धवरे-धवरे सरकारव ू सिाओ से िवचत होने लत े ं ं 1870 के रश्चात ंारतवय राष्टरिाद के उर्रने ताा निवकव्त मध्यि-त ष के रीनववतक प्रवक्रयाओ ं एि वसितों से रकरवचत होने के कार अग्रेिों ने मसलमानों के दमन की अरनव नववत त्यात दव ताा ु ं ं ं उनम चेतना का प्रसार कर ताा आर् एि समाषन दके र उन्ह उंराारने का प्रयत्न वकया, वीससे ं मसलमानों को राष्टरिादव ताकतों के विरि प्रयक्त वकया ीा सके ु ु iii. भारिवय इन्िहास लेख द्वारा साम्परश्दायिान्यिै ो ढाना - अनेक अग्रेिव इवतहासकारों ने ं वहन्द-मवस्लम रट को बढ़िाा दने े ताा विवटक साम्रायिाद की ीा सष्ढ़ करने के उद्दश्े य से ु ू ु ू ंारतवय इवतहास की व्याया इस तरह की वीससे साम्प्रदावयकता को बढ़िाा वमल सके बाद म विवर्न्न ंारतवय इवतहासकारों ने उनका अनसर करते हए प्राचवन ंारत को वहन्द काल ताा ु ू मध्ककवलन ंारत को मवस्लम काल की स्ा दव मध्यकालवन ंारत म कासकों के आरसव सुष ष ु ं ं को इन इवतहासकारों ने वहन्द मवस्लम सुषष के रूर म उित वकया ु ं ृ ू iv. सों ान्ी-धान्ें बे सधार ्दायिोल ों ेा पार्श्व रश्भान- 1ष्ठिं कताव म वहन्द ताा मसलमान ु ु ू अनेक सामावीक ताा धावमषक सधार आन्दोलन हए इन सर्व सधार आन्दोलनों ने स्ि-य को ु ु ं अरने-अरने समदाय के लोतों तक हव सववमत रखा सधार आदोलनों की इस प्रिवत से दके विवर्न्न ृ ु ु ं समदायों म विर्क्त हो तया मवस्लम सधार आन्दोलन ीसै े 'बहिाव आदोलन, ताा वहन्द सधार ु ु ु ु ं ू आन्दोलन ीसै े 'कवि आदोलन' के व्यवक्ततत धावमकष स्िरूर के कार धम ष का उग्रिाव चकरर ु ं रेखावकत हआ ताा इससे साम्प्रदावयकता को बल वमला इन सधार आदोलनों म सास्कवतक ृ ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 31 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विरासत के धावमकष ताा दाकवष नक रहलओ रर एकाकी बल वदया तया इन विवर्न्न सधार- ु ु ं ं आदोलनों के समानातर प्रिाह को एक धम ष के द्वारा दसरे धमष का अरमान करना समेा तया ं ं ू v. उग्र राष्टरनादायि ेा पार्श्व रश्भान - राष्टरिाद के प्रारवर्क चर म राष्टरिावदयों ने अ्रस्यकों के ं ं र्य को दर करने रर विकेष बल वदया ंारतवय राष्टरवय काग्रेस के 1886 म आयोवीत दसरे ं ू ू अवधिके न म दादाराई नशरोीव ने अरने अध्वय ंराष म ुोवषत वकया वक काग्रेस के ं अवधिके नों या सम्मले नों म सामावीक-धावमकष प्रश्न नहीं उठाये ीाय ते 1889 म काग्रेस ने वनश्चय ं वकया वक िह ऐसे वकसव र्व मद्दे को अरने कायषक्रमों या उद्दश्े यों म सवम्मवलत नहीं करेतव, वीसका ु मसलमान विरोध कर त े वकत कालातर म उग्रिाव राष्टरिाद के उर्रने से इसम वहन्द राष्टरिादव हिाव ु ु ं ं ू हो तये वतलक के त रवत एि वकीिव उत्सि ताा तोहत्या के विरि अवर्यान ने विवर्न्न प्रकार ं की ककाओ को ीन्म वदया ंारत माता ताा राष्टरिाद की धम ष के रूर म अरविद ुोष की ं ं ं अिधार ाय , तता स्नान के रश्चात बत-र्त विरोध आदोलन प्रारर् करना ताा क्रावतकाकरयों द्वारा ं ं ं ं ं ं ं दि व कालव या िरानव के सम्मख करा ग्रह करने ीसै व रस्म र्व द्वद को बढ़िाा दने े िलव ीं ु ं वनःसदहे ये सर्व रस्म मवस्लम समदाय के सदस्यों की धावमकष िरानाओ के प्रवतकल ीं ु ु ू ं ं क्रावतकाकरयों द्वारा वकीिव एि महारा ा प्रतार के क्रमकः ररतीबे ताा अकबर के विरि सुष ष ं ं ं ं को धावमकष सुष ष के रूर म मवहमा मवडत करना, लखनँ समेशते (1916) ताा वखलारत ं ं आदोलन (1920-22) का र्व प्रत्य्-अप्रत्य् रूर से विवकस साम्प्रदावयक प्रिरा हआ ं vi. र्हसययें एन अल्पसययें सें दायिाय ेी साम्परश्दायिान्ये रश्ित्रामया -बहस्यक समदाय द्वारा ु ु ु ां ां ां ं विवर्न्न सतठनों के तठन की अ्रस्यकों रर साम्प्रदावयक प्रवतवक्रया हयव अ्रस्यक समदाय ु ं ं ं द्वारा र्व सतठनों के तठन वकए तए इन सतठनों ने अरने -अरने समदायों के वहतों की िकालत की ु ं ं वीसके रलस्िरूर बहस्यक एि अ्रस्यक समदायों के बवच द्वद म बढ़ोत्तरव हई ु ं ं ं ं ं साप्रदावयक द्वद अतर-सास्कवतक सुषष ह,ै वीसम वकसव राय के प्रवतस्रधी समहों के बवच होने ृ ू ं ं ं ं ं ं िाले सुषष का ि नष वकया ीाता ह ै यह दलषर् ससाधनों या रीनववतक कवक्त तक रहच स े ं ं ं ं ु सबवधत विवादों से उत्रन्न हो सकता ह ै इस तरह के सुषों म दो या दो से अवधक रकरंरावषत ं ं ं समदायों के बवच वहसक यि र्व हो सकता ह ै ु ु ं साप्रदावयक सुष ष को तरै

-राय समहों के बवच एक सुषष के रूर म रकर ावषत वकया तया ह ै ू ं ं ं क्योंवक इसे सेा साप्रदावयक रहचान के सा सतवठत वकया तया ह ै यह रकर ाषा कछ रर ु ं ं स्रसवकर के योग्य ह ै सुषष इस त्य को दकाषता ह ै वक रावटषया कछ ववािवदत रर कवात ु ं ं अवि ाय ससाधन, ीसै े र्वम का एक टक़ा ा या स ानवय रीनववतक सत्ता रर वनयर हावसल ू ु ं ं करना चाहते ह कावमल समह तरै -राय समह ह इसका मतलब यह ह ै वक नेता राय को वनयवरत ू ू ं नहीं करता ह ै हालावक राय साप्रदावयक सुषष म एक महत्ि ष सहायक नेता के रूर म कावमल ू ं ं ं हो सकता ह ै इस प्रकार, सामवहक वहसा की इस ि व म आमतशर रर वसविल यिों की तलना म ू ु ु ं अवधक समवमवत ह ै साप्रदावयक सुषों म , वकसव र्व नेता को सरकार के अवधकार के नहीं ह रर ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 32 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कोई र्व दल राष्टरवय सेना के वनयर म नहीं ह इसव तरह, समहों को ररचाकरक रूर से वहसा के ू ं ं वलए ख़ा व ्मता िाल े विोहव समहों का आयोीन नहीं वकया ीाता, बव्क ि समह होते ह ीी ू ू सुषष म सलग्न होने के वलए कर्व-कर्व सतवठत होते ह सतठन के उच्च स्तर रर राय-आधाकरत ं ं ं ं सुषों की र्शवतक ताकत का मतलब ह ै वक ि े आमतशर रर (लेवकन हमके ा से दर) एक उच्च ं ू विनाककारव ्मता रखते ह, रर साप्रदावयक सुषों की तलना म लबव अिवध के वलए खींचने की ु ं ं ं प्रिवत्त ह ै ृ सारश्दायिान्ये द्वदायि ो ें ेर े हि उपाय ु ां ां 1. साम्प्रदावयकता उ ारने िालव वकसव र्व दष्टप्रिवत्त के वककार हम खद न हों, रर समी म ृ ु ु साम्प्रदावयकता उ ारने िालव कोवककों के वखलाफ़ ख़ा े हों, वरर चाह े ऐसव कोवकक वहन्दओ

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 3 resources! id: **54**

के ं ु द्वारा हो या मसलमानों के द्वारा हो या अन्य वकसव र्व धम ष को मानने िालों के द्वार

ा हो ु 2. के न्ि ि राय सरकारों का कोई र्व प्रवतवनवध वकसव र्व धमष विकषे के अनष्ठान म राय एि ु ं कासन के प्रवतवनवध के रूर म कावमल नहीं हो, न ऐसे अनष्ठानों को राय द्वारा वकसव प्रकार की ु विकेष सहायता वमले, रर न हव रीकीय उद्घाटन, वकलान्यास आवद के आयोीन वकसव धम-ष विकेष के अनष्ठान से करु हों धम-ष वनररे् राय की सिधै ावनक ुोष ा का यह सिाष ा ु ु ं उ्लुन ह ै हम ऐसे आयोीनों के वखलार ीनमत का दबिा रैदा कर ं 3. एक धमष की उरासना विवधयों, उत्सिों, रिों के आयोीनों से वीनसे दसरे धमों की उरासना ू विवधयों,उत्सिों-रिों म बाधा रहचुँ े, ऐसव व्यिस्ा क्यों चलनव चावहए? क्या मवन्दर, मवस्ीद, तरुद्वारा आवद धावमकष के न्ि म लाउडस्रवकरों का उरयोत रर उत्तेीनात्मक ुोष ाओ का उग्र ु ं उद्घोष इसव तरह बराबर होते रहना उवचत ह?ै यह विचार वय प्रश्न ह इससे हमारव र्वक्त-ि ाना म िवि नहीं होतव, हमारव प्रवतवक्रयात्मक , प्रवतकोधात्मक ि ानाओ का ईहार होता ह ै ृ ं 4. हम अरनव धावमकष -साम्प्रदावयक ि ानाय दसरे रर ोरने की कोवकक न कर हमारे विचार-ू आचार म तीे होता तो ि ह दसरों को र्व प्रेकरत करेता, यहीं तक अरनव ि ानाओ को मयाषवदत ं ू रख 5. हम यह न र्ल वक कोई एक तलतव करता ह ै तो उसके ीाब म हम दस तलतव करके अरना हव ू नकसान करते ह अत: हम न तलतव कर त,े न तलतव होने दत ,े न ीम कर त,े न ीम सहत े की ु ु ु नववत रर चल 6. हम उन अखबारों, प्रचार-माध्यमों, नेताओ, सतठनों का बवहष्टकार एि विरोध करे, ीी ं ं ं साम्प्रदावयकता के ीहर को रै लाते ह अखबारों म छरने िाल े ऐसे लेखों-वटतरव यों का विरोध हम वलवखत रूर म लेख-वटतरव यूँ-सम्रादक के नाम रर वलखकर कर – वीनस े साम्प्रदावयकता का ीहर समी म रै लता हो इसके अलिा स्ितर रूर से रचदेश छारकर कर ं ता अन्य लोकवक् के माध्यमों से साम्प्रदावयकता के विरि लोतों को ीतत-सतवठत कर ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 33 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 7. हम ी र्व धम,ष ीविन-कलै व, उरासना रिवत अरनाते हों, अरनाए ुँ लेवकन अरने से वर्न्न दसरे ू धर्मों, ीविन-कवै लयों, उरासना – रिवतयों के प्रवत सवहष्ट एि उदार रह हमारव इस ि वत्त से हव ृ ु ं ररस्रर सिाद-सम्बन्ध कायम रहते ा रर सिादों-सम्बन्धों के आधार रर हव हम एक दसरे की ं ं ू कवमयों को, यवद होतव तो, दर करने म सहायक होंते रर समी म कावत की सस्कवत वनवमषत हो ृ ं ं ू सके तव 8. आवाषक एि सामावीक तरै -बराबरव वकसव र्व समी रर राष्टर की सबसे ब़ा व कमीीरव ह ै ं क्या हम इवतहास के इस त्य को नकार सकते ह वक हमारव इसव सामावीक कमीीरव के चलत े ारतवय समी रर राष्टर कमीीर हआ ह,ै टटा ह,ै तलाम हआ ह,ै वहसा-प्रवतवहसा का वककार ू ु ं ं हआ ह?ै यवद आवाषक-सामावीक तरै बराबरव बनव रहव, बढ़तव रहव तो कोई र्व धम-ष सम्प्रदाय ारतवय समी-राष्टर को विवटत होने से नहीं रोक रायेता रेट र्ने, तन ढकने, सर छराने के ु वलए समवचत आिास व्यिस्ा एि वक्ा-स्ि्य आवद की प्रावमक मानिवय ीरूरत ररव ु ू ं करने की अवनियष मात को धावमकष -उन्माद उ ारकर लम्बे असदेश तक टाला नहीं ी सकता ह ै ं सदर रि ष से लेकर रवश्चम तक विवर्न्न रूरों म यह मात तवव्र रर खतरनाक रूर ले चकी ह ु ू ु ं ू इसवलए ीरूरव ह ै वक समी की इस कमीीरव को दर करने का, मानिवय बराबरव की व्यिस्ा ू लान े का प्रयास वकया ीाए 3.4.3 द्वि एन द्वदायि: राष्टरवय सदायिभब ां ां ां राष्टरवय द्वद, राष्टर म अिा राष्टरों के मध्य वकसव बात रर एक मत न होने से इस

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **55**

प्रकार का द्वद उत्रन्न हो ं ं ीता ह ै वीससे कावत र्त होतव ह ै ता उसम रहने िाल लोतों की म्य आधाकरत विचारों का र्व हनन ू ं ं होता ह ै व

ीसके उररात उनके अदर हव अदर अविश्वास ता बदले की ि ाना प्रबल होने लततव ह ै ं ं ं दसरे विश्वयि म ीमनष व ने लदन रर ुनोर बमबारव की रर प्रवतवक्रया म अग्रेी ने 1000 बमिषकष ों को ु ं ं ू ीमनष व के नतरों रर हमला करने ्री ा यि का अत अमके रका द्वारा ीारानव नतर वहरोवकमा रर ु ं नातासाकी रर बम वतराने से हआ इस हमले म कम से कम 1, 20,000 लोत तरत मारे तए रर उससे ु ं र्व कहीं अवधक लोत आ विक विवकर के प्रि ा से मरे करवब 95 प्रवतकत मतक आम नातकरक ो ृ

यि के बाद के दककष ों म दवनया म अरनव सि्च्चता कायम करने के वलए दो महाकवक्तयों- ु ु रीविादव अमके रका रर साम्यिादव सोवियत सु के बवच प्रचड प्रवतस्रधा ष का दशर चला चुँवक ू ू ं ं ररमावण्िक हवायार कवक्त के नए प्रतवक बने इसवलए दोनों ने उनका ब़ा े रैमाने रर वनमाष रर सचय ं करू वकया बढ़तव हई इस सैवनक प्रवतद्ववदता म 1962 का क्यबाई वमसाइल सकट एक उ्लेखनवय ु ू ं ं अकर् प्रसत ह ै इसका आरर् तब हआ ीब अमके रकी ीाससव विमानों ने अरने श्र ोसव दके क्यबा म ु ू ू ं ं सोवियत सु के आ विक वमसाइल खोी वनकाले प्रवतवक्रया म अमके रका ने क्यबा की समिव सवमाओ ू ु ं ं की नाके बदव कर दव रर सोवियत रूस को धमकी दव वक यवद यह वमसाइल नहीं हटाई तई तो िह उस के ं वखलार सैवनक कायषिाहव करेता आमने-सामने का यह टकरि तर्व समासे हआ ीब सोवियत सु न े ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 34 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अरने वमसाइल हटा वलए दो ससोह तक चल े इस सकट ने मानिता को सर ष तबाहव के कतार रर ख़ा ा ू ं ं कर वदया ाा एक ममर्ष दे व असमीस यह ह ै वक अतराषष्टरवय रलक रर कई बार कछ राष्टर अरने लक्यों को ु ं ं हावसल करन े के वलए वहसात्मक साधनों का इस्तेमाल करते ह खासकर वकसव ्ेर अिाा प्राकवतक ृ ं ससाधनों को हवायाने म इसके बाद उत्रन्न होने िाला द्वद यि म रकरिवतषत हो ीाता ह ै ीसै े वक 1990 ु ं ं म इराक ने अरने छोटे से श्र ोसव दके कितै रर हमला वकया उसने हमले को न्यायोवचत बताते हए दिाा ु वकया वक कितै व ्ेर एक इराकी र्खड ाा वीसे ररवनिवकक कासको ने मनमाने ढत से अलत कर ु ू ं ं वदया ाा उसने आरोर लताया वक कितै उसके तेल र्डारों म वतरछव खदाई कर रहा ह ै आक्रम काकरयों ु ु ं को अततः अमके रका के नेतत्ि म सोा सैवनक अवर्यान द्वारा खद्रा े ा तया एक समाष विश्व सरकार के न ृ ं होने की वस्ावत म इस प्रकार के विाद की आकका का हर समय मशीद रहना सि्र् ह ै हवायार उद्योत ू ं ं ीसै े वनवहत स्िाों ने इसे तवव्र कर वदया ह ै हवायार उद्योत के वलए यि लार्दायक वस्ावत ह ै ु ारत रर रावकस्तान के बवच कारवतल का यि एि सवमा रर वनरतर हो रह े यि विराम का ु ु ं ं उ्लुन र्व राष्टरवय द्वद का िलत उदाहर ह ै उररोक्त उदाहर ों से आर यह समे तए होंते वक राष्टरों ं ं ं अिाा दके ों के बवच द्वद वकस रूर म होता ह ै ं अतर लोत आी कावत का त तान करते ह तो मही इसवलए नहीं वक िह इसे अच्छा विचार ु ं मानते ह कावत की अनरवस्ावत की ारव कीमत चकाने के बाद मानिता ने इसका महत्ि रहचाना ह ै ु ु ं आी ीविन अवतवा के अतवत के वकसव र्व समय से कहीं अवधक असरव्त ह ै क्योंवक हर ीतह के लोत ु आतकिाद के बढ़ते खतरों का सामना कर रह े ह कावत लतातार बह्म्य इसवलए र्व बनव हई ह ै वक इस ू ं ं रर खतरे का साया हमके ा मशीद ह ै ू अभ्यास रश्न 3. द्वतै एि द्वद म क्या अतर ह?ै ं ं ं 4. द्वद के अतर ियै वक्तक सदर् ष से क्या तात्रयष ह?ै ं ं ं 5. साप्रदावयक द्वद के प्रमख क्या कार ह? ु ं ं 6. राष्टरवय द्वद के प्रमख कार क्या ह? ु ं 3.5 सारि् इस इकाई के प्रारर् म स्ि की अिधार ा को स्रस वकया तया स्ि, एक व्यवक्त द्वारा एक हव व्यवक्त के ं वलए एक सदर् ष ह ै यह सदर् ष आिश्यक रूर से व्यवक्तररक ह ै व्यवक्त रकरप्रक्े य अरने व्यवक्ततत रहचान ं ं को आत्मवनष्ठा से अलत करता ह ै व्यवक्ततत स्ि एि सामवहक स्ि की अिधार ा को स्रस करते हए ू ं उनके बवच अतर को र्व रेखावकत वकया तया व्यवक्ततत स्ि, से अवर्राय स्िचेतन मन से ह ै ी वक हमारे ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 35 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 करवर का िह ारात ह ै ी इस र्शवतक ससार म स्िय के प्रवत एक विवकस व्यवक्तत्ि के रूर म चैतन्य रूर से ं ं ीतरूक ह ै इसव को िस्तवनष्ठ मन की स्ा दव ीतव ह ै सामवहक स्ि, स्ि का िह र् ह ै ी वक समह म ु ू ू ं आरकी सदस्यता ताा सह्ारावतता रर आधाकरत होता ह ै यह स्ि का प्रत्यकर कछ सामावीक ित् ु के विवनमय नमने के रूर म करता ह ै न वक एक विवकस व्यवक्त के रूर म े करता ह ै द्वद के सामान्य अाष- ू ं आिश्यकताओ, इच्छाओ, ष्वसको ों रर म्यों की असतवत को वीसका मतलब ह ै वक व्यवक्तयों की दो ू ं ं ं ितषमान आिश्यकताओ अिाा लक्यों की रवतष एक साा नहीं की ी सकतव ह,ै को स्रस वकया तया ू ं ीब र्व हमारव धन, कवक्त रर ससाधनों की आिश्यकताए का वकसव अन्य व्यवक्त की आिश्यकताओ के ं ं ं साा सुष ष होता तो िहाँु रर वनवश्चत रूर से द्वद होता ीब र्व वकसव र्व व्यवक्त के वक्रयाकलार को ं ं बावधत वकया ीाता ह ै तो िहाँु रर द्वद उत्रन्न होता ह ै द्वतै िाद की उत्रवत्त लैवटन क्द के “डओ’ से हई ु ं इसका अाष होता ह ै “दो” अाषत दो ारातों की वस्ावत को दकाषना इस क्द की उत्रवत्त मल रूर से ू काश्वत, वद्वयाधारवय विर् को वनरूवरत करने हते हई ह ै द्वद एि द्वतै के अतियै वक्तक, साप्रदावयक ताा ु ं ं ं ं राष्टरवय सदर्ों को र्व स्रस रूर से उदाहर ों

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **56**

के माध्यम से समेा अतियवक्तक द्वद दो व्यवक्तयों के मध्य ं ं ं अलत-अलत विचार होने के कार

उत्रन्न द्वद ह ै यह र्व स्रस वकया तया वक साम्प्रदावयकता से तात्रय ष ं उस सकी ष मनोिवत से ह,ै ी धम ष रर सम्प्रदाय के नाम रर ररे समी ताा राष्टर के व्यारक वहतों के ृ ू ं विरि व्यवक्त को के िल अरने व्यवक्ततत धम ष के वहतों को प्रोत्सावहत करने ताा उन्ह सर् दने े

Plagiarism detected: **0.02%** https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/8… + 2 resources! id: **57**

की ं िराना को महत्ि दते व ह ै ारत म साप्रदावयकता के विकास सबधव विवर्न्न कार ों क

ी चाष र्व की तई ं ं ं साप्रदावयकता को कम करने हते कछ उराय र्व सोए तए रर इकाई के अत म द्वद के राष्टरवय सदर् ष को ु ु ु ं ं ं ं ं स्रस वकया तया राष्टरवय द्वद, राष्टर म अिाा राष्टरों के मध्य वकसव बात रर एक मत न होने से इस

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **58**

प्रकार का ं द्वद उत्रन्न हो ीाता ह ै वीससे कावत र्त होतव ह ै ताा उसम रहने िाल लोतों की म्य आधाकरत विचारों ू ं ं ं का र्व

हनन होता ह ै व

ीसके उररात उनके अदर हव अदर अविश्वास ताा बदले की ि्राना प्रबल होने ं ं ं लततव ह ै 3.6 ि्बदावनाली 1. स्न- स्ि, एक व्यवक्त द्वारा एक हव व्यवक्त के वलए एक सदर् ष ह ै यह सदर्ष आिश्यक रूर से ं ं व्यवक्तररक ह ै 2. द्वदायि- द्वद का सामान्य अ ाष आिश्यकताओ, इच्छाओ, ष्वसको ों रर म्यों की असतवत ह ै ू ां ं ं ं ं वीसका मतलब ह ै वक व्यवक्तयों की दो ितषमान आिश्यकताओ अ ाा लक्यों की रवतष एक ू ं साा नहीं की ी सकतव ह ै 3. द्वि- द्वतै से तात्रयष दो ्रातों की वस्ावत को दकाषना 4. सारश्दायिान्यि- साम्प्रदावयकता से तात्रयष उस सकी ष मनोवत से ह,ै ी धमष रर सम्प्रदाय के ृ ां ं नाम रर ररे समी ताा राष्टर के व्यारक वहतों के विरि व्यवक्त को के िल अरने व्यवक्ततत धम ष ू के वहतों को प्रोत्सावहत करने ाा उन्ह सर् दने े की ि्राना को महत्ि दते व ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.slideshare.net/slideshow/bharat-me… id: **59**

विश्वविद्यालय 36 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.7 तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. व्यवक्ततत स्ि, से अवर्प्राय स

्िचेतन मन से ह ै ी वक हमारे करवर का िह ्रात ह ै ी इस र्शवतक ससार म स्िय के प्रवत एक विवकस व्यवक्तत्ि के रूर म चैतन्य रूर से ीतरूक ह ै इसव को ं ं िस्तवनष्ठ मन की स्ा दव ीतव ह ै ु ं 2. सामवहक स्ि, स्ि का िह र् ह ै ी वक समह म आरकी सदस्यता ताा सह्रावतता रर ू ू आधाकरत होता ह ै 3. द्वतै की उत्रवत्त लैवटन क्द के “डओ’ से हई इसका अ ाष होता ह ै “दो” अ ाषत दो ्रातों की ु वस्ावत को दकाषना ीबवक द्वद एक ऐसव रकरवस्ावत ह ै वीसम व्यवक्त को दो या दो से अवधक ं ररस्रकरक विल् लक्यों की प्रावसे हते दो असतत रास्तों के मध्य वन यष लेना श्र ता ह ै ु ं 4. अतियै वक्तक द्वैत ताा द्वद दो व्यवक्तयों के मध्य अलत-अलत विचार होने के कार उत्रन्न द्वद ं ं ं

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindigrammarworksheet.blogspot.com/2… id: **60**

ह ै इस प्रकार का उत्रन्न द्वद यह दकाषता ह ै वक व्यवक्त वकस प्रकार से एक दसरे से अलत ं ू ह ै प्रत्येक

व्यवक्त का व्यवक्तत्ि अलत अ ाा विवकस ह ै ी की उस व्यवक्त की असतत चयन ं ताा मतों के वलए वीम्मदे ार होता ह ै 5. ्रारत म साम्प्रदावयक चेतना का ीन्म उरवनिके िादव नववतयों ताा उसके विरि सुष ष करने की ं आिश्यकता से उत्रन्न रकरितषनों के कार हआ विवर्न्न ्ेरों ताा दके के सामावीक, आवाषक रर प्रकासवनक एकीकर , ्रारत को एक आधवनक राष्टर बनाने की प्रवक्रया, आधवनक ु ु सामावीक ितों एि उरितों का वनमाष ताा ्रारतवयों के बढ़ते हये अतविरष ोध ीसै े कार ों से ं ं लोतों म अरने सो वहतों आयामों का विकास ताा नयव रहचानों का वनमाष आिश्यक हो तया उन्नवसिं कताद्व के उत्तराष म रीनववत की वीस नयव अधार ा का ीन्म हआ उससे र्व साम्प्रदावयकता की विचारधारा को बल वमला 6. राष्टरवय द्वद, राष्टर म अ ाा राष्टरों के मध्य वकसव बात रर एक मत न होने से इस प्रकार का द्वद ं ं उत्रन्न हो ीता ह ै कछ राष्टर अरने लक्यों को हावसल करने के वलए वहसात्मक साधनों का ु ं इस्तेमाल करते ह खासकर वकसव ्ेर अ ाा प्राकवतक ससाधनों को हवायाने म इसके बाद ृ ं उत्रन्न होने िाला द्वद यि म रकरिवतषत हो ीता ह ै ु ं 3.8 सद् र् य ग्रथ सची ू 1. कष्ट मवतष, ी°े 1992. ीके कन एड वसतनववरक स आर लाइर, चेन्नई, कष्ट मवतष ृ ृ ू ु ू ं फ़ाउडेकन. ं 2. एन.सव.ई.आर.टव. 2006, नेकनल करवकलम फ्रे मिकष 2005, रीिकन रेरर नेकनल रोकस ु ग्रर ऑर ीके कन रीर रवस, नई वद्लव. ु ु 3. एन. सव.ई. आर. टव. 2005, राष्टरवय राठयचयाष की रूररेखा 2005, नई वद्लव. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 37 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4. फ़ाउटेन, एस. 1999, ीके कन रीर रवस इन यवनसेर, न्ययाकष , िवकी त रेरर ीके कन ु ू ू ु सेक्कन, प्रोग्राम वडविीन, यवनसेर. ू 5. िडष एकले, ी.े 2001. डिलवरत ए क्वर ऑर रवस एण्ड नान िाइल स थ्र ीके कन ू ु ं /http:/www.mkgandhi.org/articles/peace4.htm/द्वारा माचष 2009 म प्रासे. 6. ्ेसि. लवच. सव. 2003, ए. क्वर ऑर टववचत रवस ं
http:/www.commondreams.org/views03/0616-01.html/ द्वारा माचष 2009 म प्रासे. 7. हके रस ईओन, माकरसन मरै व 2003. रवस ीके कन, लदन, मैकरारल ड. ु ं 8. ताट्त ीहान 1996.

Quotes detected: **0%** id: **61**

‘रवस बाई रवसरल मींस’

लदन-नई वद्लव, सेी रव्लके कन. ु ु ं ं 9. हड रसन ीी ष 2006.

Quotes detected: **0.01%** id: **62**

‘ीके कन रीर रवस: रोकस आन मनै काइड’

एसोवसएकन रार ु ं सररिवकन एण्ड करवकलम डिलेरमट , मववचतन. ु ु 10. नेकनल करवकलम फ्रे मिकष 2005. नई वद्लव, एन. सव.ई. आर. टव. ु 11. सोलोमन रर निी 2002, रवस ीके कन, द कानसेतट वप्रवन्सरल एण्ड प्रेवक्टस एराउड द ु ं ्िडष, लदन, लाकरइस ईरलबम एसोवसएटस. ं ं 12. माकरया मोंटोसरव 1972. ीके कन एण्ड रवस, रीस व. यवनिवसषटव ऑर वमवसतन ु ू वडीवटैइड. 13. तसो, एस.रव. रर अलका तसो 2008.

Quotes detected: **0.01%** id: **63**

‘्रारतवय वक्ा का इवतहास, विकास एि ु ु ं समस्याएँ’

इलाहाबाद, कारदा रस्तक िरन. ु 3.9 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. व्यवक्ततत एि सामवहक स्ि की अिधार ा की समे वक्कों के वलए क्यों महत्िर ष ह?ै ू ू ं व्याया कीवीए 2. क्ायव विविधता को द्वद एि द्वतै के रकरप्रेक्य म स्रस कीवीए ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 38 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 4 - द्व द कव समझ 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 द्वद की समे ं 4.4 सप्रेष का अाष ं 4.5 सप्रेष के विश्लेष ताा टेवलविज़न एि सचार के अन्य आधवनक साधनों रर ु ं ं ं विादास्रद मद्दों के प्रस्ततवकर के विश्लेष म रकरप्रेक्य का प्रयोत ु ु 4.5.1 रकरप्रेक्य के प्रकार 4.6 सप्रेष के विश्लेष ताा टेवलविज़न एि सचार के अन्य आधवनक साधनों रर ु ं ं ं विादास्रद मद्दों के प्रस्ततवकर के विश्लेष म सके त का प्रयोत ु ु ं 4.7 सप्रेष के विश्लेष ताा टेवलविज़न एि सचार के अन्य आधवनक साधनों रर ु ं ं ं विादास्रद मद्दों के प्रस्ततवकर के विश्लेष म वस्टकरयोटाइर का प्रयोत ु ु 4.7.1 वस्टकरयोटाइर के उरयोत की समस्याएँ 4.8 सप्रेष के विश्लेष ताा टववलविज़न एि सचार के अन्य आधवनक साधनों रर ु ं ं ं विादास्रद मद्दों के प्रस्ततवकर के विश्लेष म अलकारकास्त्र का प्रयोत ु ु ं 4.8.1 अलकारकास्त्र का उरयोत ं 4.9 कावत वक्ा के विकेष सदर्ष म राठयरस्तकों का विश्लेष ु ं ं 4.9.1 राठयरस्तकों के विश्लेष की विवध ु 4.9.2 विश्लेष की इकाई 4.9.3 कावत वक्ा के अियि ं 4.10 साराक ं 4.11 अभ्यास

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **64**

प्रश्नों के उत्तर 4.12 सदर्ष एि सहयोतव रस्तक ु ं ं 4.13 वनबधात्मक प्रश्न ं उत्तर

ाखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 39 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4.1 प्रस्तावना ा द्वद मानि ीविन का एक अवर्न्न अत ह ै अरने समस्त ीविन काल म मनष्टय अस्य बार द्वदात्मक ु ं ं ं ं रकरवस्ावतयों से तीरता ह ै विविध कार ों से उत्रन्न ये द्वद एक वनवश्चत सवमा तक तो व्यवक्त की काय ष ु ं ्मता को नकारात्मक ढत से प्र्रावित नहीं करते ह लेवकन यवद इसकी सवमा बढ़ ीातव ह ै रर लबे समय ं ं तक यह द्वदात्मक रकरवस्ावत चलतव रहतव हतै ो इससे व्यवक्त की कायष ्मता प्र्रावित होतव ह ै एि उसके ं ं मानवसक वस्ावत रर प्रवतकल प्रि्रा श़ ता ह ै अतः, द्वदात्मक रकरवस्ावत का समाधान होना आिश्यक ह ै ू ं इस रकरवस्ावत का समाधान इसके कार ों को ीान े वबना सि् नहीं ह ै अतः, द्वद के प्रकार एि उसके ं ं ं कार ों को ीानना र्व ज़रुरव ह ै मनष्टयएक सामावीक प्रा वह ै रर ि इस समी म अरना अवधकाक ु ं कायष-व्यारार सरावदत करता ह ै वीसके वलए उसे सप्रेष की आिश्यकता होतव ह ै सप्रेष के विवर्न्न ं ं ं माध्यमों का प्रयोत िह विवर्न्न सामावीक रकरवस्ावतयों म करता ह ै द्वद की उत्रवत्त र्व सामावीक ं रकरवस्ावत म होतव ह ै रर सप्रेष र्व सामावीक रकरवस्ावतयों म हव ुवटत होता ह ै अाषत इन दोनों म ं सबध ह ै यह र्व कहा ी सकता ह ै वक द्वद के विविध कार ों म सप्रेष र्व एक कार ह ै अतः, ं ं ं ं द्वदात्मक रकरवस्ावत के समाधान के वलए सप्रेष का विश्लेष करना आिश्यक ह ै प्रस्तत इकाई म द्वद ु ं ं ं की सामान्य समे के साा सप्रेष के विश्लेष म उसके म्य तत्ों के महत्ि की ीानकारव प्रदान की ु ं तई ह ै साा हव कावत वक्ा के ष्वसको से राठयरस्तकों का विश्लेष र्व प्रस्तत वकया तया ह ै आइए ु ु ं अब बारव-बारव से इकाई के विविध खडों एि उरखडों म द्वद, सप्रेष एि उसका विश्लेष ताा ं ं ं ं ं ं ं राठयरस्तकों का विश्लेष िकावत वक्ा रर आधाकरत) रर चचाष करते ह ु ं 4.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उररात विद्याी इस योग्य हो ीाएतुँ े वक – ं 1. विद्याी द्वद का अाष समे सक त;े ं ं 2. विद्याी द्वदात्मक रकरवस्ावत को रहचान सक त;े ं ं 3. विद्याी सप्रेष के अाष की व्याया कर सक ते; ं 4. विद्याी सप्रेष के विश्लेष म रकरप्रेक्य का प्रयोत कर सक त;े ं ं 5. विद्याी टेवलविज़न एि सचार के अन्य साधनों रर प्रस्तत कायषक्रमों का उसके रकरप्रक्े य के ु ं ं आधार रर विश्लेष कर सक ते; 6. रकरप्रेक्य के विवर्न्न प्रकारों का ि नष कर सक ते; 7. विद्याी सप्रेष के विश्लेष म सके त के महत्ि का ि नष कर सक त;े ं ं 8. विद्याी टेवलविज़न एि सचार के अन्य साधनों रर प्रस्तत कायषक्रमों म प्रयक्त सके तों का सहव ु ु ं ं ं अाष समे सक ते; 9. विद्याी सप्रेष के विश्लेष म वस्टकरयोटाइर के महत्ि की व्याया कर सक ते; ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 40 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 10. विद्याी टेवलविज़न एि सचार के अन्य साधनों रर प्रस्तत कायषक्रमों म प्रयक्त वस्टकरयोटाइर का ु ु ं ं सहव अाष समे कर कायषक्रम म वनवहत सदके का अाष समे सक त;े ं ं 11. वस्टकरयोटाइर के उरयोत से उत्रन्न होनेिालव समस्याओ की व्याया कर सक ते; ं 12. विद्याी सप्रेष के विश्लेष म अलकारकास्त्र के महत्ि की व्याया कर सक ते; ं ं 13. विद्याी टेवलविज़न एि सचार के अन्य साधनों रर प्रस्तत कायषक्रमों के विश्लेष म ु ं ं अलकारकास्त्र का प्रयोत कर सक ते; ताा ं 14. विद्याी कावत वक्ा के विकषे सदर् ष म राठयरस्तकों का विश्लेष कर सक ते ु ं ं 4.3 द्व्द की समझ द्वद का अाष विश्वास, मान्यताओ एि वक्रयाओ के विरोध या अस्िवकवत के कार उत्रन्न मतर्दे या ृ ं ं ं ं विाद से होता ह ै माइकल वनकोलसन ने द्वद को रकर्ावषत करते हए कहा ह ै वक

Quotes detected: **0.03%** id: **65**

“यह एक वक्रया-कलार ं ह ै ी तब सम्रन्न होतव ह ै ीब चेतन प्रा व िव्यवक्त या समह) अरनव इच्छाओ, आिश्यकताओ एि ू ं ं ं दावयत्ों से सबवधत रारस्रकरक असतत वक्रयाओ को सरावदत करना चाहते ह”

द्वद असहमवत का चरम ं ं ं ं ं ं रुर ह ै रर द्वदात्मक व्यिहार, वीसम वक एक व्यवक्त या समह दसरे व्यवक्त या समह को हाुँवन रहचुँ ाने के ू ू ं ू वलए सवक्रय रुर से प्रयास करता ह,ै के उरवस्ावत से रहचाना ीाता ह ै रावकम के अनसार,

Quotes detected: **0.02%** id: **66**

“द्वद एक अतःवक्रयात्मक प्रवक्रया ह ै ी वक अमता, असहमवत, बेसरारन, ु ु ं ं सामावीक प्रविवसयों िव्यवक्तयों या असमहों)के रुर म रकरव त होता ह”

ै ू उररोक्त रकर◌ाषाओ एि रीबटष ए० बैरन द्वारा सन द्वारा सन 1990 म दव तई सतठनात्मक द्वद की ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं रकर◌ाषाओ की समव्◌ा के आधार रर रावकम ने यह सेाया वक द्वद म वनम्नवलवखत बात होतव ह: ु ◌ं ◌ं □ व्यवक्तयों या समहों के वहत एक-दसरे के विररवत होते

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/ma-a… + 2 resources! id: **67**

ह; ू ू □ प्रत्येक र् यह मानता ह ै वक उसका प्रवतर् उसके विरि कायष कर रहा ह;ै □ इस विश्वास क

ी रवस उनके द्वारा सरावदत वकए ◌ीाने ◌िाले कायों से की ◌ीा सकतव ह;ै ताा ु ◌ं □ द्वद एक प्रवक्रया ह ै ◌ी व्यवक्तयों या समहों के मध्य अतवत म हए अतवक्रष या के रकर ◌ामस्◌िरुर ू ◌ं ◌ं विकवसत होता ह;ै उररोक्त ◌िविचे न के आधार रर द्वद को चैतन्य व्यवक्तयों या समहों के मध्य अतवत म हई ऐसव अतवक्रष या, ू ◌ं ◌ं वीनम उनके वहतों म ररस्रर विरोधा◌ार्स एि सुष ष रहा हो,के रकर ◌ामस्◌िरुर विकवसत एक ऐसव प्रवक्रया ◌ं ◌ं के रुर म ◌ीाना ◌ीाता ह ै वीसम प्रत्येक र्, दसरे र् को हावन रहचुँ ◌ाने के वलए सवक्रय रहता ह ै यह ू व्यवक्त के अदर, दो व्यवक्तयों के मध्य, व्यवक्त एि समह के मध्य एि समह ताा समह के मध्य हो सकता ू ू ू ◌ं ◌ं ◌ं ह ै इस प्रकार यह स्रस ह ै वक द्वद व्यवक्तयों या समहों के मध्य अतवक्रष या का रकर ◌ाम ह ै व्यवक्तयों या ू ◌ं ◌ं समहों के मध्य अतवक्रष या का आधार सप्रेष ह ै अतः, द्वद की उत्रवत म सप्रेष की बहत ब्रा व र्मका ू ू ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 41 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4.4 सप्र ेष सप्रेष से आकय सामान्यतः ि्रों एि विचारों की विविध माध्यमों से अवर्व्यवक्त ह ै ये माध्यम ◌ं ◌ं इलेक्रीवनक, मवित, मशवखक अ◌ाा आवतक हो सकते ह इस प्रकार, सप्रेष अरने विस्तत रुर म, ृ ु ◌ं ◌ं इलेक्रीवनक माध्यमों, याा – टविव, इटरनेट, रेवडयो, कम्तयटर, आवद या मवितमाध्यमों, याा – समाचार- ु ु ◌ं रर, रवरकाए,ु रस्तक, आवद या मशवखक माध्यम अ◌ाषत बोलकर या आवतक माध्यमों अ◌ाषत हिा-ि्रा ु ◌ं एि अत-सचालन द्वारा सचनाओ के आदान-प्रदान की प्रवक्रया ह ै ये सचनाए,ुँ ◌्◌ान-व्रिान से र्व सबवधत ू ू ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं र्व हो सकतव ह या व्यवक्त म अतवनषवहत ि्रों का काव्दक या साके वतक रुरातर र्व हो सकतव ह ◌ं ◌ं ◌ं अरस्त ने इस सबध म कहा ह ै वक

Quotes detected: **0.02%** id: **68**

“बोले तए क्द मानवसक अनि्रों के सके त ह ताा वलख े तए क्द ु ु ◌ं ◌ं ◌ं बोले तए क्दों के सके त ह”

ि◌अरस्त, 14 एसी ऑन इरप्रेटेकन) इस प्रकार, सप्रेष सके तों की एक ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं सामान्य प्र ◌ालव द्वारा व्यवक्तयों के मध्य अ◌ाष का आदान-प्रदान ह ै आइ० ए० करचडषस ने ि◌ष ष 1928 म सप्रेष की रकर◌ाषा देते ह कहा वक

Quotes detected: **0.04%** id: **69**

“सप्रेष उस समय ुवटत होता ◌ं ◌ं ह ै ◌ीब एक मवस्तष्टक अरनि ◌ातिार के साा इस प्रकार कायषकरता ह ै वक कोई अन्य मवस्तष्टक प्र◌ार्वितहोता ह ै रर उस अन्य मवस्तष्टक म रहले मवस्तष्टक की ◌ार्ुँवत हव अनि्रों का ◌ीन्म होता ह”

ै ु डेविड बेरलो ने सप्रेष की ब्रा व विस्तत एि सारतवर्षत व्याया की ह ै ि◌ष ष 1960 म सप्रेष की व्याया ृ ◌ं ◌ं ◌ं करते हए उन्होंने वनवम्नलवखत त्यों को उित वकया : ृ □ अ◌ाष मनष्टयों म होते ह; ु □ सप्रेष अ◌ाष का अतर नहीं ह ै बव्क सदके का अतर ह;ै ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं □ अ◌ाष सदके म वनवहत नहीं होते ह बव्क सदके का प्रयोत करनिाले व्यवक्तयों म वनवहत होते ◌ं ◌ं ह; □ क्द का अ◌ाष नहीं होता ह ै वसरष व्यवक्त का अ◌ाष

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **70**

होता ह;ै □ व्यवक्त समान अ◌ाष उसव सवमा तक रखते ह वीस सवमा तक ि◌ी समान अनि्र् रखते ह ै या ु समान अनि्रोंका अनमान लता सकते ह; ु ु □ अ◌ाष वनवश्चत नहीं होते ह, ◌ीस

ै े-ीसै े अनि्र् बदलते ◌ीाते ह ि◌सै े-सै े अ◌ाषर्व बदलते ◌ीाते ु ह; ताा □ एक चवी के वलए कोई र्व दो व्यवक्त एक ◌ीसै ◌ा अ◌ाष नहीं रखते ह; उररोक्त त्यों के आधार रर सप्रेष को वनम्न क्दों म रकर◌ार्वषत वकया ◌ीा सकता ह ै – ◌ं सप्रेष सदके के अतर की एक ऐसव प्रवक्रया ह ै वीसम सदके का प्रयोत करनिाले व्यवक्त अ◌ाषत सदके ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं प्रेषक एि सदके ग्राहक सदके का सचार करते ह प्रेषक उस सदके म अरने मानवसक अनि्रों के अनरुर ु ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं अ◌ाष को वनबि करता ह ै रर ग्राहक अरने मानवसक अनि्रों के अनरुर सदके से अ◌ाष को ग्रह करता ु ु ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 42 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ह ै प्रेषक रर ग्राहक के अ◌ाष म समानता तब होतव ह◌ी ब दोनों के मानवसक अनि्र् समान स्तर के होते ु ह अभ्यास रश्न 1. माइकल वनकोलसन द्वारा दव तई द्वद की रकर◌ाषा का उ्लेख कर ◌ं 2. आइ० ए० करचडष द्वारा दव तई सप्रेष की रकर◌ाषा का उ्लेख कर ◌ं 3. द्वद की वस्◌ावत म व्यवक्तयों के वहत एक-दसरे के _____होते ह ◌ं ◌ू 4. द्वद की वस्◌ावत म प्रत्येक र् यह मानता ह ै वक उसका _____उसके _____कायष कर रहा ह ै ◌ं 5. द्वद व्यवक्तयों या समहों के मध्य अतवत म हए _____का रकर ◌ाम ह ै ◌ू ◌ं 4.5 सप्र ेष के क्तवनाश्लषे अवना् टीवनी तथा सच् ◌ार के त यआधुक्त क साध ◌ों रर क्तवनावनाादास्रद मुद्दों के प्रस्तुतीकर म रक्तरप्रेक्ष्य का प्रयोग ें सप्रेष के सदर् ष म रकरप्रेक्य का आकय सप्रेष म सेा वकए तए अ◌ाष एि अभ्यास को ◌ार्षा एि सके तों ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं द्वारा तवठत करने, सदके की सरचना ताा मववडया सतठन एि समी द्वारा उसके प्रसार के वलए अरनाए ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ीानिाले उरातम से ह ै रकरप्रेक्य वसरष इस बात की ◌ीुँच नहीं करता ह ै वक कै से सदके , सचनाओ का प्रसार करता ह ै ◌ू ◌ं ◌ं ताा व्यवक्ततत एि सामवहक व्यिहार को प्र◌ार्वित करता ह ै बव्क यह इस बात की र्व ◌ीुँच करता ह ै वक ◌ू ◌ं कै से सदके सस्कवत एि समदाय का वनमाष करता ह,ै उनम स्◌ावयत्◌ि लाता ह ै रर उनम रकरितषन लाता ृ ु ◌ं ◌ं ◌ं ह ै ◌िास्ति म रकरप्रेक्य से इस

बात की ीाुँच की ीातव ह ै वक कै से सदके ों का उत्रादन होता ह,ै कै से ि ं मनष्टयों के समह म सचकरत होते ह रर सदके ों के रकर ाम को ध्यान म रखते हए उनका विश्लेष कै से ु ू ं ं वकया तया ह ै 4.5.1 पररश्ेक्ष्य े रश्ेार रकरप्रेक्य के म्यतः तवन

Plagiarism detected: **0.01%** https://www.easyhindivyakaran.com/hindi-varna… id: **71**

प्रकार होते ह: ु 1. प्रकायाषत्मक रकरप्रेक्य – रकरप्रक्े य का यह प्रकार, व

्यवक्त मास वमवडया

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **72**

के द्वारा सप्रेष का वकस ं प्रकार उरयोत करता ह ै ए इसका लार् क्या ह,ै क

ा ि नष करता ह ै कै से यह ररे समी के वलए ू ं समग्र रुर म कायष करता ह?ै कै से यह व्यवक्त विकषे के वलए कायष करता ह?ै आवद त्यों की र्व ीानकारव इस प्रकार के रकरप्रेक्य से प्रासे होतव ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 43 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2. समालोचनात्मक/सास्कवतक रकरप्रेक्य – इसम वमवडया द्वारा सप्रेवषत सदके म वनवहत कवक्त का ृ ं ं ं ररव् वकया ीाता ह ै ताा उस सदके म से दककष /िोता/राठक द्वारा वनकाले तए विविध अ ों ं ए ंविचे नाओ का विश्लेष वकया ीाता ह ै ं ं 3. प्रायोवतक रकरप्रेक्य– इसम समी वि्रान की तकनवकों, याा प्रयोत ए स्िदेश आवद का ं प्रयोत सप्रेष , विकेषतः ीन सप्रेष के , स्ानात्मक, अवि्रत्यात्मक ताा व्यिाहाकरक ्ेर रर ृ ं ं ं श्र ा िाले प्रि्रा का ररव् वकया ीाता ह ै यवद टेवलविीन रर प्रसाकरत होनिाले वकसव विकेष कायषक्रम के सदर् ष म इन तवनों रकरप्रेक्यों को दखे ा ं ीाया तो अलत-अलत रकरप्रेक्य के लोतों के मन म कायषक्रम को लेकर अलत-अलत

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 3 resources! id: **73**

प्रकार के सिाल आते ह ये वनम्नवलवखत हो सकते ह: प्रकायाषत्मक रकरप्रेक्य के आधार रर इस प्रकार क

े प्रश्न रछे ीा सकते ह– ू □ आर इस कायषक्रम को क्यों दखे ते ह ? □ यह कायषक्रम ररुषों रर मवहलाओ को वकतना रर वकस प्रकार प्र्रावित करता ह?ै ु ं □ क्या यह कायषक्रम दककष ों को कछ वसखाता ह?ै या क्या इसम दककष ों को कछ सवखने को ु ु वमलता ह?ै □ क्या लोत अरने वमरों से इस कायषक्रम के बारे म बात करते ह? □ वकस प्रकार यह समी के विवर्न्न तत्िों को प्र्रावित करता ह?ै समालोचनात्मक/सास्कवतक रकरप्रेक्य के आधार रर वनम्नवलवखत प्रकार के प्रश्न कायषक्रम के विश्लेष के ृ ं वलए वकए ीा सकते ह : □ कै से यह सामावीक म्यों ए सामावीक आदकों को प्र्रावित करता ह?ै ू ं □ क्या यह सहयोत के बदले प्रवतस्रिाष को बढ़िाा दते ा ह?ै □ क्या कायषक्रम ि्रास्तविक अनि्रों को ीन्म दते ा ह?ै ु □ कै से सामावीक सरचना को प्रर्वित करता ह?ै ं □ सस्कवत रर इसका क्या प्रि्रा श्र ता ह?ै ृ ं इस प्रकार यह स्रस ह ै वक रकरप्रेक्य सप्रेष म महत्ि्र ष र्वमका वन्रााता ह ै सप्रेष का विश्लेष करते ू ू ं ं समय यवद रकरप्रेक्य को ध्यान म नहीं रखा ीाता ह ै या रकरप्रेक्य की तलत समे विकवसत हो ीातव ह ै तब द्वद

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 4 resources! id: **74**

का ीन्म होता ह ै रर लबव या तर्वर द्वदात्मक रकरवस्ावत व्यवक्त म मानवसक अकावत को ीन्म दते व ं ं ं ं ं ह ै इसके रकर ामस्िरुर र्शवतक अकावत का ीन्म होता ह

ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 44 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4.6 सप्र ेष के क्तवनाश्लषे अवना् टीवनी तथा सच् ार के त य आधुक्त क साध ों रर क्तवनावनाादास्रद मुद्दों के प्रस्तुतीकर म स्के त का प्रयोग ें सके त एक वचन्ह, वनकान, प्रतवक या क्द ीी कछ इवतत करता ह,ै कछ अ ा ष दते ा ह ै या वकसव विचार, ु ु ं ं ि्रस्त या सबध का प्रवतवनवधत्ि करनिाला समो ीाता ह ै सके त व्यवक्त को अत्यत कवठन, सप्रत्ययों ु ं ं ं ं ं ए अनि्रों को सबवधत करके समेने म सहायता करता ह ै सर्व प्रकार के सप्रेष , सके तों के माध्यम ु ं ं ं ं ं ं से सम्रन्न होते ह सके तों के अि्रा म सप्रेष की सक्रना र्व नहीं की ीा सकतव ह ै सके त क्द, ं ं ं ं ध्ि्रवन, कारवकरक वस्ावत, विचार, ष्टयवचर, आवद के रुर म होते ह ताा कछ अन्य अ ाष का प्रवतवनवधत्ि ु करने के वलए प्रयक्त वकए ीाते ह ीसै े – लाला रत का एक असर्ी,

Quotes detected: **0%** id: **75**

“रुकने”

के एक सके त के रुर म ु ु ं ं प्रयक्त वकया ीाता ह ै मानवचर रर वदखनिाले नवले रत की रेखा नवदयों का प्रवतवनवधत्ि करतव ह ै ु ं सके त का अ ाष सस्कवत विकषे रर वनर्रष करता ह ै एक हव सके त एक सस्कवत विकषे म वर्न्न ृ ृ ं ं ं ं अ ाष दते ा ह ै रर दसरव सस्कवत विकेष म वर्न्न अ ाष ीसै े- आग्ल्रााषा के क्द

Quotes detected: **0%** id: **76**

‘आउल’

का अ ा ष ृ ं ं ू ्रारतवय सस्कवत म एक र्व ए एक मख ष व्यवक्त के रुर म वलया ीाता ह ै ीबवक अमरवकी सस्कवत म ृ ृ ू ं ं ं एक र्व ए एक बविमान व्यवक्त के रुर म वलया ीाता ह ै उररोक्त उदाहर से स्रस ह ै वक सके त का ु ं ं अ ाष

उसम अतवनषवहत नहीं होता ह ै बव्क सस्कवत विकेष के साा होनिालव अतवक्रष या के माध्यम से ृ ं ं ं सवखना ऱा ता ह ै सके त समग्र मानिवय समे की आधारवकला ह ै एि समग्र मानिवय ्ान के ं ं सप्रत्ययवकर का साधन ह ै यह व्यवक्त को ससार, वीसम वक िह रहता ह,ै को समेने म सहायता करता ं ं ह ै रर इस प्रकार वन यष न के वलए आधार प्रदान करता ह ै सके त मानि मवस्तष्टक को, सिदे व आततों का ं ं प्रयोत करके अाष का वनमाष करने ताा सके तों का िक्दाों, लक्याों, सके ताों आवद के माध्यम से) ं ं विकटवकर करने की वनरतर अनमवत दते ा ह ै ू ु ं अकाव्दक सप्रेष को समेने म सके तों की अवत महत्िर ष र्वमका होतव ह ै सके तों को प्रयक्त ू ू ु ं ं ं करने के तरवके एि सप्रेष म कावमल व्यवक्तयों, अाषत वकसने वकसको सके त वकया का अध्ययन कर, ं ं ं सप्रेष के प्रकार एि उसके अाष को ीाना ीाता ह ै ीसै े एक ियस्क व्यवक्त द्वारा एक बच्चे के बाँुह को ं ं उसकी कलाई से रक़ा कर हके से ँरर उठाने का अाष कऱा े रहनते समय बच्चे को बाँुह ँरर ँठाना सवखाना होता ह ै ियस्क रर बच्चे के बवच म सके त के आदान-प्रदान से यहा रता लतता ह ै वक यह ं

Quotes detected: **0%** id: **77**

'क्य'

िअकाव्दक सप्रेष का एक प्रकार) ह ै ु ं सप्रेष म प्रयक्त सके तों सहव विश्लेष कर सप्रेष म वनवहत सदके का अाष समेने के वलए यह ीानना ु ं ं ं ं अवत आिश्यक होता ह ै वक प्रयक्त सके तों क्याअाष ह,ै कै से उसने अरनायह अाषप्रासे वकया ह ै रर समाी ु ं म अाष का वनमाष करने के वलए यह वकस

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 5 resources! id: **78**

प्रकार कायष करता है? एक हव अाष के सप्रेष के वलए सप्रेष म कावमल वर्न्-वर्न् प्रकार के व्यवक्तयों के वलए प्रयक्त सके त ु ं ं ं र्व वर्न्-र्न् हो ीाते ह ीसै

े प्राावमक स्तर के सामान्य विद्यावाषयों को ्रीोनिाकाक का सके त करन े ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 45 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 के वलए चम्मच वदखाया ीा सकता ह ै िहीं ष्वसबावधत विद्यावाषयों को ्रीोन की खकब से या ु ु ्रीोनिाकाक को उच्चकरत कर सके वतत वकया ीा सकता ह ै ं सके त ि ो प्राावमक साधन ह,ै वीसके द्वारा मनष्टय अाष वनमाष करता ह,ै ्ान को ितीकत करता ह,ै ृ ु ं ि्रानाओ को ितीकत करता ह ै एि समाी को विवनयवमत करता ह ै याा,विक रर व्लक िआखुँ ों का ृ ं ं ं ं तवव्र तवत से खलना एि बद होना) दोनों एक ीसै व वक्रयाए ुँ ह लेवकन दोनों के अाष अलत-अलत ह विक ु ं ं ं ीहाुँ ष़ा यर र ष सदके को प्रसाकरत करने की कारवकरक वस्ावत ह,ै िहीं व्लक वनराषक ह ै अलत-अलत ू ं ं ं रकरष्टय म एक हव सके त के अलत-अलत अाष होते ह, याा लाल रत रैवरक वसग्नल की तरह काय ष ं ं करता ह ै तो दसरे रकरष्टय म िह खन का सके त करता ह ै यह खतरे का र्व वनकान ह ै दसरे क्दों म यह ू ं ू ू कहा ीा सकता ह ै वक सके त प्रसत अवीतष होते ह रर एक सस्कवत विकेष म एि विवर्न् सस्कवतयों म ृ ृ ं ं ं ं ं इसका अाष बदलते रहता ह ै ीसै े लाल रत, रोम म यि के दि ता मासष से सबवधत ह ै तो चाइना म लाल ु ं ं ं रत सशाग्य, सम्रवत्त, खकहालव, एि राररकरक ि ावहक रकरधान का द्योतक ह ै अमके रका म लाल तलाब ु ु ं ं ं ं तयार के प्रस्ति का प्रतवक ह ै तो लाल कऱा ों म होना आवाकष ्वत का रकरचायक ह ै रर लाल वदखना क्रोध का द्योतक ह ै

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindipunjab.com/र-के-विभिन्न-रूप id: **79**

इस प्रकार एक हव सके त विवर्न् सस्कवतयों म वर्न्-वर्न् अाष दते े ह ृ ं ं इस प्रकार,

सके त का विश्लेष सप्रेष के विश्लेष के वलए महत्िर ष ह ै सके तों को तलत अाष म ू ं ं ं समेना द्वद एि अकावत को ीन्म दते ा ह ै ं ं ं 4.7 सप्र ेष के क्तवनाश्लषे अवना् टीवनी तथा सच् ार के त य आधुक्त क साध ों रर क्तवनावनाादास्रद मुद्दों के प्रस्तुतीकर म स्स्टक्तरयोटाइर का प्रयोग ें वस्टकरयोटाइर से आकय सामान्यतः व्यवक्तयों के वकसव समह के मानवसक प्रवतवनवधत्ि, ीा समह के ू ू सदस्यों के प्रवत हमारव ि्रानाओ को प्र्रावित करता ह,ै से ह ै वलरमनै ि1992) वस्टकरयोटाइर को ं मवस्तष्टक म बनव तस्िवर की स्ा दते े हए कहते ह वक वस्टकरयोटाइर म स्ानात्मक एि ि्रानात्मक दोनों ं ं ं तत्ि होते ह वस्टकरयोटाइर के प्रयोत के दो र् सामने आते ह □ यवद हम सहव वस्टकरयोटाइर का वनमाष करते ह तब ीनवबयों के व्यिहार के सदर् ष म ं सास्कवतक स्तर रर लताया तया अनमान र्व सहव होता ह;ै ताा ृ ु ं □ तलत वस्टकरयोटाइर तलत समे को ीन्म दते ा ह ै 4.7.1 न्स्टररयोटाइप े उपयोत ें सें स्याए ँ इसके उरयोत म वनम्नवलवखत समस्याए ुँ सामने आतव ह: 1. ीनवबयों के साा अप्रि्राव सप्रेष – ीब हम ीनवबयों के साा सप्रेष , विकषे तः अनमने ं ं ढत से सप्रेष करते ह तब हमारा वस्टकरयोटाइर सवक्रय हो ीाता ह ै रर ीनवबयों के साा ं ं सप्रेष करते समय हम अचेतन रुर स े अरने आकाओ को सतस करने लतते ह इसके ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 46 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रकर ामस्ि्ररुर सप्रेष अप्रि्राव हो ीाता ह ै अतः, कोई र्व अनमान वनकालने के वलए हम यह ु ं समेने का प्रयास करना चावहए वक कोई ीनबव व्यवक्त वकन सामावीक वसिातों से वनदवदेश कत ं हो रहा ह ै रर सप्रेष को प्रि्राव बनाने के वलए हम मवस्तष्टक को खोलकर रुवचर ष ढत से ू ं ं सप्रेष करना चावहए ं 2. चुँवक वस्टकरयोटाइर प्राकवतक उत्राद ह ै अतः, ि े हमारे सचनाओ के ससाधन की प्रवक्रया को ृ ू ू ं ं प्र्रावित करते ह 3. ि्रास्ति म वस्टकरयोटाइर ितीकर का विषय हो ीाता ह ै ीब हम लोतों को ितीकत करते ह ृ तब ये ीनवबयों के साा हमारे सप्रेष को प्रत्यः प्र्रावित करता ह ै ीनबव के व्यिहार ं के विषय म हमारा रहला अनमान आिश्यक रुर से उस वस्टकरयोटाइर रर आधाकरत होता ह ै ीी ु हम ीनवबयों के सस्कवत, प्रीावत एि ीातवय समह के प्रवत रखते ह ृ ू ं ं 4.

एक वस्टकरयोटाइर स े आकय व्यवक्तयों के वकसव समह के प्रवत मवस्तष्टक म वस्ार उस विश्वास से ह ै ू वीसका कोई आधार नहीं होता ह ै लेवकन ी व्यवक्त के सप्रेष को समेने के उरातम को ं आसानव से प्र्रावित करता ह ै ीब हम अन्य व्यवक्तयों के साा सप्रेष करते ह तब यह र्रात ं ए समानर्वत को ीन्म दते ा ह ै यह वस्टकरयोटाइर थ्रेट के द्वारा सप्रेष को प्र्रावित करता ह ै ु ू ं ं यहा क्ाक् ए कायषस्ालों रर अवधक होता ह ै ं ं ीब व्यवक्त अरनव योग्यता के अनसार इसवलए सप्रेष नहीं करता ह ै क्योंवक िह अरने द्वारा प्रत्वकत ृ ु ं की तई स्िय की न्यनता के प्रवत सचेतन ह ै तो यह वस्टकरयोटाइर थ्रेट ह ै ीसै े अवधक से अवधक स्या म ू ं ं ररुष सदस्यिाले एक समह की मवहला सदस्य वस्टकरयोटाइर थ्रेट के कार नहीं बाता करतव ह यह ु ू सप्रेष को प्र्रावित करता ह ै यह क्ाक् ए कायषस्ालों रर अवधक होता ह ै ं ं अतः, सप्रेष का विश्लेष करते समय सप्रेष म कावमल व्यवक्तयों के वस्टकरयोटाइर रर ध्यान दने ा ं ं आिश्यक ह ै इसके साा हव साा विश्लेष करनिाले व्यवक्त को र्व अरने वस्टकरयोटाइर रर ध्यान दने ा चावहए द्वद की वस्ावत से बचने ए कावत स्ावरत करने म यह बहत सहायक ह ै ं ं ं 4.8 सप्र ेष के क्तवनाश्लषे अवना् टीवनी तथा सच् ार के त य आधुक्त क साध ों रर क्तवनावनादास्रद मुद्दों के प्रस्तुतीकर म तल्कारिास्र का प्रयोग ें

Quotes detected: **0%** id: **80**

'अलकररोवत इवत अलकारः'

र० विश्वनाा ने सावहत्य दरष म अलकार को इसव रुर म रकर्रावषत वकया ं ं ं ं ह ै इसका अाष ह ै ी सीाता ह,ै अलकत करता ह,ै िहव अलकार ह ै काव्यकास्त्र म इसका प्रयोत इसव ृ ं ं अाष म वकया ीाता ह ै सप्रेष के सदर् ष म इसका अाष ोा ा व्यारक हो ीाता ह ै इसे कान के अाष ए ं ं ं अन्य सतठनात्मक अियिों का उरयोत कर लेखन या िाचन को आकवषतष बनाने की कला के रुर म ं ीाना ीाता ह ै सप्रेष के एक साधन के रुर म , लेखन या िाचन के अध्ययन को र्व अलकारकास्त्र के रुर म ीाना ीाता ं ं ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 47 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अलकार को प्रोवक्त की एक कला की स्ा दव तई ह ै वीसके द्वारा एक लेखक या िक्ता िोताओ या ं ं ं राठकों या दककष ों के एक विकषे समह को एक विकषे रकरवस्ावत के प्रवत सवचत, आकवषतष या अवर्प्रेकरत ू ू करना चाहता ह ै अरस्त ने इसे वकसव र्व दव हई वस्ावत म सप्रेष के उरल्ध साधनों के अिलोकन की योग्यता के रुर म ु ं रकर्रावषत वकया ह ै अरनव रस्तक रीवलवटकल स्टाइल म रीबटष हरमनै ने कहा ह ै वक

Quotes detected: **0.04%** id: **81**

"अलकारकास्त्र, स्ितरता, समानता ताा ु ं ं न्याय सबधव मद्दों ी वक िाद-विवाद, प्रदकनष , रैलव आवद कायषक्रमों के माध्यम से अक्सर वबना नैवतक ु ं ं विषयों की ्वत के सामने लाए ीाते ह, के विश्लेष की कला ह"

ै ीम्े स ्ियिड व्हाइट के अनसार, अलकारकास्त्र वसरष रीनववतक विषयों से हव सबवधत नहीं ह ै बव्क यह ु ं ं ं समग्र रुर से सस्कवत को प्र्रावित करता ह ै अरनव रस्तक

Quotes detected: **0%** id: **82**

'व्हने िडषस ली वदयर वमवनत'

म िह कहते ह ृ ु ु ं ं वक

Quotes detected: **0.03%** id: **83**

"क्द िो विवध उत्रन्नकरते ह वीसके द्वारा सस्कवत को अनरव्त वकया ी सके उसकी समव्ा की ृ ु ं ी सके ए उसका रुरातर वकया ी सके "

ं ं व्हाइट रर हरमन दोनों का मानना ह ै वक अलकारकास्त्रमस स्कवतए नातकरक ीविन दोनों को रुरातकरत ृ ं ं ं ं करने की कवक्त होतव ह ै आधवनक समय म र्व अलकारकास्त्र को इसव रुर म दखे ा ीाता ह ै ु ं अलकारकास्त्र, मशवखक ए अमशवखकदोनों रुरों म स्ानवय स्तर से राष्टरवय स्तर तक के समदायों को ु ं ं प्र्रावित करने के उरकर के रुर म प्रयोत वकया ीाताह ै 4.8.1 अलेरशास्त्र ेा उपयोत ां अलकारकास्त्र के उरयोत को वनम्नवलवखत विदओ के माध्यम से समो ी सकता ह:ै ं ं ं ु □ अलकारकास्त्र प्रोवक्त की समव्ात्मक समे विकवसत करने ए विश्लेष करने म सहायता करता ं ं ह ै इस तरह के विश्लेष म , लेखन के उद्दश्े य, राठक ित,ष माध्यम ताा प्रारुर को ध्यानम रखा ीताह ै दसरे क्दों म , इस प्रकार के विश्लेष म न वसरष विषयिस्त या सदेक म वदए तए सर्व ु ं ू अों की खोी की ीातव ह ै बव्क यह र्व बताया ीाता ह ै वक लेखक ने इसे क्यों वलखा, लेखक कशन ह,ै कै से इसे व्यिवस्ात वकया तया है, यह कब रर कहाँु प्रकावकत हआ ह ै रर दककष /राठक को यह क्या सदके दते ा ह?ै ं □ यह मानिवय सबधों की बेहतर समे विकवसत करने म सहायता करता ह ै ं ं □ यह सदके म वनवहत तसे अाष को प्रकट करने म म र्व सहायता करता ह ै ु ं □ इससे लेखक की अवर्प्रेर ा या विचारधारा को समेने म सहायता वमलतव ह ै इसके साा हव अलकारकास्त्र यह र्व बताताह ै वक कै से सास्कवतक तत्ों को उस सदके म वदखलाया तया ह ै ृ ं ं ं □ इसम सदके के विवर्न्न रवक्तयों के मध्य सबधों का रता चलता ह ै इसके साा हव यह र्व रता ं ं ं ं चलता ह ै वक ये रवक्तयाँु सदके म वकस प्रकार कायष करतव ह इसके द्वारा यह र्व दखे ा ीाता ह ै वक ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 48 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 सदके रर उसको प्रस्तत करने का तरवका, ी वक सप्रेष की असरलता का एक प्रमख कार ु ु ं ं ह,ै वकतना प्रि्राव ह ै रर

यह र्व दखे ा ीाता ह ै वक सदके के माध्यम से ीी बतान े की कोवकक ं की तई ह,ै िह लोतों की समे म वकतनव आई है? इसके द्वारा सदके के तवन िव यों ं कवै ्क,नैवतक एि रीनैवतक म ितीकत वकया ीा सकताह ै ृ ं □ इससे लोतों के सप्रेष के तरवकों के सबध म व्यारक ीानकारव वमलतव ह ै उनके सप्रेष के ं ं ं ं प्रसतों, वकसव विषेष प्रसत म सप्रेष का क्या प्रिाहोता ह,ै सामावीक रकरितषन लाने के वलए ं ं ं सदके ों को रुरातकरत करने के ्रेरों एि इस सदर् ष म आनिोलव चनशवतयों के सदर् ष म ीानकारव ु ं ं ं ं ं ं वमलतव ह ै यह बताता ह ै वक सदके कै से रर क्यों प्रिाव ह ै या अप्रिावह ै ं इस प्रकार, यह बात स्रस हो ीातव ह ै वक अलकारकास्त्र को ध्यान म रखना सप्रेष के विश्लेष म वकतनव ं ं महत्िर ष र्वमका वन ाता ह ै ू ू अभ्यास रश्न 6. रकरप्रेक्य के प्रकारों को सचव बि कर ू 7. प्रायोवतक रकरप्रेक्य से क्या आकय ह?ै 8. सके त के विकेष सदर् ष म

Quotes detected: **0%** id: **84**

'क्य'

से क्या आकय ह?ै ु ं ं 9. वकसने वस्टकरयोटाइर को मवस्तष्टक म बनव तस्िवर की स्ा दव ह?ै ं 10. वस्टकरयोटाइर के उरयोत के रलस्िरुर उत्रन्न होनिोलव समस्याओ को सचवबि कर ू ं 11. रीबटष हरमनै के अनसार, अलकारकास्त्र को रकर ावषत कर ु ं 4.9 िक्तत क्तिक्षा के क्तवनिोष स्दर् य म राठ्यरुस्तकों का क्तवनाश्लेष ें कावत वक्ा ितषमान म राष्टरवय राठयचयाष की आिश्यकता ह ै इसे सर्व विद्यालयों म आिश्यक रुर से ं रढ़ाया ीाना चावहए इसवलए सर्व विद्यालयव राठयक्रमों म कावत वक्ा के अियिों को कावमल वकया ं ीाना आिश्यक ह ै वक्ा के प्राावमक स्तर रर तो यह रर र्व आिश्यक ह ै क्योंवक यह अिस्ाा विद्याी के चकरर वनमाष की आिश्यकता होतव ह ै इस अिस्ाा म विद्याी के मन म ीी चवी ुर कर ीातव ह,ै ि वचरकाल तक स्ायव रहतव ह ै राठयक्रम म कावत वक्ा के अियिों को कावमल करने के ं वलए यह आिश्यक ह ै वक ितषमान म विवर्न्न राठयरस्तकों म कावत वक्ा के सदर् ष म ीी बात कहव तई ु ं ं ह,ै उसका विश्लेष वकया ीाय क्या ि े िास्ति म कावत वक्ा के प्रसार म सहायता करते ह या युँ कह ले ू ं वक क्या ि े िास्ति म कावत वक्ा के अियि ह इससे कावत वक्ा के िाव राठयक्रम के विकास म ं ं सहायता प्रासे होतव दसरे क्दों म यह कहा ीाय वक हम राठय रस्तकों का कावतवक्ा के विकेष सदर्ष ु ं ं ू म विश्लेष करना होता तो यह अवतकयोवक्त नहीं होतव अब प्रश्न यह उठता ह ै वक राठयरस्तकों का ु विश्लेष कै से वकया ीाय?वकन राठयरस्तकों का विश्लेष वकया ीाय? विश्लेष की विवध क्या होतव? ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 49 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विश्लेष करते समय वकन त्यों को ध्यान म रखा ीाय? अब बारव-बारव से इन प्रश्नों के उत्तर रर चचा ष करते ह 4.9.1 पाठयपस्ियों े न्नश्ले ष ेी न्नन्ध ु राठयरस्तकों के विश्लेष की सिाषवधक प्रमख एि उरयोतव विवध विषयिस्त विश्लेष ह ै िसलन ने ु ु ु ं इसकी रकर ाषा दते े हए कहा वक

Quotes detected: **0.02%** id: **85**

"विषयिस्त विश्लेष कोध की एक तकनवकी ह ै वीसका उद्दश्े य स्रस ु विषयिस्त के अिलोकनवय एि वनयवमत विर का विचन करना होता ह"

ै इस प्रकार, कावत वक्ा ु ं ं के सदर् ष म राठयरस्तक का विश्लेष करते समय राठयरस्तकों म कावत वक्ा के सदर् ष म अिलोकनवय ु ु ं ं ं एि वनयवमत रुर से ि व तष विषयिस्त का विश्लेष एि विचन करते ह ु ं ं 4.9.2 न्नश्ले ष ेी इाई विश्लेष की इकाई से आकय विश्लेष करते समय ध्यान म वदए ीाने िाले त्यों से ह ै इसके तहत हम िाक्य को ध्यान म रख सकत े ह िाक्य से आकय राठयरस्तक म वनवहत समस्त िाक्यों से ह ै हम दखे ु सकते ह वक विषयिस्त के वकन िाक्यों म कावत वक्ा से सबवधत कशन सव बात कहव तई ह ै प्रश्न को ु ं ं ं हम विश्लेष की दसरव इकाई के रुर म दखे सकते ह विषयिस्त म वीतने र्व प्रश्न वदए तए ह, उनम ु ू कावतवक्ा के विविध ुटकों से सबवधत कशन-कशन से प्रश्न ह वकन प्रश्नों से कावतवक्ा के वकस ुटक ं ं ं ं रर प्रकाक श़ ता ह ै उसकी रनरिावत वकतनव बार हई ह ै अभ्यास को विषयिस्त विश्लेष की तवसरव ृ ु ु इकाई मानव तई ह ै इसम यह दखे ा ीाता ह ै वक विषयिस्त म अध्येता के वलए कावतवक्ा के विवर्न्न ु ं ुटकों के अभ्यास का वकतना अिसर वदया तया ह ै इसके अलिा वचरों को र्व हम विश्लेष की एक इकाई के रुर म दखे सकते ह विषयिस्त म कावतवक्ा से सबवधत वकतने वचर ह? वकस वचर स े ु ं ं ं कावतवक्ा के कशन से ुटक का ि नष होता ह ै एि उसकी आिवत वकतनव ह,ै आवद? ृ ं ं 4.9.3 शान्ि न्शक्षा े अनयन ां कावत वक्ा के अियिों से आकय उन त्यों से ह ै ीी कावत वक्ा के प्रसार म सहायक ह ै ितषमान म ं ं कावतवक्ा के प्रसार म सहायक त्यों के रुर म वनम्नवलवखत त्यों को मान्यता दव तई ह:ै ं ं □ एकता की िाना – एकता से आकय वकसव ित ष या समह का वहतों की एकता, उद्दश्े यों की एकता, ू मानकों की एकता एि सहानर्वत के आधार रर एक होने की िाना से ह ै इसको उस धाते के रुर म ू ं समो ीा सकता ह ै ीी समाी के विवर्न्न सदस्यों को एक साा बाँुध के रख सकता ह ै विश्लेष करते समय हम यह दखे ते ह वक विषयिस्त म इस त्य को वकस प्रकार से कशर वकतनव बार ु समािवे कत वकया तया ह ै □ दसरों के प्रवत उत्तरदावयत्िबोध – दसरों से आकय स्िय को छो़ा कर अन्य प्राव , वीनम वक रक-र्व ु ं ू ू र्व कावमल ह, के प्रवत आरके दावित्िों की समे से ह ै विषयिस्त म अन्य प्राव यों के प्रवत आर के ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 50 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 दावयत्ि को आरको कै स े समोाया तया ह ै या इस सदर् ष म कै से आर की समे विकवसत की तई ह ै ं यह विश्लेष का विषय होता ह ै □ दसरों को तयार दने ा- इसम मनष्टयों के साा-साा रक-रव्यों को र्व तयार दने े की बात की ीातव ह ै ु ु ू रर विश्लेष करते समय यह दखे ा ीाता ह ै वक विषयिस्त म इसे वकतना रर वकस प्रकार स्ाान ु वदया तया ह ै □ विविधता की रहचान – विविधता से आकय, खान-रान, रुर-रत, आचार-विचार, ीवै िक विविधता ं आवद से ह ै ीब तक विविधता

की रहचान नहीं करायव ीाएतव तब तक एकता की बात नहीं की ीा सकतव ह ै ोरतवय रकरष्ठ्य म तो यह अवत आिश्यक ह ै क्योंवक यहाँ तो विविधता म हव एकताष्वसतोचर होतव ह ै विषयिस्त का विश्लेष करते समय हम यह देखते ह ै वक विविधता की ु रहचान करानेिाले त्य विषयिस्त म वकस प्रकार रर वकतनव मारा म कावमल वकए तए ह ु □ नस्लवय, प्रीातवय एि धावमषक र्दे ि्रा का अस्ि◌वकर – नस्लवय, प्रीातवय एि धावमषक र्दे ि्रा ं ं एकता के मात ष म बाधक ह ै अतः, राठयरस्तकों म इन चवीीं को समिावे कत नहीं वकया ीाना ु चावहए विश्लेष करते समय हम यह दखे ते ह वक राठयरस्तकों म इन चवीीं को वकतना स्ाान वदया ु तया ह ै एि वकस प्रकार इनको स्ाान वदया तया ह ै ं □ ्मा की ि्राना – ्मा हमेका कावत का मात ष प्रकस्त करतव ह ै विषयिस्त का विश्लेष करते ु ं समय हम, मानिहृदय म ्मा की ि्राना विकवसत करने िाले त्यों का विश्लेष करते ह इन त्यों को वकतना एि वकस प्रकार स्ाान वदया तया ह ै यह विश्लेष का मद्दा होता ह ै ु ं इस प्रकार हम राठयरस्तक का कावतवक्ा के सदर् ष म विश्लेष कर सकते ह रर कावतवक्ा के वलए ु ं ं ं राठयक्रम का वनमाष कर सकते ह ीा कावत स्ावरत करने म सहायक होतव ं अभ्यास रश्न 12. विषयिस्त विश्लेष की ि्रसलेन द्वारा दव तई रकर◌ाषा का उ्लेख कर ु 13. विषयिस्त विश्लेष की इकाइयों को सचवबि कर ु ू 14. कावत वक्ा के प्रमख अियि कशन-कशन से ह? ु ं 4.10 सारि् प्रस्तत इकाई म मानि ीविन के एक अवर्न्न अत द्वद का ि नष वकया तया ह ै द्वद वकसे कहते ह? ु ं ं ं द्वदात्मक रकरवस्ावत का मानि ीविन म क्या प्रि्रा होता ह?ै द्वद का मल कार क्या ह ै आवद की सञ्से ू ं ं ं एि स्रस चचा ष की तई ह ै इस चचाष के उररात द्वद म सप्रेष की र्वमका को स्रस वकया तया ह ै सप्रेष ू ं ं ं ं ं के विविध तत्ि वकस प्रकार द्वद को उत्रन्न करते हए ि द्वदात्मक रकरवस्ावत से बचने के वलए सप्रेष के ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 51 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विश्लेष म इन विविध तत्ि◌ों की र्वमका की व्याया की तई ह ै इकाई के अत म कावत वक्ा को ष्वस म ू ं ं रखते हए राठयरस्तक के विश्लेष रर चचाष की तई ह ै द्वद एि कावत वक्ा दोनों सहसबवधत ह क्योंवक ु ं ं ं ं ं ं द्वद से मानवसक कावत म व्यिधान उत्रन्न होता ह ै रर इसकी समावसे मानवसक कावत को रनस्ाषवरत ु ं ं ं करतव ह ै ितषमान राठयरस्तकों म कावत वक्ा सबधव तत्ि◌ों का वकस प्रकार समिके वकया तया ह,ै इसका ु ं ं ं विश्लेष आिश्यक ह ै तावक यह वनवश्चत वकया ीा सके वक राठयरस्तक विद्याी को द्वदात्मक रकरवस्ावत ु ं का सामना करने के वलए वकस प्रकार तैयार करता ह ै इस प्रकार यह इकाई अरने कवषषक के अनरुर ु अत्यत साषक एि उरयोतव ह ै ं ं 4.11 तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. द्वद एक वक्रया-कलार ह ै ीा तब सम्रन्न होतव ह ै ीब चेतन प्रा व ि्व्यवक्त या समह) अरनव ू ं इच्छाओ, आिश्यकताओ एि दावयत्ि◌ों से सबवधत रारस्रकरक असतत वक्रयाओ को सरावदत ं ं ं ं ं ं ं ं करना चाहते ह 2. सप्रेष उस समय ुवटत

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **86**

होता ह ै ीब एक मवस्तष्टक अरने ि्रातिार के साा इस प्रकार काय ष ं करता ह ै वक कोई अन्य मवस्तष्टक प्र◌ावित होता ह ै रर उस अन्य मवस्तष्टक म रहले मवस्तष्टक की ◌ाुँवत हव अनि◌ों का ीन्म होता ह

ै ु 3. विररवत 4. प्रवतर्, विरि 5. अतवक्रष या ं 6.

Plagiarism detected: **0.11%** https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/8… + 3 resources! id: **87**

इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.5.1 दखे ं 7. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.5.1 दखे ं 8. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.6 दखे ं 9. वलरमनै 10. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.7.1 दखे ं 11. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.8 दखे ं 12. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.9.1 दखे ं 13. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 4.9.2 दखे ं 14. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई क

◌ा खड 4.9.3 दखे ं 4.12 सद् र् य अवना् सहयोगी रुस्तकें 1. अरस्त.रेहोवरक (रासलेटेड बाइ,रीबटषसड्य,आर.) ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 52 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2. वनकोलसन,एम० ि1992).रैकनवलवट ऐण्ड द एनालवसस ऑर कनवललक्ट, कै वम्ि◌ी यवनिवसषवट ु प्रेस, र .11, 978-0-0-521-39810-7 ृ 3. बाडदेशन,एल० ि1997).कट ट एनालवसस ं 4. बेरलो,डव० के ० ि1960). द प्रीकसे ऑर कम्यवनके कन.न्ययीकष :न्य यीकष हीट, करनेहटष एण्ड ु ु ु विनसन, र. 15 ृ 5. बैरन ए० आर० ि1990). कनवललक्ट इन ऑतनष ◌ाइीश्े न्स 6. करचडषस,आइ० ए० ि1968). द सेक्रे ट ऑर वरडरीडष ष, सैटरडे करव्य,51, र० 15 ृ ु 7. वलरमनै ,ड्य० ि1992). रव्लक ओवरवनयन,न्ययीकष : हाक्ट, ि्स ऐण्ड कम्रनव ु ु 8. व्हाइट, ी◌ेे बव० ि1984). व्हने ि्डषस लस वदयरवमवनत,वककातो:दयवनिवसषवट ऑर वककातो ू ु ं ं प्रेस 9. हरमनै , आर० ि1995). रीवलवटकल स्टाइल:द आवटषस्रव ऑर रिार, द यवनिवसषवट ऑर ु वककातो प्रेस 4.11 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. सप्रेष के विश्लेष म रकरप्रेक्य की र्वमका रर प्रकाक डाल ू ं 2. टेवलविज़न एि सचार के अन्य साधनों रर प्रस्तत ि्विादस्रद मद्दों का विश्लेष करते समय उन ु ु ं ं मद्दों के प्रस्ततवकर म प्रयक्त सके तों का विश्लेष क्यों आिश्यक ह ु ु ु ं 3. वस्टकरयोटाइर से क्या आकय ह?ै 4. अलकारकास्त्र का अध्ययन सप्रेष के विश्लेष के वलए क्यों आिश्यक ह?ै ं ं 5. कावत वक्ा के विकेष सदर् ष म रौुँचीं क्ा के वहदव के राठयरस्तक का विश्लेष कर ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 53 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 5 - क्तिनद्यालय म ीविन का क्तिनश्ल षण: प्रक्ति रधष का ना ानरण; कारवक्तिरक दण्ड न उसक रक्तिरणाम; रक्तिरनार कव ◌ूक्तिमका; लैंक्तितक ◌ूक्तिमका न रूक्तिनादव Analyzing life at school: Culture of competition; Corporal punishment and its consequences; Role of family; Gender roles of stereotypes 5.1 प्रस्ताना 5.2 उद्दश्े य 5.3 बच्चों का विद्यालयव ीविन 5.4

Plagiarism detected: **0.01%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **88**

विद्यालय म प्रवतस्रधाष का ितिार 5.5 कारवकरक दण्ड से तात्रयष 5.5.1 विद्यालय म

वदया ीानिाला कारवकरक दण्ड एि उसके रकर ाम ं 5.6 बच्चों के विद्यालयव ीविन म रकरिार की र्वमका ू 5.7 विद्यालयव ीविन म ल वतक र्वमका एि रूवढ़ादव ू ं 5.7.1 ल वतक असमानता से तात्रयष 5.7.2 विद्यालयव वक्ा म ल वतक असमानता 5.7.3 विद्यालय म बावलकाओ के प्रवत रूवढ़ादव विचारधारा ं 5.8 साराक ं 5.9 क्द िालव 5.10 अभ् यास प्रश् नों के उत् तर 5.11 वनबधात् मक प्रश्न ं 5.12 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 54 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5.1 प्रस्तावना ा ीविन म स्कलव वक्ा का महत्ि रर प्रिर्ा दवततष ामव होता ह ै एक बच्चा राकरिाकरक रकरिके से ू समाी म विलेयता की ओर स्िय रर समाी के उत्ाान की ओर एक कदम बढ़ाता ह ै राकरिाकरक ं सस्कारो से यक्त होकर दके रर समाी की सस्कवत को सवखता ह ै एि उसका प्रयोत करता ह ै समाी म ृ ु ं ं ं स्िय की वहस्सेदारव वनधाषकरत करने हते अाक रकरिम करता ह ै रर समाी के प्रवत सिदे नकवलता की ु ं ं ि्राना विकवसत करता ह ै वीससे बच्चे के ीविन के उद्दश्े य की करुआत हो ीातव ह ै ु छार ीविन म बच्चा कर्व अनकल तो कर्व प्रवतकल, वर्न्न-वर्न्न रकरवस्ावतयों से तीरता ह ै ु ू ू ु रर इन्हव अनिर्ों से अरने ीविन को र्विष्टय म लक्य प्रावसे के वलए व्यिवस्ात करता ह ै सरलता ु प्रावसे हते िह अाक प्रयास एि महे नत करता ह ै छार ीविन म वक्ा रर ्ान का म्याकन स्िय नहीं ु ू ं ं ं हो सकता रर कर्व प्रयासों की कमव के कार रकर ाम इच्छानसार नहीं वमल राता इन विररवत ु रकर ामो के कार छार ीविन म ्व क अिसाद र्व आते ह इस इकाई म हम छार के विद्यालयव ीविन की चचाष करेत ताा

Plagiarism detected: **0.14%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **89**

विद्यालय म प्रवतयोवतता के माहशल् वक्कों द्वारा वदए ीान े िाल े कारवकरक दण्ड ताा उसका बच्चे के ँरर रढ़ने िाल े प्रिर्ा विद्यालय म ल वतक असमानता ताा रूवढ़ादव बातों की चचाष र्व करेत 5.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करने के रश्चात आर:- 1. बच्चे के विद्यालय म ीविन के बारे म चचाष कर सके त; 2. विद्यालय म प्रवतस्रधाष के ितिार के त -दोष को बता सके त; ु 3. विद्यालय म वदए ीान े िाल े कारवकरक दण्ड एि उसके रकर ामों को बता सके त; ं 4. विद्यालय ीविन म रकरिार की र्वमका की व्याया कर सक त; ू 5. विद्यालय म ल वतक असमानता एि ल वतक र्वमका की चचाष कर सके त ू ं 5.3 बच्चों का क्तवनाद्यालयी जीवना (School Life of Children) बच्चा ीब रहलव बार विद्यालय ीाता ह ै तो उसे अरने माता-वरता से वबछ़ा ने का तम होता ह्ै रर्न्त ु विद्यालय म

ीाकर िह अरने अरने उम्र के कई सारे बच्चों से वमलता ह ै तो उसे ख़कव का अनिर्

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **90**

होता ह ै ु ु ीविन म दोस्त बनाने की प्रवक्रया इसव स्तर से करु हो ीातव ह्ै िह अरने दोस्तों के साा खले ता ह्ै ु र्ीन करता ह ै एि विवर्न्न प्रकार क

ी बात करता ह ै ीा कायद हम ब्रा ों को अीवब लतता ह ै इन दोस्तों ं के अलिा उन्ह एक अध्यारक र्व वमलता ह ै ीा उनकी दखे ्राल करता ह ै एि उनको सहव एि तलत ं ं कायों को बताता रहता ह ै बच्चों के वलए अध्यारक का विकषे महत्ि होता ह,ै माता -वरता की आ्ा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 55 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रर अध्यारक के कानों का सवधा प्रिर्ा बच्चे म वदखाई प्रतवत होता ह ै अध्यारक द्वारा कह े तए कान छार के वलए ीविन र्ं उत्साह रर एक ँीाष का सचर करते रहते ह ै ये ्रारत दके की सस्कवत हव ह,ै ृ ं ं ीहा ुँ अध्यारक के कानों की सत्यता रर महत्ि का माता-वरता द्वारा बनाये तए मानक र्व रवछे होकर छार ीविन म बच्चे की प्रावमकता रर आ ीात े ह अत: अध्यारक समाी का एक अवर्न्न रर महत्िर ष अत ह ै वीसका दावयत्ि समाी की रकरवस्ावतयों के अनसार वनधाषकरत होता ह ै बच्चों को ू ु ं विद्यालय म विवर्न्न प्रकार के अध्यारक वमलते ह कछ अध्यारक बच्चों

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 3 resources! id: **91**

के द्वारा की तयव तलवतयों को ु बताकर उन्ह तयार से सधारने की कोवकक करते ह तो कछ अध्यारक बच्चों द्वारा क

ी तयव तलवतयों रर ु ु कारवकरक दण्ड दते े ह बच्चा ीा अब तक

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **92**

विद्यालय म आनन्दरिकष ीविन व्यतवत कर रहा ाा ि अब ू विद्यालय ीाने से कतराने लतता ह ै क्योंवक उसे अब उस अध्यारक की िह से विद्यालय से डर लतन े लतता ह ै विद्य

ालयव ीविन म बच्चे के सम् विवर्न्न प्रकार के अिसरों ीसै े- सास्कवतक कायषक्रमों ृ ं खले कद् म इत्यावद म ्रात लेना ताा चनशवतयों ीसै े तलवतयों रर अध्यारक से डाट अिा दण्ड् ू ु ं ररव्ा म अच्छे अक प्रासे करना् विवर्न्न विषयों को समेने के वलए अाक प्रयास इत्यावद ये सर्व ं अिसरों एि चनशवतया बच्चे को मीबत बनातव ह ै ताा वीसको रार करत े हए बच्चा अरनव लक्य की ु ू ं ं तरर बढ़ता ह ै बच्चा विद्यालय म विवर्न्न प्रकार की ि्राना विकवसत करता ह ै ीसै े खले त े समय सहयोत का् र्ीन करते समय सोदे ारव का् वकसव दोस्त को चोट लतन े रर सहानर्वत का इत्यावद ु ू प्रवतस्रधाष की ि्राना र्व विद्यालय म हव विकवसत होतव ह्ै चाह े ि खले म अरने सहराठव से ीवतन े का हो अिा ररव्ा म सबसे अच्छे अक प्रासे करने का हो प्रवतस्रधाष की ि्राना को अच्छव प्रकार से ं विकवसत करने म अध्यारक की र्वमका महत्िर ष हो ीातव ह ै क्योंवक उसे यह

सवनवश्चत करना चावहए ू ू ु वक यह ि्राना सकारात्मक रूर म हो ना वक नाकारात्मक रूर म अ ाषत प्रवतस्रधाष के ि्ल ीवत एि हार ं के वलए नहीं होना चावहए यह सबके उन्नवत के वलए होना चावहए अतले खण्ड म

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **93**

विद्यालय म प्रवतस्रधाष के ि ातिार के बारे म चचाष करेत अभ्यास रश्न 1. अध्यारक के कान का प्रि्रा बच्चे रर नहीं रढ़ता ह ै सत्य/ असत्य 5.4 क्तवनाद्यालय म

प्रक्ततस्रधष का वनाातावनार (Culture of competition in ें school) वक् ा एि प्रवतस्रधाष विद्यालयव ीविन के दो सिार्ष शवमक तत्ि ह अतवत काल स े लेकर ि तषमान समय ं तक मनष्टय वक् ा एि प्रवतस्रधाष को महत्ि र ष मद्द े मानता रहा ह्ै हाुँ यह ीरुर ह ै वक समय बदलने के सा ु ू ु ं इन दो मद्दों के प्रकवत म रकरितषन आया ह ै वक् ा की ी़ा े बच्चे म कहीं अनीान ीतह छरव होतव ह् ृ ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 56 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रर प्रवतस्रधाष की ी़ा ो का तो रता हव नहीं चलता ह ै वक बच्चे म कहाुँ होतव ह बच्चे अनायास हव अरने सहराठव स े प्रवतस्रधा ष करने लतते ह ऐसा लतता ह ै वक बच्चों को दसरे से तलना करना एि ु ं ू प्रवतस्रधाष करना ीन्म से हव होता ह्ै ीसै े- दश़ा ना् कश्तव करना इत्यावद ऐसव प्रवतस्रधाष बच्चों के ु विकास हते उरयोतव र्व होतव ह ै खले म प्रवतस्रधाष कारवकरक एि मानवसक प्रवतस्रधाष का एक छोटा रद ु ं ह ै वीसको खेल ि्राना र्व कहा ीाता ह्ै ररन्त व्यस्क लोत अरने वहत के वलए वलसे हो ीात े ह मानि ु इवतहास म वक् ा के ीसै े हव कछ प्रवतस्रधा ष रहले से हव चलव आ रहव ह्ै ी वनयमबि होते ो ता ु विकेष्ों द्वारा सचावलत वकये ीात े ो रहले ररचाकरक प्रवतस्रधाष के ि्ल खले म होतव ाव ररन्त अब ु ं इसका ्ेर बढ़कर वक् ा तक हो तया ह ै ऐसा नहीं वक वक् ा म ररचाकरक प्रवतस्रधाष लार्दायक ह्ै ररन्त अतर यह प्रवतस्रधाष सकरात्मक एि ईमानदारव से हो तो ु ं विद्यालय म बच्चों के बवच आरस म प्रवतस्रधा ष कोई आश्चयषीनक ुटना नहीं ह्ै यह बच्चों की स्ि्राविक वक्रया ह ै अतः प्रवतस्रधाष को वक् ा से अलत नहीं वकया ी़ा सकता ह ै ि्हीं दसरव तरर ू समी के व्यस्क लोत प्रवतस्रधाष को इतना महत्ि र ष मानते ह वक ि ें अरन े बच्चों को

Plagiarism detected: **0.01%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **94**

विद्यालय के ू करूआतव वदनों से प्रवतस्रधाष के वलए तैयार करते ह बच्चों म

प्रवतस्रधाष हते को बढ़ाना चावहए या ु ु ुटाना चावहए इस बात रर वक् ाकावस्त्रयों म मतर्दे ह ै कछ वक् ाकाष्टरवयों का मानना ह ै वक चुँवक ु ू प्रवतस्रधाष प्रत्येक सस्कवत का ंरात ह ै अतः वक् ा म र्व प्रवतस्रधाष होनव चावहए तावक बच्चे उसव वस् ावत ृ ं म रह े वीनम े उनको र्विष्टय म रहना ह्ै ि्हीं कछ वक् ाकावस्त्रयों कहते ह वक प्रवतस्रधाष से बच्चों म ु सहयोत की ि्राना नहीं रह ीातव ह ै यह सस्कवत का एक बरा तत्ि ह ै वीसको समासे करना चावहए इस ृ ु ं कार विद्यालय म प्रायः प्रवतस्रधाष की तरर अस्रस वस् ावत होतव ह्ै ी विद्यावाषयों को ्वमत करता ह ै तब ि ें बाय रूर म वदखाए वबना वक ि ें प्रवतस्रधाष कर रह े ह आतकरक रुर से प्रवतस्रधाष करत े रहते ह ं बच्चों म प्रवतस्रधाष दो प्रकार से होतव ह् रहलव तो ि्ह वीसम सर्व बच्चे प्रवतस्रधी के रूर म हो रर वकसव की हार हो तो वकसव की ीवत् विद्यालय म इस प्रकार की प्रवतस्रधाष की सस्कवत अच्छव ृ ं नहीं ह ै इसे समासे करनव चावहए दसरव प्रवतस्रधाष ि्ह होतव ह ै वीसम बालक प्रवतस्रधाष स्ि्रय से करता ह ै ं ू अि ा वकसव बाहरव इकाई स्े ीसै े- वकसव तव तवय समस्या को हल करना् वकसव र्व कायष को वनधाषकरत वकये तय ं समय रर र ष करना इत्यावद विद्यालय म इस प्रकार की प्रवतस्रधा ष होनव चावहए वीसस े बच्चों ू का विकास अच्छव प्रकार स े हो सके वक् ाकावस्त्रयों म इस बात रर र्व मतर्दे ह ै वक बच्चों म सकारात्मक प्रवतस्रधाष बढ़ाने के उराय क्या हों कछ वक् ाकावस्त्रयों का मानना ह ै वक सकरात्मक ु प्रवतस्रधाष बढ़ाने हते बच्चे का ररचाकरक ररव्ा नहीं लेनव चावहए बव्क विद्यालय म ररे सर के दशरान ु ू उसके द्वारा की तयव काय् का ऑकलन करना चावहए इससे बच्चे म ररे सर म दसरों की अरे ा अच्छे ू ू कायष करने हते सकारात्मक प्रवतस्रधाष ीातवत होतव ि्हीं अन्य वक् ाकावस्त्रयों का मानना ह ै वक बच्चों स े ृ ु रढ़ाये तय ं राठयक्रम का ररचाकरक ररव्ा लेनव चावहए रर उस ररव्ा म अच्छे अक प्रासे करने हते ु ं बच्चों म रढ़ने की सकारात्मक प्रवतस्रधाष ीाग्रवत होतव विद्यालय म सकारात्मक प्रवतस्रधाष बढ़ाने के वलए वनम्नवलवखत कछ प्रवतस्रधाषओ को वकया ी़ा सकता ह:ै ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 57 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ वकसव विषय के र् एि विर् म दो समहों म चचाष ू ं □ मीाक ि्ल े विषयों बनाम तर्वर विषयों रर विचार विमकष ं □ व्यवक्ततत कायष बनाम सामवहक कायष ू □ राष्टरवयता बनाम अतराषष्टरवयता ं □ ारग्य बनाम ्ान बनाम कशकल □ तरत रीडबैक बनाम बाद म रीडबैक ु ं ऐसे बहत सारे अन्य कार्यों के माध्यम से हम बच्चों के अततत्ष साकारात्मक प्रवतस्रधाष को बढ़ा ं सकत े ह वक् ाकावस्त्रयों म बच्चों म प्रवतस्रधाष को बढ़ाने एि तरवकों म र्ल े हव विवर्न्नता हो ररन्त इस ु ं बात को नाकारा नहीं ी़ा सकता ह ै वक सकरात्मक प्रवतस्रधाष बच्चों को अरना स्ित्तम दने े के वलए चनशतव रैदा करतव ह ै ी विष्टय म उसके वलए हव लार्दायक होता

Plagiarism detected: **0.04%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **95**

ह ै विद्यालय प्रकासन को एि ु ं वक्क को बच्चों की प्रवतस्रधाष को कर्व हार-ीवत के रूर म नहीं दखे ना चावहए ना हव बच्चों म ऐसव ि्राना र्नव चावहए् अतर विद्यालय ऐसा कर सका तो ि्ह एक सरल विद्यालय

होता ता उसके बच्चे र्विष्टय म आदक ष नातकरक बन सके त अतले खण्ड म हम विद्यालय म वक्कों द्वारा वदए ीान े ि्ल े कारवकरक दण्ड के बारे म चचाष करेत अभ्यास रश्न 2. वक् ा म प्रवतस्रधाष बच्चे के वलए हमके ा नकसानदायक हव होता ह ै सत्य/असत्य ु 5.5 ि्रीक्तरक दण्ड से तात्रयय (Meaning of corporal punishment) कारवकरक दण्ड एक अरराध की सी़ा के

रूर म , तलतव करने िाले को अनकावसत करने के वलए या ु अस्िवकायष प्रिवत या व्यिहार को रोकने हते वदया ीाने िाला सविचाकरत दण्ड ह ै यह क्द क्रमबि ढत ृ ु ु ं से आमतशर रर एक अरराधव को मारने के साा सदवर्तष ह,ै चाह े न्यावयक, ुरेल या क्ै व क समायीन ु ं हो कारवकरक दड को तवन म्य प्रकारों म वि्रावीत वकया ी सकता ह:ै ु ं □ तयान्ये शारवररे दायिण्ड: काननव अदालत

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 3 resources! id: **96**

के द्वारा आदवे कत आररावधक सीा के रूर म. या तो ू ीले प्रावधकारव ितों या अवतवा अदालत के द्वार

ा आदवे कत ीले के रूर म कारवकरक सीा इससे वनकट रूर से सबवधत ह ै ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 58 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ अन्भभानीय या घरेल शारवररे दायिण्ड: आम तशर रर रकरिार के र्वतर, अवर्र्ाक या माता ू वरता

Plagiarism detected: **0.03%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 3 resources! id: **97**

के द्वारा दवडत वकया ीाता ह ै ं □ न्नद्यालय ें न्दायिया ी े नाला शारवररे दायिण्ड: स्कलों म ीब विद्यावाषयों को स्कल प्रकासकों या ू ू वक्कों द्वार

ा दवडत वकया ीाता ह ै ं 5.5.1 न्नद्यालय ें न्दायिया ी े नाला शारवररे दायिण्ड एन उसे परर ों ां ारारतवय ररम्रा म विद्याी ीविन एक कवठन एि िमसाध्य का कायष माना ीाता रहा ह ै रर इसम धवरे - ं धवरे कछ ऐसव खावमयाँु र्व आ तयव ह ै ी वक्ा व्यिस्ाा म सबसे बरव खावमयों म से एक ह्ै िह ह ै ु ु छोटव-छोटव तलवतयों रर र्व कारवकरक एि मानवसक दण्ड दने ा बाद म इसे रवचत्यर ष ठहराने के वलए ू ं लोकोवक्तयाँु र्व तढ़ लव तई वीसम सबसे यादा मकहर ह ै –

Quotes detected: **0.01%** id: **98**

“तरूीव मारे धम-धम् विद्या आि े छम- ू ु छम”

विद्यालय म बच्चों को दवडत करने के वलए नाना प्रकार के तरवके अरनाए ीाते ह ै वीसम उन्ह ं मारना् क्ा म ख़ा े रहना् प्राषना स्रा म कवमदष ा करना् धर म ख़ा ा करनाआवद ू अतर समाचाररर रढ़े तो आये वदनों कछ इस तरह की खबर रढ़ते ह.

Quotes detected: **0.01%** id: **99**

“वक्क के वरटाई करने से बच्च े ु की आखुँ की रशकनव चलव तयव”

्

Quotes detected: **0.01%** id: **100**

“विद्यालय म दरे से आने की िह से बच्चे की खब वरटाई हई”

ू इत्यावद इस प्रकार की तमाम ुटनाए ुँ दके के विवर्न्न ारातों म ुवटत होतव रहतव ह बविीवियों रर ु वक्ाकावस्त्रयों के ीकरए इन रर तमाम चचाषए ुँ रर रकरचचाषए होतव ह ै इसव बवच न्यायालय का आदके ं आता ह ै वक बच्चों को कारवकरक दण्ड या क्ररता के क साा डाटा-रटकारा ना ीाए इस रर र्व लोतों के ू अलत-अलत विचार आए् कछ लोतों ने अदालत के इस फ़ै सले का स्ितत वकया तो कछ लोतों ने इस ु ु बच्चों को ढ़वट बनाने िाला आदके बताया क्योंवक उनका मानना ह ै वक बच्चों म अनकासन लाने के वलए ु यह आिश्यक ह ै लतर्त सर्व वक्ाकवरयों् समीकावस्त्रयों् रर मनी्ै ावनकों का मानना ह ै वक बच्चों की आदतों को सधारने या वदए हए काय ष को ररा न करन े की वस्ावत म बच्चों को बहत हव दोस्ताना तरवके से समेना ु ू चावहए न वक तस्सा होकर ातऱा मारना चावहए लेवकन यह बात के िल सैावतक हव होकर रह ीातव ु ं विद्यालयों म ऐसव ुटनाए अर्व र्व देखने को वमल ीातव ह ै बिीद इसके वक बच्चों के वलए मफ़्त एि ू ु ं ं अवनियष वक्ा का अवधकार अवधवनयम् 2009 की धारा 17 ि1) म यह कहा तया ह ै वक बच्चों को वकसव तरह से कारवकरक दण्ड या मानवसक उत्रव़ा न नहीं वदया ीाएता धारा 17 ि2) म यह कहा तया ह ै वक धारा 17 ि1) के उ्लुन करने रर सैा वनयमों के तहत उस व्यवक्त रर अनकासनात्मक कायषिाहव की ु ं ीाएतव कारवकरक दण्ड दने े से बच्चे ीहाँु ि े ढ़वट बनते ह िहीं रर ि े बातव र्व बन ीाते ह बच्चों को वदए ीाने िाले कारवकरक दण्ड रर हए कोध रर रता चलता ह ै वक ी बच्चे यादा कारवकरक दण्ड राए होते ह ि े ब़ा े होकर यादा वहसक प्रिवत्त के होते ह ऐसे बच्चे बढ़े होकर बात-बात रर दसरों रर बहत ीदव हा उठा ं ू दते े ह विद्यालय म बच्चों को कारवकरक दण्ड दने े रर रकर ाम अच्छे नहीं होते ह् कारवकरक दण्ड के कछ ु रकर ाम वनम्नवलवखत ह:ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 59 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ बच्चे बवच म हव रढ़ाई छो़ा दते े ह □ बच्चों का मानवसक सतलन वबऱा ीाता ह ै ु ं □ बच्चों को र्यानक चोट लत ीातव ह्ै वीनम े से कछ विकलात हो ीाते ह ु ं □ कई बच्चे आत्महत्या र्व कर लेते ह □ र्विष्टय म ऐसे बच्चे वहसा का रास्ता अरनाते ह ं □ बच्चे बातव बन ीाते ह वक्क बच्चों को दण्ड दते े िक्त हमके ा र्ल ीाते ह वक इसका रकर ाम बहत र्यकर र्व हो सकता ह ै ू ं बच्चे की वीन्दतव हमेका के वलए तबाह हो सकतव ह ै रर उसकी बरव आदत छटने के बीाय रर र्व ु ू बदतर हो सकतव ह ै दसरव बात् कारवकरक दण्ड अक्सर बच्चों के वक्क के करश्तों को बनाने के बीाय ू वबता़ा ते हव ह यह बात वक्क को समेनव चावहए वक ी बात तयार के साा मनिाई ी सकतव ह्ै िह ातऱा या डडे से मारकर नहीं करिाई ी सकतव ह ै तस्सा एि दण्ड कर्व सकारात्मक रकर ाम नहव दते े ु ं ं ह इस बात को उन लोतों को ीरुर समेनव चावहए ी कारवकरक दण्ड हव बच्चों को सधारने का सबसे ु बेहतर तरवका मानते ह एक आदक ष व्यवक्त के वनमाष के

वलए बच्चों को तयार से समेाना हव एक बेहतर तरवका हो सकता ह ै अभ्यास रश्न 3. बच्चों के वलए मफ़्त एि अवनियष वक्ा के अवधकार का अवधवनयम् 2009 के वकस धारा म यह ु ं कहा तया ह ै वक बच्चों को वकसव तरह से कारवकरक दण्ड या मानवसक उत्रव़ा न नहीं वदया ीाएता 5.6 बच्चों के क्तवनाद्यालयी जीवना म रक्तरवनाार की ूरूक्तमका (Role of Family in ें School Life of Children) बच्चे के

Plagiarism detected: **0.02%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **101**

विकास के वलए ुर म मातावरता- एि रकरिार के अन्य सदस्य ताा विद्यालय म वक्क सयक्त ु ं ं वमका वन ाते ह इनम से एक की र

्व वमका विवटत होतव ह ै तो बालक का सामावीक ष्वस स े ू ू विकास अिरि हो ीाता ह ै हर बच्चा अनतढ़ रत्ार की तरह ह ै वीसम सन्दर मवतष वछरव ह,ै वीस े ु ू रकरिार या वक्क रूरव वक्रव की आखुँ दखे ले तो िह उसे तराक कर सन्दर मवतष म बदल सकता ह ै ु ू मवतष तो रहले से हव रत्ार म मशीद होतव ह ै वक्रव तो बस उस रत्ार को वीससे मवतष ढकी होतव ह,ै एक ू ू ू तरर कर दते ा ह ै रर सन्दर मवतष प्रकट हो ीातव ह ै मातावरता- रर वक्क बच्चे को इसव प्रकार सुँिार ु ू कर खबसरत ीविन प्रदान करते ह ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 60 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रकरिार यानव माता के वरता बच्चे व्यवक्ति वनमाष की रहलव राठकाला ह ै उसम र्व

Quotes detected: **0%** id: **102**

'माुँ'

की र्वमका ू अवधक महत्त्ि ष ह ै अतर मातावरता अरने बालक से प्रेम करते ह रर उसकी अवर्व्यवक्त र्व करते ह- , ू उसके प्रत्येक कायष म रुवच लेते ह, उसकी इच्छाओ का सम्मान करते ह तो बालक म उत्तरदावयत्ि, ं सहयोत् सद्धिना आवद सामावीक त ों

Plagiarism detected: **0.03%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **103**

का विकास होता रर ि्ह समी के सतठन म सहायता दने े ु ं िाला एक सरल नातकरक बन सके ता अतर ुर म ईमानदारव सहयोत का ितिार ह ै तो बालक म इन त ों का विकास

र्लव ूुँवत होता, अन्याा ि्ह सर्व नैवतक म्यों को ताक रर रखकर मनमानव करेता ु ू रर समी के प्रवत ु ा का ि्रा वलये समी विरोधव बन ीाएता बच्चों का नैवतक विकास उसके ृ राकरिाकरक एि सामावीक ीविन से सबवधत ह ै ीन्म के समय उनका अरना कोई म्य, धम ष नहीं होता, ू ं ं ं लेवकन वीस रकरिार/समी म ि्ह ीन्म लेता है, ि्सै ि ैसा उसका विकास होता ह ै रकरिार बच्चों को सास्कवतक मान्यताओ ि्Cultural Values) को वसखाने का माध्यम ह ै ृ ं ं रकरिार ि्ह आधारर्त सस्ाा ह ै ी समी म वनयर लाने का मल ोत ह ै बच्चों के ीविन के वनमाष ू ू ं ं म सतोषीनक राकरिाकरक ीविन अत्यत आिश्यक ह ै आी सयक्त रकरिार तो टट हव रह े ह, एकल ु ू ं ं ं रकरिार म र्व बच्चों की तरर ररा ध्यान नहीं वदया ीा रहा रवत रत्रव दोनों- नशकरव करते ह् नशकरों ू अिा आया की करा रर बच्चा रलता ह ै या

Quotes detected: **0%** id: **104**

'क्रे च'

म छो़ा वदया ीाता ह ै चाहकर र्व मातावर-ता ृ बच्चों रर ध्यान नहीं रख राते बच्चे अक्सर इन हालात म उरेव्त हो रह े ह रर अनेक प्रकार की सिते ात्मक तर्वर समस्याओ का वककार हो रह े ह ीी अत्यत वचता का विषय ह ै मातावरता बच्चों के - ं ं ं ं ं व्यवक्तत्ि रर चकरर दोनों को प्र ावित करने म सिाषवधक महत्त्ि ष र्वमका अदा करते ह उनके आरसव ू ू सबधों रर व्यिहार से बालमन सही हव ी़ा ीाता ह्ै ि े बच्चे के वलए स ा रर स्नेह का ोत ह ु ु ं ं माता-वरता म ररस्रर मधर सबध ीहाुँ बच्चों के चहमुँ खव

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **105**

विकास म सहायक होते ह, ि्हीं उनके आरसव ु ु ं ं तनिार ष टटते करश्ते उनके विकास क

ो न के ि्ल अिरि कर दते े ह, ू ू ि्रन उनके ीविन को अनेक कठाओ विकारों से र्ं दते े ह रलस्ि्रूर दमन, वनराका रर ररीय ीसै े ु ं ं ि्रा उनम रनरने लतते ह रकरिार के सर्व सदस्यों को चावहए वक रकरिार म सबका व्यिहार सभ्य रर सम्मानीनक हो, सर्व सदस्य एक दसरे के प्रवत कालवन ाषा का प्रयोत हव कर ू बच्चों के प्रवत रकरिार का व्यिहार वकस एि मयाषवदत होना चावहए् रकरिार को उसे आत्म- ं सम्मान एि आत्मविश्वास प्रदान करना चावहए तावक र्विष्टय म ि े सम्मावनत एि सरल ीविन ीव सक ं ं बच्चों के व्यवक्तत्ि वनमाष म रकरिार को कछ बातों की ीानकारव अत्यत महत्त्ि ष होतव ह्ै ीसै े:- ु ू ं □ क्या हम उनकी वी्सिावत्त का सम्मान करते ह ? ृ □ क्या हम उनकी बशविक ्मताओ को रहचानते ह ? अिा उन रर अरनव महत्त्िाका्ए ुँ लाद ं ं कर उनका ीविन बोवेल बना दते े ह ? □ क्या हम उन्ह अवतकरक्त स ा प्रदान कर उन्ह रत बना दते े ह अिा बचरन से हव उन्ह ु ु ं स्ि्लिम्बव बनने की प्रेर ा दते े ह ? □ क्या हम बच्चों के विचारों एि उनके द्वारा वदए तए सिों को सम्मान करते ह ? ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 61 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ क्या हम कर्वक ार उनके सा छिव मनाते ह

अिा अरनव व्य-स्तता एि आवाषक ततव का ु ं ं रोना रोते रहते ह ? □ क्या हम अरने रिग्रष ह उन रर ोरते ह अिा उन्ह स्ितर वचन्तन के वलए प्रेकरत करते ह ? ू ं □ क्या हम ीविन के प्रवत वनषधे ात्मक सोच को अरनाते ह अिा उनम सकारात्मक ष्वसको को विकवसत करते ह ? रकरिार को बच्चों की वी्सिावत्त का सदा सम्मान करना चावहए् अक्सर ऐसा होता ह ै वक ृ समयाि्रा के कार हम बच्चों की समस्याओ, उनके प्रश्नों को न तो ररे मन से सन राते ह रर ू ु ं उनके कशतहल को कान्त कर उन्ह सतस कर राते ह कछ र्व रछने रर उन्ह डाँुटकर उनकी वनरव् - ू ु ु ू ं ्मता को दबा दने े का अनीाने म अरराध कर ीाते ह ऐसा करके हम उनके र्वतर की सीानात्मक ृ सि्रानाओ को ऱ्लवित होने से रि ष हव दवमत कर दते े ह ऐसे बच्चे अक्सर ि्वीतष अवर्व्यवक्त ू ं ं तलाकने लतते ह माता-वरता को चावहए वक बच्चे के अच्छे कायों की प्रकसा सबके सामने कर , रर उसकी कवमयों ं की बात एकात म उसके साा कर ् अन्याा हम ीानअे नीाने बच्चे को नकारात्मक वदका की ओर - ं प्रेकरत करने की र्यकर र्ल करदते े ह यह सब बच्चों के वहत म नहीं ह,ै मातावरता का कतषव्य ह-ै ू ं वक ि े बच्चे की हर सि्र वी्सा का कमन करे् क्रोध रर खवे म र्र कर नहीं, स्नेह रर धैयष के ं साा उनकी हर कका का याासि्र वनिार कर उन्ह समय द् उन्ह अर्य प्रदान कर , ऐसा न हो ं ं वक मातावरता के उग्र रूर की ररछाई रक़ा े बच्चे अरनव हव वी्ी-ाासाओ के ि्रुँ रील म डब - ू ं ं ीाए ुँ अतः लाख कामों म मकतल होते हए र्व उनसे इस प्राकवतक अवधकार को न छवन , ी ृ ू आरके सर्व कतषव्यो से ँरर ह ै माता-वरता को चावहए वक ि े बच्चे को समय रर स्नेह द् उनके साा बैठ , उनकी ररेकावनयों के विषय म उनसे बात करते उनकी सहायता कर बच्चे की क्ा ि तहकायष की कीरव दखे ् वक्क के वलख े नोट रढ़ ् बच्चों के वमर बनकर उनके साा खलकर ृ ु बातचवत कर ् उन्ह डराए ुँ धमकाए ुँ नहीं ि्रन सहायता का आश्वासन दके र उन्ह मानवसक उलेन से मक्त कर वकसव टैस्ट या ररव्ा म कम अक राने रर उन्ह प्रताऱ्ा त न कर कार की तह तक ीाए,ुँ ु ं न वक रवटकर, अरक्द बोलकर या डाँुटकर उन्ह कारवकरक ि मानवसक दःख रहचुँ ाए ुँ उनका ु मनोबल बढ़ाते हए उन्ह उत्साहिधषक क्द द उन्ह उनकी प्रवत्रााओ से रकरवचत कराए ुँ ं अभ्यास रश्न 4. रकरिार बच्चों को सास्कवतक मान्यताओ को वसखाने का माध्यम ह ै सत्य/असत्य ृ ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 62 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5.7 क्तवनाद्यालयी जीवना म लैंक्तगक ारूक्तमका अवना् रूक्तिवनाादी (Gender Role in ें School Life and Stereotypes) आरने कर्व अरने आस-रास या ऱ्ा ोस म बेटव के ीन्म रर ढ़ोल नताा े या कहनाइयाुँ बीते दखे ा है? कायद नहीं दखे ा होता रर दखे ा र्व होता तो कहीं इक्का-दक्का ि्रततः हम ारत के लोत 2ि्रीं ु ु कताद्व के ारतवय होने रर ति ष करते ह, बेटा रैदा होन े रर खकव का ीश्न मनाते ह रर अतर एक बेटव ु का ीन्म हो ीाए तो कान्त हो ीाते ह ल़ा के के वलये इतना ज़्यादा तयार वक ल़ा कों के ीन्म की चाह म हम प्राचवन काल से हव ल़ा वकयों को ीन्म के समय या ीन्म से रहले हव मारते आ रह े ह, रर अतर ि्रो नहीं मारव ीातव तो हम ीविन र्र उनके साा र्दे ि्रा के अनेक तरवके ढढ लेते ह हम दवे ि्रयों की रीा तो ू ू ं करते ह, रर मवहलाओ का कोष करते ह ीहाुँ तक मवहलाओ के सबध म हमारे ष्वसको का सिाल ह ै ं ं ं ं ं तो हमारा समाी दोहरे - मानकों का एक ऐसा समाी ह ै ीहाुँ हमारे विचार रर उरदेक हमारे कायों से वर्न्र ह आरने ल वतक असमानता के बारे म सना होता चवलए ीानने की कोवकक करते ह वक ल वतक ु असमानता से क्या तात्रयष ह ै 5.7.1 लैंन्ते असें ा ि्रा से ि्रात्पयब ल वतक असमानता से तात्रयष ल वतक आधार रर मवहलाओ के साा र्दे ि्रा से ह ै रारररातत रूर से ं ं समाी म मवहलाओ को कमज़ोर ित ष के रूर म दखे ा ीाता रहा ह ै ि े ुर रर समाी दोनों ीतहों रर ं कोष , अरमान रर र्दे -ि्रा से रवऱ्ा त होतव ह ऐसा नहीं ह ै वक मवहलाओ रर ररुषों म र्दे ि्रा ु ं के ि्रल ारत म हव वकया ीाता ह ै यह वस्ावत विश्व के अन्य दके ों म र्व ह ै वलतानरात एक अवत ु ं सिदे नकवल सचक ह ै ी मवहलाओ की वस्ावत को दकाषता ह ै बच्चों म वलतानरात वनरतर कम होता ी ू ु ं ं ं ं रहा ह ै वनरतर कम होते वलतानरात के कार ीनस्या म असतलन रैदा हो होता ह ै वीससे मवहलाओ ु ु ं ं ं ं ं के विरि अरराध बढ़ने ीसै व अनेक सामावीक समस्याए ुँ रैदा होतव ह 5.7.2 न्नद्यालयव न्शक्षा ें लैंन्ते असें ा ि्रा ीसै ा वक हम ँरर चचाष कर चके ह वक ल वतक असमानता के ि्रल ारत म हव नहीं ह ै यह दवनया के सर्व ु ु दके ों म रै ला हआ ह्ै यहव वस्ावत विद्यालयव वक्ा म र्व ह ै वक्ा म र्व दवनया के हर वहस्से म ल़ा के ु रर लडवकयों के साा एक ीसै ा बताषि नहीं होता ह ै यनेस्को अरने “सब के वलए वक्ा’ ि्रEducation ू for All) कायषक्रम के साा इसे बदलना चाहता ह ै सबके वलए वक्ा ग्लोबल मीवनटकरत कररोटष ी की ं ि्रष ष 2015 म प्रकावकत हई ाव वीसम वक्ा म ल वतक असमानता के आक़ा े बताए तये ह् वीनम से कछ ु ं वनम्नवलवखत ह: □ वक्ा म ल वतक असमानता विश्व म आधे से यादा दके ों म रै लव हई ह ै □ 63 वमवलयन से अवधक ल़ा वकया विद्यालय से बाहर ह ीबवक लडकों के सन्दर् ष म यह आक़ा ा ं ं 8 वमवलयन ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 63 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ ल वतक असमानता अरब देकों् उर-सहारा अफ्रीका् एि दव् ि रवश्चम एवकया म सबसे ं अवधक ह ै □ दव् ि रवश्चम एवकया म

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **106**

विद्यालय के बाहर कल ल़ा वकयों म से 80 प्रवतकत ल़ा वकया ह ु ं ि्रहीं लडकों की स्या इस सदर् ष म 16 प्रवतकत ह ै ं ं □ ि्रवै श्वक स्तर रर विद्यालय स

े बाहर प्राावमक वक्ि्राय बच्चों की कल स्या का 52 प्रवतकत ु ं ल़ा वकया ह ं उररोक्त आक़ा े दकाषते ह वक वक्ा म ल वतक असमानता दवनया के विवर्न्र दके ों म् इस असमानता को ं ु कम करना ीरुरव ह ै तर्व सर्व के वलए वक्ा का सरना ररा होता सयक्त राष्टर ने दवनया के सामने यह ू ु ं ु लक्य रखा ह ै वक ि्रष ष 2030 तक स्त्रव-ररुष अनरात को बराबरव के स्तर तक लाकर ल वतक समानता के ु ु लक्य को हावसल वकया ीाय इसव असमानता की ि्रीह से विद्यालय म बावलकाओ के लोंतों के मन म ं रूवढ़ादव विचारधारा बन ीातव ह्ै आईये दखे ते ह वक ये विचारधाराए ुँ क्या ह ै 5.7.3 न्नद्यालय ें ारान्लोओ े रश्नि रून्धनादायिव न्निारधारा ां रुवढ़ादव विचारधारा स े तात्रयष ि्रसै व विचारधारा स े ह ै वीसे व्यवक्त वबना तकष के ि्रसै े हव मान

लेता ह ै ीसै ा िह सनता आता ह ै उदहार के तशर रर यह एक रुवढ़ादव विचारधारा ह ै वक ला वकयाुँ कशतव नहीं ला ु ु सकतव समय के साा-साा बावलकाओ के प्रवत रुवढ़ादव विचारधाराओ म कमव आई ह ै ररन्त अर्व र्व ु ं ं बहत से लोतों के विचारों से यह विचारधारा हटव नहीं ह ै विद्यालय म बावलकाओ के प्रवत कछ रुवढ़ादव ु ं विचारधारा वनम्नवलवखत ह: □ बावलकाओ को तव त एि व्रिान विषय रढ़ने की अरे तह व्रिान रढ़ना चावहए ृ ं ं □ बावलकाओ को खले -कद म ंरात नहीं लेना चावहए ू ं □ बावलकाओ को कवै ्क ्म हते नहीं ीना चावहए ु ं □

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **107**

विद्यालय म बावलकाओ को के िल समवी-सलिार हव रहनना चावहए ं □ बावलकाओ को राठय-सहतामव वक्रयाओ ीसै े- नत्य् नाटक इत्यावद म ंरात नहीं लेना चावहए ृ ं ं विद्यालय म

बावलकाओ के प्रवत इस प्रकार की बहत सारव रुवढ़ादव विचारधाराए ुँ वक्क स े लेकर माता- ं वरता के मन म होतव ह ै ी वनराषक ह क्योंवक ितषमान समय म बावलकाए ुँ तव त् व्रिान विषयों को रढ़ने के अलिा खले -कद एि राठय-सहतामव वक्रयाओ म ंरात लेतव ह रर सरल र्व होतव ह अतः माता- ू ं ं वरता एि वक्क को अरने मन से बावलकाओ के प्रवत रुवढ़ादव विचारों से छटकारा राना होता तर्व ु ं ं उनका् उनके बेटव का ताा इस दके का विकास हो रायेता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 64 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 तभ्यास प्रश्न 5. यनेस्को के अनसार ल वतक असमानता के िल ंरारत म हव ह ै सत्य/असत्य ू ु 5.8 सारि् बच्चों को विद्यालय म विवर्न्न प्रकार के अध्यारक वमलते ह कछ अध्यारक बच्चों

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 3 resources! id: **108**

के द्वारा की तयव ु तलवतयों को बताकर उन्ह तयार से सधारने की कोवकक करते ह तो कछ अध्यारक बच्चों द्वारा क

ी तयव ु ु तलवतयों रर कारवकरक दण्ड देत े ह बच्चा ी अब तक

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **109**

विद्यालय म आनन्दरिकष ीविन व्यतवत कर रहा ू ंा ि ो अब विद्यालय ीान े से कतराने लतता ह ै क्योंवक उसे अब उस अध्यारक की िीह से विद्यालय से डर लतन े लतता ह ै विद्यालय म

बच्चों के बवच आरस म प्रवतस्रधाष कोई आश्चयषीनक ुटना नहीं ह ै यह बच्चों की स्ि ंरावक वक्रया ह ै अतः प्रवतस्रधाष को वक्ंा से अलत नहीं वकया ी सकता ह ै अक्सर मातावरता अरने बच्चों की रुवचयों एि ्मताओ से अनव ्र् रहकर उन रर अरनव - ं ं इच्छाओ, महत्त्िाका्ाओ रर सरनों को ोर दने े की ंरारव र्ल कर बैठते ह स्ि य अतर डीक्टर, ू ं ं ं ं ं ईविवनयर, प्रोरे सर, िकील, इत्यावद लालसा को उनम तलाकना करू कर दते े ह अरनव चाहत उन रर ु ं लाद कर उनकी बवि को कवठत करने की र्ल कदावर न कर उनके अरने सरन ह वीन्ह ि े ररा करना ु ु ू ू ं चाहत ्े प्रकवत ने हर व्यवक्त को एकएक विकेष योग्यता दके र ंरी ा ह ै - हम एक वचरकार के हाा म रत ृ ं रर तवलका ामाने के स्ाान रर उसे ईटचने म धके ल कर वसविल ईविवनयर बनाने की -रत्ंार तारे- ू ू ं ं तलतव न कर बचरन म हव उसकी रुवच, ँ ीष को रहचान ीबरदस्तव से चने तए विषय रर कै करयर उस े ु ररा ीविन सतोष नहीं द े राते रर ि ह व्यवक्त उसे ढोता हआ अरना ीविन बोवेल बना लेता ह ै उनकी ू ं ्मता के अनरूर उन्ह सहव वदका दने ा हमारा कतषव्य ह,ै अन्याा हम व्यवक्त के हव नहीं, समी के र्व ु अरराधव माने ीाय त े रर दके र्व ऐसव प्रवतंराओ के विकास के लार् से िवचत रह ीएता ं ं 5.9 िब्द ावनाली 1. रश्न्िस्पधाब: प्रवतस्रधाष की ी ो का तो रता हव नहीं चलता ह ै वक बच्चे म कहा ुँ होतव ह बच्चे अनायास हव अरने सहराठव से प्रवतस्रधाष करने लतत े ह ऐसा लतता ह ै वक बच्चों को दसरे स े ू तलना करना ए प्रवतस्रधा ष करना ीन्म से हव होता ह ै ीसै े- दशा ना् कशतव करना इत्यावद ऐसव ु ु ं प्रवतस्रधाष बच्चों के विकास हते उरयोतव र्व होतव ह ै ु 2. शारवररे दायिण्ड: कारवकरक दण्ड एक अरराध की सीा के रूर म , तलतव करने िाले को अनकावसत करने के वलए या अस्ि वकायष प्रिवत या व्यिहार को रोकने हते वदया ीाने िाला ृ ु ु सविचाकरत दण्ड ह ै यह क्द क्रमबि ढत से आमतशर रर एक अरराधव को मारने के साा ु ं सदवर्तष ह,ै चाह े न्यावयक, ुरेल या क् ै व क समायोीन हो ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 65 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3. लैन्ते असें ा ि ा: ल वतक असमानता से तात्रयष ल वतक आधार रर मवहलाओ के साा ं र्दे ि्रा से ह ै 5.10 तभ्य ास प्रश् ों के उत्त र 1. असत्य 2. असत्य 3. धारा 17 ि1) 4. सत्य 5. असत्य 5.11 क्त बधात्म क प्रश् ृ 1. बच्चे के

Plagiarism detected: **0.05%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **110**

विद्यालय म ीविन के बारे म चचाष कीवीए 2. विद्यालय म बच्चों म प्रवतस्रधाष के ितिार के त -दोष का विचे न कीवीए ु 3. विद्यालय म वदए ीान े ि ल े कारवकरक दण्ड एि उसके रकर ामों को उदाहर के माध्यम से ं बताइए 4. विद्यालय ीविन म रकरिार की र्वमका के महत्त्ि का विश्लेष्ट कीवीए ू 5. विद्यालय म

ल वतक असमानता एि ल वतक र्वमका की चचाष कीवीए ू ं 5.12 स्दर् य ग्रथ सची ू 1. कालरा् ककन्तला ि2007). बच्चों का व्यक्तित्व क्तवकास कै से हो. कानरर: ष्वस प्रकाकन ु ु 2. आयेंद् अवखलेक ि2012). सबसे घक्तिया तरीका ह ै बच्चों को शारीररक दण्ड से उन्ह ें सधारना. ु ु प्रिक्ता.कीम से 20/02/2017 को वलया तया 3. यनेस्को ि2015). सबके वलए वक्ंा ग्लोबल मीवनटकरत कररोटष. न्ययाकष : यनेस्को ू ू ू ं 4. http://ns.umich.edu/new/hindi-translations/23744-2016-04-28-13-45-36- spanking-does-more-harm-than-good 5. http://www.hindi.drishtiias.com/general-studies-resourses-in-

india-gender- inequality-and-gender-budgeting#sthash.APWgIeob.dpuf उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 66 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 खण्ड 2 Block 2 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 67 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 3 – स नाद : स कल् ा और उसक अ प्र ु योत ू (ीवन म , रक्तिरनार म , कल म और साक्ति यों म) 3.1 प्रस्तिाना 3.2 उद्दश्े य 3.3 सिाद/ ितिाष/ बातचवत की सक्रना ं ं 3.3.1 सिाद के उद्दश्े य ं 3.4 सिाद का महत्ि ं 3.4.1 ीन-सरकष म सिाद ं ं 3.4.2 सिाद के प्रयोत के वलए आिश्यक तत्ि ं 3.5 सिाद के माध्यम से कावत ं ं 3.6 ीविन म सिाद का उरयोत ं 3.7 रकरिार म सिाद का उरयोत ं 3.8 स्कल म सिाद का उरयोत ू ं 3.8.1 क्ा म बेहतर सिाद कै से हो? ं 3.9 साव समह / समक्ों म सिाद का उरयोत ू ं 3.10 साराक ं 3.11 क्दिालव 3.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.13 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 3.14 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना ा कावत की सस्कवत या रयाषिर का वनमाष ् बह्ाषव सिाद के ीकरए समी के सदस्यों के बवच एक चेतना ृ ं ं ं रैदा करने के वलए बातचवत महत्ि र्ष र्वमका वन्ातव ह ै ीविन म कावत का विकषे महत्ि ह ै सत्य कहने ू ू ं ि धम ष का आचर करने से हव ीविन सरल होता ह ै देक की अम्य धरोहर हमारव सस्कवत ह ै अरनव ृ ू ं सस्कवत के सर् ि सिधषन के वलए सर्व को एकीट होकर प्रयास करना चावहए ररमात्मा को ीानने, ृ ु ं ं ं रीने ि ीाने के मात ष वर्न्न हो सकते ह रर ररमात्मा एक हव ह ै रा ि सप्रदाय अलत ह, वकत धम ष सर्व ू ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 68 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 का एक ह ै रर ि्ह मानि धम ष ह ै वहन्द, मवस्लम, वसख, इसाई, बशि, रारसव, ीनै आवद बनने म कोई ु ू बराई नहीं ह ै महत्ि र ष यह ह ै वक हम अच्छे इसान बन राए या नहीं सर्व को एक दसरे से वमलकर रहना ु ू ं ं ू चावहए समी म सशहाद ष बनाए रखना हम सर्व की वीम्मदे ारव ह ै एक तीव से विविध रर विरोधा्रासव दवनया म् सुष ष की रोकाम के वलए खले समदाय सिाद को सवनवश्चत करने के वलए अवधक सहयोतव ु ु ु ं ं ु प्रयास वकए ीाने की आिश्यकता ह ै कावत को राने के वलए कई विविध मात ष ह रर वरर र्व् सिाद ं ं अक्सर कावत वनमाष म एक कमउरयोतव रर अनदेख उरकर ह ै सिाद का मतलब होता ह ै वक दसरे को ं ं ू खले मन से समेने का प्रयास करना सिाद बहत हव दलषर् रर सदर ुटना ह,ै क्योंवक उससे दोनों हव ु ु ं ं ु समि होते ह सच तो यह ह ै वक ीब तम बोल रह े हो, या तो यह बहस हो सकतव ह,ै काव्दक ेता ा, म ृ ु ठवक रर तम तलत यह वसि करने का प्रयास--या सिाद सत्य तक रहचने के वलए, एक-दसरे का हाा ु ं ं ू ाम लेना, राह ढढ़न े म एक-दसरे की मदद करना सिाद ह ै यह साा होना ह,ै यह सहयोत ह,ै सत्य को राने ू ं ू के वलए यह लयबि प्रयास ह ै यह वकसव तरह से ेता ा नहीं है, वकसव हालत म नहीं यह वमरता है, सत्य राने के वलए साा-साा चलना, सत्य राने म एक-दसरे की मदद करना अर्व वकसव के रास सत्य नहीं है, ू लेवकन ीब दो लोत ढढ़

Plagiarism detected: **0.02%** https://classnotes.org.in/hindi/matrayen/r-ke-ro… id: **111**

ने का प्रयास करते ह, सत्य के बारे म एक साा खीाने लतते ह , यह सिाद ह ै - ू ं रर दोनों हव समि होते ह ित

ाष् विावदत समी के सदस्यों के बवच ररस्रर सहयोत रर समाषन की ृ वस्ावत बनाने की कोवकक करतव ह ै ी सुष ष के कावतर ष समाधान को छो़ा कर कोई विक्र नहीं दखे ते ू ं ं ह यह नातकरक कावत वनमाष की ्मता के विकास् मानि अवधकारों रर लोकतावरक म्यों के वलए ू ं ं सम्मान को मीबत बनान् नातकरक कावत रहलों को बढ़ाा दने े रर सुष ष के वककार लोतों की ओर से ू ं ं िकालत के माध्यम से प्रासे वकया ीाता ह ै वकसव वस्ावत या रयाषिर को बदलने या वकसव र्व मद्द े से ु रचनात्मक तरवके से वनरटने के वलए् रहले सिाद की आिश्यकता ह ै यनेस्को (UNESCO)् कावत प्रासे ू ं ं करने के वलए व्यारक बातचवत को एक महत्ि र ष उरकर के तशर रर वनयोवीत कर रहा ह ै आईसवटव ू ि Information and Communication Technology) रर मववडया बातचवत् रारस्रकरक सम्े आत्म अवर्व्यवक्त् कावत रर सामीस्य को बढ़ाा दने े के वलए महत्ि र ष उरकर ह ू ं ं 3.2 उद्दश्े य इस इकाई म रढने के बाद, आर स्म होंते- 1. सिाद की सक्रना को स्रस करने ं ं 2. सिाद के महत्ि को ीविन म समेने ं 3. सिाद के वलए कावत का ितिार विकवसत करने ं ं 4. सिाद के माध्यम से कावत वकस तरह सवीत क को प्रदवकतष करने ृ ं ं 5. ीविन म , रकरिार म, स्कल म रर सावायों के बवच सिाद को बढ़ाा दने े ू ं 6. ीविन म , रकरिार म, स्कल म रर सावायों के बवच, सिाद लात करने ू ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 69 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 7. वस्ावत या रयाषिर को बदलने रर सिाद के साा वकसव र्व मद्द े के साा रचनात्मक रूर से ु ं वनरटने 3. 3 सवना् ाद/ वनाातष/ बातचीत की स्कल् ा सनादायि दो या दो से अवधक लोतों के बवच एक वलवखत या बोलनिालव बातचवत के आदान-प्रदान ह ै रर ां एक ऐसव सावहवत्यक रर नाटकीय रूर ह ै ी इस तरह के विवनमय को दकाषता ह ै सिाद एक सचार ं ं उरकर ह ै वीससे दलों को एक आम तरवके से एक समस्या की सरचना ेर े की अनमवत ह ै ीन डिव ु ं (John Dewey) ने ठवक हव कहा ाा वक:

Quotes detected: **0.01%** id: **112**

"लोकतर बातचवत म करू होता ह ै "

ु ं कछ के वलए ीन डिव की तरह् सिाद एक क वित रर ीानबेकर बातचवत ह ै सभ्यता रर समानता ु ू ं का स्ान वीसम अलत-अलत लोत सन सकते ह रर एक साा बोल सकते ह अन्य लोतों के वलए यह ु एक सिाधानवर ष रर रचनात्मक सबवधत होने का एक तरवका ह ै सिाद म् हम डर् रिषक्रना् ीवतने ू ू ं ं ं की आिश्यकता को अलत रखना चाहते ह; हम अन्य आिीं रर स्ि्रानाओ को सनने के वलए समय ु ं ं लेते ह सिादतनि रर विरोधा्रासों को कावमल कर सकतव ह ै रर ऐसा करन े म् नए विचार सामवहक ू ं ्ान उत्रन्न हो सकते ह सिाद एक सचार उरकर ह ै ी लोतों को दसरे ष्वसको ों को समेने की अनमवत दते ा ह ै वबना खद को ु ु ं ं ू अलत-अलत ष्वसको ों के वखलार ढके वबना सिाद म् राय का कोई बचि नहीं ह ै रर ना हीं कोई ं प्रवतिाद इसके बीाए् आर वकसव से बात करते ह रर अरना ष्वसको रेक करते ह आर उन्ह अरने विचार को खत्म करने द वबना उसम

े अरने दखल या सिाल रछ वबना आर समेने के वलए सनो् अरने ू ु खद के ष्वसको को बचान े के वलए नहीं आरका लक्य उनके मन म ीाना ह्ै रर उनके रकरप्रेक्य को ु समे् सावबत न कर वक ि े तलत ह रर आर सहव ह ीब यह आरकी बारव ह्ै आर बात करते ह रर अरने विचारों को खत्म करने की अनमवत ह ै रर यहा कीव ह:ै ीब आर अरना ष्वसको दते े ह् तो ु ु ं ं आर अरने ष्वसको को उनकी तलना म नहीं दते े सिादएक रवछे रर आत े की चचाष नहीं ह्ै रर ना हीं ु ं एक बहस या खडन वकसव मद्द े रर स्ितर रूर स े आरके ष्वसको ों को व्यक्त करत े हए दोनों के द्वारा ु ं ं सामवहक रूर से एक समस्या बनाने का यह एक मशका ह ै 20 ि़ीं सदव म् सिाद के दाकवष नक उरचार ू ं वमखाइल बख्तन् राउलो फ्रायर् मावटषन बबेर रर डेविड बोम (Mikhail Bakhtin, Paulo Freire, ु Martin Buber, and David Bohm) सवहत विचारकों से उर्रव मावटषन बबेर (Martin Buber) ि़ाताष ु को बढ़ािा ताा प्रोत्सावहत करता ह्ै न के ि़ल वनष्टकष ष रर रहचने या मार वबदओ को व्यक्त करने के कछ ु ं ं ं ु उद्दश्े यर ष प्रयासों के रूर म् बळक मानि रर मानि के बवच् रर मनष्टय रर ईश्वर के बवच प्रामाव क ू ु सबधों की कतष के रूर म बबेर ि़Buber) का

Quotes detected: **0%** id: **113**

"सहव ि़ाताष"

ु वीसे खलेरन् ईमानदारव् रर रारस्रकरक ु ु ं ं प्रवतबिता की विकेषता ह ै र्शवतक वि्रनव डेविड बोम (David Bohm) "ि़ाताष" ि़ह ह ै ीहा लोतों का ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 70 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 एक समह एक साा बात करता ह्ै सोच् अ ाष् सचार् रर सामावीक प्रि़ों की अरनव मान्यताओ का ू ं ं रता लताने के वलए विवर्न्न सामावीक सद ों्र म सिाद के त ों का स्ि़ातत वकया तया ह्ै प्रबधन् सुषष ु ं ं ं ं के समाधान् समदाय-वनमाष ् रारस्रकरक सबध रर व्यवक्ततत विकास सवहत ु ं ं मनष्टय एक सामावीक प्रा व ह ै उसे अरने विचारोंरर ि़्रानाओ को व्यक्त करने के वलए क्दों को ि़ा व ु ं रुरव माला म वररोकर प्रस्तत करना ग़ा ता ह ै ि़तषमान समय म तो बातचवत की कला (Talking ability) ु का महत्ि़ रर र्व यादा बढ़ तया ह ै सर्व तीव से सरलता की सवढ़वया चढ़ना चाहते ह ै काम रर ं व्यारार के वसलवसले म उन्ह ओनवबयों से मलाकात करनव ग़ा तव ह ै सर्व की कोवकक रहतव ह ै वक ु बातचवत रर विनम्र व्यिहार से सामने ि़ाले का वदल ीवता ीाए □ कब सिाद का उरयोत वकया ीाना चावहएव ं ि़ाताष का उरयोत तब वकया ीाना चावहए ीब; दो रावटषयों ने एक मद्दा अलत - अलत तरवके से तैयार ु वकया ह ै ीब व्यवक्त या समह के अलत-अलत ष्वसको होते ह रर मद्दों को अलत-अलत दखे ते ह् ू ु तो बातचवत को एक प्रि़्राव सचार उरकर के रूर म वनयोवीत वकया ीा सकता ह ै तावक रावटषया ं ं एक-दसरे के ष्वसको को समे सक के ि़ल इस सामान्य समे से हव ष्वसको बदल सकते ह ू □ सिाद क्या करतव हवै सिाद लोतों ं ं को एक साा लातव ह ै ीा स्ि़ाा्रविक रूर से एक साा बठै कर महत्ि़र ष मद्दों के बारे म बात नहीं ू ु करते यह एक प्रवक्रया ह ै ीा सरलतारिकष लोतों को सबवधत करतव ह ै ीा आरसे अलत ह उनके ू ं ं मतर्दे म वलत् धम्ष कायष वि्रात् सस्कवत् ीातवयता् ीावत् यशन अवर्विन्यास् या उम्र कावमल हो ृ ं ं सकते ह □ क्या सिाद समस्याओ का समाधान कर सकता हवै ं ं सिाद सवधे समस्या हल करने की प्रवक्रया नहीं ह ै यह एक ऐसव प्रवक्रया ह ै ीा समह के बवच समे के ू ं रलों को बनाता ह ै ीा तलतरहमव् सुष ष रर तनिा को कम करने म मदद करता ह ै रर इसवलए ु ं समस्याओ को र्त करने म मदद करता ह ै ं ं □ क्या सके त ह ै वक एक सिाद प्रवक्रया की आिश्यकता हवै ं ं ीब र्व वकसव सतठन म या कीली रकरसर म समस्याओ के मल कार होते ह् तो बातचवत एक ू ं ं उरयोतव प्रवक्रया हो सकतव ह ै ये समस्याए रारस्रकरक रूर से हो सकतव ह् ीसै े वक तलतरहमव् ं तनिा या बढ़व हई ध्रिवकर रर वि्रीन या सतठनात्मक् ीसै े तनिा का उच्च स्तर ु ं □ समस्याओ को उठने से रहले आर सिाद के अिसरों को कै से खीी सकते हव ं ं ीब र्व आरके रास अलत-अलत रष्ठर्वम ि़ाले लोतों से बातचवत करने का अिसर होता ह्ै प्रि़्राव ृ ू बातचवत के वलए समे की नींि़ रर वदका वनदकदेश वनमाष की स्ाारना करने म सिाद एक उरयोतव ं उरकर हो सकता ह ै विवर्न्न कायष रर प्राावमकताओ ि़ाले कायष समह वीन्ह एक साा काम करना ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 71 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ह्ै लेवकन अन्य वि्रातों की रोज़मराष की तवतविवधयों के बारे म कछ रता होन े से सिाद प्रवक्रया स े ु ं लार् होता □ एक सिाद प्रवक्रया से आर क्या उम्मवद कर सकते हव ं सिाद अलत-अलत लोतों रर समहों के बवच बेहतर समे रर अवधक रचनात्मक सहयोत को ू ं बढ़ािा दते ा ह ै सिाद प्रवक्रया तलतरहमव रर तनिा को कम करने रर र्विष्टय म अवधक सरल ं बातचवत सवनवश्चत करने म मदद करेतव ु □ बातचवत के वलए मलर्त आिश्यकताए क्या हव ू ू ं दोनों ों्र को बातचवत म कावमल होने , प्रवक्रया रर रोंसा करने रर प्रवक्रया के वलए वनरधाकरत वदकावनदकदेश ों रर सहमत होने के वलए तैयार होना चावहए 3.3.1. सनादायि ै उ्ेय ां सिाद के उद्दश्े य इस प्रकार ह: ं □ कावतर ष सुष ष रकरितषन् सामीस्य रर रोकाम का समाषन करने के वलए ू ं ं ं □ ि़ावदत समाी के नातकरकों के बवच बातचवत को बढ़ािा दने े □ कावतर ष सुष ष रकरितषन की प्रवक्रया म नातकरक समाी की ्रातवदारव रर सकवक्तकर को ू ं ं बढ़ािा दने ा; □ सह ्रावतयों के वलए ्मता-वनमाष को बढ़ािा दने ा - विकषे कर मवहलाओ् यिाओ रर सुषष ु ं ं ं के वककार – कावतर ष ू ं सुष ष रकरितषन प्रवक्रयाओ म; ं ं □ सुष ष रकरितषन की वदका म वनदवदेश कत नातकरक रहल का समाषन करने के वलए; ं □ अरने स्ि़य के अवधकारों रर सविधा की ि़ालत म सुष ष रवग़ा तों का समाषन करना ु ं ं □ विवर्न्न धर्मों के लोतों के साा सशहादरष ष सबध को बढ़ािा दने ा ू ं ं □ बहलिादव समाी की चनशतव को समायोवीत करने के वलए आिश्यक ु अभ्यास रश्न 1. सिाद क्या हवै ं 2. सिाद के चार उद्दश्े यों की सचव बनाओ ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 72 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.4. स्वनाद का महत्वना सिाद एक समिाके व प्रवक्रया ह ै ीसै ा वक ि़ाताष/ सिाद रकरवस्ावत रकरितषन को दकाषतव ह्ै ि़ाताष ब़ा े ं ं समाी के एक सक्म सिदे ना को बनाने के वलए विवर्न्न आिाज़ों को एक साा लातव ह ै दवुकष ावलक ू ं बदलिा लाने के वलए् लोतों को इस प्रवक्रया म सयक्त स्ि़ावमत्ि़ की ि़्राना विकवसत करना चावहए रर ु ं सामान्य

चनशवतयों का सामना करने के वलए वहस्सेदार बन् नए ष्वसको ों की रहचान करना चावहए ु सिाद सवखने रर ीर दते ा ह ै वसरष बात रर नहीं यह प्रवक्रया वसरष एक टेबल के आसरास बैठना नहीं ं ह ै बव्क वीस तरह से लोत एक दसरे के साा बात करत े ह् सोचते ह रर सिाद करते ह उन्ह बदलना ं ू ह ै चचाष के अन्य रूरों के विररवत् िाताष के वलए स्िय प्रवतवबब् रछताछ की ि्राना रर व्यवक्तत ू ं ं रकरितषन की आिश्यकता होतव ह ै सम्यक सिाद की ारत म एक दवु ष ररररा रहव ह ै ीबसे असवहष्ट ता हमारे समी म ुर करने लतव ह ै ु ं ं रर उदारता की ि्राना ्व होने लतव है, तब से हमारा समी सिाद से सिादहवनता की ओर बढ़ने ं ं लता ह ै आी समी की अनेक समस्याओ का समाधान सिाद म वनवहत ह ै हत्या ि आत्महत्या आवद ं ं अरराधों से बचा ी सकता ह,ै बकतदेश हम ररस्रर सिाद की ि्राना का विकास कर आी के ि्वै श्वक ं महानतरवय ीविन म वकसव के रास दसरे के वलए समय नहीं ह ै सर्व अरनव-अरनव वदनचयाष म व्यस्त ह ू अन्य समस्त कारषयो के सरादन के वलए समय ह,ै ररत स्िस्ा सिाद की स्ारना के वलए समयाि्रा की ु ं ं ं वस्ावत ह ै माता-वरता के रास अरने बच्चों से बात करने तक का समय नहीं है समी के हर ित ष म ररस्रर बातचवत की प्रवक्रया वसक़ा तई ह ै ऐसे म हम न के िल अरने सख को बाटन े ू ु ं से िवचत रह ीते ह, बव्क अरना दख र्व नहीं बाट राते सख बाटने के वलए कोई न र्व वमले तो र्व ु ं ं ं ु कोई विकषे प्रि्रा नहीं ऱा ता, ररत दख बाटने के वलए यवद कोई न वमले तो ीविन हताका ि ु ं ं ु अिसादग्रस्तता की ओर बढ़ता ह,ै ी आत े चलकर आत्महत्या ीसै े ीुन्य अरराध का कार बन सकता ह ै स्िस्ा सिाद ्मों ि सदहे ों का वनिार करता ह ै रर ीविन को सहव वदका की ओर ले ीाता ं ं ह ै सिाद के अि्रा से िचै ाकरक सकी तष ा ुर करतव ी रहव ह ै बढ़तव िचै ाकरक सकी तष ा ि ी़ ता ं ं ं ररस्रर ल़ा ाई-त़ा े का कार ह ै सिाद का स्तर वतरने से समी म अकावत का ितिार बनता ह ै ं ं प्रत्येक व्यवक्त एक-दसरे को सदहे की ष्वस से दखे ने लतता ह ै यहव सदहे आत े चलकर र्यकर विनाक ि ं ं ं ू रासदव का कार बनता ह ै सामावीक ि राकरिाकरक ीविन म विवर्न्न व्यवक्तयों म ररस्रर मतर्दे रर मनमटिा एक स्ि्ारिक प्रवक्रया ह ै ऐसा इसवलए, क्योंवक प्रत्येक व्यवक्त के मवस्तष्टक म वर्न्न-वर्न्न ु विचार होते ह, ररत यहव मतर्दे ि मनमटिा ररस्रर सिाद के अि्रा के चलते कब ब़ा व दरार म ु ु ं ं रकरिवतषत होकर अर नष वय ्वत का कार बनता ह,ै इसका रता हव नहीं चलता सबध वबखर रह े ह ू ं ं रकरिार टट रह े ह व्यवक्त का ीविन एकाकी रर अिसादग्रस्त बनकर नकष म रकरिवतषत हो रहा ह ै चारों ू तरर बेतहाका दश़ा ह,ै वीसम कहीं विराम नहीं वदखाई ऱा ता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 73 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 लोतों को एक सकट के मल कार रता करने के वलए तैयार होना चावहए् न वसरष सतह रर ल् ू ं उदाहर के वलए् 1 9 7 9 म क र डेविड (Camp David) ने वमो रर ईरायल के बवच समेशता वकया वक सकस्त्र सुष ष समासे हो सकता ह ै लेवकन ि्वादास्रद रूर से उन लोतों के बवच के करश्ते म कोई ं त ात्मक “below-the-waterline” अतर नहीं बनाया िाताष एक दसरे की मानिता को रहचानतव ह ै ु ं ू लोतों को एक दसरे के प्रवत सहानर्वत वदखाने के वलए तैयार रहना चावहए, अतर के साा-साा सामान्य ु ू ं ू आधार के ्ेरों को रहचानना रर रकरितषन की ्मता का प्रदकनष करना चावहए इस प्रकार की मानिवय बातचवत को बढ़ि़ा दने े के वलए एक सम्मानीनक रर वनष्टर् समायोीन या "सरव्त स्ान" को ु प्रावमकता दव ीातव ह ै िाताष एक दवुकष ावलक रकरप्रेक्य रर ीर दते व ह ै बातचवत के अन्य रूर समस्याओ के मल कार ों के बीाय ल् ों रर ध्यान क वित करते ह दवुषकावलक समाधान खोीने के ू ं वलए समय रर धैयष की आिश्यकता ह ै यह प्रवक्रया बहत हव सिाधानवरिकष धवम े तवत से वकया तया ू रर ि्विकवल हो सकता ह ै यह प्रवक्रया दस वमनट से लेकर दस साल तक कहीं र्व दरे तक ठहरनिोला ृ एक ऐसा हस्त्ेर् ी अक्सर सुष ष के तहरे -वनवहत कार ों को सबोवधत करने या ीवटल मद्दों से ररव ु ू ं ं तरह से वनरटने के वलए काम नहीं करता ह 3.4.1. ी -सपेब ें सनादायि ां ां सिाद की बहत-सव रकर ाषाए ुँ ह ै लेवकन सामान्यतया, सिाद एक ऐसा माध्यम ह ै वीसके तहत वकसव ं ं व्यवक्त की ि्राना वकसव दसरे व्यवक्त तक रहचुँ ाई ीातव ह ै दसरे क्दों म 'कोई र्व व्यक्त की तई ि्राना ू ू एक- दसरे को समे आ ीाए' उसे सिाद कहते ह ै आी के दशर म सिाद रर ्ान ऐसे दो रख ह ै वीनके ं ं ं ु सहारे आसमान की ँचाईयों को छआ ी सकता ह ै ि्रास्ति म ीन सबध (Public Relation), सिाद ू ं ं ं हनर से हव वुरा हआ ह,ै यह ीन सबध की सबसे ब़ा वनवि ह ै व्यवक्त को आकवषतष रर प्रेकरत करने के ं ं वलए यह सबसे ब़ा ा अस्त्र ह ै सिाद करते समय अरनव बातो को स्रस रूर से रखने के वलए सहव उच्चार ं करना, प्रि्राकालव क्दों का उरयोत करना,प्रमख ह ै इस हनर एि कशकल की मदद से अरने ीन-सरकष ु ं ं को न वसरष बरकरार रखा ी सकता हबै व्क बलवदयों रर रहचुँ ाया ी सकता ह ै ू ु ं सिाद के कई

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **114**

प्रकार होते ह,ै लेवकन ीब हम ीन सबध म सिाद की बात करते ह ै तो आमतशर रर चार ं ं ं ं प्रकार क

े सिाद का प्रयोत वकया ीाता ह ै ी वक वनम्नवलवखत ह: ं 1. मशवखक-सिाद ं 2.साके वतक-सिाद ं ं 3. वलवखत-सिाद ं 4. िबे -सिाद ं i. ें ौन्खे-सनादायि- ीब कोई व्यवक्त अरनव ि्रानाओ को मशवखक रूर से व्यक्त करता ह ै तो हम ां उसे मशवखक सिाद कहते ह ै दवै नक ीविन म सबसे यादा इसका उरयोत वकया ीाता ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 74 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ii. सो न्ि-सनादायि- ीब कोई व्यवक्त अरनव ि्रानाओ को मशवखक रूर से न

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **115**

व्यक्त कर अरने ां ां चेहरे के ि्रा से, करवर की हा-ि्रा से रर आखुँ ों से व्यक्त कर

े तो उसे साके वतक सिाद कहा ं ं ीाता ह ै कई बार तसे सिाद के वलए इसका प्रयोत होता ह ै यह एक प्रि्राकालव सिाद माध्यम ु ं ं ह ै मतर साके वतक सिाद वक अरनव खावमयाुँ र्व ह ै एक हव इकारा दो व्यवक्तयों के वलए अलत- ं ं अलत सिाद का सचक हो सकता ह ै ऐसव वस्ावत म ररकानव हो सकतव ह ै क्योवक प्रेषक रर ू ं लव्त सिादकताष के बवच एक ्म की

वस्ावत उत्रन्न हो सकतव ह ै इसका वनराकर साके वतक ं ं सिाद से नहव हो सकता ं iii. न्लन्खि-सनादायि -यह एक बहत हव अहम ंरात ह ै वीसका उरयोत ई-मले , सचना-रर, कररोटष रर ु ां रर-लेखन म वकया ीाता ह ै वलखते समय सहव क्दों का उरयोत करना, माराओ का ध्यान म ं रखते हए सहव िाक्य बनाना रर उसका सहव-सहव उरयोत करना ीरुरव है, तावक लव्त सिादकताष वबना वकसव ुंावन्त के सारा सिाद समे ीाये ं ं iv. नेर्-सनादायि -आधवनक दशर म इन्टरनेट सिाद अवत आिश्यक ह ै ीन-सरकष म यादा से ीयादा ु ां ं ं सरकष बढाने के वलए िबे -सिाद रखना बेहदीरुरव ह ै इस सिाद की मदद स े आर बहत ीदव, ं ं ं बहत हव कम समय म, कहीं से वं, सिाद कर सकते ह ै अरने व्यिसाय को यादा से ीयादा ं बढाने के वलए यह हनर आिश्यक ह ै ू 3.4.2. सनादायि े रश्योत े न्लए ्नये िन्न ां सिाद सवनवश्चत करने के म्य िन्न, वीनका उरयोत आर हर समय कर सकते ह ु ु ं □ ्त्ें न्नर्श्ास: आत्मविश्वास का त एक सरल िक्ता बनने के वलए बेहद ीरुरव ह ै व्यवक्त के ु बातचवत के तरवके रर हिाि्रा म आत्मविश्वास की ेलक स्रस नीर आतव ह ै आत्मविश्वासव व्यवक्त अरनव बात को ीक रर उत्साह के साा प्रस्तत करता ह ै , साा हव उसकी चहे रे रर ु सच्चव मस्कान रहतव ह ै िह अरनव बात को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तत नहीं करता ह ै िह ीी वं ु ु बोलता ह ै ररे विश्वास के साा बोलता ह ै िह कवं दसरों के वदल को चोट रहचाने िालव बात ु ं ु नहीं करता ह ै □ भाषा ेी सरलि और स्पष्टि ेा ध्या रख : एक ककल िक्ता बनने के वलए आरको ु अरनव विचारों को सवधे, सरल रर स्रस क्दों म व्यक्त करना आना चावहए ; नहीं तो अाष का अनाष हो ीाता ह ै अरन े िक्तव्य (lecture) म ीानबे कर कवठन रर वक्लस क्दों का प्रयोत ु नहीं कर याद रख - " विचारो की सरलता रर स्रसता से हव ि व सरल रर स्रस बनतव ह ै " □ अच्े श्रिा र् : एक अच्छे िक्ता की रहचान एक अच्छे िोता के रुर म वं होतव ह ै िह न के िल क्दों को ध्यान से सनता ह ै , बव्क उनके अदर छरे हए िर्ों को वं रढ़ लेता ह ै अतर ु ु ं उसे कोई बात समे म नहीं आतव ह ै तो बवच म सिाल रछ कर अरनव ककाा दर कर लेता ह ै ु ं ु इससे सामने िाले को वं लतता ह ै वक िोता उसकी बातों म वदलचस्रव ले रहा ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 75 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ दायिसरों ेा भव ंरोल े ेा अनसर दायि : अक्सर कछ लोतों को यादा बोलने की आदत होतव ह ै ु ु या कह वबमारव होतव ह ै उन से तत आकर लोत उनसे दर ंरातने लतते ह ै ककल िक्ता अरन े ु ं ु बात कहने के बाद या रहले ओरों को वं बोलने का अिसर प्रदान करता ह ै रर उनकी बातों को ध्यान से सनता ह ै बवच म अरनव बात कहने के वलए दसरों की बात वं नहीं काटता ह ै ु ु □ र्ंसर्ीव ेर : बात चवत म तकष वितकष का होना अच्छव बात ह ै , इससे वकसव विषय का साषक हल वनकलता ह ै तकष वितकष करने से आरको नई ीानकारव वं वमलतव ह ै लेवकन अरनव बात रर अढ़े रहने से बातचवत बहसबीाव का रुर ले लेतव ह ै िस्तत: बहसबीाव के िल ु अहकार की ऐसव ल़ा ाई ह,ै वीसम एक दसरे रर वच्लाने की होा सव लतव होतव ह ै बहसबीाव ं ु से कई बार हमारे सबध वं वबत़ा ीाते ह ै ं ं □ उदायिार न्दायिें ात रखो: अरने खद के सववमत विचारों म ना रसे, लेवकन उन्ह बदलने या विस्तार ु ं करने के वलए तैयार रह सोच के दो अलत-अलत तरवकों के सयोीन से एक सकलन हो सकता ं ं ह,ै ीी दोनों को समि करता ह ै एकता ीी हम चाहते ह, एकरूरता नहीं ह,ै बव्क

Quotes detected: **0%** id: **116**

"विविधता म ृ एकता"

या "विविधता का मेल-वमलार" ह ै एक समग्र रकरप्रेक्य म समानता के वलए सम्मान रर प्रकसा से सम्मावनत ंराईचारे का िर्ा समि होता ह ै उदाहर के वलए, यवद मवश्कल िर्ानाए ृ ु ं ं उर्रने लत , तो उन्ह सिदे नकवलता से वनरटा ीाना चावहए, ऐसा न हो वक ि े बातचवत की ं तवतकवलता को बावधत कर सक William Isaacs (1999) के कायष के आधार रर, एक व्यवक्त के वलए सिाद का उरयोत करने के वलए ं आिश्यक राच तत्ि ह ये ह: ं 1. सम्मान - यह मान लेना वक आर अरने समक् व्यवक्तयों के बवच ह; लें हव आर उनके साा सहमत हों या नहीं वक ि सवखने की प्रवक्रया के वलए िधै रर महत्िर ष ह ू 2. बात सनो- समे रर सवखने के वलए सनो् सत्यता े वलए नहीं् दसरों के बारे म अरनव खद ु ु ु ू की सनिाई से अितत रह ीाब या समाषन करने के वलए मत सनो् समेने के वलए सनो ु ु ु 3. रै सले वनलवबत - मान्यताओ रर प्रमा ों से अितत रह रर र् को रक़ा ना या उन्ह अलत ं ं रखना सवख उन रर कारषिाई करने के वलए बाध्यता महसस वकए वबना ू 4. स्िय को मक्त करो- बकाया राकव की ीच रर िकालत अरने आर को एक कठोर ु ं ं मानवसकता से मक्त कर ीच म स्रसवकर की तलाक रर तहरे स्तर की समे की मात् ु ं ं कमीरव का खलासा नहीं ु 5. अरनव तकष प्रवक्रया को सचाकरत कर - अरनव मान्यताओ के बारे म बात कर आर कै से रर वकस ं ं बात रर विश्वास करते ह तलाक करे वीन आक़ा ों रर आधाकरत अनमान लताए तए ह िअरना ु ं रर दसरों) क्ा म सरल सवखने के माहशल को बदलने म ये राच तत्ि आिश्यक हो सकते ह ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 76 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अभ्यास रश्न 3. सिाद का क्या महत्ि हवै ं 4. ीन-सरकष म सिाद कै से वकया ीा सकता हवै ं ं 5. सिाद के वलए आिश्यक तत्ि क्या हवै ं 3.5 सवना् ाद के माध्यम से िाक्त् त विविध लोतों का सह-अवस्तत्ि सचार रर सिाद की मात करता ह ै इसके अलाा यह महत्िर ष ह ै वक ू ं ं ं समरसता रर कावत का रकर ाम होना चावहए इस प्रकार कावत प्रदान करने म बातचवत की प्रकवत अत्यत ृ ं ं ं महत्िर ष होतव ह ै यह ्ात ह ै वक ीहा कहीं वं सिाद अनरवस्ात या अनवचत तरवके स े वकया ीाता ह्ै ू ु ु ं ं उस वस्ावत का नतवीा विवाद हआ ह ै र्तिद्भवता म् दो व्यवक्तयों के बवच तवन

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/question-answer/संयुक्त-व्यंज… id: **117**

प्रकार के िाताषए िव तष ह ं रहले एक को अहकारव कहा ीाता ह ै अहकार प्रकार

म् दोनों व्यवक्त एक-दसरे के ्ान की यादा ं ं ू दखे ंराल के वबना स्िय के बारे म ुमड ह ै अहकारव प्रकार म् दोनों व्यवक्त स्िय के बारे म ुमड कर रह े ह् ं ं ं ं ं वबना एक दसरे के ्ान की ररिाह वकए दसरे प्रकार को डराने िाला कहा ीाता ह ै

वीसम दोनों व्यवक्त ू ू एक-दसरे को धमकाने की कोवकक कर रह े ह् एक-दसरे के ्ान की रहचान करे वबना तवसरा प्रकार ू ू समरूरता के रूर म सदवर्तष वकया ीाता ह ै वीसम दोनों व्यवक्त एक दसरे के ्ान का सम्मान करते ह रर ं ू एक-दसरे से सवखने को

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… id: **118**

तैयार ह इसके अलिाा, सामीस्यर ष सिाद म लत े व्यवक्त एक तवसरे ीानकार ू ं ं ू ोात से सवखने के वलए उत्सक रर तैयार ह,

इस मामले म ीब दोनों व्यवक्त यह महसस करते ह वक इन ु ू दोनों को इस विषय के बारे म नहीं रता ह ै तवसरे प्रकार की बातचवत म हम सद्धिा, आरसव सम्मान रर समे का आधार दखे सकते ह, न के िल कावतर ष िाताष हव हई ह ै बव्क बातचवत म कावमल दोनों ू ं व्यवक्तयों के वलए र्व कावतर ष अनिर् रर बढ़ता ्ान ह ै यह इस कार से ह ै वक र्तिनि कष्ट वदव्य ृ ू ु ं अवर्व्यवक्तयों के दसि अध्याय म कहते ह, वक ि े (कावत के रूर म कष्ट) ऐसे सामीस्यर ष सिादों म ृ ू ं ं ं मशीद ह ू सिाद के इन तवन मीडलों को सर्व स्तरों रर लात वकया ी सकता ह ै इस तरह के एक सामीस्यर ष ू ू ं ं बातचवत की आिश्यक विकषे ताए यह ह ै वक प्रत्येक राटी को एक-दसरे का आदर करना चावहए रर एक ं ू दसरे से रर तवसरे ीानकार रर र्रोसेमद ोात से सवखने के वलए र्व विनम्र होना चावहए हालावक, इस ं ं ू तरह के एक सामीस्यर ष सिाद के वलए दोनों ों से िाताष की आिश्यकता ह ै तावक बातचवत के माध्यम ू ं ं से कावत प्रासे हो सके यह का एहसास करना महत्िर ष ह ै वक वहसा, सुषष, यि, आतकिाद, आवद सुषों ू ु ं ं ं ं ं ं को समासे नहीं करेता रर इस का रकर ाम कावत र्व नहीं होता ऐसे हीं, यह के िल कावतर ष प्रयास ह ै ीसे ू ं ं वक साषक, व्यिहाकरक रर सामीस्यर ष बातचवत न के िल सुष ष का समाधान करते ह बव्क कावत र्व ू ं ं ं लातव ह े सिाद के माध्यम से कावत आी की दवनया म अवधक प्रासवतक ह ै क्योंवक कई दके ररमा ु ं ं ं ु कवक्तयों म स्म ह, वीसका अाष ह ै वक वकसव र्व सुषष से तरै -कावतर ष विरवत्तर ष रकर ाम हो सकते ह ू ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 77 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 हम वकसव र्व समी के ऐवतहावसक रर सास्कवतक सावहत्य म र्व देख सकते ह वक ीब र्व रर ीहा र्व ृ ं ं सामीस्यर ष सिाद नहीं वकए ीाते ह, तब तक सुष ष रर विनाक का नतवी हआ ह ै ू ं ं ं 3.6. जीवना म सवना् ाद का उरयोग ें हम मनष्टयों को ईश्वर ने एक अनमोल उरहार प्रदान वकया है- िह ह ै एक-दसरे से अरनव बात कहन े रर ु ू समेने की कला समी म यवद वकसव व्यवक्त से सबध स्ाावरत करना ह,ै तो सिाद या बातचवत स्ित्तम ं ं ं साधन ह ै दरअसल, ीब आर वकसव से बातचवत करते ह तो सामने िाले को यह रता चल ीाता ह ै वक आरकी बातों म वकतनव तहराई ह,ै वकतना त्य ह ै रर अरनव बातों को आर दसरों के सामने कै से प्रस्तत ु ू करते ह कहा ी सकता ह ै वक क्दों के माध्यम से आर अरने व्यवक्तत्ि को दसरों के सम् प्रस्तत करते ु ू ह सच तो यहव ह े वक बातचवत एक अद्भत कला ह ै रर इस कला का ्ान प्रत्येक व्यवक्त को होना ु चावहए इसके अिर्ा म मनष्टय प्रिर्ाहवन हो ीाता ह ै यहा तक वक उनकी बातों का कोई महत्ि हव नहीं ु ं रह ीाता ह ै यवद हम सरलता के ष्वसको से र्व दखे , तो बातचवत म वनर होना बेहद ीरूरव ह ै हम ु हमके ा इन बातों का ध्यान रखना चावहए वक ी र्व हम बोल , उन क्दों का कछ अाष वनकले हमारा ु बोलना तर्व साषक हो सकता ह ै ीब हमारव बातों का सामने िाल े व्यवक्त रर सकारात्मक प्रिर्ा श्र े बातचवत करते समय हम एक रर बात ध्यान म रखनव चावहए कई बार ीब हम वकसव से बात करते ह, तो दसरे र् को बोलने का अिसर हव नहीं दते े ह इसवलए ीब हम वकसव से बात करते ह, तो उनकी ररव बात ू ू सन लेनव चावहए, तर्व उसका साषक उत्तर दने ा चावहए िास्ति म बातचवत की सन्दर कला को हव ररव ु ु ू दवनया म लोत सराहते ह प्रवसध्द लेखक रसेल ने एक रस्तक वलखव ह ै 'आटष ऑर लाइर' इस रस्तक म ु ु ु उन्होंने ीविन ीवने की विवध का विस्तारिकष ि नष वकया ह ै रसेल के अनसार, ीविन प्रत्येक व्यवक्त ू ु ीवता ह,ै लेवकन ी व्यवक्त प्रिर्ा-कन्य ीविन ीवता ह ै अाषत वीसका कोई उद्दश्े य हव नहीं हो, उसका ू ीविन बेकार ह ै हम मनष्टयों के रास विके कवल वदमात ह ै रर यवद वकसव व्यवक्त ने अरने विके का ु सदरयोत वकया ह,ै ी िास्ति म , िहव साषक ीविन ीवता ह ै इसवलए ीविन ीवने की कला बातचवत की ु कलै व, आचार-व्यिहार रर विचार का ्ान ीरूरव ह ै ीविन का सिाद अतर-धावमकष िाताष का एक रूर ह ै ी आमतशर रर वकसव र्व ीतह रर वकसव र्व समय ं ं होता ह ै यह विवर्न्न धमों, वलत् कायष विर्ात् सस्कवत् ीातवयता् ीावत् यशन अवर्विन्यास् या उम्र के ृ ं ं लोतों के साा सशहादरष ष सबध को बढ़ािा दने े के वलए एक सिादरर्क सबध ह ै यह तब करू हो ीाता ह ै ू ु ं ं ं ं ं ं ीब वकसव व्यवक्त के साा सामना, रहना रर सरकष वकया ीाता ह ै रर दवै नक ीविन की तवतविवधयों म ं एक साा र्ात लेता ह ै यह एक सामावीक सरकष ह ै वीसम अतर-धावमकष िाताष म तरै - विवकस ित ष (non- ं ं elite) के प्रवतर्ावतयों की ीमवनव स्तर रर र्ातवदारव का रता चलता ह ै बहलिादव समी की चनशतव को ु समायोवीत करने के वलए अतर-धावमकष िाताष म तरै - विवकस ित ष (non-elite) की र्ातवदारव आिश्यक ं ह ै इस

Plagiarism detected: **0.01%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **119**

प्रकार की प्रवक्रया म सामावीक सरकष रोज़मराष की तवतविवध म कावमल होता ह ै व

ीसे ीविन की ं बातचवत के रूर म ीना ीाता ह ै उन वक्रयाकलारों को वमलकर ीविन ीवने के अनिर्ों म वमि - ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 78 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विश्वास रकरिार के साा, उत्सिों रर विाह समारोहों के साा-साा(चलने िाल)े व्यिसाय करना अन्य धावमकष समदायों के साा र्व दखे ा ी सकता ह ै इसका उद्दश्े य ीविन की बातचवत की अिधार ा को ु स्रस करना ह ै रर यह कै से विवर्न्न लोतों के बवच सकारात्मक बातचवत को प्रोत्सावहत करने रर इस सिाद का महत्िर ष प्रिर्ा श्र ता ह ै ू ं

सवक्रय सनिाई रर ककष कता को बढ़ाए वबना वकसव के स्ि य के रकरप्रेक्य को सम्मानरिकष व्यक्त करने की ु ू ं ्मता एक सिाद प्रवक्रया के प्रमख तत्ि ह िाताष म "ास्तविक बातचवत की प्रवक्रया कावमल होतव ह ै ु ं वीसके माध्यम से मनष्टय एक दसरे को रयाषसे तहराई से सनते ह, सवखते ह रर बदलत े ह एक सिाद ु ु ं ू के िल अरने स्ि य के वलए करू नहीं वकया ीाना चावहए रर ीब लोतों को वकसव मद्द े से प्र ावित वकया ु ु ं ीाना चावहए रर उन्ह विश्वास होना चावहए वक ि एक साा आकर वस्ावत को बदलने के वलए कछ कर ु सकते ह इसे दसरे के अवस्तत्ि के सर्व दलों द्वारा मान्यता के साा आना चावहए रर अरने सुषष साव ं ू के साा बातचवत म कावमल होने के वलए तैयार रहना चावहए िाताष को रारस्रकरक सत्य-कोधन कायष के रूर म र्व दखे ा ी सकता ह ै ीहा विरोवधयों को इस त्य के ं प्रवत ीातरूक वकया ीाता ह ै वक सत्य "एक" नहीं ह ै रर सिाद प्रवक्रया कई सत्य उत्रन्न कर सकतव ह ै ं ि े इस ास्तविकता को स्िवकार करने के वलए स्ितर ह एक सिाद प्रवक्रया सरल होतव ह,ै विद्वान ीहन ं ं ल्त (Johan Galtung) कहते ह, ीब सिाद म

Quotes detected: **0.02%** id: **120**

"हमारे कान के अत म विस्मत वचह्न एक प्रश्न वचह्न बन ृ ु ं ं ं ीाता ह"

ै यह हमारव वस्ावत म बदलि का सके त दते ा ह:ै हम अरने ष्वसको को बदलने के विचार के ं वलए स्ितर हो ीाते ह वक हमारे ववािद िले साव ने क्या सोा वकया ह ै ं सिाद के तत्िों को मध्यस्ाता प्रवक्रयाओ के वलए क िवय रूर म दखे ा ीाना चावहए वरर र्व, ीबवक रि ष म ू ं ं एक रकरिवतषत करश्ते की रकरक्रना की ीातव है, बाद म वकसव प्रकार के समेशते की कोवकक होतव ह ै मध्यस्ाता प्रवक्रया म म्य लक्य सयक्त रूर से सहमवतयक्त व्यिस्ाा के माध्यम से अक्सर र्शवतक रुवचयों ु ु ु ं को ररा करना होता ह ै सिाद का नतवीा ह ै वक समस्याओ को हल करने के वलए नई मानिवय रर ू ं ं रीनिववतक ्मताए रैदा कर ं ररे दवनया र्ं के कई ्ेरों म , एक सिाद की धार ा ह ै वीसे एक िाताषलार के रूर म िव षत वकया तया ह ै ू ं ु ीहा ववािद र्: ं 1. अरनव ि्रानाओ रर र्य को सोा कर ं 2. अन्य राटी की ीरूरतों को सनने के वलए उदार ह, ु 3. ि े ीी सनते ह, उनके द्वारा बदलना चाहते ह, रर ु 4. आलोचनवय (vulnerable) होने के विचार के वलए उदार ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 79 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.7. रक्तरवनाार म सवना् ाद का उरयोग ें आी की सबसे वचतीनक समस्याओ म से एक ह ै 'रकरिार का अर्य' अरनेरन की ि्राना् ं ं ि्रानात्मक स ्रा रर रवतष रर एकता का आनद सर्व कम हो रह े ह करश्ते अवस्ार सावबत हो रह े ह ु ू ं यहा तक वक माता-वरता के करश्ते र्व वनराकीनक होते ी रह े ह ु रेल वहसा बढ़ रहव ह ै कई लोतों के ू ं ं वलए, लें हव र्शवतक ीविन का मतलब बढ़ तया ह ै रर बेहतर है, ीविन की त ित्ता खराब हो तई ह ै ु ुर, ी कावत रर स ्रा का एक उद्यान हो सकता ह,ै सुष ष रर वचता का ्ेर बनता ी रहा ह ै आी ु ं ं ं की समे रर अभ्यास के रूर म वक्ा ने वस्ावत को सधारने म मदद नहीं की ह ै अतर कछ र्व, ु ु प्रवतयोवतता की ि्राना रर वक्ा म सरलता की रीा को दते ा ह,ै तो अवधक वकव्त व्यवक्त को ुर रर ू दखे ्राल रर स्नेहव सबध बनाए रखने के वलए समय की कमव होने की स ि्राना अवधक होतव ह ै ं ं ं रकरिार के सदस्यों म सिाद महत्ि ष ह ै सिाद रवत-रत्नव के अच्छे सबधों की कीव ह ै रर ू ु ं ं ं ं ं ं सकारात्मक रूर से बच्चों को रालने म एक प्रमख कारक ह ै मनी्ािवनकों रर ररामकदष ाताओ ने कहा ु ं वक बातचवत के वबना, रकरिार के सदस्यों के बवच सुष ष बढ़ता ह ै रर इससे मनी् ावनक रर सामावीक ं समस्याओ का कार बनता ह ै वीससे तलाक र्व हो सकता ह ै 2006 के लेबनान के एक आक़ा े बताते ह ं ं वक रवत- रत्नव के बवच बातचवत की कमव तलाक का तवसरा म्य कार ाा रर सचना दव वक यवद ु ू बच्चों के बवच सुष ष करू हो ीाए, तो माता-वरता को वकसव विकेष राय को लात करके उन्ह हल नहीं ु ू ं करना चावहए, लेवकन बच्चों को एक साा बैठने रर बात करने के वलए समेाना चावहए बच्चों रर माता-वरता के रास ुर रर आीादव रर सम्मान का माहशल होना चावहए वीसम ि े अरनव राय व्यक्त कर सक राकरिाकरक सिाद म तेी आिाज़ म बोलना या ग़लत क्दों का इस्तेमाल करना कावमल नहीं होना ं चावहए रकरिार के सदस्यों को िक्ता को ध्यान से दखे ना रर सनना चावहए रर वीतना सि् हो उतना ु ं दखल से बच मनी् ावनकों ने कहा वक रकरिार के सदस्यों को बच्चों स े बात करने से बचने रर सिादों ं म ्रात लेने से रोकने के वलए दसरों से बहत अवधक दोषव ठहराया ीाता ह ै ीब प्रावधकर ोरा ीाता ह ै ू रर बच्चों को मारने की धमकी दव ीातव ह,ै तो कोई बातचवत नहीं हो सकतव बच्चों को नैवतकता रर म्यों को रढ़ाना बहत महत्ि र ष ह,ै हालावक उन्ह सदायैन व्याान दने े से बोकरयत रैदा होतव ह ै ी बच्चों ू ू ं को अरनव ि्रानाओ को व्यक्त करने से रोकता ह ै ं कादव रर राकरिाकरक ीविन म प्रेम का अनि्, व्यक्त करने रर बढ़ाा दने े के वलए सिाद आिश्यक ह ै ु ं अततोतत्ि यह के िल एक दवुकष ावलक रर प्रवक्ता की मात का रकर ाम हो सकता ह ै ररुष रर ु ं ं ु मवहला, बच्चा रर ियस्क अलत-अलत सिाद करते ह, ि े अलत-अलत ाषा बोलते ह रर ि े अलत- ं अलत तरवकों से कायष करते ह सिाल रछने रर ीाब दने े का हमारा तरवका, लही ी हम का उरयोत ू करते ह, हमारे सिाद कलै व प्रमाव त करता ह हम कछ ऐस े व्यिहारों को विकवसत करने की ीरूरत ह ै ी ु ं प्रेम व्यक्त करते ह रर प्रामाव क सिाद को बढ़ाा दते े ह ं सिाद म दसरे व्यवक्त ी कहना चाहते ह,ै सबको धैयषरिकष रर ध्यान से सनने के वलए तैयार रहना ू ु ं ू चावहए इसके वलए सहव समय होने तक बोलने की आत्म-अनकासन की आिश्यकता होतव ह ै वकसव राय ु या सलाह की रेकक्क करने के बीाय, हम यह सवनवश्चत करने की आिश्यकता ह ै वक हमने ी कछ र्व ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 80 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कहना ह ै उसे सना ह ै इसका अाष ह ै वक एक आतकरक चतरव का विकास करना, वीससे मानवसक या ु ु ं ि्रानात्मक विकषष के वबना दसरे व्यवक्त की बात करना सि् हो अक्सर अवधकाक रवत - रत्नव को ं ं ू अरनव समस्याओ का समाधान करने की आिश्यकता नहीं होतव ह,ै बल्क ीविनसाव के दद,ष उनकी ं वनराका, उनके डर, उनके क्रोध, उनकी आकाओ रर उनके सरनों को स्िवकार रर सन र्ं लेने से ु ं समस्याओ का समाधान हो सकता ह ै ं “अरने अज़वज़ों से बात करने की हमारव कावबलवयत वदन-ब-वदन ुटतव ी रहव ह ै ” यह कररोटष

रोल ड की सासेावहक रवरका, पोक्तिक्तिका म छरव ाव अनमान लताया तया ह ै वक अमरवका म रवत-रव्नव, ररे वदन म ु ू वसरष छः वमनट एक-दसरे से बात करते ह कछ विकेष् मानते ह वक अलत होने रर तलाक लेने िाले ु ू रवत-रव्नयों म से आधे लोतों रर यह नशबत इसवलए आयव है, क्योंवक ि े एक-दसरे से बात करने के वलए ू कम-से-कम समय द े रह े ह माता-वरता रर उनके बच्चों के बवच बातचवत के बारे म ँरर वज़क्र की तयव कररोटष बतातव ह ै वक ज़्यादातर समय

Quotes detected: **0.02%** id: **121**

“मा ुँ बार अरने बच्चों के साा बातचवत नहीं, बव्क रछताछ करते ह ीसै े, स्कल म ू ू अी क्या-क्या हआ? तम्हारे दोस्त कै से ह? ”

यह कररोटष आत े एक सिाल रछतव ह:ै

Quotes detected: **0.03%** id: **122**

“अतर बातचवत करने ु ू का यहव तरवका रहा, तो बच्चे अरने माता-वरता को अरने वदल की बात कहना रर उन रर र्रोसा रखना कै से सवखत े?”

अत म , हम यह स्िवकार करते ह वक एक साषक िाताष के वलए हमारे रास कछ कहने को होना चावहए ु ं यह के िल एक आतकरक समवि का नतवी हो सकता ह ै ी रढ़न,े व्यवक्ततत प्रवतवबब, प्राषना रर हमारे ृ ं ं आसरास की दवनया म खलारन द्वारा रोवषत होता ह ै अन्या् बातचवत तच्छ रर उबाँ हो ीतव ह ै ु ु ु ीब न तो ीविनसाव इस रर काम करते ह् रर अन्य लोतों के सा ें सरकष रखत े ह ै राकरिाकरक ं ीविन तबाह हो ीता ह ै रर िाताष शन्गहव अभ्यास रश्न 6. सिाद से कावत कै से सि् हवै ं ं ं 7. सिाद ीविन म कै से प्रयोत वकया ी सकता हवै ं 8. सिाद कै से रकरिार को प्र्ावित करतव हवै ं 3.8. स्कू ल म सवना ाद का उरयोग ें िीवल के वक्ाविद राउलो फ्रायर (Paulo Freire), को लोकवप्रय वक्ा विकवसत करने के वलए ीना ीता ह,ै एक प्रकार की कै्व क वक्ा के रूर म उन्नत बातचवत Freire बताते ह वक सिाद सचार ं ं छारों रर वक्कों को एक दसरे से सम्मान रर समानता की विकषे ता िाले ितिार म सवखने की ू अनमवत दते ा ह ै सिादात्मक अध्यारन के िल तहन समे

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **123**

के बारे म नहीं ाा; यह दवनया म सकारात्मक ु ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 81 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रकरितषन करने के बारे म

र्व ाा इसे बेहतर बनाने के वलए, क्ा स्तर रर सिाद को बढ़ाा दने ा, ं विद्यावाषयों की आाी को सनना रर आिश्यक बनाना् सिाद म न के िल सबधों म सधार लाने की ु ु ं ं ं ं ्मता ह,ै बव्क वक्ा रर उरलब्ध को बढ़ाने की र्व ्मता ह,ै ी नववत वनमाषताओ की तलाक ह ै ं क्द िाताष का उद्दश्े य तहन स्तर के विश्लेष या स्रसवकर को इवतत करना ह ै उससे ी व्यवक्त द्वारा वकए ं तए राक अवर्व्यवक्तयों के रूर म खद को लेकर के िल चचाष की बवनयादव अाष के साा हव िास्ता होता ृ ु ु ह ै ीब हम िाताष के बारे म बात करते ह , तो हम चचाष के सयक्त उद्यम के बारे म बात कर रह े ह, ी वक ु ं सचयव तवतविवध के रूर म ह ै वीसका उद्दश्े य वकसव प्रयोीन या अन्य रर क वित ह ै वक्ा के ्ेर म् ं उद्दश्े य वीस म हम अक्सर सबसे अवधक रुवच सवखने के व्यारक अों म रखते ह ीब बच्चा रहलव बार स्कल आता ह ै तो सबसे रहले उसका सामना स्कल की ि वबि व्यिस्ा से होता ू ू ह ै वीसे स्कल ने अनकासन बनाए रखने के वलए तैयार वकया ह ै यह ि वबिता वक्कों द्वारा विद्यावाषयों ू ु से दरव बनाने के वलए इस्तेमाल की ीतव ह ै तावक बच्चे वक्क के वसर रर न चढ़ यह दरव बनाकर रखना ू ू एक लतातार चलने िालव प्रवक्रया ह ै अनकासन बनाए रखने के नाम रर बार-बार बच्चों को चर रहने के ु ु वलए कहा ीता ह ै उन्ह विचार-विमकष से र्व रोका ीता ह,ै रर वचन्तन हो सके इसकी सम्ि्ानाएुँ र्व नहीं बन रातव ह स्कल प्रकासकों-ीसै े 20 िीं सदव के सतठनों के अवधकाक नेताओ ने म्य रूर से ँरर से नवचे आकार ू ु ं ं ं म रै सले वकए ह , वीनम छारों, वक्कों या सामदावयक वहतधारकों से बहत कम इनरट या ्रातवदारव ु ु कावमल ह ै अी, रोकस नेतत्ि के "वितर " मीडल रर ह,ै ी वक एक नेतत्ि की वज़म्मेदारव बढ़ाता ह ै ृ ृ रर कई वहतधारकों के करश्तों रर बातचवत म यह बना ीता ह ै ु "सबसे मलर्त अाष म , िास्तविक सधार मानि कारक रर वनर्रष करता ह ै - बदलने के वलए वक्क, ू ू ु छार, अर्र्ि्ाक, रर व्यारक समदाय वकस प्रकार से सोचते ह रर ीाब दते े ह ... अत म, यह ु ं मनष्टय के व्यिहार, अरे्ाओ रर आदतों म विकास के वबना स्कल सचालको के वलए दवुकष ावलक ु ू ं ं सधार को बढ़ाा दने ा लतर्त असि् होता ” ु ं • न्शक्षों ें सिा निाब : वक्क अक्सर स्कल के नए

Plagiarism detected: **0.03%** http://krishipravahika.vitalbiotech.org/form/202… id: **124**

स्िरूर के बारे म चचाषओ से बाहर रखा ीता ू ं ह ै ि े इसे उन चवज़ों के रूर म अनि् करते ह ी उनके साा हो रहा ह,

ै ऐसा कछ नहीं वीसम उनकी एक ु ु सवधा वहस्सेदारव हो लेवकन ीब र्व वक्कों को मी रर रहने का मशका वमलता है, वन यष लेने की प्रवक्रया का एक िास्तविक वहस्सा बनने के वलए, ि े अक्सर रकरितषनों के प्रवत ग्रह कवल होते ह रर अरने स्िय के विचार प्रस्तत करते ह वक उन्ह विश्वस्तता के साा कै से लात वकया ी सकता ह ै ु ू ं • ेारों ें सिा निाब: सिीष वनक वक्ा म सधार का काम अक्सर हर स्कल समदाय के सबसे ु ू ु महत्ि ष सदस्यों को कावमल करने के वलए उरे्ा करता है: िह ह ै छार ीबवक हमारे छारों को मीबत ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 82 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 स्कलों से सबसे अवधक लार् वमलता ह,ै उन्होंने ऐवतहावसक रूर से स्कल कायषक्रमों को वडज़ाइन करन े ू ू या प्रमख बनाने म कर्व महत्ि ष र्वमका नहीं वन्राई ह ै ीब छारों को वक्कों के साा बातचवत करने ु ू ू के वलए आमवरत वकया ीता ह ै रर उनके सावायों के बवच बात करन े

का अिसर वमलता ह,ै तो ि े ं रकरितषन के वलए एक सबसे कवक्तकालव आिी बन सकते ह • पररनारों े सिा निाब: कई रकरिारों को रयाषसे रूर से सवचत नहीं वकया ीाता ह ै वक एक ीवटल ू ि वै श्वक समी म सरल होने के वलए उनके बच्चों को क्या सवखने की ज़रूरत ह,ै इसवलए ीानकारव बाटन े ं रर प्रयोीन वसि करने के वलए एक समवरषत स्ान आिश्यक ह ै रर ीब सर्व रकरिार अरने बच्चों को अच्छा करना चाहते ह, तो उन्ह अरने बच्चों रर उन समदायों के लोतों की ओर से अरनव आिाज़ ु उठाने के वलए मातदष कनष की ीरूरत ह ै • र्े पैं ा े पर सें दायिाय े सिा निाब: वक्ा हमारे समदायों की ताकत रर हमारे दके के विष्टय के ु ु वलए अत्यन्त महत्ि ष ह,ै लेवकन इसके बवच एक ब़ा ा अतर रहता ह ै की स्कल सचालक स्कलों म ू ू ू ं ं सधार के बारे म वकस तरह सोचते ह रर ीनता क्या समेतव ह ै ु ीब हम इन ि ाताषलारों या सिद के वनमाष के वलए काम करते ह, तो हम यह याद रखना चावहए वक ं छार-क वित सवखने के वलए मानवसकता म एक महत्ि ष बदलिा की आिश्यकता होतव ह ै ी के ि ल ू चल रहव ि ाताष रर विचार-विमक ष के माध्यम से हव हो सकतव ह ै अच्छे सिद की कछ बवनयादव कत ें ह,ै

Quotes detected: **0.05%** id: **125**

“वन ीक माहशल, सरल ाषा, एक-दसरे का सम्मान, सहमवत ु ु ं ू रर असहमवत के बिीद एक-दसरे को सनन े का साहस रर सबसे ीरूरव सिद म ात ले रह वकसव ू ु ं ू र्व वलत, रद, ीावत, धम ष रर ्ेर के लोतों को अरनव बात कहन े का अिसर ”

ं ये सब बात एक बेहतर सिद का माहशल बनातव ह अच्छे रर बेहतर सिद के यहीं मायने हमारव क्ा ं ं रर र्व लात होते ह ु क्ा म अममन वक्क का डर होता ह ै वक अतर बच्चों के सा वमरतार ष ढत से रेक आए तो बच्चे ू ू ं हमारव बात नहीं मान त े ऐसे म वक्क हव ररव क्ा म अरनव बात एकतररा ढ़त स े कहता ीाता ह ै बच्चे ू ं वसरष सनते ह इस एकतररा बातचवत से अममन क्ा बोवेल हो ीातव ह ै यह डर वक्क के अलिा ु ू वकसव ताकवात होवकयार-रढ़ाक बच्चे का र्व हो सकता ह ै ी बाकी सर्व बच्चों से यादा क्ा म ू महत्ि रखता ह ै सर्व वक्क उसव को कावबल बताते ह एक वक्क के सामने क्ा से ी़ा कई बवनयादव सिल होते ह ीसै े: ु ु मरे व क्ा बेहतर कै से हो? क्ा म सवखने-वसखाने का अच्छा माहशल कै से बने? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 83 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 क्ा रूवचकर कै से हो? रर क्ा प्रि ाव कै से हो? क्ा से ी़ा इन सर्व सिालों के ि ीाब म एक बहत बवनयादव उराय नीर आता ह,ै ि ो ह,ै क्ा म ु ु बेहतर सिद क्ा म वक्क रर बच्चों के बवच आरसव बातचवत का स्तर वीतना अच्छा होता, क्ा ं का स्तर र्व उतना हव बेहतर होता दसरे अ ों म हम कह सकत े ह वक क्ा वक् (क्लासरूम टववचत) ं ू बेहतर सिद का हव दसरा नाम ह ै ं ू 3.8.1. े क्षा ें ेहिर सनादायि ै से हो? ां अब सिल उठता ह ै वक आवखर क्ा म वक्क रर बच्चों के बवच बेहतर सिद का क्या मतलब ह?ै ं क्ा म बच्चों रर वक्क के मध्य सिद या बच्चों के बवच आरसव सिद या वकसव के र्व मध्य बेहतर ं ं सिद का मतलब होता ह ै वक सिद म ात लेने ि ाले सर्व लोतों रर ों को अरनव बात कहने का ं ं अिसर वमल सर्व अरनव बात बतरै वकसव डर के कह सक , क्योंवक सिद म रद, वलत, ीावत, धम ष या ं ं रर वकसव र्व ि ीह से डर होने रर सिद का स्तर बहत हव वनम्न कोटव का हो ीाता ह ै ं सामने ि ाला अरनव बात कहना चाहता ह ै मतर वकसव ना वकसव डर की ि ीह से ि ह अरनव बात नहीं कह राता इस तरह को कोई र्व अिरोध सिद को एकतररा रर बहत हव अलोकतावरक बना दते ा ह ै ं ं बोवेल रर नवरस बना देता ह ै सिद म ध्यान रखना होता ह ै वक ि क्ता हमके ा सरल ाषा का इस्तेमाल ं कर सरल ाषा मतलब आम बोलचाल की ाषा वीसे कोई र्व आसानव से समे सक ि क्ता अरनव बात कहते समय सही रर आत्मविश्वास के सा रह आरस म

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **126**

बात कर रह दो लोतों का एक-दसरे के प्रवत र्रर सम्मान र्व होना चावहए, अतर बात कर रह

ू ू दो लोत एक-दसरे का सम्मान नहीं कर त े तो बातचवत या सिद कर्व बेहतर हो हव नहीं सकता सम्मान ं ू र्व इस स्तर का की अतर सामने ि ाला कोई ऐसव बात कह रहा है, ी रहले ि ाले को रसद नहीं ह ै वरर र्व ं रहले ि ाला सामने ि ाले को सन सके रसद ना होन े र्र र्व सनने की मता होना ुनोर असहमतव होने ु ु ं रर र्व सनने का साहस रखना रर बाद म अरनव बात सलवके से रखना रर असहमतव रर विरोध करना ु तावक सिद के वसलवसले को आत े बढ़ाया ी सके ं कई बार क्ा म सिद का उरयोत तो करते ह ररन्त उस विषय-विकषे के सन्दर्ष म हव वीसकी चचाष ि हुँु ं हो रहव होतव ह ै यानव हम सिद को विषय-के वन्ित करके हव उसका उरयोत करते ह रर क्या सिद एक ं ं स्ितर ुटक नहीं हो सकता? यह लेख सिद के उस रूर की चचाष करता ह ै ी विषय-के वन्ित न होकर ं ं रोज़मराष के ीविन के वनीव अनि ों रर के वन्ित हो रर वरर र्व क्ा के र्वतर हव चल रहा हो अक्सर ु क्ाओ म सिद को विषय-के वन्ित रूर म समेने या दखे न े का प्रयास वकया ीाता ह ै सिद तव त की ं ं ं क्ा म हो, इवतहास की क्ा म या वकसव अन्य विषय की क्ा म , ि ह इस समे रर आधाकरत होता ह ै वक क्ा म सिद बच्चों की समे को आकार दने े रर विषय म उनकी रुवच बनाए रखने म सहायक ं होता, रर यह सहव र्व ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 84 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वक्क विद्याी के बवच सबध तकरमार ष होने के सा-सा आत्मवयता से र्ा होना चावहए वक्क ि ू ं ं विद्याी के बवच सबध तर्व आत्मवयता से र्रर होता ीब दोनों के बवच सबध र्ोंसे रर आधाकरत हो ू ं ं ं ं वक्क को विद्यावाषयों के सा इस कदर व्यिहार करना चावहए वक विद्याी अरने वक्क रर उतना र्ोंसा कर , वीतना ि े अरने माता वरता रर करते ह इसके वलए सिद बहत ब़ा व चवी ह ै यवद वक्क ं अरनव ररव प्रवत ा का इस्तेमाल छारों की उन्नवत के वलए कर त े तो इसका रल अिश्य वमलेता कई बार ू विद्याी वसरष र्य के कार रढ़ाई से ी़ा व ककाओ को अरने वक्क के सामन े व्यक्त नहीं कर राते ु ं ं

विद्यावाषयों के मन म वछरे इस र्य को दर करने की वीम्मदे ारव वक्कों की ह ै इसके वलए दोनों के बवच ू खला सिाद होना ीरूरव ह ै ु ं 3.9. साथी समूह / समकक्षों म सवना् ाद का उरयोग ें साव समह विद्यालय म एक प्र्राकालव सामावीक ितिार प्रदान करते ह वीसम समहवकत मानकों ृ ू ू को, समसामवयक प्रवक्रयाओ के माध्यम से विकवसत रर लात वकया ीाता ह,ै ी समानता को बढ़ाा ू ं दते े ह साव समह के सदस्य एक समह के रूर म सहमवत दते े हये आरस म व्याक रूर म ी़ ते ह ू ू ु साव समह के सा सिाद वनम्नवलवखत तरवकों से मदद करता ह:ै ू ं 1. अन्नलर् सें ाधा - सहकमी समह अरने सदस्यों को समय रर बेहतर काम करने के वलए प्रेकरत ू ां करने म मदद करता ह ै क्योंवक समह वनयवमत रुर से वमलते ह अके ले होने रर आर अरना काम ू स्ावतत कर सकते ह ै या समय रर करने म टालम टोल करते ह तो आरके वलए एक समह सिाद ू ं अच्छा समाधान हो सकता ह ै 2. ीव से ी - सिाद समहों म सदस्य आम तशर रर अके ल े काम करने ालो की तलना म तीव ू ु ं से सवख सकते ह क्योंवक यहाँ आर अरने सावायों की सोच से रकरवचत होते ह, ीब उन्ह कछ ु समेने म कवठनाई होतव ह ै तब उनकी मदद र्व कर सकते ह , 3. ए ट्नर्ष्टी ेा न्नास - यवद आर अरने आर से अध्ययन करते ह, तो आर हमके ा अरनव सामग्रव को उसव रकरप्रेक्य से दखे त े?? इन नए ष्वसको ों को खोीने के वलए समह सहव स्ान ह ू यहाँ आर सिाद के माध्यम से एक हव विचार रर विवर्न्न ष्वसको की एक विस्तत विविधता का ृ ं विचार प्रासे कर सकत े ह यह आरको अरनव वस्ावत के बारे म अवधक सोचने के वलए मीबर ू करेता रर आरको सवखने म सहायता करने म महत्िर ष सोच कशकल को र्व विकवसत करेता ू 4. ए ैशल ेा न्नास - समह एक विषय रर नए रकरप्रेक्य म सवखने के अलिा, नए अध्ययन ू तकनवक र्व प्रदान करता ह सिाद के माध्यम से प्रत्येक सदस्य अरने स्ि्य के विकषे कशकल को ं ं विकवसत रर सोा करता ह ै हालावक आरका अरना तरवका उत्कस हो सकता ह,ै वरर र्व ृ ं ं सिाद समह अर्व र्व आरकी सवखने की ्मताओ को बेहतर बनाने की वदका म प्र्राव कायष ू ं ं कर सकता ह 5. ए ेरसिा को ि्ि ा- विकषे रूर से लबे समय तक कायष करना एक नवरस तवतविवध बन सकता ं ह,ै हालावक एक सिाद समह म कावमल होने से आर इस एकरसता को तो़ा सकते ह? ? यवद ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 85 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 आरको कछ कायष विकेष रूर से ाकाँ लतता ह,ै तो इसे अवधक मनोरीक बनाने के वलए एक ु ं सिाद समह म कावमल होने रर विचार कर ू ं 6. नास्ि्न्ने दायिन् या े न्लए अभ्यास- एक समक् समह म अरने सावायों के सा सिाद ू ं ु करना आरको अरने के कशकल को सधारने के वलए एक कानदार अिसर प्रदान करता ह ै यवद ु आर अरने ि्तविक दवनया म एक कवठन रकरवस्ावत म आते ह, तो आर समक् समह से प्रासे ू ु अनि्र् के आधार रर हल करने

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… + 2 resources! id: **127**

का प्रयास कर सकते ह ु 7. ि ान से ेटेारा पा े ै न्लए- साव समह / समक्ों म सिाद के माध्यम से आर अरन े ु ू ं तनि से छटकारा राने का प्रयास कर सकत े ह क्योंवक यहाँ आर अरने सावायों से अरनव ु व्यवक्तितत समस्याओ को सोा कर सतोषीनक समाधान प्रासे कर सकत े ह

ं ं 8. अनेाश ै सें य ेा सदायिपयोत- साव समह / समक्ों म सिाद आरको अरने अिकाक के ू ं ु समय का सदरयोत अच्छे ढत से करने का काम अिसर प्रदान करता ह ै यहा आर खले , ं ं ु मनोरीन, स्ि्स्ा बातचवत, रर खकव से समय व्यवतत सकत े ह ु ं 9. ए े दायिसरे ेा सें झ े ै न्लए- सिाद एक दसरे को ीानने के वलए एक प्र्राव उरकर ह ै ं ू ू इसके से माध्यम आर अरने सावायों की कवक्त रर कमीकरयों को ीान सकते ह न् ष्टेषब यह ्ात ह ै वक सर्व प्रयासों को व्यवक्तयों के सा करू करने रर समह म

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ + 2 resources! id: **128**

विस्तार की आिश्यकता ह ै रर ु ू इसव तरह व्यवक्तयों के रूर म ीब हम दसरों के सा हमारव बातचवत म बातचवत के माध्यम से कावत प्रासे ं ू करने का अभ्यास करते ह, तो उस कावत प्रयास का विस्तार

होता ह,ै इसके अलिा अतर विवर्न्न स्तरों ं ीसै े नेताओ, सतठनों, रायों, समी, दके आवद के विवर्न्न प्रकार के सिादों की प्रकवत को समेते ह ृ ं ं ं रर उन्ह लात करते ह तो कावत का रकर ाम होता एक व्यवक्त के स्तर रर एक कावतर ष ितिाष ष्वसको ू ू ं ं का अभ्यास कर सकता ह,ै ीसै ा वक र्तिन कष्ट द्वारा अध्याय 17 (15 ि्ं कता्व) के अनसार सलाह ृ ु दते ा ह,ै वीसम उन्होंने कहा ह,ै "चोट रहचुँ ान े के वबना, दसरों का अरमान करने से वकसव को सच्चाई से ू बात करना चावहए रर कास्त्रों का अध्ययन रर अभ्यास करना चावहए (ीसै े वक ि्दे) "यह समो ीाता ह ै वक बातचवत के माध्यम से कावत, कावतर ष ष्वसको , कावतर ष व्यिहार, कावतर ष बातचवत आवद को ू ू ू ं ं ं ं सदवर्तष करता ह ै ं ि्वै दक वहद कास्त्रों ने बार-बार ीर वदया रर चेतिानव दव वक मानि ीविन अवद्वतवय रर विकषे ह ै क्योंवक ं ू यह के ि्ल इसान ह ै ी न के ि्ल कावत के सा हव अरने आस-रास की दवनया म र्व कावत ला सकता ह ै ं ं ं ु बेकक, अतर हम कावत रर सामीस्य लान े म हमारव र्वमका को अनदखे ा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.amarujala.com/photo-gallery/uttar-… id: **129**

करते ह तो ि्कै व्रक मातष ू ं ं सष,ष यि रर दख ह ै आइए हम अरने प्रयासों को अरनाते ह रर बातचवत के माध्यम स े अलत-अलत ु ं ु स्तरों ीसै े वक व्यवक्तितत, रकरिार, सहकमी, समदाय, सतठन, समी, राय, दके रर दवनया म अनन्त ु ं ु कावत के वलए उरकर बनात े ह ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 86 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अभ्यास रश्न 9. स्कल विकास के वलए सिाद प्रवक्रया म वकसको कावमल वकया ी सकता हवै ू ं 10. क्ा म बेहतर सिाद कै से हो सकता ह?ै ं 3.10. सारि्□

कावत की सस्कवत या रयाषिर का वनमाष ृ बह ाषव सिाद के ीकरए समी के सदस्यों के बवच ृ ं ं ं एक चेतना रैदा करने के वलए बातचवत महत्ि ष र्वमका वन ातव ह ै ू ू □ सनादायि दो या दो से अवधक लोतों के बवच एक वलवखत या बोलनिोलव बातचवत के आदान-प्रदान ां ह्ै रर एक ऐसव सावहवत्यक रर नाटकीय रूर ह ै ी इस तरह के विवनमय को दकाषता ह ै सिाद ं एक सचार उरकर ह ै वीससे दलों को एक आम तरवके से एक समस्या की सरचना ेर े की ं ं अनमवत ह ै ु □ आमतशर रर चार प्रकार के सिाद का प्रयोत वकया ीता ह ै ी वक ह: 1. मशवखक-सिाद, ं ं 2.साके वतक-सिाद, 3. वलवखत-सिाद, ताा 4. िबे -सिाद ं ं ं ं □ सनादायि सवनवश्चत करने के म्य िल ह: आत्मविश्वास, ाषा की सरलता रर स्रसता का ु ु ां ध्यान रख, अच्छे िोता बन , दसरों को र्व बोलन े का अिसर द, बहसबाीव न कर ताा उदार ु वदमात रखो □ विविध लोतों का सह-अवस्तत्ि सचार रर सिाद की मात करता ह ै इसके अलिा यह महत्ि ष ू ं ं ं ह ै वक उनम े समरसता रर कावत का रकर ाम होना चावहए इस प्रकार कावत प्रदान करने म ं ं बातचवत की प्रकवत अत्यत महत्ि ष होतव ह ै ीहा कहीं र्व सिाद अनरवस्ात या अनवचत तरवके ृ ू ु ु ं ं ं से वकया ीता ह्ै उस वस्ावत का नतवी विवाद होता ह ै □ ीविन ीवने की कला, बातचवत की कलै व, आचार-व्यिहार रर विचार का ्ान ीरूरव ह ै □ रकरिार के सदस्यों म सिाद महत्ि ष ह ै सिाद रवत-रत्नव के अच्छे सबधों की कीव ह ै रर ू ु ं ं ं ं ं सकारात्मक रूर से बच्चों को रालने म एक प्रमख कारक ह ै ु □ अच्छे सिाद की कछ बवनयादव कत ें ह,ै

Quotes detected: **0.05%** id: **130**

“वन ीक माहशल, सरल ाषा, एक-दसरे का सम्मान, ु ु ं ू सहमवत रर असहमवत के बिाद एक-दसरे को सनने का साहस रर सबसे ीरूरव सिाद म ात ू ु ं ू ले रह वकसव र्व वलत, रद, ीावत, धम ष रर ्ेर के लोतों को अरनव बात कहन े का अिसर ”

ं □ क्ा म वक्क रर बच्चों के बवच आरसव बातचवत का स्तर वीतना अच्छा होता, क्ा का स्तर र्व उतना हव बेहतर होता दसरे अ ों म हम कह सकत े ह वक क्ा वक् (क्लासरूम ू टववचत) बेहतर सिाद का हव दसरा नाम ह ै ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 87 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ साव समह विद्यालय म एक प्रि ाकालव सामावीक ितिार प्रदान करते ह वीसम समहवकत ृ ू ू मानकों को, समसामवयक प्रवक्रयाओ के माध्यम से विकवसत रर लात वकया ीता ह,ै ी ू ं समानता को बढ़िा दते े ह 3.11. िब्दावनाली 1. सनादायि: िताष, बातचवत, स ाष , आलार, िताषलार, ां ं 2. अ रश्योत: प्रयोत, उरयोत, इस्तेमाल, अमल ु 3.12तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. सनादायि दो या दो से अवधक लोतों के बवच एक वलवखत या बोलनिोलव बातचवत के आदान-प्रदान ह्ै ां रर एक ऐसव सावहवत्यक रर नाटकीय रूर ह ै ी इस तरह के विवनमय को दकाषता ह ै 2. सिाद के उद्दश्े य इस प्रकार ह: ं a) कावतर ष सुष ष रकरितषन् सामीस्य रर रोकाम का समाषन करने के वलए ू ं ं ं b) विवादत समी के नातकरकों के बवच बातचवत को बढ़िा दने े c) कावतर ष सुष ष रकरितषन की प्रवक्रया म नातकरक समी की ातवदारव रर सकवक्तकर को ू ं ं बढ़िा दने ा; d) सह ावतयों के वलए मता-वनमाष को बढ़िा दने ा - विकषे कर मवहलाओ यिाओ रर सुष ष के ु ं ं ं वककार – कावतर ष सुष ष रकरितषन प्रवक्रयाओ म; ू ं ं ं 3. सिाद एक समिोकव प्रवक्रया ह ै ीसै ा वक िताष/ सिाद रकरवस्ावत रकरितषन को दकाषतव ह्ै िता ष ं ं ब्ा े समी के एक सक्म सिदना को बनाने के वलए विवर्न्न आिाज़ों को एक सा लातव ह ै ू ं दवुकष ावलक बदलि लाने के वलए् लोतों को इस प्रवक्रया म सयक्त स्ावमत्ि की ि ाना ु ं विकवसत करना चावहए रर सामान्य चनशवतयों का सामना करने के वलए वहस्सेदार बन् नए ु ष्वसको ों की रहचान करना चावहए 4. सिाद के कई

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **131**

प्रकार होत े ह,ै लेवकन ीब हम ीन सबध म सिाद की बात करत े ह ै तो आमतशर रर ं ं ं ं चार प्रकार क े सिाद का प्रयोत वकया ीता ह ै ी वक वनम्नवलवखत ह: ं i. मशवखक-सिाद ं ii. 2साके वतक-सिाद ं ं iii. वलवखत-सिाद ं iv. िबे -सिाद ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 88 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5. William Isaacs (1999) के आधार रर, एक व्यवक्त के वलए सिाद का उरयोत करने के वलए ं आिश्यक राच तत्ि ह ये ह: ं i. सम्मान ii. बात सनो ु iii. रै सले वनलवबत ं iv. स्िय को मक्त करो ु ं v. अरनव तकष प्रवक्रया को सचाकरत कर ं 6. सिाद के माध्यम से कावत आी की दवनया म अवधक प्रासवतक ह ै क्योंवक ीहा कहीं र्व सिाद ं ं ं ं ं ं ु अनरवस्ात या अनवचत तरवके से वकया ीता ह्ै उस वस्ावत का नतवी विवाद हआ ह ै साषक, ु ु व्यिाहाकरक रर सामीस्यर ष बातचवत न के िल सुष ष का समाधान करते ह बव्क कावत र्व ू ं ं ं लातव ह ै 7. समी म यवद वकसव व्यवक्त से सबध स्ावरत करना ह,ै तो सिाद या बातचवत स्ित्तम साधन ह ै ं ं ं दरअसल, ीब आर वकसव से बातचवत करते ह तो सामने िाले को यह रता चल ीता ह ै वक आरकी बातों म वकतनव तहराई ह,ै वकतना त्य ह ै रर अरनव बातों को आर दसरों के सामने ू कै से प्रस्तत करते ह हम हमके ा इन बातों का ध्यान रखना चावहए वक ी र्व हम बोल , उन क्दों ु का कछ अ ाष वनकले हमारा बोलना तर्व साषक हो सकता ह ै ीब हमारव बातों का सामने िाले ु व्यवक्त रर सकारात्मक प्रि ्रा ़ा े 8. कादव रर राकरिाकरक ीविन म प्रेम का अनि्र, व्यक्त करने रर बढ़िा दने े के वलए सिाद ु ं आिश्यक ह ै 9. छारों,वक्कों, रकरिार या सामदावयक वहतधारकों ु 10. क्ा म बच्चों रर वक्क के मध्य सिाद या बच्चों के बवच आरसव सिाद या वकसव के र्व ं ं मध्य बेहतर सिाद का मतलब होता ह ै वक सिाद म ात लेने िाले सर्व लोतों रर ों को ं ं अरनव बात कहने का अिसर वमल सर्व अरनव बात बतरै वकसव डर के कह सक , क्योंवक सिाद ं म रद, वलत, ीावत, धम ष या रर वकसव र्व िह से डर होने रर सिाद का स्तर बहत हव वनम्न ं ं कोटव का हो ीता ह ै 3.13 सद् र् य 1.

http://www.undp.org/content/dam/undp/library/crisis%20prevention/dialogue_c onflict.pdf 2. http://www.unesco.org/new/en/communication-and-information/freedom-of- expression/dialogue-for-peace/ 3. http://www.transconflict.com/gcct/gcct-members/europe/the- caucasus/armenia/peace-dialogue/ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 89 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4. http://www.undp.org/content/dam/undp/library/crisis%20prevention/dialogue_c onflict.pdf 5. (29 वसतबर के यएनए), किते Al-Awadh हानव ोत: www.kuna.net ू ु ं 6. http://www.jagran.com/editorial/apnibaat-importance-of-dialogue- 11368919.html#sthash.wKIT5LnS.dpuf 7. https://educationmirror.org/2016/02/ वक्ा -विमकःष "बेहतर सि/ ं 8. https://educationmirror.org/2016/02/28/how-a-classroom-interaction-should- take-place-in-school/ 9. https://www.linkedin.com/pulse ीन-सरकष -म- सिाद-का-महत्ि -pr-professionals ं ं 10. http://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city- 11605465.html#sthash.ngRrJJOx.dpuf 11. http://aatmavikas.blogspot.in/2013/06/blog-post.html 12. http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=1181&pageno=1 13. http://www.deshbandhu.co.in/miscllenious/बोलने- की-अनमोल-कला-37386-2 14. http://www.osho.com/hi/read/osho/osho-on-topics/topic-707 3.14 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. राष्टरवय एकीकर म बातचवत कै से उरयोतव हवै उरयक्त उदाहर ों के साा समोए ु ं 2. ीविन् रकरिार् स्कल रर सावायों के समह म बातचवत की र्वमका समोओ ू ू ू 3. आर क्ा म सिाद के माध्यम से वक् -अवधतम प्रवक्रया कै से सचावलत कर सकते ह? ं ं उरयक्त उदाहर ों के साा समोए ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 90 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 खण्ड 3 Block 3 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 91 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 2 - का क्ति क बार म प्राचव ारार वय क्तिनचार (बौद्ध धमय और ी धमय) 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 विश्व कावत के वलए विश्व के धम ष ं 2.4 बशि धमष 2.4.1 तशतम बि का रकरचय ु 2.4.2 तशतम बि के उरदके ु 2.5 कावत के सबध म तशतम बि के विचार ु ं ं ं 2.5.1 बशि धमष की वक्ा की सिाषर्शवमकता कावत के सदर्ष म ं ं 2.6 ीन धमष 2.6.1 र्तिन महिावर का रकरचय 2.6.2 र्तिन महिावर वक्ा 2.7 कावत के सबध म ीन धमष के विचार ं ं ं 2.7.1 ीन धम ष की प्रासवतकता / सिाषर्शवमकता कावत के सदर्ष म ं ं ं 2.8 साराक ं 2.9 क्दिालव 2.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.11 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 2.12 वनबधात्मक प्रश्न ं 2.1 प्रस्तावना ा ितषमान म असवहष्ट ता, किरिाद, ििवाद का समाी म बोलबाला हो तया ह ै ी विकास रर ु क्या कारव काय् म बाधा उत्रन्न कर रहा ह ै उन्होंने कहा वक िवै श्वक राषरवय एि स्ानवय स्तर रर ं बढ़तव हई वहसा के चलते राष्टरवय स्कलव वक्ा राठयचया ष के ढाँचे म कावत वक्ा को महत्िर ष स्ाान ू ू ं ं वदए ीान े की ीरूरत ह ै

Quotes detected: **0.05%** id: **132**

'अवहसा के वसिात का सबसे रहले तर्वरता से सव्यिवस्ात रूर से वनमाष ि ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 92 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 उसका उवचत ि म्य रूर से उरदके ीनै तवीकरों द्वारा रर खास तशर रर चशबवसि अवतम तवीकर ु ं महिावर द्वारा हआ रर वरर महात्मा बि द्वारा '

– ि व व न्नद्वा डॉ. ि ा य शा ु ु कास्त्रवय सस्कत कत म कावत के अाष म वनकटतम क्द ह,ै ी आमतशर रर कावत, आनद, काश्वत आराम, ृ ं ं ं ं ं रर खकव की व्याया करते ह, लेवकन आमतशर रर यह क्द विनाक, मत्य के सबध म , रर ििवाह ृ ु ु ं ं (अलत, अलति, करता) के विररवत ह ै यहा कावत "अलति की अनरवस्ावत" (वितराारास्ि) या ु ु ं ं

Quotes detected: **0.01%** id: **133**

"सुष ष या यि की अनरवस्ावत"

(यिर्) के विररवत ह ै ारार की र्वम प्राचवन सस्कवत रर सभ्यता, ृ ु ु ू ं ं कावत के सदर् ष म एक व्यारक, असाधार रर अनोखव ीतह रखतव ह ै हीारों साल रहले इस दके द्वारा ं ं व्यक्त कावत का सदके ररे विश्व रर तहरा असर हआ ाा इस प्रिर्ा का म्य कार यह ह ै वक कावत के ू ु ं ं ं प्रवत ष्वसको ी प्रत्य् या अप्रत्य् रूर से प्रासे वकए तए ्ान के माध्यम से प्रासे वकए तए ह रर ािस्ति म ािस्तविक अनिर्् ह ै ु कावत के प्रवत ारारतवय ष्वसको व्यवक्ततत स्तर रर करू होता ह ै इसवलए, यह सामवहक, सामावीक रर ु ू ं बाद म राष्टरवय स्तर रर चलता ह ै इसका एक महत्िर ष कार यह ह ै वक ारारतवय दकनष दकाषता ह ै वक ू मनष्टय को अरने कमों के अनसार ररस्कत या दवडत वकया ीाता ह ै यह कावत के ष्वसको से असाधार ृ ु ु ु ं ं कछ ह,ै रर यह इसवलए ह ै क्योंवक कावत स्ावरत करने के वलए व्यवक्तयों द्वारा वकए तए प्रयास अत्यत ु ं ं महत्िर ष ह दसरे क्दों म व्यवक्ततत प्रयास कावत के वनमाष का वनमाष करने के वलए नींि का काम करते ू ं ू ह हम सर्व ीानते ह वक ीब लोत एक साा वमलते ह तो समाी या एक दके का वनमाष

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… + 4 resources! id: **134**

होता है, इस प्रकार समाी या समाी की ि वि रर वतरिाट वनर्रष करतव ह ै ितषमान इकाई कावत के बारे म बशि धम ष ृ ं रर ीनै धम ष के विचार

ों से सबवधत ह ै इस इकाई का उद्दश्े य कावत के प्रश्न रर बशि धम ष रर ीनै धम ष के ं ं ं ष्वसको रेक करना ह ै 2.2 उद्दश्े य इस इकाई म रढने के बाद, आर स्म होंत:े 1. कावत

Plagiarism detected: **0.06%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **135**

के बारे म बशि धम ष के विचारों को ि नष करने ं 2. कावत के बारे म ीनै धम ष के विचारों का ि नष करने ं 3. कावत के बारे म अरने विचारों को विकवसत करने ं 4. कावत के सबध म बशि धम ष रर ीनै धम ष के विचारों के बवच अतर समेने ं ं ं ं 5. बशि धम ष रर ीनै धम ष के विचार

ों म समानता को समेने 2.3 क्तवनाश्व िाक्त् त के क्तलअ क्तवनाश्व के धम य विश्व के सर्व प्रमख धम-ष बशि, ईसाई, कन्रवकिाद, वहद, इस्लाम, ीनै , यहदव, वसक्ख, ताओाद, रारसव- ू ु ू ं ू के प्रेम को लेकर आदक ष एक से ह, आध्यावत्मक अभ्यास से मानिता का र्ा करने का समान लक्य, उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 93 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रर धम ष का रालन करने िालों को एक अच्छा मानि बनाने का प्रि्रा र्व एक सा हव ह ै सर्व धम ष वचत्त, काय रर िाक को रकरष्टकत करने के वलए नैवतक वसिातों की वक्ा दते े ह सर्व हम ेठ न बोलन,े चोरव ृ ं ू न करने की या दसरों के प्रा न लेन े आवद की वक्ा दते े ह मानिता के महान वक्कों द्वारा वदए तए ू सर्व नैवतक उरदके ों का एक समान लक्य ह ै वनस्ाष ि्रा महान वक्क अरने अनयावययों को अ्ान ु के कार नकारात्मक कायों के मातष रर चलन े से रोककर उन्ह अच्छाई के मात ष से रकरचय करना चाहत े ो सर्व धमष स्ाष रर अन्य बराइयों की ी्ा अनकासनहवन वचत्त रर वनयर की आिश्यकता को ु ु ं लेकर सहमत ह रर प्रत्येक एक मात ष की वक्ा दते ा ह ै ी ऐसे आध्यावत्मक अिस्ा की ओर ले ीता ह,ै ी कावतर ष, अनकावसत, नैवतक रर प्र्ान होता ह ै इस अ्ाष म मरे ा मानना ह ै वक सर्व धमों का ू ु ं मलत: एक हव सदके ह ै रुवढ़यों म अतर का कार समय, रकरवस्ावत रर सा हव सास्कवतक प्रि्रा हो ृ ू ं ं ं सकते ह, ि्रास्ति म ीब हम धम ष के तढ़ र् की चचाष करते ह तो बशविक चचा ष का कोई अत नहीं ह ै रर ू ं अरने वनत्य प्रवत के ीविन म व्यिाहाकरकता को लेकर छोटे-छोटे अतरों रर तकष करने के स्ान रर सर्व ं धमों की अच्छव वक्ाओ के सोा विचार को अरनाना कहीं अवधक लार्कारव ह ै ं कई विवर्न्न धमष ह ी मानिता को आराम रर सख दते े ह ठवक उसव तरह ीसै े विवर्न्न रोतों के वलए ु विवकस उरचार उरल्ध ह क्योंवक सर्व धम ष अरने ढत से सत्ों को दख को दर कर सख प्रासे करना ु ं ु ू वसखाते ह रर यद्यवर हम धावमकष सच्चाइयों की विवकस ि्रविचे ना को अरनाने के वलए कार खोी सकते ह, ररन्त एकता के रर ब्रा े कार ह ी मानिव्य हृदय से उत्रन्न होते ह एक ब्रा ा कार ह ै ु प्रत्येक धम ष अरने ढत से मनष्टय की कवठनाइयों को कम करने का प्रयास करता ह ै रर विश्व सभ्यता म ु ं योतदान दते ा ह ै मानिव्य अनि्र् रर विश्व सभ्यता को समि बनाने के वलए विश्व के सर्व विवर्न्न धमों की आिश्यकता ृ ु ह ै हमारे मानिव्य मवस्तष्टक की विवर्न्न ्मताओ रर स्ि्रा के कार कावत रर सख प्रासे करने के ु ं ं वलए अलत उरायों की आिश्यकता होतव ह ै यह ्रीन की तरह ह ै कछ लोतों को ईसाई धमष यादा ु आकवषतष करता ह,ै तो अन्य कईयों को बशि, क्योंवक इसम कोई सीनकताष नहीं ह ै रर सब कछ आरके ृ ु अरने कमों रर वनर्रष करता ह ै हम इसव तरह से दसरे धमों के र् म र्व तकष द े सकते ह इसवलए यह बात ू तो स्रस ह,ै मानिता को ीविन कवै लयों से तालमेल वबठाने के वलए, विवर्न्न आध्यावत्मक आिश्यकताओ के वलए रर विरासत म वमलव हर एक व्यवक्त की राष्टरवय ररम्रा के वलए विश्व के सर्व ं धमों की आिश्यकता ह ै इसव ष्वसको से म विश्व के विवर्न्न ्रातों म धमों के बवच वकए ी रह े बेहतर तरवके से समेने के प्रयासों का स्ितत करता ह ुँ आी तो विवकस रूर से इसकी तरन्त आिश्यकता ह ै यवद सर्व धमष मानिवयता को ू ु रर अच्छा करने को अरना म्य वचतन बना ल तो ि विश्व कावत के वलए सरलता रर सद्भि से कायष ु ं ं कर सकते ह अतधषमीय समे सर्व धमों को एक सा कायष करने की आिश्यक एकता लाएतव ररन्त ु ं यद्यवर यह एक महत्ि्र ष कदम ह,ै रर हम याद रखना चावहए वक इसका कोई तत्कालवन रर सरल ू समाधान नहीं ह ै विवर्न्न धमों के बवच ी सैावतक मतर्द ह हम उन्ह अनदखे ा नहीं कर सकते रर न ं हव हम ितषमान धमों के स्ान रर वकसव नय े सिार्ष शवमक वि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 4 resources! id: **136**

श्वास को हव रख सकते ह प्रत्येक धमष का उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 94 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अरना कछ विवकस योतदान होता ह ै रर प्रत्येक

अरने ढत से वकसव विवकस समदाय के लोतों के वलए ु ु ं ीसै ा ि ीविन को समेते ह, उरयक्त ह ै विश्व को सर्व धमों की ीरूरत ह ै ु उन धावमकष अभ्यावसयों के सम्, ी विश्व कावत को लेकर वचवतत ह, आी दो प्रावमक कायष ह रहला, ं ं हम विवर्न्न धमों के बवच बेहतर समे को विकवसत करना होता, तावक सर्व धमों के बवच कायष करने के अनकल एकता स्ावरत की ी सके यह एक-दसरे के मतों का सम्मान करते हए रर मानिता के ु ू ू क्या की हमारव समान सोच रर बल दके र कछ अकों म प्रासे की ी सकतव ह ै दसरा, हम मलर्त ु ू ू ू आध्यावत्मक म्यों रर एक ऐसव व्यिाहाकरक आम सहमवत बनानव होतव, ी हर एक मनष्टय के हृदय को ू ु स्रक ष करे रर साधार मानिव्य सख को बढ़ि्रा द े इसका अ्ाष यह ह ै वक हम सर्व विश्व धमों के समान ु त ों रर बल दने ा चावहए - मानिव्य आदक ष ये दो चर हम व्यवक्ततत तशर रर रर एक सा वमलकर ु विश्व कावत के वलए आिश्यक आध्यावत्मक रकरवस्ावतय्ाँ तैयार करने के कायष म सहायक होंत े ं हम विवर्न्न धमष के अभ्यासव वमलकर विश्व कावत के वलए काम कर सकते ह ीब हम विवर्न्न धमों को ं सहृदयता के विकास - दसरों के प्रवत तयार रर सम्मान, समदाय का एक सच्चा ि्रा के आिश्यक ु ू उरकर ों के रूर म दखे ते ह सबसे महत्ि्र ष बात ह ै धमष के उद्दश्े य की ओर दखे ना, न वक उसके ू धमकष ास्त्र रर तत्ि मवमासा के विस्तत रूर की ओर, ी कोरव बशविकता की ओर ले ीता ह ै मरे ा ृ ं मानना ह ै वक विश्व के सर्व प्रमख धम ष विश्व कावत म योतदान द े सकते ह रर मानिता के क्या के ु ं वलए वमलीलकर कायष कर सकत े ह, यवद हम सक्म आध्यावत्मक विवर्न्नताओ को ररे रख द, ी वक ु ू ं ि्रास्ति म प्रत्येक धम ष का आतकरक मामला ह ै ं ि्वै श्वक स्तर रर हई आधवनकता के कार आई प्रतवतकवल धमवष नरर्ेता रर विश्व के कछ ्रातों म ु ु आध्यावत्मक म्यों को नस करने की सर्व व्यिवस्ात प्रयासों के बिीद मानि ीावत का एक ब्रा ा ्रात ू ू वकसव न वकसव धम ष को मानता हव ह ै धमष म अटट विश्वास, ी अधावमकष रीनववतक प्र ालव म र्व स्रस ू ह,ै स्रस रूर से धमष की कवक्त को प्रदवकतष करता ह ै इस आध्यावत्मक ँीष

रर कवक्त का उद्दश्े यर ष ू उरयोत विश्व कावत के वलए आिश्यक रकरवस्ावतयाँु लाने म हो सकता ह ै इस सबध म विश्व के सर्व ं ं ं धमतष रु रर मानितािावदयों की विवकस र्वमका ह ै हम विश्व कावत को प्रासे कर राएतुँे अिाा नहीं, रर ु ू ं हमारे रास उस वदका म काम करते रहने के अलिाा कोई रर विक्र नहीं ह ै 2.4 बौद्ध धम य बशि धम ष ारत की ि रर्म्रा से वनकला धम ष रर दकनष ह ै इसके प्रस्ारक महात्मा बि काक्यमवन ु ु (तशतम बि) ो ईसाई रर इस्लाम धम ष से रहले बशि धमष की उत्रवत्त हई ाव दोनों धम ष के बाद यह ु दवनया का तवसरा सबसे ब़ा ा धम ष ह ै इस धम ष को मानन े िाल े यादातर चवन, ीारान, कोकरया, ाईल ड, ु कबोवडया, िवलका, नेराल, र्टान रर ारत ीसै े कई दके ों म रहते ह आी, हालाँुवक बशि धम ष म तवन ू ं ं सम्प्रदाय ह: हवनयान या ोरिाद, महायान रर िज्रयान, ररन्त बशि धम ष एक हव ह ै सर्व बशि सम्प्रदाय ु बि के वसिात हव मानते ह ै ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 95 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.4.1 तीिं र्द्ध ो परिय ु तीिं र्द्ध (ीन्म 563 ईसा रि ष – वनिाष 483 ईसा रिष) विश्व महान दाकवष नक, ि ावनक, धमतष रू एि ु ू ू ु ं उच्च कोटव के समाी सधारक ो ताातत बि प्राचवनतम धमों म से एक महान बशि धमष के सस्ारक ु ु ं ो उनका ीन्म लवबनव म 563 ईसा रि ष काक्य कल के रााी कोिधन के ुर म े हआ ाा उनकी मुँु का ु ू ु ु ं नाम महामाया ाा वीनका सात वदन बाद वनधन हआ, उनका रालन महाप्रीारतव तशतमव ने वकया वसिाष विाहोररात एक मार प्राम निीात वकक राहल रर रत्नव यकोधरा को त्यातकर ससार को ु ं ं ीरा, मर , दखों से मवक्त वदलाने के मात ष की तलाक एि सत्य वदव्य ्ान खाी म रात म रीराठ छोा कर ु ं ु ीतल चले तए िषों की कठोर साधना के रश्चात बोध तया (वबहार) म बोधव ि के नवच े उन्ह ्ान की ृ ं प्रावसे हई रर ि े वसिाष तशतम से बि बन तए ु ि े 80 िष ष की उम्र तक अरने धम ष का सस्कत के बीाय उस समय की सवधव सरल लोकर्ाषा रालव म ृ ं प्रचार करते रह े उनके सवधे सरल धम ष की लोकवप्रयता तीव से बढ़ने लतव चार ससोह तक बोवधि् के ृ नवचे रहकर धम ष के स्िरूर का वचतन करने के बाद बि धम ष का उरदके करने वनकल श़ा े आषाढ़ की ु ं रव मष ा को ि े काकव के रास मतदिा (ितषमान म सारनाा) रहचुँे ि हीं रर उन्होंने सबसे रहला धम्रदके ृ ू वदया रर रहले के रुँच वमरों को अरना अनयायव बनाया रर वरर उन्ह धम ष प्रचार करने के वलये ीर्ी ु वदया 2.4.2 तीिं र्द्ध े उपदायिश ु र्तिन बि ने लोतों को मध्यम मात ष का उरदके वकया उन्होंने दःख, उसके कार रर वनिार के वलए ु ु असावतक मात ष सोया तशतम बि के महारकरवनिाष के बाद, बशि धम ष के अलत-अलत सप्रदाय ु ु ं ं उरवस्ात हो तये ह, ररत इन सब के बहत से वसिात वमलते ह ताातत बि ने अरने अनयावयओ को ु ु ु ं ं ं चार आयषसत्य, असावतक मात,ष दस रारवमता, रचकवल आदव वक्ाओ को प्रदान वकए ह ीा इस प्रकार ं ं ं ह- िार ्यब सत्य ताातत बि का रहला धम्रदके ु 1. दायिुःख: इस दवनया म दःख ह ै ीन्म म , बढे होने म , बवमारव म , मशत म , वप्रयतम से दर होने म , ू ु ु ू ु नारसद चवज़ों के साा म , चाहत को न रान े म , सब म दःख ह ै ं ु 2. दायिुःख ोर : तष्ट ा, या चाहत, दःख का कार ह ै रर वफ़र से सकरवर करके ससार को ीारव ृ ं ु ु रखतव ह ै 3. दायिुःख न् रोध: तष्ट ा से मवक्त राई ीा सकतव ह ै ृ ु ु 4. दायिुःख न् रोध ेा ें ातब: तष्ट ा से मवक्त असावतक मातष के अनसार ीवन े से राई ीा सकतव ह ै ृ ु ु ं ु अष्टान्ते ें ातब ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 96 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 बशि धम ष के अनसार, चशो आयष सत्य का आयष असात मात ष ह ै दःख वनरोध राने का रास्ता तशतम बि ु ु ं ु कहते ो वक चार आयष सत्य की सत्यता का वनश्चय करने के वलए इस मात ष का अनसर करना चावहए: ु 1. सम्पये दृष्ट: चार आयष सत्य म विश्वास करना 2. सम्पये सेल्प: मानवसक रर नैवतक विकास की प्रवत्ा करना ां 3. सम्पये नो: हावनकारक बात रर ेट न बोलना ू 4. सम्पये ें ब: हावनकारक कमों को न करना 5. सम्पये ीवन्नो: कोई र्व प्रत्य् या अप्रत्य् रूर से हावनकारक व्यारार न करना 6. सम्पये रश्यास: अरने आर सधरने की कोवकक करना ु 7. सम्पये स्ें न्ि: स्रस ्ान से दखे ने की मानवसक योग्यता राने की कोवकक करना ृ 8. सम्पये सें ान्ध: वनिाष राना रर स्िय का तायब होना ं कछ लोत आयष असात मात ष को रा की तरह समेते ह,ै वीसम आत े बढ़ने के वलए, वरछले के स्तर को ु ं राना आिश्यक ह ै रर लोतों को लतता ह ै वक इस मात ष के स्तर सब साा-साा राए ीाते ह ै मात ष को तवन वहस्सों म ितीकत वकया ीाता ह ै : प्रा, कवल रर समावध तशतम बि के मत म असावतक मातष हव ृ ु ं िह मध्यम मातष ह ै वीससे दःख का वनदान होता ह ै असावतक मातष चुँवक ्ान, सक्र, िचन, कमीत, ू ं ं ु आीवि, व्यायाम, स्मवत रर समावध के सदर् ष म सम्यकता से सा्ात्कार कराता ह,ै अतः मध्यम मातष ह ै ृ ं मध्यम मातष ्ान दने े िाला ह,ै कावत दने े िाला ह,ै वनिाष दने े िाला ह,ै अतः क्या कारव ह ै रर ीा ं क्या कारव ह ै िहव ियस्कर ह ै तशतम बि विश्वक्या के वलए मरै व िाना रर बल दते े ह ठवक िसै े ु हव ीसै े महािवर स्ामिव ने वमरता के प्रसार की बात कहव ाव तशतम बि मानते ह वक मरै व के मोतरों की ु महक से हव ससार म सद्धि का सशरर् रै ल सकता ह ै ि े कहते ह वक बैर से बैर कर्व नहीं वमटता अबैर ं से मरै व से हव बैर वमटता ह ै वमरता हव सनातन वनयम ह ै तशतम बि ु ा के ुिों रर मोहबत का मरहम ृ ु लताते ह पारन्ें ि बशि धम ष म 'रकरर तष ा' या कछ त ों का चरमोन्नयन की वस्ावत को पारन्ें ि या पारें व (रावल) कहा ू ु ु तया ह ै बशि धम ष म इन त ों का विकास रविरता की प्रावसे, कम ष को रविर करन े आवद के वलए की ीातव ु ह ै तावक साधक अनिारि ीविन ीवते हए र्व ्ान की प्रावसे कर सके 'रारवमता' क्द 'ररम' से व्यत्रन्न ु ह ै ेः पारन्ें ि: महायान ग्रन्ाों म छः रारवमता की त ना वमलतव ह-ै 1. दान रारवमता 2. कवल रारवमता 3. ्ावन्त रारवमता 4. ियष रारवमता 5. ध्यान रारवमता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 97 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 6. प्ा रारवमता दकर्वमकासर म वनम्नवलवखत चार रारवमता र्व वतनायव तयीं ह- ू ू 1. उराय रारवमता 2. प्राव धान रारवमता 3. बल रारवमता 4. ्ान रारवमता दायिस पारन्ें ि: ोरिाद ग्रन्ाों म दस रारवमता ि व षत ह- 1. दान रारमव 2. कवल रारमव 3. नेक्खम्मा (त्यात) रारमव 4. रण् रारमव 5. िवकरय रारमव 6. खावन्त रारमव 7. सच्च रारमव 8. अवधत्ाान रारमव 9. मत्ते ा रारमव 10. उरेक्खा रारमव पिशवल ां र्तिन बि ने अरने अनयावयओ को राच कालों का रालन करने की वक्ा वद ह ु ु ं ं 1. अन्हसा: म प्राव -वहसा से विरत रहने की वक्ा ग्रह करता ह ुँ ू ां ं 2. अस्ियः म चोरव से विरत रहने की वक्ा ग्रह करता ह ुँ ू 3. अपररग्रह: म व्यवचार से विरत रहने की वक्ा ग्रह करता ह ुँ ू 4. सत्य: म ेठ बोलने से विरत रहने की वक्ा ग्रह करता

ह ुँ ू ू 5. सभव शा से न्नरि: म रक्की कराब (सरा) कच्चव कराब (मरे य), नकवलव चवीीं ु (मीरमादठटाना) के सिेन से विरत रहने की वक्ा ग्रह करता ह ुँ ू र्द्ध ेी न्शक्षाओ का सार ह- कवल, समावध रर प्ा सि ष रार से विरवत हव 'कवल' ह ै वकि म वनरतर ु ां ं वनरवत 'समावध' ह ै इस-अवनस से ररे समिरा म रवत 'प्ा' ह ै र्तिन बि प्ा ि करु ा की सा्रात मवतष ु ू ो ये दोनों हव त उनम उत्कषष की रराकाष्ठा प्रासे कर समरस होकर समावहत हो तय े ो महात्मा बि के ु ु अनसार धावमकष रर आध्यावत्मक ्ेर म सर्व स्त्रव एि ररुषों म समान योग्यता एि अवधकार ह इतना हव ु ु ं ं नहीं, वक्ा, वचवकत्सा रर अीविविका के ्ेर म र्व ि े समानता के र्धर ो उनके अनसार एक मानि ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 98 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 का दसरे मानि के सा व्यिहार मानिता के आधार रर होना चावहए, न वक ीवत, ि ष रर वलत आवद ं ू के आधार रर उन्होंने अवहसा रर बहत ीर वदया ह ै उन्होंने य् रर रक-बवल की वनदा की बि के ु ु ं ं उरदके ों का सार इस प्रकार ह ै - सम्यक ्ान र्द्ध े अ सार धम्में है: - र्द्ध े अ सार अ-धम्में है: ु ु ु ु □ कमष को मानि के नैवतक सस्ान का आधार - ं मानना आत्मा म विश्वास करना □ ीविन की रविरता बनाए रखना क्रना-आधाकरत विश्वास मानना □ ीविन म र तष ा प्रासे करना धम ष की रस्तकों का िचन मार ू ु □ तष्ट ा का त्यात ररा-प्रकवत म विश्वास करना ृ ू □ वनाि ष प्रासे करना □ यह मानना वक सर्व सस्कार अवनत्य ह ं बि के अनसार सिम्म क्या ह:ै - ु ु 1. ीी धम्म प्ा की ि्वि 2. ीी धम्म मरै व की ि्वि करे -- 3. ीब िह सर्व प्रकार के ृ ृ करे-- □ ीी धम्म यह बताए वक सामावीक र्दे ि्रों को वमटा दे □ ीी धम्म यह बताए वक करु ा से र्व अवधक मरै व की □ ीब िह आदमव रर आिश्यकता प्रा प्रासे आिश्यकता ह ै आदमव के बवच की सर्व करने की ह ै □ ीी धम्म यह बताए वक प्ा दविारों को वतरा द े □ ीी धम्म यह बताए वक रर कवल के सा-सा □ ीब िह आदमव-आदमव के के ि्वि विद्वान होना करु ा का होना र्व अवनियष बवच समानता के ि्रा की रयाषसे नहीं ह ै ह ै ि्वि करे ृ □ ीी धम्म सबके वलए □ ीी धम्म यह बताए वक प्ा □ ीब िह बताए वक आदमव ्ान के द्वार खोल द े र्व रयाषसे नहीं ह,ै इसके सा का म्याकन ीन्म से नहीं ू ं कवल र्व अवनियष ह ै कमष से वकया ीाए अभ्यास रश्न 1. र्तिन बि ने दःख, उसके कार रर वनिार के वलए कशन सा मात ष सेाया? ु ु ु 2. बि की वक्ाओ का सार क्या ह?ै ु ं 3. रारवमता क्या ह?ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 99 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.5 ि्क्तत के स्बध म गौतम बुद्ध के क्तवनाचार ् ें कई बशि धमाषिलबव मानते ह वक विश्व कावत तर्व हो सकतव ह,ै ीब हम अरने मन के र्वतर रहले कावत ं ं ं स्ावरत कर बशि धम ष के सस्ारक वसिाष तशतम ने कहा, "कावत र्वतर से आतव ह ै इसे इसके वबना न ं ं तलाक. " विचार यह ह ै वक तस्सा रर मन की अन्य नकारात्मक अिस्ाए यि रर ल़ा ाई के कार ह ु ु ं बशिों का विश्वास ह ै वक लोत के ि्वि तर्व कावत रर सन्द्रि के सा ीव सकते ह, ीब हम अरने मन से ं क्रोध ीसै व नकारात्मक ि्रानाओ को त्यात द रर तयार रर करु ा ीसै व सकारात्मक ि्रानाए रैदा कर ं ं ्ी ोरे्ईं ा व ै ोर्ीार ें स्रिाब े न्सक्े ि्वि रहे हैं। 'पत़व उेाल' ेी रही वन्ि अ ैन्र्ीिा े ्त ें अठखेन्लया ेर रहव हैं। अतयाय ेी ्त ें ईं ा ेो ईध र् ाया ीा रहा है। दायिया ां ां ां ेा दायिें घट रहा है। े्ल-ेदायि ेी ेररयों से न्रर्स वयिा ेो घायल न्ेया ीा रहा है। ऐसव रासदायि ु ु ां न्स्ि्न्ि से ें ग ै न्लए तिीं र्द्ध ेी न्शक्षाओ ेो अप े ्ि्र ें ला ा ्ी भव ु ु ां ्नये है। बशि धम ष के विषय म प्रायः एक ्ावत लोतों के मन म यह रहतव ह ै वक यह मार एक धम ष ह ै ीी हम वहन्द ं ू धम ष के विररवत आध्यावत्मक ्ान प्रदान करता ह ै ीबवक ि्रास्तविकता यह ह ै वक बशि धम ष कवै ्क मानि ीवि के सामावीक, सास्कवतक, धावमकष , आवाषक एि रीनैवतक ्ेरों म लोक क्या की दव्ा दते ा ृ ं ं ह ै बशि धम ष विश्व के सर्व धमों म अरना अवद्वतवय स्ान रखता ह ै इस धम ष ने मानि लोक क्या की ि्राना को ीन्म वदया रर कावन्त का उरदके दके र सबस े रहले रचकवल के विषय म अितत कराया ं लोतों को समता-करु ा-तयार के सा रहना वसखाया बशि धम ष सखमय ीविन वबताने का मात ष प्रकस्त ु करता ह ै "महामतलसत्त" रर "कर वयमत्ते सत्त" विश्व के मानि को बन्धता के सर म आबि रखने म आी र्व ु ु ु ू ं स्म ह ै इसम सवकव्त होना, वक्र प्रवकव्त होना, विनयकवल होना, मद्राष्व होना, माता-वरता की ृ ु ु सिेा करना, रत्नव रर सन्तानों का रालन-रोष करना, अवहतकारव कमों से दर रहना, दान दने ा, रविर ू ीविन वबताना, आरवत्त-विरवत्त आने रर साहसरिकष उसका सामना करना रर विचवलत न होना, क्रोध ू रर विीय प्रासे करना रर ्माकवलता को न खोना आवद "महामतलसत्त" प्रमख बात ह ु ु ं बशि धम ष मानि को स्ितर ीविन ीवना वसखाता ह ै यहव कार ह ै वक ्रारत म ीब-ीब बशि कासकों ं का कासन हआ दके की रीनैवतक रर सास्कवतक सवमाए बढ़तव हव तर्यीं उनके समय म ्रारत कर्व ृ ं ं ररतन्त्र नहीं हआ बशि धम ष को मानने िाले म्यामर, बमाष, ाईलैण्ड, ि्वलका, ीरान कोकरया, चवन ीसै े ं ं राष्टर अरनव स्ितरता की ्रा के वलए अरने करवर के रक्त की अवतम बुँद तक सुषरष त प्रयासरत एि ू ं ं ं ं प्रयत्नकवल रहते ह र्तिन बि ने उस मानिता का सदेक वदया ीहा ीवत धमष रर सम्प्रदाय, राष्टर की ु ं ं सवमाए नहीं होतीं ं बशि धम ष का कावन्त से अटट सम्बन्ध र्व कम महत्ि ष नहीं ह ै बशि धम ष के 2557 ि्ष ष के इवतहास म ू ू ीबवक यह सम्र ष ि्रव के चताष ्रात से अवधक प्रदके म रै ल तया, कारी ि्म साध्य, तिषे करने रर ृ ू ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 100 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 र्व स्ायव रर अ्र महत्ि के कछ एक उदाहर हव वमल सक त ं ीबवक बल का प्रयोत वकया तया हो ु बशि धम ष के इवतहास का एक र्व रष्ठ ऐसा नहीं ह ै ीी रक्त रवीत हो बशि धम ष के रास के ि्वि एक हव ृ ं तलिार ह ै प्रा की तलिार रर उसका एक हव कर ह ै अ्ान यह इवतहास का साक्य ह,ै वीसका विरोध ु नहीं वकया ीा सकता बशि धम ष रर विश्व कावन्त का सम्बन्ध कायष कार का सम्बन्ध ह ै बशि धम ष के प्रिके से रि ष वल्बत, एवकया का सबसे बलिान सैवनक दके ाा ि्माष, स्याम रर कबोवडया का ू ं रिकष ालवन इवतहास बतलाता ह ै वक यहा के वनिासव अत्यन्त यि वप्रय रर वहसात्मक स्ि्रा के ो ू ु ं ं मतोल लोतों ने एक बार सर ष ऐवकया को हव नहीं ्रारत, चवन, ईरान रर अरतावनस्तान को र्व रौंद ू ं ं डाला ाा रर यरोर के दरबीिं रर र्व ि े ीा तरी े ो ीरान की सैवनक ि्राना को बशि धम ष की रिह ू ं कताव्दया र्व अर्व ररव तरह ररास्त नहीं कर सकी ह स्ि्रतः ्रारत रर चवन के अरिदों को छोडकर ू ं ं एवकया के प्रायः अन्य सब राष्टरों के लोत मलतः वहसा वप्रय ो बाद म उनम ीी कावत वप्रयता आई ि ू ं ं बशि धम ष के कावतादव उरदेकों के प्रि्रा स्िरूर हव ाव इस प्रकार बशि धम ष रर कावत का सबध ं ं ं ं

आकवस्मक न होकर अवनियाष ह ै विश्व कावत की स्ारना म बशि धम ष अतवत म योतदान देने िाला साधन ं रहा ह,ै इस समय ह ै रर आत े र्व रहते ा अरने 2557 िष ष के इवतहास म बशि धम ष ने सास्कवतक कायष वकये ह रर इस बवच उसका ी रीनैवतक ृ ं स्ान रर प्रिर्ा रहा ह ै उसकी ेाकी हमारे वलए रि ष रर रवश्वम म बशि धम ष के सास्कवतक वनष्टकषों को ृ ू ं ं समेने म सहायक होतव र्तिन बि ने धम ष की उरमा ब़ेा े से दव ह,ै वीस प्रका

Plagiarism detected: **0.05%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… + 2 resources! id: **137**

र ब़ेा ा रार होने के वलए ह,ै रक़ा कर रखने के वलए ु नहीं, उस प्रकार बि ने धमष का उरदके वदया ह ै यह ससार सातर को रार करने के वलए ह ै रक़ा कर रखने ु ं के वलए नहीं वीस प्रकार रार होने के बाद

ब़ेा े की आिश्यकता नहीं रहतव, उसे छो़ा दते े ह उसव प्रकार धम ष की वस्ावत ह ै ररन्त ीब हम तक समि के इस रार ह या उसे उतरने का प्रयत्न कर रह े ह धम ष रूरव ब़ेा े ु ु की हम अवनियाष आिश्यकता ह ै रर वकसव प्रकार छो़ा नहीं सकते बशि धम ष का स्िरूर व्यिहाकरक ह,ै इस बात रर ीर हम र्तिन बि के उन क्दों म वमलता ह ै ी ु उन्होंने अरनव मशसव महाप्रीारवत तशतमव से कह े ो "तशतमव, वीन धमों के बारे म त वनश्चयरिकष ीान ू ू सके वक ये वनष्टकामता के वलए ह,ै कामनाओ की ि्वि के वलए नहीं, विरात के वलए ह रात के वलए नहीं, ृ ं एकात के वलए ह, व़ा के वलए नहीं, उद्यम के वलए ह , प्रमोद के वलए नहीं, अच्छाई म प्रसन्नता प्रासे ं करने के वलए ह, बराई म प्रसन्नता प्रासे करने के वलए नहीं तो तशतमव ! उन ऐसे धमों के विषय म त ु ू वनश्चयरिकष ीानना ह ै वक यहव धम ष ह,ै यह विनय ह,ै यहव कास्ता का सदके ह ै " यहव बि का िचन ह ै ू ु ं ताातत द्वारा अनमवत प्रदान करने रर वसह सेनारवत ने कहा-कास्ता ! म एक यिेा ह रर रीा के वनयमों ू ु ं ं को लात करने रर उसके वलए यि ल़ा ने को वनयक्त वकया तया ह ुँ क्या असवम दयालता रर दवखयों ू ू ु ु ु ु के सा सहानर्वत वसखाने िाले ताातत अरराधव को दड दने े की अनमवत दत ?े रर क्या ताातत यह ु ू ु ं कहत े वक कटब, रवत्नयों, बच्चों रर सरवत्त की ा के वलए यि करना अनवचत ह ै ? क्या ताातत ु ु ु ु ं ं आत्म समरष का वसिात वसखाय ते, वीससे म दराचारव की मनमानव को सह रर मरे े अवधकारों को बल ू ं ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 101 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 प्रयोत से छवन लेने िाले के सम्मख ेक ीुँ ? क्या ताातत यह मानते ह वक सर्व सुषष, र्लें हव ि े ु ं ु वकसव उवचत उद्दश्े य के वलए हो वनवषि ह ै ? बि ने उत्तर वदया ी दण्ड के योग्य ह,ै उसे दड वदया ीाना चावहए रर ी करा के रार ह,ै उस रर करा ृ ृ ु ं की ीानव चावहए वकन्त इसके सा हव ताातत वकसव ीवि को चोट न रहचाने रर प्रेम, करू ा मरै व से ु ं रकरर ष होने का उरदके दते े ह ये आदके अतविरष ोधव नहीं ह,ै क्योंवक अरराध करने के वलए दण्ड का ू ं ंरातवदार मनष्टय न्यायाधवक के द्वषे के कार नहीं, बव्क अरने दराचर के कार दण्ड राता ह ै वनयमों ु ु को वनष्टरावदत करने िाला उसे ी ्वत रहचाता ह ै उसका कार स्िय अरराधव के दष्टकम ष हव ह रर ं ं ु र्तिन बि ने कहा 'ताातत यह नहीं वसखाता वक कावत को बनाये रखने के सर्व सि्र प्रयासों म ु ं ं विरल रहने के बाद न्यायसतत उद्दश्यों के वलए यि करने िाले वनन्दनवय ह वकन्त ी यि का कार रैदा ु ु ु ं करता ह,ै ि्ह अिश्य दोषव ह ै 'ताातत आत्म का र ष समरष करना अिश्य वसखाता ह ै वकन्त ि्ह बरव ू ु ु कवक्तयों के सम्मख चाह े ि े मनष्टय हो, दि ता हो या प्राकवतक तत्ि, वकसव र्व िस्त का समरष करने की ृ ु ु ु वक्ा नहीं दते ा सुष ष तो रहते ा, क्योंवक ररा ीविन वकसव न वकसव तरह का सुष ष हव ह ै वकन्त सुष ष ू ु ं ं ं करने िाले को यह दखे ना होता वक कहीं ि्ह सत्य रर सदाचार के विरूि आत्म का सुष ष तो नहीं कर ं रहा ह ै ' ी आत्म वहत म सुष ष करता ह ै वीससे वक स्िय कवक्तकालव, महान, धनव या व्यात हो सके , ं ं ि्ह कोई ररस्कार नहीं राता वकन्त ी सत्य रर सदाचार के र् म सुष ष करेता, ि्ह ि्ष्ठे ररस्कार प्रासे ु ु ु ं करेता क्योंवक उसकी ररीय र्व एक विीय होतव वकन्त ह े वसह ! यवद ि्ह स्िय को उदार बनाता ह ै ु ं ं रर अरने हृदय की सारव ु ा को बेाकर अरने रद, वदल कर को उठाकर यह कहता ह ै वक 'आओ, ृ ु ु अब समेशता कर हम बध बन ीाय ', तो ि्ह ऐसव विीय प्रासे करता ह ै ी अस्ायव सरलता नहीं अवरत ु ु ं वीसके रल हमके ा विद्यमान रहत े 'ह े वसह! एक सरल सेनारवत महान ह,ै वकन्त वीसने अरने को ीवत ु ं वलया ह,ै ि्ह ंिसष ेष्ठ विीते ा ह ै ' ि्ह विीय ी रवछे दख छो़ा ीाये उसे विीय नहीं कहते, विीय उसे ु कहते ह वक कोई ररावीत न हो बि ने कहा वर्खओ ससार ील रहा ह ै कोई तष्ट ा से, रात से, द्वषे से, सम्प्रदाय स,े ीवत-रावत से, बार- ृ ु ु ं ं बेटा से, रत्नव रर रवत से, मा-बेटा से, ि्हा ि्हा से ्वरय-वरय से, ि्श्ै यि-श्ै य से, एक रीा दसरे ं ू रीा से सब थिरत ह, बैर-बैर से कान्त नहीं होता, बैर कावन्त से कान्त होता ह ै ु बशि धम ष मन से कावत का सचार करके उसका बाहर प्रसार करना चाहता ह ै इस प्रकार उसका अन्दर से ं ं करू होकर बाहर रै लता ह ै रीनैवतक स्तर रर बशि धम ष वकसव र् म नहीं ग़ ता ह ै उसके रास मरै व का ु हव सबसे ब़ा ा बल है, ी तटस्ा ह ै रर सम्र ष विश्व को अरने म समटे े हए ह ै बि ने अरने अनयावययों ू ु ु से कहा वक उन्ह उनके काम को स्िवकार करना चावहए, ररन्त उसके ीविन को आदक ष नहीं मानना ु चावहए स्ितरता, बन्धत्ि, समता, विकास, वक्ा रर अवधकार एि राष्टरवयता ि्हा ि्ाद की तत चार दविारों ु ं ं ं के अन्दर बन्द नहीं वकया ी सकता कमल कीच़ा म रैदा होता ह ै कमल से प्रेम करो, कीच़ा से नहीं करहराद (सहवीयान) द्वारा की तई आलोचना का स्मर हो आता ह ै उदाहर दवे खए- उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 102 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वनलषी लोत सम्रन्न बन ीाते ह िकरट लोत उच्च अवधकारव बन ीाते ह छोटे-मोटे चोरों को ु काशिास म डाल वदया ीाता ह,ै वकन्त ब़ा े डाक सामत स्िमव बन ीाते ह रर इन्हीं सामतों के द्वार रर ु ू ं ं आरको-धम ष रराय विद्वान' नीर आय त े बशि सग्रह, रालव (थ्रिाद्वन) धम्मरद राठ का राचि रद (423 छदों) म कहा तया ह:ै ं ं ं ं "ु ा को नररत द्वारा कर्व सतस नहीं वकया ीाता ह ै ु ा के िल प्रेम द्वारा सतस ह ै यह एक अनन्त ृ ृ ु ु ं ं कानन ह ै " ू 8 िीं कताद्व म महायान म बहत यादा एक हव बात कहीं ह: "नररत के समान कोई बराई नहीं ह,ै रर धैय ष के समान कोई आध्यावत्मक अभ्यास नहीं ह ै इसवलए, ु बहत से प्रयासों के सा, विवर्न्न तरवकों से धैयष को विकवसत करना चावहए " - (छ: 6, कविता 2) बि की वक्ाओ को बि

के क्दों से सबसे अच्छा स्ेर वकया ीा सकता ह:ै ु ु ं ं तलत काम करने से बच , अच्छा करो रर मन को कि कर , यह बिों की वक्ा ह ै "धम्मरद 183 ु ु बशि रकरप्रेक्य से, ीविन का सहव रहल उसके वनरतर प्रिाह म राया ीाता ह,ै वीस तरह से अनिर् ू ु ं आतकरक प्रिवत्तयों रर बाहरव रकरवस्ावतयों के बवच ररस्रर वक्रया द्वारा उत्रन्न होते ह दसरे क्दों म, ीा ृ ं ू हम अच्छे रर बरे के रूर म अनिर् करते ह िह तय नहीं होता ह,ै बव्क हमारे ष्वसको रर प्रवतवक्रया ु ु रर वनर्रष करता ह ै अच्छे रर बरे सस्ााए अरकरितषनवय नहीं ह: िास्ति म , इसम बराई के अदर अच्छा ु ु ं ं ं ह,ै रर बराई म िह अच्छा ह ै ु मनष्टय वीन द:खों से रवव़ा त ह,ै उनम बहत ब़ा ा वहस्सा ऐसे द:खों का ह,ै वीन्ह मनष्टय ने अरने अ्ान, ु ु ु ु ग़लत ्ान या वम्या ष्वसयों से रैदा कर वलया ह उन द:खों का प्रहा अरने सहव ्ान द्वारा हव सम्ि ह,ै ु वकसव के आकविषद या िरदान से उन्ह दर नहीं वकया ीा सकता सत्य या याााषता का ्ान हव सम्यक ू ्ान ह ै अत: सत्य की खोी द:खमो के वलए ररमाश्यक ह ै खोी अ्ात सत्य की हव की ीा सकतव ु ह ै यवद सत्य वकसव कास्त्र, आतम या उरदके क द्वारा ्ात हो तया ह ै तो उसकी खोी नहीं अत: बि ने ु अरने रिष ती लोतों द्वारा या ररम्रा द्वारा बताए सत्य को नकार वदया रर अरने वलए नए वसरे से उसकी ू खोी की बि स्िय कहीं प्रवतबि नहीं हए रर न तो अरने वकष्टयों को उन्होंने कहीं बाधा उन्होंने कहा ु ं ं वक मरे व बात को वं इसवलए चरचार न मान लो वक उसे बि ने कहव ह ै उस रर वं सन्दहे करो रर ु ु विविध ररव्ाओ द्वारा उसकी ररव्ा करो ीविन की कसशटव रर उन्ह ररखो, अरने अनिर्ों से वमलान ु ं करो, यवद तम्ह सहव ीान श़ा े तो स्िवकार करो, अन्याा छो़ा दो यहव कार ाा वक उनका धम ष ु रहस्याडम्बरों से मक्त, मानिवय सिदे नाओ से ओतप्रोत एि हृदय को सवधे स्रक ष करता ाा ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 103 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.5.1 ोरौद्ध धें ब ोी न्शक्षा ोी सानबभौन्ें ि शान्ि े सदायिभब ें ां ां ें ा न-सें ि-र्तिन बि के अनसार धावमकष रर आध्यावत्मक ्ेर म सर्व स्तव एि ररुषों म समान ु ु ु ं योग्यता एि अवधकार ह इतना हव नहीं, वक्ा, वचवकत्सा रर ीाविवका के ्ेर म वं ि समानता के ं धर ो उनके अनसार एक मानि का दसरे मानि के साा व्यिहार मानिता के आधार रर होना ु ू चावहए, न वक ीावत, ि ष, वलङ्त आवद के आधार रर क्योंवक सर्व प्रा व समानरूर से द:खव ह, अत: ु सब समान ह द:ख प्रहा हव उनके धम ष का प्रयोीन ह ै अत: सिदे ना रर सहानर्वत हव इस समता के ु ू ं ु आधारर्त तत्ति ह उन्होंने कहा वक ीसै े सर्व नवदयाुँ समि म वमलकर अरना नाम, रूर रर विकषे ताए ू ु ं खो दते व ह, उसव प्रकार मानिमार उनके सु म प्रविस होकर ीावत, ि ष आवद विकेषताओ को खो दते े ह ं ं रर समान हो ीाते ह वनिाष हव उनके धमष का एकमार रस ह ै ें ा नश्रेष्ठिा - बि के अनसार मानिीन्म अत्यन्त दलषर् ह ै मनष्टय म िह बवी वनवहत ह,ै वीसकी िीह ु ु ु ु से यवद िह चाह े तो अभ्यदय एि वन:ियस अाषत वनिाष रर बित्ि ीसै े ररम ररुषााष वं वसि कर ु ु ु ं सकता ह ै दि ता िष्ठ नहीं ह, क्योंवक ि े व्यारक तष्ट ा के ्ेर के बाहर नहीं ह अत: मनष्टय उनका दास ृ ु नहीं ह,ै अवरत उनके उिार का ्रार वं मनष्टय के ँरर हव ह इसववलए उन्होंने कहा वक व्र्ओ, बहीन ु ु ं ु के वहत रर सख के वलए ताा दि रर मनष्टयों के क्के वलए लोक म विचर करो ऋवषरतन ु ु मतदिा (सारनाा) म अरने प्राम िषाषिास के अनन्तर व्र्ओ को उनका यह उरदके मानिवय स्ितन्त्रता ृ ं ु रर मानिष्ठिता का अप्रवतम उदषोष ह ै व्यानहाररिा - बि की वक्ा अत्यन्त व्यिाहाकरक ाव उसम वकसव वं तरह के रहस्यों रर ु आडम्बरों के वलए कोई स्ाान न ाा उनका वचन्तन प्राव यों के व्यारक द:खों के कार की खोी से ं ु प्रारम्भ होता ह,ै न वक वकसव अत्यन्त वनतढ, तहाप्रविस तत्ति की खोी स े ि े यिीविन द:खों के ू ु ु अत्यन्त वनरोध का उराय हव बताते रह े उन्होंने ऐसे प्रश्नों का उत्तर दने े से इन्कार कर वदया रर उन्ह अव्याकर वय (अव्याेय) करार वदया, वीनके द्वारा यह रछा ीाता ाा वक यह लोक काश्वत ह ै वक ू अकाश्वत; यह लोक अनन्त ह ै वक सान्त अिा ताातत मर के रश्चात होते ह या नहीं- इत्यावद उनका कहना ाा वक ऐसे प्रश्न रर उनका उत्तर न अाषसवहत ह ै रर न धमसष वहत ं ं अरने सख-द:खों के वलए प्रा व स्िय हव उत्तरदायव ह अरने अ्ान रर वम्याष्वसयों से हव उन्होंने स्िय ु ं ं ु अरने वलए द:खों का उत्राद वकया ह,ै अत: कोई दसरव कवक्त ईश्वर या महश्वे र उन्ह मक्त नहीं कर सकता ु ु ू इसके वलए उन्ह स्िय प्रयास करना होता वकसव के िरदान या करा से द:खमवक्त असम्ि ह ै कोई ृ ु ं ु महाररुष, वीसने अरने द:खों का प्रहा कर वलया हो, अरने अनिर् के आधार रर द:खमवक्त का मातष ु ु ु ु ु अिश्य बता सकता ह,ै वकन्त उसकी बातों की ररव्ा कर, सहव प्रतवत होने रर उस मात ष रर प्रा व को ु स्िय चलना होता इस कमष वसिान्त के द्वारा मानि-स्ितन्त्रता रर आत्म-उत्तरदावयत्ि का विवकस बोध ं प्रवतरवलत होता ह ै यह ्रारतवय सस्कवत म बशिों का अनरम योतदान ह ै ृ ु ं ्िररे शान्ि - खशव ेा नास्िन्ने स्रिो -बशि धम ष लोतों को वसखाता ह ै वक खकव का िास्तविक ु ु ां ां ोत आतकरक कावत ह ै अतर हमारा वदमात कावतर ष ह,ै तो हम बाहरव रकरवस्ावतयों के बिीद हर समय ू ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 104 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 खक रहत े, लेवकन अतर यह वकसव वं तरह से ररेकान या ररेकान ह,ै तो हम कर्व वं खक नहीं रहत ,े र्ले ु ु हव हमारव बाहरव वस्ावत वकतनव अच्छव न हो यवद हमारे मन कावतर ष ह ै तो बाहरव रकरवस्ावतया हम खक ू ु ं ं कर सकतव ह हम इसे अरने अनिर् के माध्यम से समे सकते ह उदाहर के वलए, यहा तक वक अतर ु ं हम सबसे खबसरत रकरिक म ह रर ी कछ वं हम ज़रूरत ह,ै तब वं ीब हम तस्सा आते ह, हम ू ू ु ु वकसव वं खकव से तायब हो ीाते ह इसका कार यह ह ै वक क्रोध ने हमारे आतकरक कावत को नस कर ु ं ं वदया ह ै ध्या - ें ेा न् यन्त्रि ेर े ेी न्नन्ध -बशि धम ष वसखाता ह ै वक ध्यान ऐसव विवध ह ै वीसके द्वारा ां लोत आतकरक कावत प्रासे कर सकते ह ध्यान हमारे मन को ि्रानाओ रर ि्रानाओ से प्रासे करने के ं ं ं ं वलए एक तरवका ह ै ी कावत रर सख के वलए अनकल ह ै ीब हमारा मन कावतर ष होता ह ै हम वचता ु ु ू ू ं ं ं रर मानवसक ररेकानव से होते ह, रर हम सच्चव खकव का अनिर् करते ह ु ु न् ष्टेषब यवद कोई अन्य व्यवक्तयों रर दवनया के साा सर्व कावतर ,ष सशम्य रर ररस्रर व्यिहार करने का ू ं ु रै सला कर सकता ह,ै तो हम सर्व को कावत की सस्कवत का आनद लेना चावहए वरर वं, ऐसव सस्कवत ृ ृ ं ं ं ं ं को प्रासे करना आसान नहीं ह ै करन े के वलए प्रयास, समाधान, धैयष, सहयोत रर अभ्यास की आिश्यकता ह ै ध्यान बशि धम ष का बहत वदल ह,ै बशि (रर अन्य) को स्िय को रर साा हव दसरों के ं ू प्रवत हमारे विवर्न्न

रिाषग्रहों की उत्रवत्त म तहराई से दखे ने के वलए अरने ध्यान विवधयों का लार् उठाना ू चावहए - रर उन्ह बदलने के वलए हम अरना मन बदल सकते ह ; हम अरने विचार बदल सकते ह ; हम अरने आर को रर अवधक कावतर ष बना सकते ह रर, रकर ामस्िरूर, हम दवनया म कावत रैदा करने ू ं ं ु म मदद कर सकते ह ार्रत म , "कावत" के बराबर

Quotes detected: **0%** id: **138**

"कावत"

ह,ै वीसका अाष ह ै आतकरक कावत की अिस्ाा इसका अाष र्व ं ं ं ं काकमनव द्वारा प्रासे प्रबि वस्ावत को कर्व-कर्व

Quotes detected: **0%** id: **139**

"वनिाष "

कहा ीाता ह ै मन की कावत के सबध म बशि ु ु ं ं ं राठ इस प्रकार िव तष ह:ै

Quotes detected: **0.02%** id: **140**

"मन की कावत सरलतारिकष लालच, ु ा रर अ्ान को रार करने से आतव ृ ू ं ह ै "

ीसै ा वक इस मात ष से स्रस हो ीाता ह,ै कावत के वलए बशि ष्वसको इन ्ामक ओितों या आतकरक ं ं ीहरों को उबारने के मशवलक कायष से करू होता ह ै इन आिते ों को वनयर म लाने की वस्ावत, हालावक, ु ं ं स्ौवतक रर वनीव आतकरक कावत नहीं ह ै इसके बीाय, यह स्िि्रा म तवतकवल, विकाल रर ं ं विकासिादव ह ै बशि धम ष का कावतर ष योतदान म्य रूर से ररे मानि समी म बहत दख रर विनाक का कार ह,ै ी ू ु ू ं ु आतकिादव आिते ों के वखलार सुष ष म राया ीाता ह,ै ी व्यवक्त के र्वतर की वीदतव की तहराई म ं ं ं वनवहत ह ै कक्यामनव के लोटस सर म, ्वमत आिते ों के द्वारा लाया ीाने िाला विनाककारव प्रि्रा को ु ू

Quotes detected: **0%** id: **141**

"अकिता"

के रूर म िव तष वकया तया ह ै रर राच चर ों म ितीकत वकया तया ह,ै ी र्वतर रर ृ ु ं सबसे अवधक व्यवक्ततत ह,ै ी ररे यत या यत का दात करता ह ै ये ह: इच्छाओ, सोचा, लोतों की, खद ू ु ु ु ं की रर आय की अकिता ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 105 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वहसा आमतशर रर रकरिारों म , स्कलों रर स्ानवय समदायों म वमलतव ह ै तहरव ु ा ी दर के ृ ू ु ं ू ऐवतहावसक ुटनाओ के रवछे रेस करते ह, िह अनवचत ीातवय रर नस्लवय सुषों को ीन्म दते े ह कछ ु ु ं ं मामलों म , इस तरह की ऐवतहावसक ु ा धावमकष कार ों या रहचान से ी़ा व होतव ह,ै रर आतक रर ृ ु ं याष्वच्छक हत्या म अवर्व्यवक्त रातव ह ै अभ्यास रश्न 4. बशि धम ष के अनसार विश्व कावत के वलए क्या आिश्यक हवै ु ं 5. कावत के सदर्ष म बशि धम ष के उराय सचवबि कर ? ू ं ं 2.6 जै धम य ी धें ब ार्रत का एक प्राचवन दकनष ह ै वीसे आम ाषा म धम ष कह वदया ीाता ह ै 'ीनै धम'ष का अाष ह ै - 'वीन द्वारा प्ररूवरत धम'ष ी 'वीनेश्वर' के अनयायव हों उन्ह ीनै कहते ह ै ताा 'वीन' या 'वीनेश्वर' क्द ु 'वी' धात से बना ह ै वीसका अाष ीवतने िाला होता ह ै अाषत वीन्होंने अरने मन को ीवत वलया,अरनव ु ि व को ीवत वलया रर अरनव काया को ीवत वलया, रर विवकस ्ान को राकर स्िष या र ्ष ान ू प्रासे वकया उन आसे ररुष को वीनेश्वर या वीन कहते ह ै ! वीनेश्वर के द्वारा प्रवतरावदत होने से व्यिहार ु ार्षा म ीनै धम ष कहा ीाता ह!ै अवहसा ीनै धम ष का मल वसिान्त ह!ै ीनै दकनष म सवसकताष ईश्वर को ृ ू ं स्ान नहीं वदया तया ह ै क्योंवक ीनै दकनष अनवश्वरिादव ह ै लेवकन नावस्तक नहव ह ै ... ीनै दकनष अरने हव रीिष ों म विवकस ्ान के धारक स्िष (अकरहत या तवीकर) के ि्लानव आसे ररुषो को ईश्वर ू ु ं त्य मानता ह ै ताा उन्हव के मवदर आवद का वनमाष करिाकर उन्ह रीा ीाता ह ै ु ू ं 2.6.1 भतना ें हानवर ेा पररिय ें हानवर ीनै धम ष म ितषमान अिसवरष व काल के चौंबवसि ि२ि) तवीकर ह ै र्तिन महिावर का ीन्म करवब ढाई हीर साल रहले िईसा से 599 िष ष रि)ष ् िकै ालव के त तर राय ्वरय कण्डलरर म हआ ू ु ु ं ाा महिावर को 'िधषमान'् ि्वर'् 'अवतिवर' रर 'सन्मवत' र्व कहा ीाता ह ै तवस िष ष की आय म तह त्यात करके ् उन्होंन े एक लुँतोटव तक का रकरग्रह नहीं रखा प्र् महिावर ृ ु ु प्रारवर्क तवस िष ष रीसव ि्रै ि ए विलास के दलदल म 'कमल' के समान रह े मध्य के बारह िष ष ं ं ुनोर ीतल म मतल साधना रर आत्म ीातवत की आराधना म , बाद के तवस िष ष न के िल ीनै ीतत ृ ं ं या मानि समदाय के वलए अवरत प्रा व मार के क्या ए मवक्त मात ष की प्रकवस्त म व्यतवत हए ु ु ु ं वहसा् रकबवल् ीात-रात का र्दे -ि्रा वीस यत म बढ़ तया् उसव यत म र्तिन महिावर का ीन्म ु ु ु ं हआ उन्होंने दवनया को सत्य् अवहसा का राठ रढ़ाया तवीकर महिावर स्िामव ने अवहसा को सबस े ं ं ु उच्चतम नैवतक त बताया उन्होंने दवनया को ीनै धम ष के रचकवल वसिात बताए् ी ह-ै ु ं ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 106 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अवहसा् सत्य् अरकरग्रह् अचशयष िअस्तेय) रर ि्रह्मचयष सर्व ीनै मवन् आवयषका्ि्रिक् ि्रिविका को ु ं इन रचकवल त ों का रालन करना अवनियष ह ै महिावर ने अरने उरदके ों रर प्रिचनों के माध्यम से ु ं दवनया को सहव राह वदखाई रर मातदष कनष वकया ु ीनक्या हते उन्होंने चार तवों साध-साध्ि्रवि्रिक-ि्रिविका की रचना की इन स्िदयव तवों म ्ेर, ु ु काल, समय या ीावत की सवमाए ुँ नहीं ीं र्तिन महिावर का आत्म धम ष ीतत की प्रत्येक आत्मा के वलए समान ाा दवनया की सर्व आत्मा एक-सव ह इसवलए हम दसरों के प्रवत िहव विचार ए व्यिहार ं ु ू रख ी हम स्िय को रसद हो यहव महिावर का 'ीवयो रर ीवने दो' का वसिात ह ै ं ं ं

परस्परोग्रहो ीवना ों ' ोे ें ल ें र ें ा े नाले ी धें ब एन दायिशब े सानबभौन्ें े एन ू ां ां ां सनबेान्ले सत्य न्सद्धिों े न्नति सहस्रों नषों ें न्नश्शान्ि ें अ तय योतदायिा न्दायिया है ि ां ां निबें ा न्नर्श् ेी ज्ञलि सें स्याओ ेो भव ी ीवन ें ल्यों े द्वारा हल न्ेया ीा सिा है। ू ां ां ी धें ब े अन्ि िविबेर ें हानवर स्रों व े अन्हसे एन अ ि ेी ीी सक्ष्ें न्नि ा ेी, ू ां ां ां ां उसेा सम्पप ब ें ा निा पर तहरा रश्भान प़ा। ें हों ा न ें हात्ें ा ताँधव े ी दायिशब ेो ू ्त्ें सिा ेरे अन्हसे ेा ऐे ऐसा रश्ायोन्ते रूप रश्स्ि न्ेया न्ीससे परव दायिन् या े ु ू ां ु परिरिा े र्ध ि़ो। नस्ि: 'ताधव' े परे ीवन एन न्निारों ें ी न्सद्धातिों े साक्षिा ु ू ां ां ां ां दायिशब हिो हैं ि

Quotes detected: **0%** id: **142**

'ताधवनादायि'

्ी न्नर्श् ेी सर्से सशग, न्निारधारा ें ा व ीा े लतव है। अतर ां हें दायिसरे े पक्ष ेो उसव े दृन्ष्टी से दायिख े ेी ोन्शश ेर ि ेटिा और ्िनादायि दायिर ु ां ू ू हो सिा है न्ीसे न्लये ्नये

Quotes detected: **0%** id: **143**

'ें ाध्यस्ि भान'

ी दायिशब हव न्सखा सिा है। सभव ीवनों पर दायिया एन शोाहार ेर े ें ार से खाद्यात सें स्या, ील सें स्या, ग्लोर्ल नाबें त इत्यान्दायि ेो ां ां सें ल ष्ट न्ेया ीा सिा है। यह अन्हसे ोई ेोरव दायिशबन् े अनधार ा ें ार हीं है न्ल् ू ां इसे रश्ि नैज्ञान् े थ्य रश्ों ान् े रूप से उपलब्ध हैं ु 2.6.2 भतना ें हानवर न्शक्षा कै ि्य प्रावसे के रश्चात महिावर ने अरने वसितों का प्रचार प्रारर् वकया ीनै धम ष के प्रमख वसिान्त ु ं ं वनम्नवलवखत ह: - □ वनिवत्तमात ष ृ □ ईश्वर □ सवस ृ □ कमष □ वररत्न □ ्ान □ स्यादिाद या अनेकातिाद या ससेर्तव का वसिान्त ं ं □ अनेकात्मिाद उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 107 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ वनिाष □ कायाक्लेक □ नम्रता □ रचमहाव्रत ं □ रच अ व्रत ु ं □ अठारह रार सिा ित्त ीनै ग्रों म सात तत्त्िों का ि षन वमलता ह यह ह - ं 1. ीवि- ीनै दकनष म आत्मा के वलए

Quotes detected: **0%** id: **144**

"ीवि"

क्द का प्रयोत वकया तया ह आत्मा ि्य ीा [5] चैतन्यस्िरुर ह ै 2. ीवि- ी़ा या की अचेतन ि्य को ीवि (रद्गल) कहा ीाता ह ै ु 3. आिो - रद्गल कर्मों का आिो करना ु 4. बन्ध- आत्मा से कम ष बन्धना 5. सिर- कम ष बन्ध को रोकना ं 6. वनीरष ा- कर्मों को ्य करना 7. मो् - ीविन ि मर के चक्र से मवक्त को मो् कहते ह ु ौ पदाियिाब ीनै धम ष ने मो् को प्रासे करन े के तरवकों की र्व सलाह दव ह ै इस सदर् ष म नश तात्यिों का एक उ्लेख ं ह ै ये नश वसित कम ष के वसित से ी़ा े हए ह, ि े

Quotes detected: **0.01%** id: **145**

"ीवि, ीविन, रण्य, रार, आश्र्ि, बाधा, समर, वनीरष ा ु ु ं ं ं रर मो्"

ह ीनै ग्रों के अनसार ीवि रर ीवि, यह दो म्य रदााष ह आिो, बन्ध, सिर, ु ु ं ं वनीरष ा, मो्, रण्य, रार ीवि ि्य के र्दे ह ु ेह द्रव्य ीनै धम ष के अनसार लोक ६ ि्यों (substance) से बना ह ै यह ६ ि्य काश्वत ह अाषत इनको बनाया ु या वमटाया नहीं ी सकता यह ह ै ीवि, रद्गल, धम,ष अधमष, आकाक रर काल ु पिं हाव्रि ां सत्य, अवहसा, अस्तेय, अरकरग्रह ताा ि्मचयष- ि े राच महाव्रत ह, वीनका विधान व्रओ के रालनााष ं ं ं ु वकया तया इनका ि्विर वनम्नवलवखत ह:ै i. सत्य: वहत, वमत, वप्रय िचन बोलना सत्य के बारे म र्तिन महिावर स्िामव कहते ह , ह े ररुष! ु त सत्य को हव सच्चा तत्ि समे ी बविमान सत्य की हव आ्ा म रहता ह,ै िह मत्य को ृ ू ु ु तैरकर रार कर ीाता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 108 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ii. अन्हसा: वकसव र्व ीवि को मन, िचन, काय से रव्ा ा नहीं रहचुँ ाना वकसव ीवि के प्रा ों का ां ुात नहीं करना अवहसा यह ीनै धम ष का प्रमख वसित ह,ै वीसम सर्व प्रकार की अवहसा के ु ं ं ं रालन रर बल वदया तया ह ै अवहसा के र ष रालन के वलए वनम्नवलवखत आचारों का वनदकदेश ू ं हआ ह- ;रि इयाष सवमवत - सयम से चलना तावक मात ष म कीट-रततों के कचलने से कोई वहसा ु ं ं ं न हो ीाए ;ररि ाषा सवमवत: सयम से बोलना तावक कट िचन से वकसव को कस न रहचे ु ं ं ;ररि एष ा सवमवत: सयम से ीन ग्रह करना, वीससे वकसव प्रकार र्व की़ा े-मको़ा ों की ं हत्या न हो सके ;रआि आदान-वन्ेर सवमवत- वकसव िस्त को उठाने ताा रखने के समय ु विकेष सिाधानव बरतना वीससे ीवि की हत्या न हो ीाए iii. अस्ि्य: अस्ि्य का काव्दक अाष ह ै - चोरव न करना ीनै धमष म यह एक त माना ीाता ु ह ै योत के सन्दर् ष म अस्तेय, रुँच यमों म से एक ह ै अस्तेय का व्यारक अाष ह ै - चोरव न करना ताा मन, िचन रर कम ष से वकसव दसरे की सम्रवत्त को चराने की इच्छा न करना ु ू iv. अपररग्रह: रकरग्रह रर र्तिन महिावर कहते ह ी आदमव खद सीवि या वनीी चवीं का ु सग्रह करता ह,ै दसरों से ऐसा सग्रह कराता ह ै या दसरों को ऐसा सग्रह करने की सम्मवत दते ा ह,ै ं ं ं ं ू ू उसको दःखों से कर्व छटकारा नहीं वमल सकता यहव सदके अरकरग्रह का माध्यम से र्तिन ु ं ु महिावर दवनया को दने ा चाहते ह ु v. ब्रह्मियब: महिावर स्िामव ि्मचयष के बारे म अरने बहत हव अम्य उरदके दते े ह वक ि्मचय ष ू उत्तम तरस्या, वनयम, ्ान, दकनष , चाकरर, सयम रर विनय की ी़ा ह ै तरस्या म ि्मचयष ि्ष्ठ ं तरस्या ह ै ी ररुष वस्त्रयों से सबध नहीं रखते, ि े मो् मात ष की ओर बढ़ते ह ु ं ं अभ्यास रश्न 6. ीनै धम ष का मल वसिान्त क्या हवै ू 7. ीनै धम ष के महाव्रत क्या ह?ै 2.7 िक्त् त के स्बध म जै धम के क्तवनाचार ् ें य र्तिन

महिावर ने अरने प्रिचनों म धमष, सत्य, अवहसा, िह्मचयष रर अरकरग्रह, ्मा रर सबसे अवधक ं ीीर वदया त्यात रर सयम, प्रेम रर करु ा, कवल रर सदाचार हव उनके प्रिचनों का सार ाा र्तिन ं महिावर ने चतविधष सु की स्ारना की दके के वर्न्न-वर्न्न ्रातों म ुमकर र्तिन महिावर ने अरना ु ू ं रविर सदके रै लाया आत्म-अनकासन रर तरतर ीनै धम ष का म्य रूर ह ै ु ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 109 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ीनै प्रतवक वचह्न कई मल ि्रानाओ को अरने म समावहत करता ह ै वचह्न के वनचले ू ं ्रात म प्रदवकषत हाा अर्य का प्रतवक ह ै रर लोक के सर्व ीविों के प्रवत अवहसा का ं ि्रा रखने का प्रतवक ह ै हाा के बवच म २४ आरों िाला चक्र चशबवस तवीकरों द्वारा प्र वत वीन धम ष को दकाषता ह,ै वीसका मल ि्रा अवहसा ह ै धमचष क्र, ीी सच्चाई रर ू ं अवहसा के वनरतर रवछा के माध्यम से आसा (स्ालातर) को रोकने के सक्र के ं ं ं ं वलए ख़ा ा ह ै ीनै तवीकर द्वारा उरदके रर अभ्यास के रूर म अवहसा, कावत, तरवबव रर मानिता के ं ं सामने आने िाले प्रदष की समस्याओ का एकमार उत्तर ह ै तरै वहसा (अवहसा) रर सवहष्ट ता ीनै धमष ु ं ं ं ू के 2 बहत महत्ि र ष वसिात ह ू ं ितषमान अकात, आतकी, ्स रर वहसक ितिार म महिावर की अवहसा हव कावत प्रदान कर ं ं ं ं ं सकतव ह ै महिावर की अवहसा के िल सवधे िध को हव वहसा नहीं मानतव ह,ै अवरत मन म वकसव के प्रवत ु ं ं बरा विचार र्व वहसा ह ै ितषमान यत म प्रचवलत नारा 'समिीाद' तब तक साषक नहीं होता ीब तक ु ु ं आवाषक विषमता रहते व एक ओर अाह रैसा, दसरव ओर अि्रा इस असमानता की खाई को के िल ू र्तिन महिावर का 'अरकरग्रह' का वसिात हव र्र सकता ह ै अरकरग्रह का वसिात कम साधनों म अवधक ं ं सतवस रर बल दते ा ह ै यह आिश्यकता से यादा रखने की सहमवत नहीं दते ा ह ै इसवलए सबको वमलेता ु ं रर र्रर वमलेता ीब अचशषष/ अस्ि्य की ि्राना का प्रचार-प्रसार रर रालन होता तो चोरव, लटमार ू ू का र्य हव नहीं होता सारे ीतत म मानवसक रर आवाषक कावत स्ावरत होतव चकरर रर सस्कार के ं ं अि्रा म सरल, सादतवर ष एि तकरमामय ीविन ीवना दर्र होता र्तिन महिावर ने हम अमत कलक ृ ू ं ू हव नहीं, उसके रसरान का मात ष र्व बताया ह ै र्तिन महिावर ीब धरतव रर अिाकरत हए ो तो ्रारतवय समी म अनेक तरह की करववतयों ु के कार लोतों का ीविन दष्टकर हो तया ाा छआछत, ँ ँ च-नवच धनव रर वनधषन के र्दे ि्रा के कार ु ु ु समी म असमानता व्यासे ाव महिावर स्ि्रामव समी के वनम्न वनधषन लोतों की रक्षा ा से द:खव ु हए उन्होंने स्ि्य रषी राट त्याता रर सन्यास लेकर तर करने वनकल श्र ा कई ि्षों के कवठन तरस्या ं मय ीविन वबताने के बाद ीी ्ान प्रासे वकया ि्ह व्याहाकरक ि समी को बदलने िाला ाा महिावर ने समी के दोषों का ि्विचे न वकया रर व्याहाकरक ताा सरल वनष्टकष ष वनकाले महिावर स्ि्रामव के य े वक्ा सदके आी की रववडत मानिता के वलए मात ष दकनष बन तये अवत तच्छ ्रोत-विलास ि सख ु ु ं ी् सविधाओ को त्यातकर उन्होंने सरल, सादा ि कतषव्यवनष्ठ ीविन ीवने की प्रेर ा दव आी से ढ़ाई हीार ु ं से र्व अवधक ि्ष ष रि ष ीनै ररम्परा के चशबवसि रर अवन्तम तवीकर र्तिन महिावर ने एक नये विश्व ू ए एक नये समी के वनमाष हते तवन महत्ि र ष सरों का प्रवतरादन वकया ाा- अवहसा, अरकरग्रह रर ु ू ू ं ं अनेकान्तिाद अन्तराषष्टरवय, राष्टरवय, सामावीक, रीनववतक ए ि्यै वक्तक स्तर रर अनेक असमानताए ं ं मशीद ह, ीसै े साम्रायिादव तलामव, अमवर-तरवब का र्द , ीिततत या नस्लतत उच-नवच, तानाकाहव, ू ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 110 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 नर-नारव की असमानता, मानिावधकारों का हनन आवद इन तरै बराबकरयों के विरू अनावद काल से सुष ष चलता आ रहा ह ै कर्व वहसा के रास्ते से रर कर्व अवहसा के रास्ते से ं ं ं वहसा का रास्ता कर्व कर्व त्ि करत सरलता दने े िाला राया तया ह ै ररन्त ि्ह स्ायव रर समाधानकारव ु ं रकरितषन का मात ष कर्व नहीं रहा स्ानवय रर सखद रकरितषन के वलए तो वहसा िालों को र्व अतत: ु ं ं अवहसा का मात ष हव अरनना श्र ता ह ै महिावर ने

Quotes detected: **0%** id: **146**

'ीवि'

की अिार ा को वीतना व्यारक विस्तार ं वदया, उतना वकसव र्व अन्य धम ष म वदखाई नहीं दते ा इस अिार ा म श्रे -रोधों को र्व समावहत कर वलया तया महिावर का मानि ीवत को सबसे ब़ा ा योतदान उनका ि्ह दकनष है, वीसम हर

Quotes detected: **0%** id: **147**

'ीवि'

की स्रा की व्यिस्ाा ह ै यहव उनका अवहसा का दकनष ह रर रयाषिर का सष्ढ़ स्रा किच र्व मनष्टय ु ु ु ु ं के वहत म प्रकवत को बचाने की बात सर्व करते ह ै रर महिावर ने प्रत्येक ीवि को बचाने की बात सोचव ृ ि्स्तत: हर ीवि को बचाने का रूर दके र महिावर ने धरतव को ि उसके रयाषिर को बचाने का दकनष ु वदया ह ै सच तो यह ह ै वक ीब तक समी म हर ीवि को बचाने की ीातवत रैदा नहीं होतव ीतलों को ृ ं बचा राना दष्टकर होता छले वदनों दवनया र्र म ीी ि्चै ाकरक खलारन आया ह ै रर उससे विश्व कावत की ु ं ु ु स्ि्राना म ीी स्ि्तत योग्य ि्वि हई ह,ै ि्ह अनेकातिाद की महत्ता को रेखावकत करतव ह ै महिावर का ृ ं ं ं वदव्यदवकत्ष ि इसम ह ै वक उनके ये वसिान्त उनके काल की तलना म आी विश्व रर मानि समी की ु रकरवस्ावतयों म अवधक हव प्रासवतक हो उठे ह यवद हम न्याय कावत, मरै व रर बधत्ि रर आधाकरत नया ु ं ं ं मानितिाादव समी रर नयव विश्व व्यिस्ाा स्ावरत करना चाहते ह तो हम तवीकर महिावर द्वारा प्रवतरावदत अवहसा , अरकरग्रह रर अनेकात के वसिान्तों को उनका आधार बनाना हव होता ररमात्मा ं ं रकरग्रह नहीं करता ि्ह अरनव आिश्यक ि्स्त रीी की रीी रैदा करता ह ै अत: यवद हमारा उस रर ु विश्वास ह,ै तो हम समेना चावहए वक ि्ह हम आिश्यक चवी रीी की रीी दते ा है, दते ा रीी के काम र्र का रीी रैदा करने के ईश्वरवय वनयमों को हम नहीं ीानते अि्ा ीानते हए र्व रालते नहीं ह ै अत: ीतत म विषमता रर उससे होने िाले द:ख ्रोतते ह यवद सब लोत अरनव आिश्यकता र्र को हव ु सग्रह कर तो वकसव को ततव न हो रर सबको सतोष रह े यवद

महिावर की इस वक्ा का कताक म र्व ं ं ं ं रालन हो तो दके वमलिाट, चोरबाीारव, मनाराखोरव, तस्करव, महताई, कोष रर आवाषक तरै बराबरव ु ं के मारक नातराक स े मक्त हो कर राहत की सास ल े सके ता रर इनके कार ीी लट खसोट, ेतडे हत्या ु ू ं रर वहसक सुषों का ेमले ा वनरन्तर चलता रहता ह,ै िह र्व समासे हो ीायेता सर्व तरह के ीविन, ं ं मानिवय या तरै -मानिवय, म करु ा ीनै धमष का क ि ह ै मानि ीविन एक अवद्वतवय, ्ान तक रहचने के ं एक दलषर् अिसर, वकसव र्व व्यवक्त की हत्या नहीं करने, इससे मतलब नहीं वक उसने क्या अरराध वकया ु ह,ै के अिसर के रूर म म्यिान ह,ै वीसे अक्रनवय ुव त माना ीाता ह ै यह एक ऐसा धम ष ह,ै वीसम ू ू अरने सर्व सप्रदायों रर रररराओ के व्रओ रर तरै -रादरव ित ष की ीरूरत होतव ह,ै उन्ह काकाहारव ं ं ं ं ु होने की आिश्यकता होतव ह ै ारत के कछ ्ेर, ीसै े तीरातव ीवै नयों से बहत प्रावि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **148**

त होते ह ै रर ु ु अक्सर रा के स्ानवय वहदओ का बहमत काकाहारव बन ीाता ह ै ं ं ं ु उत्तर

ाखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 111 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 राष्टरपन्ि डा. रीतद्र रश्सादायि के अनसार -विश्व म कावत स्ारना के वलए अरने प्रयत्नों के रकर ाम ु ं स्िरूर ारत की इस समय ीी वस्ावत ह,ै िह अवद्वतवय ह ै ारत के नेताओ ने स्ितरता की ्ला ाई म ं ं रर स्ितरता प्रावसे के बाद र्तिन महिावर के सत्य रर अवहसा प्रेम के उरदके का अनसरन वकया, ीी ु ं ं वकसव ीावत एि समदाय विकेष के वलए नहीं बव्क समस्त विश्व के वलए ाा महिावर ने सवदयों रहले ु ं अवहसा का राठ रढ़ाया महात्मा ताँुधव ने र्व ऐसे हव सन्दके वदये अब आिश्यकता उन वसध्दातों रर ं ं अमल करने की ह ै ि महिावर स्ामव ने सहस्त्रों ि ष ष रि ष का ीी उरदके वदया ाा िह आीकल की ुोर ू वस्ावतयों के सािष ा अनकल ह ै उस समय र्व विश्व रर मानि समाी आी के समान हव वहसा स े ु ू ं उत्रवव़ा त ाा स्ितरता प्रावसे के बाद आी तक ारत ने ीी तरक्की की ह ै रर ससार म उसका मान ं ं बढ़ा ह,ै िह के िल इसवलए वक ारत आी की रकरवस्ावतयों के अनकल कावन्त रर अवहसा के वसध्दात ु ू ं ं म कोई रवट ह ै हम र्व उसे अरने ीविन म ररव तरह नहीं उतार सके ह हमारे अरने दके म र्व हम ु ू अवहसा को मनष्टय तक हव सववमत रखना चाहते ह, मनष्टय की खावतर अनेक ीानिरों की वहसा करनव ़ा े ु ु ं ं तो िह ि धै समेव ीातव ह ै अवहसा की ि ा व अर्व ह्रदय के अतस्ाल तक नहीं रहचच सकी ह ै लेवकन ं ं ंु हम उसे ररव तरह समे या न समे े हों यवद हम बाहय कवक्त रर र्रोसा छो़ा कर मेल रर सद्भिाना रर ू अवधक ारोसा करने लत ीायुँ तो अवहसा का दायरा के िल मनष्टय मार तक तक सववमत न रह कर ु ं ीन्तओ ताा प्रा व मार तक बढ़ सकता ह ै वीन्होंने अरने ीविन म अवहसा को उतारने से कछ हावसल ु ु ं ं वकया ह,ै उसे ि े दसरों म र्व बाटे अवहसा स े ब़ा व कोई दसरव चवी नहीं हो सकतव इसवलये उसे यादा ं ं ू ू बाटना रर रै लाना चावहए अर्व यह त्य ससार के बहत से लोतों के वदमात म प्रिके नहीं कर सका ह ै ं ं यह वसखाने का प्रयत्न र्तिन महिावर स्ामव ने वकया ाा एक समय ऐसा आयता ीब लोत सैवनक कवक्त रर कम रर विश्व कावत स्ावरत करने के वलये मानि के बवच प्रेम, मरै व ताा सद्भिाना रर अवधक ं वनर्रष रहत े अवहसा मानि मार के वलये अत्यन्त आिश्यक हव नहीं बव्क अवनियष है, यवद मानि ं समाी को कायम रहना ह ै तो अवहसाव्रवतयों को चावहये वक ि े ितषमान यत की चनशतव स्िवकार करते हए ु ु ं अवहसा को अरने ीविन म उतार कर इस ढत से दसरों के सामने रक्ख वीससे सारा ससार उसे समे सके ं ं ं ू रर ग्रह कर सक ीनै धमषिलवम्बयों को चावहए वक उनके वीतने ग्रन्ों का आी तक प्रकाकन नहीं हो राया ह,ै उन्ह कवघ्रता रिकष रर हो सके तो सरल अनिाद या टवका के साा छरिाना चावहए तावक ू ु उन साधार उनसे लार् उठा सके प्रकाकन का कायष चल रहा ह ै रर तीव से नहीं हो रहा ह ै इसके अलाा इस बात का र्व ध्यान रखा ीाय वक प्रचार के काम म ि मै नस्य न आय रर न वकसव दसरे रर ू आ्ेर वकए ीायुँ सब को प्रेम से ीवतने की कोवकक की ीाय तर्व सरलता वमलेतव अवहसा ीनै ों की ं सम्रवत्त ह ै ीतत म अन्य वकसव र्व धम ष म अवहसा वसध्दात का प्रवतरादन इतनव सरलता से नहीं वमला ं ं 2.7.1 ी धें ब ी रश्ासन्ति / सानबभौन्ें ि ा शान्ि े सदायिभब ें ां ां ां ीनै ग्रा र्तिन महिावर एि ीनै दकनष म ीनै धम ष एि दकनष की यतवन प्रासवतकता को व्यायावयत करते ु ं ं ं ं हए यह मत व्यक्त वकया ह ै वक आी के मनष्टय को िहव धम-ष दकनष प्रेर ा द े सकता ह ै ताा मनी ावनक, ु सामावीक, रीनववतक समस्याओ के समाधान म प्रेरक हो सकता ह ै ी ि ावनक अिधार ाओ का ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 112 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रकररर क हो, लोकतर के आधारर्त ीविन म्यों का रोषक हो, सिधष मष समि्रा की स्ारना म सहायक ू ू ू ं हो, अन्योन्यावित विश्व व्यिस्ाा एि सिार्ष शवमकता की ष्वस का प्रदाता हो ताा विश्व कावन्त एि ं ं अन्तराषष्टरवय सद्भिाना का प्रेरक हो लेखक ने इन प्रवतमानों के आधार रर ीनै धमष एि दकनष की मवमासा ं ं की ह ै ीनै का अाष ह ै मनष्टय से प्रेम करना ीनै से यक्त व्यवक्त अरना र्ै -रोष करता हआ दसरों का र्व ु ु ू र्ै -रोष करता ह ै अरना विकास करता हआ दसरों को र्व विकवसत होने म मदद दते ा ह ै रर अरन े ्ू प्रवत ीसै े व्यिहार की अरे्ा रखता ह,ै दसरों के प्रवत र्व ठवक उसव प्रकार का व्यिहार करता ह ै धम ष ू सबसे उत्तम मतल ह ं अवहसा, सयम रर तर हव धम ष ह ै महिावरीव कहते ह ीी धमाषत्मा ह,ै वीसके मन ं ं ं म सदा धम ष रहता ह,ै उसे दि ता र्व नमस्कार करते ह अन्हसा- कावत, मरै व रर बधत्ि रर आधाकरत व्यिस्ाा की स्ारना के वलए अवहसा एकमार रास्ता ह ै ु ां ं ं ं इस लोक म वीतने र्व रस ीवि (एक, दो, तवन, चार रर रुँच इविय िाले ीवि) आवद की वहसा मत ं ं कर, उनको उनके रा रर ीाने से न रोको उनके प्रवत अरने मन म दया का ि्रा रखो उनकी ्रा करो यहव अवहसा का सदके र्तिन महिावर अरने उरदके ों से हम दते े ह ं ं यह एक विकाल अिधार ा ह ै रर इसम अवहसा, कारषिाई म , विचारों म , ि्रानाओ म रर विस्तार से ं ं अवर्व्यवक्त म कावमल ह ै यहा तक वक वकसव के विश्वास को चोट रहचुँ ाओ, वहसा र्व क्द, या वलखने ं ं या वकसव अन्य रूर से वकसव को र्व उत्तवे ीत करतव है, वहसा रर वनवषि ह,ै ीावहर ह ै क्योंवक यह वहसा ं ं को प्रासे करेता यहव कार ह ै वक यहा र्व ीनै धम ष के अनयायव, ीी वक तहस्ा

ह, के िल स्ि य का बचि ृ ु ं ं करने के वलए रर वकसव र्व ीवि (विी) रर हमला नहीं करने की अनमवत ह ै यह आत्मा का मवक्त के ु ु उद्दश्े य से ीविन का एक तरवका ह ै सहव न्नर्श्ास, उन्नि व्यनहार और ज्ञा - ीनै धम ष की वक्ाओ के महत्ि र ष रहल कछ विचारों रर ू ू ु ं आधाकरत होते ह, ी एक बेहतर कावतर ष ीविन म सहायता कर सकते ह महिावर न े विचारों रर ीर ू ं वदया, ीसै े सहव विश्वास, उवचत व्यिहार रर ्ान बहत महत्ि र ष ह ै ये िास्ति म एक व्यवक्त के ीविन ू को आकार दते े ह विश्वास बहत व्यवक्ततत ह,ै ीब तक यह समे म नहीं आता ह ै वक इसे उरयोतव माना ी सकता ह,ै इसे रढ़ाया नहीं ी सकता ह ै इसव प्रकार, मनष्टयों, ीानिरों रर रशधे सामवग्रयों सवहत सर्व ु ीववित ीवियों म कि आत्मा या आत्मा (विी, ी एक ौन क्द ह)ै ह,ै ी अरने आर से मक्त ह ै रर ु ु र ष ्ान ह ै यह कि ि्राना कम ष ीसै व ुवनष्ठ चवज़ों से वुरव हई ह,ै ी िास्ति म हमारे ्ान को समासे कर ू ु दते व ह,ै ी हमारव स्ितरता को सववमत करतव ह ै रर अत म एक दसरे के सा हम बाधतव ह ै ीनै धम ष म ं ं ं ू कम ष का एक अलत अाष ह ै यह ीववित प्राव यों, काम या काम के ्राग्य को वनयवरत करने िालव ं रहस्यमय कवक्त नहीं है, बव्क यह एक बहत हव अच्छे मामले के सवम्मि ों को सदवर्षत करता ह ै ी ं इवियों से अप्रि्राव ह ै एक आत्मा इस मामले के सा अरनव बातचवत के सा महान रकरितषन से तीरता ु ं ह ै महिावर कमष म विश्वास करते ो रर हम कमाष के दख से मवक्त रर मो् या वनिाष प्रासे करने के ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 113 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वलए वसखाते ह महिावर को ईश्वर रर कोई

Plagiarism detected: **0.02%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **149**

विश्वास नहीं ा लेवकन सर्व आत्माओ म एक कवक्त के ं अवस्तत्ि रर विश्वास ा, ी सिष्ष यारव ह ै क्षें ा- ्मा के बारे म र्तिन महिावर कहते ह- 'म सब ीवियों से ्मा चाहता ह ुँ ीतत के सर्व ीवियों के ू प्रवत मरे ा मरै व्रा ह ै मरे ा वकसव से ि्रै नहीं ह ै म सच्चे हृदय से धम ष म वस्ार हआ ह ुँ सब ीवियों से म सारे ू अरराधों की ्मा माँुगता ह ुँ सब ीवियों ने मरे े प्रवत ी अरराध वकए ह, उन्ह म ्मा करता ह ुँ ' ि े यह र्व ू ू कहते ह 'मन े अरने मन म वीन-वीन रार की िवत्तयों का सक्र वकया हो, िचन से ी-ी रार िवत्तयाँु ृ ृ ं प्रकट की हों रर करवर से ी-ी रारिवत्तयाँु की हों, मरे व ि सर्व रारिवत्तयाँु विरल हों मरे े ि े सारे रार ृ ृ वम्या हों ' सह शवलि- सवहष्ट ता का कार यह ह ै वक ि्रव रर रहने िाले सर्व प्राव यों म ीविन है, इसवलए ृ ु उन्ह अवस्तत्ि का अवधकार ह ै रर इसवलए सर्व को दसरे के अवस्तत्ि के अवधकार का सम्मान करना ू चावहए रर ीविन का नेतत्ि करना चावहए ी उसे सबसे अच्छा लताता है- यहा तक वक एक कीट र्व ृ ं सवहष्ट ता वरर से एक कार ह ै ी अवहसा को ीन्म दते व ह ै ु ं ीनै धम ष का मानना ह ै वक हवायारों को प्रि्राव ढत स े कोई ीाब नहीं वदया तया ह ै र्तिन महिावर ने ं आचाता सर म स्रस रूर से ुोवषत वकया ह ै वक एक हवायार दसरे से बेहतर ह,ै लेवकन अवहसा या कावत ू ं ं ं ू का मात ष नायाब रहता ह ै ीनै तवीकरों द्वारा प्रचाकरत अवहसा अच्छव तरह से विश्व कावत की स्ारना म ं ं सहायक ह ै ीनै अवहसा का एक रकर ाम यह ह ै वक यह तैर-चोट के बशविक रहल रर बल दते ा ह ै यह ू ं उम्मवद करता ह ै वक हम दसरों के विचार, उरे्ा या ु ा न कर ृ ू न् ष्टेषब ीनै धम ष का अी एक आधवनक ष्वसको ह;ै यह आधवनक दवनया के वलए उरयक्त रूर से वरट बैठता ह ै ु ु ु ु महिावर ने एक ीावतहवन, ित ष के कम समी के सा कोई उच्च रर वनम्न, वलत र्दे ि्रा नहीं वकया ं उनकी वक्ाओ ने ीवने के वलए बेहतर आसन बनाने म मदद की ह ै ीनै धम ष हम सच्चा रर ईमानदार ं होने के वलए वसखाता है, चोरव, ेठ रर सामान्य असरा से ग्रस्त समी सरव्त वनकल ीाने म मदद ु ु ू करता ह ै ीनै धम ष हर ीववित मसले के बवच आत्मा के अवस्तत्ि म विश्वास करता ह ै इसवलए इसने काकाहार रर रक बवल के रकरत्यात को प्रोत्सावहत वकया यह सबसे मानिवय आधार से महत्ि र ष ह ै ु ू रर समी म बदलि लाया ह ै कावत रर अवहसा के आधार रर ीनै धम ष म विकाल योतदान ह ै ं ं अतर यि, यि रर सुषों के कार ों का विश्लेष वकया ीता ह,ै तो हम यह वनष्टकष ष वनकालते ह वक ु ु ं हमारव बढ़तव हई सामग्रव, स्ि-वहतों, लालच, आरसव ु ा, व्यवक्ततत रर सा हव राष्टरवय स्ाि म्य ृ ु कारक ह ीनै धम ष का मानना ह ै वक व्यवक्ततत सधार सामावीक सधार के वलए अग्र व स्ि ष मात ष ह ै ु ु हमारे व्यवक्ततत ीनन रर बराइयों का समी रर प्रवतवबब ह ै इसवलए नैवतक कोड हम रछताछ, सधार ु ू ु ू ु ं रर नैवतक रूर से नेतत्ि के वलए अन्य इतीर वकए वबना खद को उत्ान करने के वलए कहता ह ै यवद ृ ु ं हम र्वतर व्यवक्ततत रूर से कावतर ष ह, यह सासाकरक चवज़ों के वलए तरै -लति को प्रोत्सावहत करता ह ै ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 114 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रर अरनव स्ि य की सरवत्त को स्ि्े छा से सववमत करके समान सामावीक क्रम के विकास को बढ़ाा ं ं दते ा ह ै ीनै धम ष की वक्ा समानता, अवहसा, आध्यावत्मक मवक्त रर आत्म-वनयर के विचारों रर ीर दते व ह ै ु ं ं महिावर ने यतों को वसखाया ह,ै वरर र्व अी के ीविन म इसका महत्ि ह ै ीनै एक महत्ि र ष धावमकष ु ू समदाय ह रर ीनै धम ष ीनस्या को समि बनाने के त ों के विवर्न्न वसितों रर उरदके करते ह ृ ु ु ं ं

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindipunjab.com/र-के-विभिन्न-रूप id: **150**

इस प्रकार ीनै धम ष नैवतकता रर नैवतक रूर से ीातरूक नातकरकों को विश्व कावत बनाए रखने म मदद ं कर सकता ह अतर नैवतक सवहता का रालन वकया ीाता ह,ै तो र

ाय के ्रारव काम को आसान बनाया ं ी सकता ह ै रर अन्य क्या कारव तवतविवधयों के वलए करो़ा ों रुरए बचाए ी सकते ह ीनै धम ष कि, सरल रर ईमानदार ुरेल ीविन रर ीर दते े हए, विश्व कावत के वलए मात ष प्रकस्त करता ह ै ु ू ं अभ्यास रश्न 8. ीनै धम ष के कशन कशन से तत्ि विश्व कावत की स्ारना म सहायक ह?ै ं 9. ीनै धम ष की वक्ा कशन कशन से विचारों रर ीर दते व ह?ै 2.8 सारि् 1. कास्त्रवय सस्कत कत म कावत के ाष म वनकटतम क्द ह,ै ी आमतशर रर कावत, आनद,

काश्वत ृ ं ं ं ं ं आराम, रर खकव की व्याया करते ह, लेवकन आमतशर रर यह क्द विनाक, मत्य के सबध म, ृ ु ु ं ं रर ंविोह (अलत, अलताि, करता) के विररवत ह ै यहा कावत

Quotes detected: **0%** id: **151**

"अलताि की अनरवस्ावत"

ु ु ं ं (वितरा ार्रास्ि।) या

Quotes detected: **0.01%** id: **152**

"सुष ष या यि की अनरवस्ावत"

(यिि्र) के विररवत ह ै ु ु ं 2.

Quotes detected: **0.04%** id: **153**

'अवहसा के वसिात का सबसे रहले तर्वरता से सव्यिवस्ात रूर से वनमाष ि उसका उवचत ि म्य ु ु ं ं ं रूर से उरदके ीनै तवीकरों द्वारा रर खास तशर रर चशबवसि अवतम तवीकर महिावर द्वारा हआ ं रर वरर महात्मा बि द्वारा '

– चवनव विद्वान डी. तानयन का ु ु 3. कावत के प्रवत ारतवय ष्वसको व्यवक्ततत स्तर रर करू होता ह ै इसवलए, यह सामवहक, सामावीक ु ू ं रर बाद म राष्टरवय स्तर रर चलता ह ै कावत स्ावरत करने के वलए व्यवक्तयों द्वारा वकए तए प्रयास ं अत्यत महत्िर ष ह दसरे क्दों म व्यवक्ततत प्रयास कावत के वनमाष का वनमाष करने के वलए नींि ू ं ं ू का काम करते ह 4. ताातत बि ने अरने अनयावयओ को चार आयषसत्य, असावतक मातष, दस रारवमता ु ु ं ं रर रचकवल आदव वक्ाओ को प्रदान वकए ं ं 5. चार आयष सत्य: दःख, दःख कार , दःख वनरोध रर दःख वनरोध का मात ष ु ु ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 115 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 6. असावतक मातष: सम्यक ष्वस, सम्यक सक्र, सम्यक ि्राक, सम्यक कम,ष सम्यक ीवविका, सम्यक ं ं प्रयास, सम्यक स्मवत रर सम्यक समावध ृ 7. रारवमता: दान रारवमता, कवल रारवमता, ्ावन्त रारवमता, िवयष रारवमता, ध्यान रारवमता, प्र ा रारवमता, उराय रारवमता, प्राव धान रारवमता, बल रारवमता रर ्ान रारवमता 8. रचकवल:अवहसा, अस्तेय, अरकरग्रह, सत्य रर नका से विमक्त ु ं ं 9. बशि धमाषिलबव मानते ह वक विश्व कावत तर्व हो सकतव ह,ै ीब हम अरने मन के र्वतर रहले कावत ं ं ं स्ावरत कर बशि धम ष का स्िरूर व्यिहाकरक ह ै बशि धम ष मन से कावत का सचार करके उसका ं ं बाहर प्रसार करना चाहता ह ै रीनैवतक स्तर रर बशि धम ष वकसव र् म नहीं श ता ह ै उसके रास मरै व का हव सबसे ब़ा ा बल है, ी तटस्ा ह ै रर सम्र ष विश्व को अरने म समटे े हए ह ै ू 10. बशि धम ष की वक्ा की सिाषर्शवमकता कावत के सदर् ष म - मानि-समता, मानिष्ठता, ं ं व्यिाहाकरकता, आतकरक कावत रर ध्यान म राया ीता ह ै ं ं 11. 'ीनै धम'ष का अाष ह ै - 'वीन द्वारा प्ररूवरत धम'ष ी 'वीनेश्वर' के अनयायव हों उन्ह ीनै कहते ह ै ु ता 'वीन' या 'वीनेश्वर' क्द 'वी' धात से बना ह ै वीसका अाष ीवतने िाला होता ह ै अाषत ु वीन्होंने अरने मन को ीवत वलया,अरनव ि व को ीवत वलया रर अरनव काया को ीवत वलया, रर विवकस ्ान को राकर स्िष या र ्ष ान प्रासे वकया उन आसे ररुष को वीनेश्वर या वीन कहते ू ु ह ै ! 12. ीनै धम ष के रचकवल वसिात बताए ी ह-ै अवहसा् सत्य् अरकरग्रह् अचशयष िअस्तेय) ं ं ं रर ि्रचयष 13. महिावर की अवहसा के िल सवधे िध को हव वहसा नहीं मानतव ह,ै अवरत मन म वकसव के प्रवत बरा ु ु ं ं विचार र्व वहसा ह ै ं ं 14. महिावर ने विचारों रर ीर वदया, ीसै े सहव विश्वास, उवचत व्यिहार रर ्ान बहत महत्िर ष ह ै ू 15. ीनै धम ष ने मो् को प्रासे करने के तरवकों की र्व सलाह दव ह ै इस सदर् ष म नश तात्यिों का एक ं उ्लेख ह ै ये नश वसिात कम ष के वसिात से ी् े हए ह, ि े

Quotes detected: **0.01%** id: **154**

"ीवि, ीविन, रण्य, रार, आश्रि, बाधा, ु ु ं ं ं समर, वनीरष ा रर मो्"

ह 16. ीनै धम ष की वक्ा समानता, अवहसा, आध्यावत्मक मवक्त रर आत्म-वनयर के विचारों रर ीर ु ं ं दते व ह ै 2.9 िब्दावनाली 1. रारवमता: 'रकरर तष ा' या कछ त ों का चरमोन्नयन की वस्ावत, सम्पये: उवचत, ्यब: कवल, ू ु ु महानिर्ा ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 116 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.10 तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. कवल, समावध रर प्र ा 2. बशि धमष म 'रकरर तष ा' या कछ त ों का चरमोन्नयन की वस्ावत को रारवमता या रारमव (रावल) ू ु ु कहा तया ह ै 3. र्तिन बि ने दःख, उसके कार रर वनिार के वलए असावतक मात ष सेाया ु ु ं ु 4. बशि धमाषिलबव मानत े ह वक विश्व कावत तर्व हो सकतव ह,ै ीब हम अरने मन के र्वतर रहले ं ं कावत स्ावरत कर ं 5. मानि-समता, मानिष्ठता, व्यिाहाकरकता, आतकरक कावत, ध्यान ं ं 6. अवहसा ीनै धम ष का मल वसिान्त ह ै ू ं 7. ीनै धम ष के राच महाव्रत- अवहसा, सत्य, अस्तेय, अरकरग्रह ताा ि्रचयष ह, वीनका विधान ं ं व र्ओ के रालनााष वकया तया ं ु 8. ीनै धमष की वक्ा समानता, अवहसा, आध्यावत्मक मवक्त रर आत्म-वनयर के विचारों रर ु ं ं ीर दते व ह ै 9. अवहसा, आवाषक समता, अरकरग्रह का वसिात, अचशयष/ अस्तेय की ि्राना, सरल, सादा ि ं ं कतषव्यवनष्ठ ीविन रर अनेकान्तिाद 2.11 सद् र् य ग्रथ सची ू 1. https://

Plagiarism detected: **0.02%** https://hi.wikipedia.org/wiki/ष id: **155**

hi.m.wikipedia.org/wiki/महिावर 2. https://hi.wikipedia.org/wiki/ी_धें ब 3. http://bharatdiscovery.org/india/र्द्ध_ी_न्शक्षा ु 4. http://www.futuresamachar.com/hi/jain-education-and-message-7821 5. https://hi.m.wikipedia.org/wiki

/विश्व_कावत ं 6. http://www.jainsagar.com/vishav.html 7. http://hindi.webdunia.com/buddha-jayanti-special/buddha-purnima- 116051700047_1.html 8. http://www.pravakta.com/teachings-of-mahavir-only-for-the-welfare-of- humans/ 9. प्रमा सातर, मवन (२००८), जनै तत्त्वक्तवद्या, ार्ारतवय ्ानरवठ, आई°ंस°बव°ंन° 978-81- ु 263-1480-5 10. ीनै , वीय कमार (२०११), आचायय उमास्वामी तत्त्वार्यसत्र, Vikalp ु ू Printers, आई°ंस°बव°ंन° 978-81-903639-2-1 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 117 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 11. आचायष नेवमचन्ि (२०१३), द्रव्यसग्रह, Vikalp Printers, आई°ंस°बव°ंन° 81-903639- ं 5-6 12. Sangave, Vilas Adinath (२००१), Facets of Jainology: Selected Research Papers on Jain Society, Religion, and Culture, Mumbai: Popular prakashan, आई°ंस°बव°ंन° 81-7154-839-3 13. Zimmer, Heinrich (1953), Campbell, Joseph, ed., Philosophies Of India, London, E.C. 4: Routledge & Kegan Paul Ltd, आई°ंस°बव°ंन° 978- 81-208-0739-6 14. कास्त्रव, र. कै लाकचन्ि (२००७), जनै धम,य आचायष कवतसातर 'छा व' स्मवत ृ ं ग्रन्ामाला, आई°ंस°बव°ंन° 81-902683-8-4 2.12 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. बि रर ीनै धम ष के अनसार अवहसाकी अिधार ा का विस्तत विवर द ृ ु ु ं 2. विश्व कावत के सदर् ष म बि रर ीनै धम ष के विचारों का तलनात्मक ि नष कर ु ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 118 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 3 - ता धव ीव और का क्ति क्तिक्ा 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 ताधव ीव के अनसार कावत के क ि ु ं ं 3.3.1 मानिवय म्य ू 3.3.2 अवहसा ं 3.3.3 सत्याग्रह 3.4 सि्दय रर कावत ं 3.5 साधन रर साध्य का नैवतक सम्बध ं 3.6 वक्ा रर कावत ं 3.7 साराक ं 3.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.9 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 3.10 सहायक / उरयोतव राठय सामग्रव 3.11 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना ा ताधविादव दकनष , वक्ा म प्रमख र्वमका वनर्ाता ह ै यह एक आदकिष ादव, प्रकवतिादव, एि व्यिाहाकरक ृ ु ू ं ं दकनष ह ै ताधव ीव का कावत वक्ा सबवधत दकनष सत्य ताा अवहसा से ी ा हआ ह ै ताधव ीव का नाम ु ं ं ं ं ं ं कावत रर अवहसा का समानाी ह,ै यहव कार ह ै वक सयक्त राष्टर सु ने उनके ीन्म वदिस को विश्व- ु ं ं ं ं कावत वदिस ोवषत वकया ह ै मानिता हते ताधव ीव का योतदान अतलनवय ह ै इस इकाई म आर यह ू ु ं ं ीान ते वक ताधव ीव के दकनष के अनसार कावत वक्ा क्या ह ै रर यह वक्ा कै स े व्यवक्तयों के साा-साा ु ं ं राष्टरों के बवच म कावत को बढ़ाा द े सकतव ह ै आी दवनया के कई वहस्सों म नातकरक वहसक सुषष रर ं ं ं ु यि की वस्ावतयों से रवव़ा त ह ै ितषमान म िवै श्वक स्तर रर आने िालव समस्याओ ने इस त्य को ु ं रेखावकत वकया ह ै वक हम ताधव ीव के कावत वक्ा के दकनष को व्यिाहाकरक स्तर रर लात करने की ू ं ं ं आिश्यकता ह ै ताधव ीव के कावत वसात म मानिवय म्यों का बहत महत्ि ह ै उनके अनसार अवहसा ू ु ं ं ं ं ं ीविन ीवन े का तरवका ह ै रर सत्याग्रह के साा वमलकर अन्याय के वखलार ल़ा ने म सवक्रय सुषष म ं महत्िर ष योतदान दते व ह ै ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 119 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.2 उद्दश्े य इस इकाई को रढ़ने के रश्चात आर: 1. ताधव ीव द्वारा प्रवतरावदत वक्ा सबधव दकनष को ीान राएत े ं ं ं ं ं 2. ताधवीव के कावत वक्ा दकषन म सत्य अवहसा सि्दय इत्यावद का विस्तार से अध्ययन कर ं ं ं राएत े ं 3. ताधव ीव द्वारा वदए तए साधन रर साध्य के नैवतक सदर् ष ताा उसके वनवहताष से रकरवचत होंत े ं ं 4. ताधव ीव द्वारा बताए तए वक्ा ि कावत के सबध को समे राएत े ं ं ं ं ं ं 3.3 गाध् ी जी के त ुसार िक्त् त के कें द्र ताधवीव ने कावत वक्ा का दकनष एक व्यिवस्ात सरचनात्मक तरवके से नहीं वदया ह ै िह कायषकताष रह े ह ं ं ं ताा व्यिहाकरक दाकवष नक रह े ह रर उन्होने कोई अकाविक ि अमतष वसात नहीं वदए अवरत उनका ू ु ं उरातम वचतन, िाताषलार ताा अरने कायों म लोतों (यहा तक वक अरने विरोवधयों को र्व) विश्वास म ं ं लेन े रर उन्ह प्रेकरत करने का रहा ह ै उनका दाकवष नक वनरूर समी ि दके के सामने आ रहव तात्कावलक समस्याओ से वनदववदेश कत ाा अतः ताधवीव के कावत वसात को समेने यह ीानने की कावत ं ं ं ं ं के वसात रर वहसा को िह वकस ष्वसको से दखे ते ो, हम उनके ीविन को रढ़ना ि समेना चावहए ं ं इस सदर् ष म उनके अवर्व्यवक्त मरे ा ीविन हव मरे ा सदके ह,ै को अरनाना होता तर्व हम उनके रकररेक्य को ं ं समे राएत े ं 3.3.1 ें ा नवय ें ल्य ू ताधव ीव के कावत वसात म मानिवय म्यों ीसे सत्य, अवहसा,त्यात, मानिता करु ा इत्यावद का बहत ू ं ं ं ं महत्ि ह ै उनके अनसार अवहसा ीविन ीवने का तरवका ह ै रर सत्याग्रह के साा वमलकर अन्याय के ु ं वखलार ल़ा ने म अन्याय के सामने वनवष्टक्रय ेकने ताा सवक्रय सुषष के बवच अतर को स्रस करतव ह ै ं ं ु सुष ष के यत म वकसव र्व राष्टरवय ताा अतराषष्टरवय स्तर रर (चाह े िह ताधवीव का समय हो या ितषमान ु ं ं ं हो) ताधव यह मानते ह वक व्यवक्त को अरने मन का अन्िषे करने की आिश्यकता ह ै क्योंवक कछ म्य ु ू ं (समावीक रर मानिवय) ऐसे ह वीनके अनरवस्ावत म व्यवक्त समी का वहस्सा नहीं बन सकता ु ताधवीव ने उस सहव मन की रनरव्ा की रैरिव की ह ै वीस म मानिवय एकता, प्रेम, कावत के त हो, ी ु ु ं ं कछ काश्वत म्यों ीसै े नैवतक, आध्यावत्मक, सिार्ष शवमक मानिता से ओतप्रोत हो ताधवीव के अनसार ु ू ु ं इन म्यों के वबना व्यवक्त समी का वहस्सा नहीं बन राता ह ै वकत द्ाषग्य से ये त ि म्य हमारव ू ु ु ू ं ु लारिराहव रर असिदे नकवलता के चलत े हमसे खोत े ी रह े ह रकर ामस्िरुर हम ीविन का ं 'मानिवय' रूर म सामना कर राने म असमाष ह, रर स्ि्य की मानिता को र्व नस कर रह े ह ताधविादव ं ं विचार यि की र्त्सनाष तक हव सववमत नहीं ह ै उनका विचार तहरे विश्लेष का रकर ाम ह ै उनके अनसार ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 120 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 यि तब तक नहीं रुक ी सकत े ीब तक वक इसके बवी व्यवक्तयों के अदर, उनके सामावीक, रीनववतक ु ं रर आवाषक ीविन म बचे रहत े 3.3.2 अन्हसा ां समी का ढाचा बदलते मानिवय म्यों रर वटका ह ै यह कर्व र्व समासे नहीं होता ह ै रर एक उत्राद के ू ं रुर म नहीं दखे ा ी सकता यह एक वनरतर चलन े िालव प्रवक्रया ह ै ताधवीव के अनसार अवहसा समी के ु ं ं ं इस वनरतर बदलते ढाच े का ध्यान रखते हए व्यवक्तयों को साा लान े ि सबधों को बेहतर बनाने का प्रयास ं ं ं ं करतव ह ै क्योंवक यह व्यवक्तयों म आतकरक एकता के िरा से हव उत्रन्न होतव ह ै अतः ताधवीव ने ं ं स्िवै च्छक तरवके से 'स्ि' को सिरानाए विकवसत करने, ताा वहसा रर रार रान े का एक साधन विकवसत ं ं ं वकया ह,ै ी नैवतक सदर्ष म सबधों

को बदलने उन्ह एकीकत करने म वदका प्रदान करेता उन्होंने इस ृ ं ं ं तकनवक या ीविन के तरवके को हव सत्याग्रह का नाम वदया ह ै ताधव ीव ने ीर दके र कहा ह ै वक अवहसा ं ं की सवक्रय अिस्ा व्यवक्त विकषे को तलत करने िाल े का विरोध करने की आिश्यकता महसस करितव ू ह ै व े कहते ह ैं क्तक यह क्तसद्ात का मामि ह ै न क्तक योग्यता का (अ ायत व्यक्ति सैधाक्ततक तौर पर अक्तहसा ं ं ं म ें क्तवश्वास रखता ह ै इसक्तिये इस मार् य को चनता ह,ै न क्तक इसक्तिये क्तक वह कमजोर ह ै और क्तहसा नही कर ु ं सकता) अवहसा की प्रेम के साा तादात्म्यता स्ावरत करके ताधव इस बात को रेखावकत करते ह वक सत्याग्रह म ं ं ं रचनात्मकता रर रनवनषमाष ताा अतर व्यवक्ततत सबध महत्ि र ष ह ै उनके द्वारा वदया तया िाक्य "विश्व ु ू ं ं ं म सर्व व्यवक्त ाई ह" , यह मार एक नारा नहीं ह ै यह इस बात को स्ावरत करता ह ै वक सिार्ष शवमक स्तर रर मानिवय रव़ा ा समान रूर से राई ीातव ह ै रर मनष्टय म रकरितषन लाने की ्मता र्व राई ीातव ु ह ै ताधवीव मानत े ह वक अवहसा कोई र नववत नहीं ह ै बव्क यह दसरों के साा एकता स्ावरत करने का ं ं ू साधन ह,ै अवहसा वनःक्द ह ै रर यह प्रेम रर करु ा ि्रा के वदिावलयारन से उत्रन्न होतव ह ै इसकी ं करुआत तकष सतत सिाद ि सप्रेष के बद होने, दसरों के साा नकारात्मक विनाककारव सिाद के ु ं ं ं ं ं ं ू अलिाा सर्व सिादों के रास्त े बावधत होने रर होतव ह ै ताधवीव की अवहसा की अिधार ा न तो कोई ं ं ं ि्राकता ह ै न हव कोई धावमकष ता बव्क यह बराई की िास्तविकता का खडन ह ै ु ु ं उनके अनसार उनके अनसार वकसव र्व सत्याग्रहव का रहला कतषव्य ह ै वक िह बराई/अन्याय वीसकी उसे ु ु ु ीानकारव ह,ै को िह सामने लाएता चाह े इसके वलए उसे कोई कीमत चकानव ़ा े साा हव अवहसक ु ं साधन होने चावहए क्योंवक सत्य रर प्रेम हमारे अवस्तत्ि का सार ह,ै यवद प्रेम रर अवहसा हमारे तरवके ं नहीं ह ै तो हमारा तकष टक़ा े-टक़ा े हो ीाता ह ै अवहसा बराई को न के िल एक बार म खत्म करतव ह,ै ु ु ु ु ं बव्क प्रवतवदन इसका विरोध करने रर इसरर काब राने का रास्ता र्व हम वदखातव ह ै ताा इसान सबधों ू ं ं ं को बदलने म, उन्ह अच्छा करने की ओर प्रयत्नकवल होतव ह ै अतः यह व्यवक्त विकेष म खास तरह का साहस र् दते व ह ै ीा वक वहसा से बहत दर होता ह ै व्यवक्त लतातार ्मा करना, ररस्र मवक्त दने ा आवद ु ं ू की ओर अग्रसर होता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 121 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ताधव ीव का यह वसात के िल ारतवय सदर्ष रर आधाकरत नहीं ह ै यह िवै श्वक स्तर रर मानि की ं ं ं मलर्त ि सामान्य आिश्यकता रर आधाकरत ह ै ताधव ीव का उराय बहत क्रावतकारव ि दरदकी रहा ह ै ू ू ं ं ू िह वहसा को व्यवक्त विकेष के अदर उसके ितिार से ी़ा से वनकाल दने े की रैरिव करते ह ताधव ीव ने ं ं ं वीस सहव मन की बात की ह ै िह मन असवहष्ट ता ि आरोरों के वि्रीनों से दर ह ै यह मन एकता से ु ू रकरर ,ष समे ि्रा से र ,ष अनत प्रेम से र ,ष कावत हते कायषरत वीसम कावत ीविन का तरवका ह ै यहा ू ू ू ु ं ं ं ं ं कावत से तात्रयष यि की समावसे यि के बवच की अिवध से नहीं ह,ै यह उस वि्रीन को कम करने का ु ु ं ि्रा ह,ै ीा वक आतकरक ि बा्य वि्रीन म सद्धिा हते सकारात्मक वदका प्रदान करता ह ै ताधवीव र्व ु ं ं नररत म असवहष्ट ता की िास्तविकता को समेते ो क्योंवक उन्होंने अरने ीविन म स्ि्य इसका अनि्र ु ु ं वकया हआ ाा 3.3.3 सत्याग्रह सत्याग्रह को रकर ावषत करते हए ताधवीव कहते ह वक सत्याग्रह या आत्मा बल को अग्रीव म रैवसि ं ं रेवीस्ट स कहा ीाता ह,ै वीन लोतों ने अरने अवधकार रान े के वलए खद दख सहन वकया ाा, उनके दख ु ु ु सहने के ढत के वलए यह क्द प्रयोत म लाया तया ह ै उसका ध्येय ल़ा ाई के ध्येय से उ्टा ह ै ताधवीव ं ं कहते ह वक ीा मे कोई काम रसद नहीं आए रर म िह काम म न करु तो उसम म सत्याग्रह या आत्मा ु ं ं बल का प्रयोत करता ह वमसाल के तशर रर मे रर लात होने िाला कोई कानन सरकार ने रास वकया िह ू ु ू ू ं कानन मे रसद नहीं ह,ै रर अतर म सरकार रर हमला करके यह कानन रद्द करिाता ह तो यह कहा ू ू ु ू ं ं ीाएता वक मन े करवर बल का उरयोत वकया अतर म उस कानन को मीर हव ना करू रर उस कार से ू ू ं होने िालव सीा र्तत ल तो कहा ीाएता वक मन े आत्म बल या सत्याग्रह से काम वलया सत्याग्रह म म ु ू अरना हव बवलदान दते ा ह ीब ताधव ीव से यह सिाल रछा तया वक ीा कानन बन चके ह उन्ह तो ू ू ू ु ं ं माननना हव चावहए लेवकन कानन खराब हो तो उनको बनाने िालों को मार कर र्ता दने ा चावहए ि कहते ू ह "हम कानन को मानने िालव प्रीा ह ै इसका सहव अाष तो यह ह ै वक हम सत्याग्रहव प्रीा ह ै कानन ीब ू ू रसद नहीं आए तब हम कानन बनाने िालों का वसर नहीं तो़ा ते बव्क उन्ह रद्द करिाने के वलए खद ू ु ं उरिास करते ह खद दख उठाते ह " ु ु ताधवीव रछते ह वक "सरकार तो कहते व वक हम उसके सामने नत े होकर नाच ं तो क्या आर नाच त?े अतर ू ं ं म सत्याग्रहव ह तो सरकार से कहता वक यह क्या कानन आर अरने ुर म रवखये, म न तो आरके सामन े ू ू ू ं ं नता होने िाला ह रर ना हव म नाचने िाला ह " ू ू ं ं ं कावत रर ताधव के रकरप्रेक्य को समेने की कीव उनके द्वारा वदए तए कायष के तरवके वीसने र्व वीसे िह ु ं ं ं सत्याग्रह कहते ह, को समेना आिश्यक ह ै उनका कहना ह ै वक दमनकारव को नस करने रर उसका विनाक करने के वलए वहसा का चक्र करू होता ह ै िह कहते ह वक िास्तविक मवक्त िह ह ै ीा उत्रव़ा क ि ु ु ं उत्रववा़ त दोनों को मक्त कर सत्याग्रहव वहसा के बीाय आत्म रव़ा ा का विक्र चनता ह ै रर अरनव ु ु ं आत्मा रव़ा ा को सहन करने के वलए आतकरक कवक्त अवनिाय ष ह ै आत्म रव़ा ा ीविन को अवधक स्म ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 122 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 व्यवक्ततत रुर से समि बनातव ह ै िास्ति म ताधव इस बात रर ीर दते े ह वक बराई रर विीय आत्म रव़ा ा ृ ु ं से राई ीा सकतव ह ै साा हव प्रवतद्वद्वव रर काब राने का एक हव रास्ता ह ै वक उसकी बराई से वनकलने म ू ु ं मदद की ीाए एक सच्चा सत्याग्रहव वहसा का उरयोत करने से इसवलए नहीं बचता क्योंवक िह इसान ं ं करने म समाष नहीं ह,ै बव्क िह आत्म रव़ा ा का चनिा करता ह ै ताधव ीव कहते ह वक ीा व्यवक्त े क ु ं ु ीाता ह ै वकत उसके मन म ु ा होतव ह ै रर मशका रान े रर स्ि्य को दख रहचाए वबना अरने विरोधव को ृ ु ं ं ं ं ु मार सकता ह ै ि्रह इसान आत्म रवडा से बहत ररे ह ै ऐसा समरष कर्व र्व आत्म रव़ा ा का वहस्सा नहीं ं बन सकता ह ै 3.4 सवनोदय और िाक्त् त ताधवीव के कावत रर ष्वसको को समेने के वलए आिश्यक ह ै वक उनके स्िदय के लक्य को र्व ं ं समो ीाए स्िदय से उनका तात्रयष सबके वलए, वीसने वबना वकसव र्दे ि्रा, तरवबव, अमवरव, कमीरव, मीबतव के सब कावमल ह, के क्या से ह ै स्िदय न के िल ताधव

ीव का म्य उद्दश्े य ाा ू ु ं बव्क यह उनके कावत प्रावसे ि सन्द्धिा बनाए रखन े हते वसिात की म्य आिश्यकता र्व बना स्दिय ु ु ं ं सामावीक वहत म व्यवक्तितत समरष की मात करता ह ै यह न्यावसता िरस्टववकर) की अिधार ाा को ं रेखावकत करता ह ै ताा सर्व की सामावीक सिा की अवनियषता को सवनवश्चत करतव ह ै यह आवाषक ु ं समानता का रास्ता र्व ह,ै रर कोष को समासे करने का र्व ताधवीव कहते ह वक म न्यावसता का ं रालन करता ह, चाह े लोत उसका उरहास उ़ा ाए यह सच ह ै वक इसे प्रासे करना बहत मवश्कल ह,ै यहव ू ु ं ं बात अवहसा रर र्व लात होतव ह ै स्दिय ताा न्यावसता इस बात को मान्यता दते े ह वक वकसव र्व प्रकार ू ं का कोष ि आवाषक असमानता समासे होनव चावहए ताधवीव स्दिय की सक्रना म समाी की आवाषक समता को दखे ते ह ीहा वबना क्रर अवनियषता रर ू ं ं ं वहसा के समाी के

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.easyhindivyakaran.com/hindi-varna… id: **156**

प्रत्येक वनचल े ताा अवतम व्यवक्त तक रहचा ीा सके ि े माते ह वक मनष्टय का ु ं ं ं ं स्च्च ररव् उसके आवाषक ि नैवतक विकास के सतलन म होता ह ै स

्दिय के रुर म ताधव ीव एक ु ं ं सामावीक क्रावत का, एक कावतर ष व्यिहाकरक तरवका सेा रह े ो, ाी ीविन की त ित्ता की बेहतरव ू ू ु ं ं की सवनवश्चतता करता ह ै इसका प्रि्रा 1950 म र्दान आदोलन म वदखाई श़ा ाा ीहा लोतों ने सामवहक ु ू ू ं ं उत्रादन हते स्ि-वहत को त्यातकर र्वम दान की एक सामवहक रहल की ु ू ू 3.5 साध और साध्य का ैक्तितक सम्बध ् ताधवीव के कावत की अिधार ाा म साधन रर साध्य के बवच का सबध बहत हव महत्ि्र ष ह ै उनके ू ं ं ं ं अनसार अके ले साध्य कर्व र्व साधनों का रवचत्य वनधाषकरत नहीं कर सकत े ह उनका मानना ाा वक ु साधन र्व साध्य के वीतने हव महत्ि्र ष होते ह रर उनके चनिा म कोई कोताहव नहीं बरतव ीानव ू ु चावहए उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 123 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वहद स्िरी म ताधव ीव वटतत व करते ह ं ं "(यवद) आर मानते ह वक साधन रर साध्य के बवच कोई सबध नहीं ह ै यह बहत ब़ा व र्ल ह,ै इस ू ं ं र्ल के कार ीा लोत धावमकष कहलाते ह, उन्होंने ुोर दष्टकमष वकए ह यह तो धतरे का रशधा ू ू ु लताकर मोतरे के रल की इच्छा करने ीसै ाा हआ मरे े वलए समि रार करने का साधन ीहाी हव हो ू ु सकता ह ै अतर म रानव म बैलताा व डाल द, तो ि्ह ताा व रर म दोनों समि की तह म रहच ीाएत े ु ं ं ं ं ू 'ीसै े दि िसै व रीा' यह ि्वक्य सोचने लायक ह ै इसका तलत अाष करके लोत र्लि म श़ा तए ह ू ु यहाँु साधन बवी ह ै रर साध्य हावसल करने की चवी, रेड ह ै इसवलए वीतना सबध बवी रर श़ा के ं ं बवच ह ै उतना हव साधन रर साध्य के बवच ह ै कतै ान को ्रीकर म ईश्वर ्रीन का रल रा ीाँ, यह कर्व हो हव नहीं सकता इसवलए यह कहना वक हम तो ईश्वर को हव राना ह,ै साधन र्ले कतै ान हो वब्कल अ्ान की बात ह ै ीसव करनव िसै व र्रनव " ि्वहद स्िरी) ु ं ि्ह आत े कहते ह "मै अतर आरसे आरकी ु्ा व छवन लेनव ह ै तो बेकक आर के साा मै मार रवट ु ु करनव होतव लेवकन अतर मै आरकी ु्ा व खरवदनव ह ै तो आर को दाम दने े होंत े अतर मै ब्कवक के ु ु तशर रर आरको ु्ा व लेनव होतव तो मै आरसे विनतव करनव होतव ु्ा व राने के वलए म ीा साधन काम ु म लता उसके अनसार ि्ह चोरव का माल, मरे ा माल या ब्कवक की चवी होतव तवनो साधनों के तवन ू ु ं अलत-अलत रकर ाम आएते तब आर कै से कह सकते ह वक साधन की कोई वचता नहीं " (वहद ं ं ं स्िरी) ताधव ीव ने ्रारतवय विद्यालयों के सचालन हते कराब रर लताए तए रीस्ि से वलए तए रैसे का विरोध ु ं ं ीताया ाा उनका मानना ाा वक यह साधन रीस्ि रविर नहीं ह ै अतः साध्य यावन बच्चों की वक्ा के उद्दश्े यों को प्र्रावित करेता इसव के चलते ि े विद्यालयों के आवाषक-स्ि्रिलम्बन की ि्कालत र्व करते ो उनके अनसार रढ़े- वलखे ्रारतवयों द्वारा 'नशकरकाहव म ्साचार' का एक कार साधन रर साध्य की ु असततता हव ह ै ं ताधवीव के वसिात म सत्य रर अवहसा का सयोीन साधनों के चनिा की समस्या को हल करने म ु ं ं ं ं सहायक ह ै अरने ीविन म सत्य के साा प्रयोतों से ि्ह वसि कर राये वक सत्य रर अवहसा एक दसरे म ं ू तो होते ह ु चोर व्यवक्त के साा बताषि से र्व उसके स्ि्रिा को बदला ीा सकता ह ै ताधवीव कहते ह वक "कर्व मशका ं वमलने रर आर उसे समोने के बारे म आतने सोचा ह?ै क्या आतने कर्व सोचा ह ै वक ि्ह र्व हमारे ीसै ा आदमव ह?ै उसने वकसव इराद े से चोरव की यह आर को क्या मालम? आर के वलए अच्छा रास्ता तो यहव ह ै वक ू ीब मशका वमले, तब आर उस आदमव के र्वतर से चोरव का बवी वनकालने म े मदद करे ीब आर यह सोच रह े उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 124 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ह रर इतने म ि्ह ्राई साहब वरर से चोरव करने आते ह, तब आर नारी नहीं होते, आर को उस रर दया आतव ह ै आर सोचते ह वक यह आदमव रोतव ह ै आर व़ख़ा की-दरिी े खले कर दते े ह, आर अरनव सोने की ु ीतह बदल दते े ह आर अरनव चवी ऐसव ीतह लाकर रख दते े ह ीहा ुँ से चोर आराम से ल े ाी सके , चोर आता ह,ै ि्ह ुबराता ह ै यह सब उसे नया हव मालम होता ह,ै माल तो ि्ह ले ीाता लेवकन उसका मन चक्कर ू म श़ा ीाता ह ै ि्ह तिा म ीाच श़ा ताल करता ह ै आरकी दया के बारे म उसको मालम होता ह,ै ि्ह रछताता ू ं ं ह ै रर आरसे मारी मातता ह ै आरकी चवी ि्रस ले आता ह,ै ि्ह चोरव का धधा छो़ा दते ा ह,ै आरका ं ं सिक बन ीाता ह,ै आर उसे काम धधे से लता दते े ह "(वहद स्िरी) ं ं ताधवीव कह्ते ह वक म यहव वदखाना चाहता ह वक अच्छे नतवी लाने के वलए अच्छे हव साधन चावहए, ू ं ं रर अतर सब नहीं तो यादातर मामलों म हवायार बल से आत्म बल यादा ताकतिर होता सावबत होता ह ै हवायार से हावन ह,ै रर दया से कर्व हावन नहीं होतव दया बल आत्म बल ह ै सत्याग्रह ह ै रर इस बल के प्रमा रत रत रर वदखाई दते े ह अतर यह बल नहीं होता तो ि्रव रसातल म रहच तई होतव ृ ं दवनया म वकतने लोत आी र्व वीदा ह ै यह बताता ह ै वक दवनया का आधार हवायार बल रर नहीं ह ै ररत ु ं ं ु ु सत्य दया ि आत्मा बल रर ह ै इसका सबसे ब़ा ाा प्रमा तो यहव ह ै वक दवनया ल़ा ाई के हतामे के बिीद ू ं ु वटकी हई ह ै इसवलए ल़ा ाई के बल के बीाए दसरा हव बल उसका आधार ह ै ू 3.6 क्तिक्षा और ि्वक्त् त 'अर्र हम क्तवश्व को वास्तक्तवक शाक्तत का पाठ पढाना चाहते ह ैं तो हम ें शरुआत बच्चों से करनी हो्री' ु ं ताधवीव ने व्यवक्तत्ि एि सामावीक स्तर रर समग्र विकास हते वक्ा को महत्ि्र ष बताया ह ै बच्चों को ु ू ं ं वक्ा

दव ीानव चावहए तावक ि े मानितिाद, न्याय, नैवतकता ि कावत के म्य विकवसत कर राये ि े ू ं मानते ह वक 'सि्दय समी' के वनमाष हते ऐसव वक्ा की आिश्यकता ह ै ि े कहते ह वक हम बच्चों को ु इस बात से अितत करिाना चावहए वक कावतर ष सह-अवस्तत्ि प्रत्येक नातकरक से सबवधत होता ह ै ू ं ं ं अतः उन्ह साप्रदावयक दबिों, धावमकष ता, ्ेरवयता ि अन्य वहतों से ँरर उठकर कावतर ष सहअवस्तत्ि ू ं ं म अरनव र्वमका वन ारनव ऱा ेतव वक्कों को यह रारस्रकरक सामीस्यर ष सबध स्ावरत करने हते ू ू ु ं ं ं ररचाकरक ि अनशरचाकरक दोनों हव माध्यमों का प्रयोत करने की आिश्यकता ह ै ताधव ीव द्वारा ं प्रवतरावदत बवनयादव वक्ा अवहसा के म्य रर आधाकरत ाव उनके अनसार इस वक्ा व्यिस्ाा म ु ू ु ं हस्तकला, स्ास्ृय, ि वक्ा का एकीकत रूर ह,ै ीी बच्चों के चहमखव विकास के वलए आिश्यक ह ै ृ ु धावमकष वक्ा के सदर् ष म ताधव ीव का 'सिधष मष समि्रा' का नीकरया ाा उनके अनसार यह विचार ु ं ं धावमकष समहों म व्यासे तनिा का सामना करने के वलए एक प्रि्राव उरकर ह ै ताधव ीव के अनसार ू ु ं वकसव र्व विद्यालयव राठयक्रम म विवर्न्न धर्मों के अध्ययन को कावमल वकया ीना चावहए उनके अनसार सर्व धम ष कावतर ष सहअवस्तत्ि का म्य वसखाते ह बच्चों को विश्व के म्य धर्मों के बारे म ु ू ू ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 125 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ीानने, समेने ताा उनकी प्रकसा का मशका वदया ीाना चावहए विश्व कावत के सदर् ष म यह बहत ं ं ं महत्ि्र ष ह ै ू ि्ह कहते ह वक नैवतकता ि ईमानदारव का त बच्चों म वक्ा द्वारा विकवसत वकया ीाना चावहए वक्ा ु एक रर तो विद्यावाषयों म उच्च नैवतकता, आत्म-वनयर रर सहव सोच का विकास होना चावहए दसरव ं ू ओर उनसे समी म 'सिा प्रदान' वकए ीाने की उम्मवद की ीानव चावहए इसके अततत्ष माता-वरता, ब्रा ों, ं वक्कों का सम्मान, बच्चों के साा प्रेम रिकष व्यिहार, सामावीक रररराओ का रालन रर अरनव ू ं ं वीम्मदे ाकरयों के कतषव्यों के प्रवत लतातार ीातरूकता आतव ह ै यवद ताधवीव के वक्ा व्यिस्ाा सबधव विचारों को लात वकया ीाए तो ितषमान समय की न के ि्ल ू ं ं ं सामावीक आवाषक चनशवतया अवरत नैवतक दविधाओ को दर करने की वदका म लबे कदम उठाए ीा ु ु ं ं ं ु ू सकते ह ताधवीव की वक्ा का म्य उद्दश्े य मानि को आतकरक ि बाय् दासता से मवक्त वदलाने का ाा ु ु ं ं वक्ा मानि को सत्य के मात ष रर चलन े हते रा प्रदककष का कायष र्व करतव ह ै ताधवीव के अनसार ु ु ं अवहसा के व्यारक ढाचे म धावमकष रर नैवतक वक्ा एक दसरे की ररक ह, ताा कावत वक्ा के क ि ू ं ं ं ु वबद ह ै उनके अनसार कावत वक्ा म कावत वनमाष कशकल ीसै े ि्ताष, मध्यस्ाता, कावत हते प्रयास करने ु ु ं ं ं ं ु का कशकल आवद विकवसत करना कावमल ह ै अतः कावत वक्क आरसव सम्मान, समे ि अवहसा ीसै े ं ं त ों रर ध्यान दते ा ह ै ि कहते ह वक म्य वक्ा व्यवक्त के नैवतक

Plagiarism detected: **0.03%** https://ddnews.gov.in/development-linked-fa… id: **157**

विकास के वलए आिश्यक ह,ै ीबवक ु ू कावत वक्ा ररव मानिीावत के वलए महत्ि्र ष ह ै ू ू ं ि े कहते ह वक हम बच्चों म इस ि्राना का विकास

करना चवहये वक सत्य का आधार अवहसा होतव ह,ै ं रर सत्य को अरनाकर हव हम सकारात्मक रल प्रासे होते ह सत्याग्रह अवहसा का व्यिहाकरक प्रयोत ह ै ं रर यह दसरों को दख दने े की ि्ह स्ि्य ीलकर, न्याय प्रासे करने की विवध ह ै ताधव ीव के अनसार ु ं ं ू ु हम ऐसे व्यवक्त तैयार करने ह ीी विश्व को कावत की रर ले ीाये ना वक के ि्ल ऐसे व्यवक्त ीी वसरष ं कावत उर ोक्ता हो वक्ा ऐसव होनव चावहए ीी आत्मानकासन रर ध्यान द, ऐसा आत्मानकासन ीी ु ु ं अवहसक व्यिहार को बढ़ाा दते ा ह ै ि े कहते ह वक बच्चों को हम ुटनाओ को व्यारक ि दरदकी ं ं ू रकरप्रेक्य से दखे ने योग्य बनाने की आिश्यकता ह ै वक्क को प्रत्य् ना कहकर अरने व्यिहार म बच्चों को वसखाना चावहए वक सि ष व्यारक साध्य एक ऐसा साध्य ह,ै ीी कठोर अनकावसत ीविन, वनधषनता, ु अवहसा, विनम्रता द्वारा प्रासे वकया ीा सकता ह ै ं यवद सत्य का आचर र ष रूर से ना वकया ीाए तो हव अच्छा अकावत रैदा होतव ह ै यह आिश्यक ह ै ू ं वक सुष ष को हल करने के वलए वक्क स्ियम तरै वहसा का सहारा नहीं लेता बव्क कावत का मात ष ं ं ं चनता ह ै यवद वक्क वरटाई का सहारा लेते ह, तो उनकी अनरवस्ावत म बच्चे र्व दसरों को रवटकर ु ु ू उनरर आवधरत्य ीमाने की कोवकक करते ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 126 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.7 सारि् ताधवीव के वलए ीी र्विष्टय ाा ि्ह आी हमारा ितषमान ह,ै वरर र्व आी हम उन्हव मशवलक समस्याओ ं ं का सामना कर रह े ह, ीी ताधव ीव के समय म ाव आी का यत र्व सुषष का यत ह,ै कहीं राष्टरों के बवच ु ु ं ं सुषष ह ै तो कहीं लोतों/ समदायों के बवच राष्टर के अदर र्व अरनव समस्याए ह ीसै े ीावततत र्दे ि्रा, ु ं ं ं ं धावमकष र्दे ि्रा, आवाषक र्दे ि्रा, नस्लवय र्दे ि्रा आवद अतरराष्टरवय स्तर रर अर्व र्व उरवनिेकिाद ं के बाद के वि ्रावीत राष्टरों म ररस्रर द्वद बने हए ह, रर आी र्व विनाक का खतरा लतातार बना हआ ं ह ै ितषमान म वहसा के साधन रर बढ़ तए ह ताा तकनवकी तशर रर कहीं तो अवधक विध्िसकारव ि ं ं प्रि्राव हो तए ह अतर इनको प्रयोत म लाया ीाए तब मानिीावत खत्म हो सकतव ह ै आी विश्व स्तर रर वहसा ि यि म सहव,तलत ि न्याय ि्राना लतर्त समासे ह आी यह त्य वनर्विष ाद रुर से सत्य ह ै ु ं वक राष्टरवय ि अतरराष्टरवय स्तर रर यि वहसा का प्रयोत सुषष व्यवक्तयों को समासे करने के वलए होता ह,ै ु ं ं ं वकत ि्ह रर अवधक र्विाद अवहसा को ीन्म दते े ह इस त्य को ीानने के बिीद हम वहसा रर सुष ष ु ू ं ं ं ं ि र्विादों को हल करने हते र्रोसा कर लेते ह हालावक यह र्व सच ह ै वक आधवनक यत की ीवटलताए ु ु ु ं ं मानि सतठनों म तकनवकी प्रतवत रर मानि मन रर लतातार बढ़ते दबिा के चलत े मानिवय अन ि्रों म ु ं विवर्न्न स्तरों रर सुषष तो रैदा होते हव ह, वकत यह आिश्यक नहीं ह ै वक हम विनाककारव यि म ु ु ं ं अवनयवरत वहसा को मानि ीविन का सामान्य वहस्सा मान ले ताधवीव के कावत के प्रवत ष्वसको म ं ं ं ं उनके सत्याग्रह, सत्य, अवहसा, ि साधन-साध्य म नैवतक सबधों को ध्यान म रखकर अतर हम ितषमान ं ं ं वस्ावतयों की ऱा ताल कर ते तो ीान राएत े वक मानि आचर म रकरितषन लाकर विश्व को सुषष ि ं ं र्विादों से बचाया ीा सकता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय

127 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ृ इकाई 5- क्तिीदद कष्टणमूर्त और का क्ति क्तिक्ा ु 5.1 प्रस्तिाना 5.2 उद्दश्े य 5.3 विश्व म अकावत का कार ं 5.3.1 डर रर सर्ा की चाह ु 5.3.2 धम ष रर वनर्षरता 5.3.3 विचारधारा रर बा्य सस्ाओ रर वनर्षरता ं ं 5.4 विश्व-कावत 'व्यवक्ततत वीम्मेदारव' ह ै ं 5.5 कावत स्ारना म वक्ा की र्वमका ू ं 5.6 साराक ं 5.7 क्दिालव 5.8 सदर्ष ग्रा सचव ताा सहायक /उरयोतव राठय सामग्रव ू ं ं 5.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 5.1 प्रस्तावना ा वीद्द कष्ट मवतष का ीन्म 11 मई 1985 म दव् ारत के एक छोटे से कस्बे मदन्लव म हआ डीक्टर ृ ू ू एनव बेस ट, अध्् वायोसोवरकल सोसायटव, ने कष्ट मवतष को बचरन म हव तोद ले वलया ाा डीक्टर ृ ू एनव बेस ट ि अन्य व्यवक्तयो ने ुोष ा की, वक कष्ट मवतष र्विष्टय म विश्वतरु बन त े ताा विश्व को एक नई ृ ू ु राह वदखाएते इसके साा हव विश्व को इस वक्क हते तैयार करने के वलए रि ष म 'आडषर ऑफ़ द स्टार' ु ू ं नाम का सतठन बनाया तया ताा कष्ट मवतष को इसका अध्् बनाया तया ृ ू ं हालावक 1929 म कष्ट मवतष ने स्ि इस सतठन को र्त कर वदया ताा इस सतठन के वलए दव तई ृ ू ं ं ं ं ं अनदान रावक ि सरवत्त को िरस कर वदया इसके रश्चात ि े लतर्त अतले 60 िषों तक दवनया की यारा ु ं ु करते रह े रर ब़ा व सर्ाओ म ताा व्यवक्ततत रूर से लोतों से मानि ीावत म एक क्रावतकारव रकरितषन की ं आिश्यकता

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindi.economictimes.com/wealth/tax/if-y… id: **158**

के बारे म बातचवत करते रह े कष्ट मवतष िवै श्वक स्तर रर एक महान वक्क ि विचारक मान े ीाते ह हालावक उन्होंने वकसव धम ष के ृ ू ं दकनष का विस्तार

नहीं वकया वरर र्व दवै नक ीविन सबवधत विषयों रर दाकवष नक ष्वसको से विचे न ं ं वकया ह ै वीसम उन्होंने दवै नक ीविन की समस्याए, आधवनक समाी म वहसा ि ्साचार के साा रहन े ु ं ं की समस्याए, व्यवक्तयों की 'सर्ा' ि 'चाह' सबवधत मद्द े ताा मनष्टय द्वारा अरने आतकरक बो ि र्य, ु ु ु ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 128 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 तस्सा, चोट, दःख इत्यावद) से मक्त होने ीसै े कई मद्द े कावमल वकए ह उन्होंने मनष्टय के मन की ु ु ु ु ु कायषप्र ालव को तहन तरवके से विश्लेवषत वकया ह,ै रर बताया ह ै वक हम दवै नक ीविन म तहन ध्यान ि आध्यावत्मक त ित्ता लाने की आिश्यकता ह ै ु कष्ट मवतष वकसव र्व धावमकष सतठन, सप्रदाय, रीनववतक, िचाकरक

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… id: **159**

विचार के समह के सदस्य नहीं रह े ह ृ ू ू ं ं बल्क ि े कहते ह वक ये सब सतठन मनष्टयों को विर्ावीत करते ह ताा यि ि सुषों को ीन्म दते े ह इस ु ु ं ं इकाई म आर उनके इन विचारों का विस्तार स

े अध्ययन कर त कष्ट मवतष का कावत का ष्वसको ृ ू ं सकारात्मक एि रचनिाादव ह, क्योंवक िह 'प्रसन्नता', 'स्िास््य', 'स्ितरता', ि 'सीनात्मकता' आवद की ृ ं ं बात करते ह यह सम्र ष मानि ीावत के उद्दश्े यों को ररा करते हए मानिता म सधार का रास्ता वदखात े ह ू ू ु 5.2 उद्दश्े य इस इकाई को रढ़ने के बाद आर:- 1. ितषमान िवै श्वक रकरष्ट्य म अकावत के म्य कार ों को ीान राएत े ु ं ं 2. कष्ट मवतष द्वारा प्रवतरावदत कावत वक्ा सबधव विचार ीान राएत े ृ ू ं ं ं ं 3. कावत के सदर्ष म आर 'व्यवक्ततत वीम्मदे ारव' के महत्ि से अितत होंत े ं ं 4. कष्ट मवतष द्वारा प्रवतरावदत 'सहव वक्ा' के सप्रत्यय को समे राएत े ृ ू ं ं 5. कावत लान े म वक्ा ि वक्कों की र्वमका से रकरवचत होंत े ू ं 5.3 क्तवनाश्व म ति्क्तत का कार ें कष्ट मवतष कहते ह वक आी हमने एक रर तकनवकी स्तर रर बहत तरक्की रा लव ह,ै वकत सभ्यता के ृ ू ु ं इस मो़ा रर र्व हम मानिवय सबधों के स्तर रर कछ खास बेहतर नहीं कर राए ह कष्ट मवतष कहते ह वक ृ ु ू ं ं हमने तकनवकी ीानकारव हावसल कर लव ह,ै वकत तकनवक विनाक का साधन बन तई ह ै रर उसका ु ं उदाहर विश्व म हो रह े यि ह, आी हम ररमा का विखडन करना ीानते ह वकत उसका उरयोत मानि ु ु ु ं ं ीावत के विनस विनाक म कर रह े ह आी हम तकनवक द्वारा अनी का \ उत्रादन कई तना बढ़ा सकते ह ु वरर र्व विश्व म वदन-ब-वदन र्खमरव से मरने िालों की स्या बढ़ रहव ह ै िवै श्वक स्तर रर कोष , द्वद्व, ु ं ं सुष ष लतातार बढ़ रह े ह रर मानि ीविन म तनिा, द्वषे , कटता, रर ु ा बढ़तव ीा रहव ह ै ृ ु ं कष्ट मवतष के अनसार ितषमान विश्व सकट को समेने हते यह आिश्यक ह ै वक हम यह ीाने वक यह सकट ृ ू ु ु ं ं आया कै से होता उनका तकष यह ह ै वक यह स्रस रुर से हमारे तलत म्यों हए सबधों वीनम व्यवक्तयों ू ं ं सरवत्त ताा विचारों के साा सबध कावमल ह, का रकर ाम ह ै एक अन्य सर्ावित कार हमारे प्रर्ा रर ु ं ं ं ं वनर्रष ता र्व ह ै क्योंवक ीब हम प्रर्ा/प्रावधकार का रालन करते ह तब हम के िल र्य ि अनरूरता ु ु उत्रन्न होतव ह ै ीसै े हव हम वकसव विचारधारा विश्वास या वनयम-कानन या विधान को मानकर उसके ू अनरूर व्यिहार करते ह तो यह प्रवक्रया अवधनायकिादव राय की क्ररता ि सतवठत धमष की मताधता ु ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 129 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 को आते बढ़ान े म सहायक हो ीाते ह ै विवर्न्न विश्वास एि विचारधाराए ि सतवठत धमष हम हमारे हव ं ं ं ं ़ा ोवसयों से अलत कर रह े ह अतः सुषष न के िल विवर्न्न समाी म हव राया ीा रहा ह ै अवरत एक ु ं समाी के विवर्न्न समहों म र्व राया ीाता ह ै ू कष्ट मवतष के अनसार राष्टरवयता, धम,ष ीावत इत्यावद विर्ीन हम म लतातार दरव को बनाए रखता ह,ै ृ ू ु ू रर रकर ाम-स्िरुर हम म से कोई र्व यह मलर्त बात वक अततः हम सब मानि ह,ै रर अलत नहीं ह,ै ू ू ं समे नहीं राते ह कष्ट मवतष के अनसार 'मानिता की ीातरुकता' हम सब म राई ीातव ह ै उनके अनसार ृ ू ु ु व्यवक्तत्ि एक लिा हो सकतव ह,ै मनो्ाविनक स्तर रर हम सब (िवै श्वक स्तर)एक ीसै ह ू कष्ट मवतष के अनसार यि हमारे दवै नक ीविन का विनाककारव प्रिर्ा ह, रर ीब तक हम अरनव ृ ू ु ु रोीमराष की वीदतव को नहीं बदल ते कोई र्व कानन, बाहरव वनयर या प्रवतबध यि को नहीं रोक सकते ू ु ं ं ं ह ि े कहते ह वक कोई र्व बाहरव कानन/ वनयर यि को नहीं रोक सकते ह ि े रहले हमारे अदर से रोके ू ु ं ं ीाने चवहये हम खद से यह रछना चवहये वक क्या हमारे मन म रर हमारे हृदय

म कावत ह?ै क्या हमारव ु ू ं दवै नक ीविन-कलै व द्वद्व रवहत ि कावतर ष ह?ै क्या हम यह मानते ह वक यह के िल सरकारों द्वारा ीारव ू ं ं वकए तए विधान म या काननों द्वारा हव लात की ी सकतव ह?ै ू ू उनके अनसार मानि प्रीवत के प्रारर् से हव हमे कावत की प्रावसे नहीं हई ह ै मनष्टय ने कावत हते बहत सारव ु ु ु ं ं ं सस्ाए र्व स्ावरत की ह वकत आी र्व िह इन यि रोककर कावत की स्ारना को नहीं कर राया ह ै ु ु ं ं ं ं कष्ट मवतष कहते ह वक स्िय की तहरव समस्या से करू होने िालव कावत के वलए सरकारों रर वनर्रष करना, ृ ू ु ं ं सतठनों रर सत्ता अवधकाकरयों से आका करना रर अवधक व्यारक द्वद्व को रैदा करना ह ै ं ं कष्ट मवतष के अनसार यवद हम ितषमान रकरवस्ावतयों म रकरितषन चाहते ह, तो हम रहले अरने म रकरितषन ृ ू ु लाना होता यानव वक हम प्रवतवदन के ीविन म अरनव वक्रयाओ, विचारों रर िरानाओ के प्रवत ं ं ीतरूक होना होता कष्ट मवत ष तो यहा तक कहते ह वक िास्ति म हम सब कावत चाहत े हव नहीं, हम ृ ू ं ं कोष का अत र्व नहीं करना चाहते हम नहीं चाहते वक हमारव लोलरता म कोई बाधा रडे या ितषमान ु ं सामावीक ढाच े के आधारों म रकरितषन वकया ीाए ि े कहते ह वक हम म से अवधकतर लोत नहव चाहते ं वक आमलचल रकरितषन आये, हम चाहते ह वक िस्तए ीसै व ह ै िसै व हव रह,े हमारे अनसार रर हमारे ु ू ु ु लार् के अनसार ोडे रकरितषन के बाद ि े िसै े हव बनव रह े रर इसव कार कवक्तकालव रर धतष व्यवक्त ु ू वनवश्चत हव हमारे ीविन रर कासन करते रहत े कष्ट मवतष के अनसार कावत वकसव विचार प्र ालव से रैदा नहीं होतव ि ह कानन रर आवित नहीं होतव, ि ह ृ ू ु ू ं तर्व सर् होतव ह ै ीब व्यवक्त के रूर म हम स्िय अरनव मनोिवनक प्रवक्रया को समेने लतते ह ं ं कावत स्ावरत करने के वलए यवद हम व्यवक्ततत रूर से कायष करने के वलए अरने दावयत्ि से बच कर ं वकसव नई समी-व्यिस्ाा की प्रतव्ा कर त े तो हम उन उस व्यिस्ाा के के िल दास बनकर रह ीाएत े ं ं 5.3.1 डर और सरक्षा ेी ाि ह ु कष्ट मवतष के अनसार सख-सविधा की खोी म हम ीविन का कोई कात ि न्यनतम द्वि िाला कोना ृ ू ु ु ु ू ं ं खोी लेते ह रर वरर हम उस कोने से बाहर वनकलने, नये अनर् करने, सुष ष करने ि ीविन म ु ं ररव् करने म डर लतता ह ै सा हव हम सत्ता, रररा ि आस-रास के ितिार के सामने ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 130 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 आत्मसमरष कर दते े ह , रर उसका अनकर करने लतते ह मनष्टय को इस अनबधन से मवक्त की ु ु ु ु ं आिश्यकता ह ै तर्व ि े कावत की ओर ी सकते ह मनष्टय सदै हव स ा की चाह रखता ह ै वकत क्या ु ु ु ं ं यह स ा बाहर तत्ों या ताकतों द्वारा राई ी सकतव ह?ै कष्ट मवतष के अनसार सबधों म स ा हव मल ृ ु ू ु ु ू ं ं स ा ह ै उनके अनसार यादा दर तक रहचने के वलए हम रास से करुआत करनव होतव, हम अरने ु ु ु ं ू सबधों को अरने सबवधयों अरने ऱा ोवसयों के साा सधारन े की आिश्यकता ह ै उनके अनसार हमारव ु ु ं ं ं ं मनःवस्ावत बा्य कायदे, काननों, ि सरकारों इत्यावद से अवधक महत्ि ष ह ै कष्ट मवतष रछते ह क्या ृ ू ू ू ू हमारव ीविनकलै व म कावत ह ै या यह के िल सरकारों द्वारा ीारव वकए तए काननों द्वारा हव लात की ी ू ू ं सकतव ह?ं ि ह कहते ह वक मे े डर ह ै वक हम म स े अवधकतर लोतों के वलए कावत कानन व्यिस्ाा स े ु ू ं सबवधत मद्दा ह,ै रर हमम से कोई र्व मन ि हृदय की कावत को लेकर वचवतत नहीं ह इसववलए विश्व म ु ं ं ं ं कावत सर् नहीं हो रायव ह ै दवनया म कावत (आतकरक रर बा्य) तब तक सर् नहीं ह,ै ीब तक हम ं ं ं ं ं ं ु महत्िाका्व ह, हम प्रवतस्रधी ह ीब तक हम स्िय इस खोखलव अवस्मताओ का वककार बने हए ह ी ं ं ं स्िय को एक ीमनष /एक वहद/ एक रूसव/ या एक अग्री मानने ि इस दवनया म म कछ या कोई बनने को ु ं ं ं ू ु आतर रहतव ह ै हमारव इन अवस्मताओ के चलते हमारा मवस्तष्टक अनबवधत िकवडश्न्ड)रहता ह,ै रर हम ु ु ं ं ं ररम्रा, धम,ष ीावत, समदाय इत्यावद के अनरूर कायष करते ह ि े कहते ह वक हम इन अनबधनो को ु ू ु ं समेकर इनसे बाहर आने की ीरुरत ह ै कष्ट मवतष के अनसार कावत तर्व सर् ह ै ीब व्यवक्त इन सब ृ ू ु ं ं बातों को समेता ह ै रर इस '्स समी' म सरलता हावसल करने की दश्ा ि स्ाष से ररे हो ीाता ह ै 5.3.2 धें ब पर न् भबरि ीसै ा के ँरर चवचषत वकया तया ह ै वक मनष्टय विवर्न्न सविधाओ से अनबवधत होता ह ै रर उसके ु ु ु ं ं अनरुर कायष करता ह ै धमष इन्हव अवस्मताओ म महत्ि ष अवस्मता ि अनबधन ह ै ी व्यवक्त विकेष के ु ू ु ं ं दवै नक ीविन के व्यिहार को प्रारावित/ वनवश्चत करता ह ै कष्ट मवतष कहते ह वक धम ष कावत का ोत नहीं ृ ू ं बन सकते चवक धम ष विचारों द्वारा वनवमतष होते ह, अतः विश्व को र तष ा म समेने म हमारव मदद नहीं कर ू ू ं सकते, रर अलति का ोत बनत े ह उनके अनसार विचार हमारे अनर्रों का रकर ाम होते ह ताा ु ु व्यवक्ततत अनर्रों की सवमा राई ी सकतव ह ै अतः विचार सदै सवमाबि होते ह रर ये सवमाबि ु विचार वीस र्व धमष को ीन्म दत े ि ो विश्व की र ष समे नहव रख सकते, रर ि े अलति को ीन्म दते े ू ह कष्ट मवतष के अनसार र्शवतक रकरितषन के बीाय हम दवै नक ीविन की तवतविवधयों म आमलचल ृ ू ु ू ू रकरितषन करन े की ीरूरत ह ै वबना इन आमलचल रकरितषनों के विश्व म यि को समासे नहीं वकया ी ू ू ु सकता 5.3.3 न्रिारधारा और ाह्य सस्ाओ पर न् भबरि ां ां कष्ट मवतष के अनसार के िल स्िवै च्छक कायष हव नैवतक रर उवचत कायष होते ह रर के िल िहव मनष्टय के ृ ू ु ु वलए सख रर कावत ला सकत े ह, ी कायष हम बाहरव दबिा से करते ह ि े कावत नहव ला सकते हम ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 131 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वकसव विकेष रीनववतक या धावमकष समह के सदस्य ह, हम इस दके के ह या हम उस दके के ह, ऐसा ू बार-बार कहना हमारे अहकारों को बढ़ाा दते ा ह,ै रर हम ब्रारे की तरह रला दते ा ह ै रर यह तब ु ु ं तक ीारव रहता ह,ै ीब तक हम अरने दके ीावत अाा विचार प्र ालव के वलए मरने रर मारन े के वलए तैयार नहीं हो ीात े यह सब वकतना मखतष ार ष रर अस्ि ाविक ह ै राष्टरवय रर सिावतक सवमाओ की ू ू ं ं अरे मनष्टय वनवश्चत हव कहीं अवधक महत्ि ष ह ै ु ू राष्टरिाद रर र्व क़ा ा प्रहार करते हए ि ह कहते ह वक राष्टरिाद िलव ितीकर की ि ाना आत की तरह विश्व म चारों ओर रै ल रहव ह ै अवधकावधक

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **160**

विस्तार, व्यारक अवधकार रर समवि चाहने िाले लोत ृ राष्टरर्वक्त का सिधषन करते ह, रर ब़ा व धतषता से इसका इस्तेमाल करते ह हमम से प्रत्येक व्यवक्त इस ू ं प्रवक्रया म ंरात लेता ह ै क्योंवक हम र्व इन िस्तओ की अवर्लाषा ह ै दसरे दके ों रर र्वीय हम के िल ु ं ू अरने माल के वलए हव नहीं बव्क अरनव रीनववतक रर धावमकष विचार प्र ावलयों के वलए र्व एक नया बाीर उरल्ध करातव ह ै िह कहते ह वक हम वहसा ताा िह मनष्टय की इन सर्व अवर्व्यवक्तयों को ु ं रिाषग्रहरवहत होकर दखे ना चावहए, यावन एक ऐसे मन से ाी वकसव राष्टर, ीावत या विचार प्र ालव के साा ू अरना तादात्म्य नहीं करता, बव्क ाी कछ सत्य ह ै उसका रता लताने का प्रयत्न करता ह ै चाह े सरकार ु हो विकेष् हो या कोई विद्वान वकसव की र्व वक्ाओ अिधार ाओ के प्रिि्रा म न आकर हम हर िस्त ु ं ं को सार सार दखे ने म अवधक आनद आता ह ै ं कष्ट मवतष राष्टर सु (यनाइटेड नेकन) ीसै व सस्ाओ रर र्व तहरा प्रहार करते हए कहते ह वक हमारव ृ ू ू ं ं ं ितषमान सामावीक सस्ाए विश्व सु म विकवसत नहीं हो सकतव क्योंवक उनका आधार हव दोषर ष ह ै ू ं ं ं राष्टरवय प्रर्ति िए समह के महत्ि को बढ़ाा दने े िालव सस्ा रर वक्ा प्र ालव कर्व र्व यि का अत ु ू ु ं ं ं नहीं कर सक तव कासक रर कावसत के रूर म व्यवक्तयों के अलत-अलत समह यि की ाी ह ै ीब तक ू ु मनष्टय मनष्टय के बवच करश्त े म हम कावत कायम नहव कर त े तब तक कावत सम्र्ि नहव ह ै ु ु ं ं 5.4 क्तवनाश्व-िक्त् त 'व्यक्तिगत क्तजम्मदारी' ह ै े कष्ट मवतष के अनसार के िल कावतर ष मन, ाी स्ि्य को समेता ह,ै िहव मन दवनया म कावत ला सकता ृ ू ु ू ं ं ं ु ह ै दवनया म व्यासे अकावत हए र्यिों को समासे करने का रास्ता कष्ट मवतष के अनसार स्ि्य के आतकरक ृ ु ू ु ं ं ं ु द्वदों रर स्ि्य से यि को समासे करने के रास्त े से हव होकर ीाता ह ै दवनया म व्यासे अकावत दख ि र्यिों ु ु ं ं ं ु ु को तब रोका ाी सकता ह,ै ीब व्यवक्त विकेष मानि ीावत के ँरर इन के खतरों को महसस कर अरनव ू वीम्मदे ारव महसस कर , न वक इस े दसरों रर डाल द ू ू ीब तक व्यवक्त इनस े स्ि्य को रवऱा त महसस नहीं करेता, तब तक िह तत्काल कायषिाहव की ीरूरत र्व ू ं महसस नहव करेता, रर तरत कायषिाहव को स्ावतत नहीं करेता तर्व िह स्ि्य को बदलेता कावत तर्व ू ु ं ं ं आएतव ीब व्यवक्त स्ि्य कावतर ष होता ीब िह अरने रास ऱा ोस के साा कावतर ष सबध स्ावरत ू ू ं ं ं ं ं करेता कष्ट मवतष कहते ह वक हम कावत के कायष को दसरों रर छो़ ने की बीाय स्ि्य से करुआत करनव ृ ू ु ं ं ू होतव अतः दवनया म कावत लान े के वलए रर यि की समावसे के वलए व्यवक्त विकेष म आतकरक क्रावत ु ं ं ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 132 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 होनव आिश्यक ह ै कष्ट मवतष कहते ह वक कछ समी वि्रानव ि वसितकार कावत हते समी म आवाषक ृ ू ु ू ं ं क्रावत ि समानता की रैरिव करते ह, वकत इनका का मत ह ै वक व्यवक्ततत आतकरक क्रावत के वबना ु ं ं ं ं आवाषक क्रावत अाषहवन ह ै क्योंवक र्ख उन आवाषक रकरवस्ावतयों की उरी ह,ै ाी हमारव मनी्ावनक ू ं रकरवस्ावतयों ीसै े लालच ईष्टया ष बरे स्ि्रिा से उत्रन्न होतव ह ै अतः दखों, र्ख,ि यि की समावसे हते ु ू ु ु ु मनी्ावनक क्रावत होनव चावहए ं कष्ट मवतष इस बात रर ीार दते े ह वक व्यवक्त विकषे का समी के प्रवत उत्तरदावयत्ि राया ीाता ह ै िह ृ ू अरने विद्यावाषयों को कहते ह 'आर हव समी ह'ै रर आरके कायष हव समी के कायष है व्यवक्त विकेष के कायष अन्य व्यवक्तयों के कायों को प्र्रावित करते ह िह कहते ह वक कावत के समे स्ि्य की समे के ं ं साा करू होतव ह ै स्ि्य की समे वीसम हमारे विचार ि कायष कावमल ह उनके अनसार वकसव र्व ु ु ं बदलिा हते मनष्टय का आतकरक निवनवकर होना आिश्यक ह ै ू ु ं हमारे बा्य ीतत म रकरितषन लान े की रहलव कतष स्ि्य म बदलिा करने की ह,ै वीसके वलए हम दवै नक ं ीविन म स्ि्य के कायों, विचारों एि ि्रानाओ को समेना आिश्यक ह ै कष्ट मवतष के अनसार कावत ृ ू ु ं ं ं ं वकसव विचारधारा द्वारा लात नहीं की ाी सकतव ह ै न हव वकसव कानन रर आधाकरत होतव ह ै यह के िल ू ू तर्व सि्र होतव ह,ै ीब हम सब व्यवक्त अरने मनी्ावनक प्रवक्रयाओ को समेने लत े यवद हम इस रर ं ं व्यवक्ततत वीम्मदे ारव को नहीं समेत े, रर वकसव बाहरव व्यिस्ाा का इतीार कर ते, तो वरर हम उस ं व्यिस्ाा की दासता करनव ऱा ेतव 5.5 ि्रक्तत ला े म क्तिक्षा की ंरू्क्तमका ें ितषमान म ीब से कावत वक्ा की विद्यालयों म आिश्यकता एि अध्यारक वक्ा कायषक्रम म इसे ं ं कावमल वकए ीाने की बात की ीातव ह,ै तो कष्ट मवतष के विचार इस सदर् ष म वक्कों को छारों के प्रवत ृ ू ं सिदे नकवल बनाने म अवधक प्रासवतक हो ीाते ह उन्होंने अरने सर ष ीविन इस बात की वहमायत की, ू ं ं ं की वक्ा आतकरक रकरितषन ि व्यारक स्तर रर समी म रकरितषन लाने का अवर्कारिक बन सकतव है ं कष्ट मवतष के अनसार वक्ा एक ऐसव नवि का कायष कर सकतव ह,ै वीसरर समी अरना वनमाष कर ृ ू ु सकता ह ै िह कहते ह वक ितषमान वक्ा दवनया की समस्याओ को समेने रर व्यवक्तयों को इन ं ु समस्याओ का सामना करने हते तैयार करने म विरल रहव ह ै कयोंवक ितषमान वक्ा के उद्दके य रर ु ं वक्ायव व्यिस्ाा दोनो हव रवतर ष ह ु ू कष्ट मवतष कहते ह अतर हम लोतों को के िल कावबल ईीवनयर, प्रवत्राकालव ि्ावनक, स्म प्रकासक ृ ू ं रर ककल कारवतर बनाने के वलए वकव्त कर रह े ह, तो ऐसव वक्ा कोषक रर कोवषत के बवच की ु /दरार कर्व खत्म नहीं कर सके तव रर हम यह दखे सकते ह वक हमारव ितषमान वक्ा प्र ालव मनष्टयों के ु बवच ी बैर रर विद्वषे रैदा करने िाले तमाम कार ों को बनाए रखतव ह ै यह उन रर सिाल नहव करतव, यह विध्यवाषयो को उन रर स्ितर वचतन रर राय बनाने के मशके र्व नहव दते व ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 133 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ि े रछते ह वक क्या वक्ा म सैवनक प्रवक् का कोई स्ान ह?ै यह सब इस बात रर वनर्रष करता ह ै वक ू हम अरने बच्चों को वकस प्रकार का मनष्टय बनाना चाहते ह कष्ट मवतष कहते ह वक यवद हम उन्ह एक ृ ु ू ककल हत्यारे बनाना

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.slideshare.net/slideshow/bharat-me… + 2 resources! id: **161**

चाहते ह तो सैवनक प्रवक् ीरूरव ह ै यवद हम उन्ह अनकावसत करना चाहते ह, ु ु रर उनके मन को वनयवरत करना चाहते ह,

यवद हमारा लक्य उनको राष्टरिादव बनाना ह ै रर इस प्रकार ं सर ष समाी के वलए तरै वीम्मदे ार बनाना ह ै तो यह काम हव ह ै वक िह यि की योीनाए बनाए रर उन्ह ू ु ं ं लात कर लेवकन अतर हम कावत चाहते ह, हम चाहते ह वक बच्चे समवन्ित, र ष मनष्टय बने तो उन्ह े एक ू ू ु ं अलत तरह की वक्ा दने व होतव ऐसव वक्ा को ाि 'सहव वक्ा' का नाम दते े ह उनके अनसार वक्ा ु सहव वक्ा िह होतव ीा बच्चो म: □ दसरों के वलए सम्मान का ष्वसको विकवसत करे ू □ सिदे नकवल मनष्टयों

Plagiarism detected: **0.05%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **162**

का विकास करे ु ं □ सीनष ात्मक मनष्टयों का विकास करे ु □ सर ष मनष्टय का विकास करे ू ु ं □ स्िय को समेने म मदद करे ं □ स्िय को समेने म मदद करे ं □ दसरों के साा सबधों को समेने म मदद करे ं ं ू □ सहव सबधों का विकास करे ं ं बच्चे रकरिार ि रास रडोस से बहत सारे अलतिाादव रर ्ामक म्यों को राते ह, विद्यालय र्व इन ू अलतिाादव अवस्मताओ को बनाए रखता ह,ै रर िह उन रर प्रहार नहीं करता बच्चे की सहव ढत से ं ं ररिकरक के वलए इन मखतष ार ष रिाष्ग्रहों को दखे ने ि समेने की ष्वस उसम रैदा करने के वलए हम उनके ू ू ू बहत हव वनकट आना होता बच्चे का वबना वकसव रिाष्ग्रह के विकास हो सके , इसके वलए रहले हम ू अरने अदर के सारे रिाष्ग्रह को तो़ा ना होता रर वरर अरने रकरिके के रिाष्ग्रहों को तो़ा ना होता हम ू ू ं बच्चों से बातचवत करनव होतव रर उनम बविमत्तार ष रकरचचाषओ को सनने का मशका दने ा होता उन ु ू ु ं रकरचचाषओ म रहले से हव मशीद खोीबवन ताा असतोष की ि्राना को प्रोत्साहन दने ा होता रर इस ू ं ं प्रकार सच रर ेठ की ररख करने म उनकी मदद करनव होतव ू कष्ट मवतष कहते ह वक लतातार असतोष से हव सीनकवल प्र ा आतव ह,ै लेवकन खोीबवन रर असतोष ृ ृ ू ं ं को ीताए रखना बहत कवठन होता ह ै रर यादातर माता-वरता रर वक्क यह नहीं चाहते वक उनके बच्चों म इस प्रकार की प्र ा का विकास हो, क्योंवक ऐसे वकसव व्यवक्त के साा रहना ब़ा ा हव असविधीनक होता ीा मान्यता प्रासे म्यों को हमके ा चनशतव दते ा ह ै ि कहते ह वक बचरन से हम ु ू ु सर्व म असतोष होता ह ै लेवकन द ाष्ग्य से हमारा सतोष धवरे हव कवघ्र हव मरेा ीाता ह ै रर दसरों की ु ं ं ु ू नकल करने की हमारव प्रिवत्त रर प्रर्ति की रीा से ि दब ीाता ह ै ृ ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 134 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ि वक्ा के ँरर सरकारव वनयर वकसव को र्व एक विरवत्त के तशर रर दखे ते ह उनके अनसार ीब ु ं तक वक्ा राय या सतवठत धम ष की दासव ह,ै तब तक विश्व म कावत व्यिस्ाा की कोई उम्मवद नहीं की ं ं ीातव ह ै ि े क़ा े क्दों म कहते ह वक अवधकाक सरकार बच्चों को ताा उनके विष्टय को अरने की म ं ले रहव ह रर यवद कहीं सरकार वनयर नहीं चाहतव तो िहा धावमकष सतठन ह, ीा वक्ा को अरने ं ं ं की े म लेना चाहते ह ि कहते ह वक रीनववतक या धावमकष वकसव र्व तरह की विचारधारा के अनकल बनने के वलए बच्चे के मन को सस्कारबि करने का अाष ह ै मनष्टय- मनष्टय के बवच डर रैदा ु ू ु ु ं ं करना स्रधाषरत समाी म ाईचारा हो हव नहीं सकता कोई र्व सधार, या अवधनायकिाद, या वक्ा ु प्र ालव ऐसे समाी म बधत्ि की ि्राना नहीं ला सकतव ु ं मशीदा विश्व सकट से वक्ा का ुवनष्ठ सबध ह ै रर ीा वक्क इस ि वै श्वक दव्यषिस्ाा के कार को ू ं ं ं ु दखे ता ह ै उसे अरने से यह प्रश्न करना चावहए वक छार म इस बवि को कै से ीताया ीाय रर वकस प्रकार ु आने ालव रवढ़व को रर अवधक ुोर विनाक रैदा करने से रोका ीाए? वक्कों को उवचत प्रकार के रकरिके का सीन करने म ताा ीविन बोध का विकास करने म अरनव समस्त विचार-वक्रया, समस्त ृ साधावनया ताा समस्त प्रेम को लता दने ा चावहए तावक िह बच्चा रकररक्ि हो, िह समस्याओ का ं ं विके र ष ढत से सामना कर सके ररत ऐसा करने के वलए यह आिश्यक ह ै वक वक्क विचार ू ु ं ं प्र ावलयों व्यिस्ाा रर विश्वासों रर वनर्रष रहने की बीाय स्िय अरने को समे े ं ि े कहते ह वक वक्ा के ्ेर म र्व ऐसे लोतों की आिश्यकता ह,ै वीनम सहानर्वत ताा प्रेम हो, वीनके ु ू हृदय खोखले क्दों से यह मन की क्रनाओ से रे न हो अतर ीविन का अाष ह ै खकव से ीवना, ु ं समेदारव के साा वमलकर ीवना रर अतर हम ऐसा सच्चा प्रबि समाी बनाना चाहते ह तो हमारे रास ु ऐसे वक्क अिश्य होने चावहए वीनम मानिवय अखडता का बोध हो रर उस बात को ि बच्चे तक ं रहचाने म कावबल हो ं 5.6 सारि् इस इकाई म आरने कष्ट मवतष के कावत वक्ा सबधव विचार ीान े आर यह ीान राए होंत े वक कष्ट मवतष ृ ृ ू ू ं ं ं कावत स्ारना म व्यवक्त विकेष की वीम्मदे ारव को रेखावकत करते हए उसे मानिता के सदर् ष म व्यिस्ाा ं ं ं लाने का महत्ि र ष वबद बतात े ह ि े धमष, सरकार, राय, ि अन्य बाहरव सस्ाओ को मानि ीावत म ू ं ं ं ु अकावत रै लाने म ताा उसे बरकरार रखने का दोषव मानते ह कावत के सदर् ष म र्व सहव वक्ा के विक्र ं ं ं रर चचाष करते हए कहते ह वक सहव वक्ा व्यवक्त विकष म रिाष्ग्रह से मक्त ि स्ितर खोीव प्रिवत्त को ृ ू ु ं बढ़ाा दने े िाले मन ताा सीनकवल प्र ा विकवसत करने म सहायक होतव ह ै रर ऐसे व्यवक्त का मन डर ृ ि अनरूरता से दर होता अततः कावत म होता रर विश्व म कावत लान े म सहायक होता ु ं ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 135 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5.7 ि्दावनाली 1. अन्ध ायेनादायि: एक ऐसव रीनववतक व्यिस्ाा ह ै वीसम राय के रास सर्व अवधकार होते ह, िह सिीष वनक रर वनीव ीविन के हर रहल को विवनयवमत करने का प्रयास करता ह ै ू 2. पनाबग्रह: एक व्यवक्त के प्रवत उसकी वकसव एक समह के साा सबिता के आधार रर अन्य ू ू ं व्यवक्त की ि्राना रिाष्ग्रह होतव ह ै रिाष्ग्रह सामावीक सदर्ष म र्दे ि्रा का कार बनते ह ू ू ं 5.8 सद् र् य ग्रथ सची तथा सहायक राठ्य सामग्री ू 1. कष्ट मवतष, ी.े ि2005) वक्ा एिम ीविन का तात्रयष, कष्ट मवतष राउन्डेकन इवडया, रीाुट ृ ृ ू ू ं रोटष िारा सव 2. कष्ट मवतष, ी.े (2007) वक्ा सिाद, कष्ट मवतष राउन्डेकन इवडया, रीाुट रोटष िारा सव ृ ृ ू ू ं ं 3. http://www.jkrishnamurti.org/worldwide-information/foundations.php, accessed on 20/02/2017 4. http://voiceseducation.org/content/jiddu-krishnamurti-peace-our-time accessed on 20/02/2017 5.9 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. चचा ष कीवीए की कावत हते सरकारों रर राए बाहर सस्ाओ रर वनर्रष ता के क्या- क्या खतरे ह? ु ं ं ं 2. कष्ट मवतष द्वारा विश्व कावत के सदर्ष म व्यवक्त विकषे की वीम्मदे ारव रर चचा ष कीवीए ृ ू ं ं 3. ितषमान रकरष्टय म कष्ट मवतष के वक्ा सबधव

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… id: **163**

विचारों की प्रासवतकता रर उदाहर ों सवहत चचाष ृ ू ं ं ं कीवीए 4. विद्यालयों म कावत वक्ा के सदर्ष म वक्कों की क्या र्वमका ह ै विस्तार स

े समोइए ू ं ं 5. क्या सहव वक्ा द्वारा विश्व म कावत सम्र्ि ह?ै अरने उत्तर की रसव तकष दके र कीवीए ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 136 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 खण्ड 4 Block 4 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 137 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 1- न्याय और का क्ति : स क्तिनधा स घषय समाधा क साध क रूर म Justice and Peace: The Constitution as a means of Conflict-resolution 1.1 प्रस्तिाना 1.2 उद्दश्े य 1.3 न्याय 1.4 कावत ं 1.5 सविधान सुषष समाधान के साधन के रूर म ं ं 1.6 साराक ं 1.7 क्द िालव 1.8 अभ् यास प्रश्नों के उत् तर 1.9 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 1.10 वनबधात् मक प्रश्न ं 1.1 प्रस्तावना ा सम्र ष विश्व म ीब ीब उरि रर अकावत ह ै तो एक प्रश्न उठता ह ै वक यह उरि या अकावत वकस ू ं ं कार से ह ै हमारा दके र्व अछता नहीं ह ै र्ें हव हम स्ि य को एक कावत चाहने िाला दके मानते हों ू ं ं ररन्त वनत प्रवतवदन की यह ुटनाए ुँ ये स्रस करतव ह वक िास्ति म ऐसा नहीं ह ै विश्व म या दके म कावत ु ं के वलए आिश्यक ह ै वक सर्व को यह लत े वक उसको समान रूर से अिसर वदया ी रहा ह ै रर उनके साा न्याय हो रहा ह ै ारत की विकालता रर विविधता को दखे ते हए इसकी आिश्यता महसस की ू तयव वक एक ऐसा वनयम हो वीससे सर्व के व्यिहार को सचावलत वकए ीते हए सर्व का विकास वकया ं ी सके रर इसम कोई र्व अिमानना न हो ारतवय सविधान को एक ऐसे माध्यम के रूर म दखे ा ी ं सकता ह ै ी दके म न्याय रर कावत की स्ारना के वलए कत सक्र ह ै इस अध्याय म उन्हीं वबन्दओ ृ ं ं ं ु का ि नष वकया ीएता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 138 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 1.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उररात विद्याी ं 1. न्याय की सक्रना को स्रस करते हए इसकी आिश्यकता को बता सक त े ं 2. कावत की अिधार ा को स्रस कर सक त े ं 3. ारतवय सविधान के मशवलक अवधकारों का सामावी

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 2 resources! id: **164**

क न्याय रर कावत के स्ारना म एक ं ं कीव रूर म ि नष कर सक त े ु 4. ारतवय सविधान के विवर्न्न ारतों का न्याय रर कावत के माध्यम के रूर म व्याया कर ं ं सक त े 1.3 याय ारतवय सविधान म न्याय का तात्रयष सामवीक न्याय

से ह ै एक विचार के रूर म न्याय की सक्रना ं ं वकसव स्ान विकेष या दके विकषे म रहने िाले सर्व लोतों को को समान मानने की िकालत करता ह ै न्याय का यह मानना ह ै वक वकसव के साा सामावीक, धावमकष रर सास्कवतक रिग्रष षहों के आधार रर ृ ू ं र्दे ि्रा नहीं होना चावहए विकवसत हों या विकासकवल दके , दोनों हव तरह के दके ों म रीनववतक वसात ं के दायरे म न्याय की इस अिधार ा रर उससे ी व अवर्व्यवक्तयों काप्रमखता से प्रयोत वकया ीाता ु ु ह ै ारत म म सामावीक न्याय िवचत समहों की रीनववतक तोलबदव का एक प्रमख आधार रहा ह ै ू ु ं ं अ्रस्यक अवधकार, बहसस्कवतिाद, मल वनिावसयों के अवधकार आवद इसव तरह, नारविाद के दायरे ृ ू ं ं म वस्त्रयों के अवधका

Plagiarism detected: **0.05%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… id: **165**

रों को ल े कर र्व विवर्न्रस्तरों रर वसितवकर हआ ह ै रर स्त्रव-सकक्तीकर के ं मद्दों को उनके सामावीक न्याय से ी्ा कर दखे ा ीने लता ह ै ु माक्सष ने इन सर्व विचारों की आलोचना की रर ज़ोर वदया वक न्याय ीसै व अिधार ा की आिश्यकता रुँीविाद क

े र्वतर हव होतव ह ै क्योंवक इस तरह की व्यिस्ा म उत्रादन के साधनों रर क्ज़ा ू ीमाये कछ लोत बहस्यकसिहष ारा का कोष करते ह ु ं र्वमरि आम्बेडकर रर उत्रवत्र त ीावतयों रर समदायों के कई नेता समी के हावकये रर ु श्र व ीावतयों को वकव्त रर सतवठत होकर सुष ष करते हए अरने न्याय र ष हक को हावसल करने की ू ं ं विरासत रच चके ो इसव तरह रचास रर साठ के द कक म राममनोहर लोवहया ने इस बात रर ीर वदया ु वक वरछ्ा ों, दवलतों, अ्रस्यकों रर वस्त्रयों को एकीट होकर सामावीक न्याय के वलए सुष ष करना ु ं ं चावहए लोवहया चाहते ो वक ये समह एकीट होकर सत्ता रर नशककरयों म ँुँ चवीावतयों के िचषस्ि को ू ु चनशतव द इस रष्ठर्वम के साा न्बे के दकक के बाद सामावीक न्याय ारतवय रीनववत का एक प्रमख ृ ु ू ु नारा बनता चला तया इसके कार अर्व तक सत्ता से दर रह े समहों को सत्ता की रीनववत के क ि मआ ने ू ू का मशका वमला इनके अवतकरक्त कालातर म काकवराम् अरु ा रीय् मधे ा राटेकर् इरोम कवमलष ा ीसै े ं ं नाम विर्वन ्ेरों म न्याय स्ावरत करने की सक्रना से ी् े ु ं सामावीक न्याय के नारे ने विवर्न्र समीिं म विवर्न्र तबकों को अरन े वलए तकरमा मय वज़दतव ं की मुँत करने रर उसके वलए सुष ष करने के वलए प्रेकरत वकया ह ै सैिावतक विमक ष म र्व यटोवरयाई ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 139 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 समिीाद से लेकर ितषमान समय तक सामावी

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 2 resources! id: **166**

क न्याय म बहत सारे आयाम ी् ते तये ह यह र्व ु उ्लेखनवय ह ै वक विकवसत समीिं की तलना म विकासकवल समीिं म सामावीक न्याय का सुषबष हत ु ं ीवटलताओ से वुरा रहा ह ै अवधकाक मशकों रर इन समीिं म लोतों को सामावीक न्याय

के सुष ष म ं ं ं बहत ज़्यादा सरचात्मक वहसा रर कई मशकों ररराय की वहसा का र्व सामना करना श्र ा ह ै लेवकन ं ं ं सामावी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 2 resources! id: **167**

क न्याय के वलए चलने िाले सुषों के कार इन समीीं म बवनयादव बदलाि हए ह कल वमला ु ु ं करसमय के साा सामावीक न्याय के वसितवकर म कई नये आयाम ीा े ह रर एक सक्रना या नारे ु ं ं के रूर म इसने लम्बे समय तक ख़ामोक या नेर्य म रहने िाले समहों को र्व अरने के वलए ीातत वकया ृ ू ह ै अभ्यास रश्न 1. न्याय को रकर ारवषत कर 2. ारत म सामावीक न्याय के वलए प्रयासरत अग्र व नेताओ के नाम बताए ं ं 1.4 िाक्त् त कावत लोतों के बवच रर उनके र्वतर स्ितरता रर खकव का एक रकरचायक ह ै कावत का उद्दश्े य ररव ु ू ं ं ं दवनया म अवहसा् प्रेम रर ाई-चारा स्ाावरत करना ह ै यह एक ऐसा म्य ह ै वीसे दवनया का प्रत्येक ू ं ु ु व्यवक्त् प्रत्येक समदाय या राष्टर चाहता ह ै ियहाुँ आतवकयों की बात नहीं की ीा रहव ह)ै यह िह माध्यम ु ं ह ै समदाय या देक स्िच्छा से या कासन की एक प्र ालव के ीकरये इच्छा से सहयोत करते ह, तावक यि ु ु को रोका ीा सके इस क्द का प्रयोत कर्व-कर्व इस क्द का प्रयोत विश्व कावत के वलए सर्व व्यवक्तयों ं के बवच सर्व तरह की दश्मनव के खात्म े के सन्दर् ष म वकया ीाता ह ै ु कावत अरने आर म बस अके ला म्य नहीं ह ै बव्क अरने साा ये अन्य म्यों ीसै े दया् ू ू ं करु ा् अवहसा् प्रेम सद्भि को समटे े रहता ह ै यवद हम कावत की बात वदए हए रकररक्े य म कर तो यह ं ं कह सकते ह वक प्रत्येक दके अरनव सवमा के अन्दर कावत के वलए अरेव्त ह ै रर इसके वलए हर सि्र् ं ं प्रयास र्व करता ह ै दके का विकास इस बात रर वनर्रष करता ह ै वक दके म आतकरक रूर से वकतनव ं कावत ह ै रर विश्व के अन्य दके ों के साा उस दके के सम्बन्ध वकतने मधर ह ु ं ीब बात कावत की स्ारना के वलए हो तो यह प्रश्न उठता ह ै वक क्या कावत सैिवतक रूर से ं ं ं सि्र् ह ै व कछ लोतों का मानना ह ै वक मनष्टय की प्रकवत स्ि ारविक तशर रर इसे रोकतव ह ै यह विश्वास ृ ु ु ं इस विचार से आया ह ै वक मनष्टय अरने स्िि्रा या प्राकवतक रूर से वहसक ह ै या कर्व-कर्व कछ ृ ु ु ं रकरवस्ावतया ऐसव होतव ह वीसम िह स्िि्रातत रूर वहसक कायष वदखाता ह ै मनष्टय स्िि्रा से हव ु ं ं वहसक ह ै रर इसवलए इन रकरवस्ावतयों को स्िय हव उत्रन्न करता ह ै उसव समय म विद्वानों का दसरा ं ं ू समह यह मानता ह ै वक यि मानि प्रकवत का एक सही वहस्सा नहीं ह रर कर्व-कर्व अरने स्िि्रा स े ृ ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 140 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 दर ले ीाकर उसे रकरवस्ावतया् तकष सतत कारक उसे वहसक कायष करने के वलए बाध्य करते ह मनष्टय के ु ं ं ं ू आवदम रूर से वहसक मानने का वमाक िास्ति म लोतों को विश्व कावत के वलए प्रेकरत होने से रोकता ह ै ं ं कावत हते कई वसित वदए तये ह वीनम से प्रत्येक वसित का ि नष यहाुँ सि्र् नहीं ह ै ारत ु ं ं ं ं एक प्रीतावत्रक दके ह ै अतः इस अध्याय म हम के िल लोकतावरक कावत वसित ककी हव चचाष कर त े ं ं ं विादास्रद डेमोक्रे वटक कावत वसित के समाषकों का यह मानना ह ै वक िह दके ीा लोकतावत्रक ह िह ं ं अन्य दके ों के विरि कर्व यि नहीं छे ा ते ह रर इस बात के रयाषसे अनि्रीन्य साक्य मशीद ह रर ु ु ू कर्व ऐसव रकरवस्ावतया उत्रन्न हो ीाए तो ब्रा व मवश्कल से हव यि ीसै व चवज़ का रारर् करते ह सम्र ष ु ु ू ं ं विश्व म रद्योवतक क्रावत के रारर् होने

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.easyhindivyakaran.com/hindi-varna… id: **168**

के बाद से लोकतावरक बनने िाले देकों म ि्वि हो रहव ह ै सम्र ष ृ ू ं ं ं विश्व म कावत स्ाावरत करने का कायष इस प्रकार से सि्र् ह,ै अतर दके ों का यह रेान ीारव रह े रर अतर ं ं लोकतावरक कावत वसित सहव हो हालावक इस वसित के कई सि्र् अरिद र्व ह ै ं ं ं ं ं ं दिा वकया ीाता ह ै वक कर्व-कर्व विश्व कावत वकसव खास रीनववतक विचारधारा का एक अरकरहायष ं रकर ाम होतव ह ै रिष अमके रकी राष्टररवत ीी ष ड्य बक ने कहा ह ै वक लोकतर रर लोकतावत्रक ू ू ु ं विचार हव विश्व कावत का नेतत्ि कर त े उसव समय एक माक्सषिादव विचारक वलयोन रोत्स्की ने इससे ृ ं अलत अरने विचार दते े हए कहा ह ै वक विश्व क्रावत कम्यवनस्ट विश्व कावत का नेतत्ि करेतव ृ ु ं ं सम्र ष विश्व ने दो विश्व यि दखे े ह रर उन यि की रासवदयों से तीरे ह कावत की स्ारना ू ु ु ु ं कर्व र्व यि के द्वारा नहीं हो सकतव एक प्रवसि उिर ह ै वक यि लोतों के मन म रलते ह रर अी ु ु के दशर म कई ुटनाओ को दखे ते हए यह बात सत्य वसि होतव ह ै प्राम विश्व यद्द के रश्चात सयक्त राष्टर ु ु ं ं की स्ारना हई रर यह अरने उद्दश्े यों म े सरल नहीं हो राया रर दसरे विश्व यि की रष्ठर्वम तैयार हो ृ ु ू ू तयव यह रर बात ह ै वक दसरा विश्व यि कछ दके ों के वलए लार्प्रद रहा ररन्त यि हमके ा कावत के ु ु ु ु ं ू विनाकक होते ह सयक्त राष्टर सु की स्ारना के रश्चात हालावक विश्वयि तो नहीं हए रर इससे यह नहीं ु ु ं ं ं कहा ीा सकता वक सयक्त राष्टर सु ररव तरह से सरल हव रहा ह ै विवर्न्न दके ों म आतकरक यि् सकक्त ु ू ु ं ं ं दके ों का कमीर दके ों के वखलार यि इसे इसके उद्दश्े यों की प्रावसे म र ष रूर से सरल नहीं ोवषत ु ू करते अी के यत म ीब सारा खले बाज़ार रर ससाधनों का ह ै ऐसे म विश्व कावत तब हावसल की ीा सकतव ु ं ं ह,ै ीब बाज़ार रर ससाधनों को लेकर कोई सुष ष नहीं हो उदाहर के वलए तेल एक ऐसा हव ससाधन ं ं ं ह ै रर तेल की आरवतष रर इसको हावसल करने को लेकर सुष ष ीाना रहचाना ह ै इसवलए, रन: ू ु ं प्रयोय ईधन ोत का उरयोत करने िालव प्रशद्योवतकी विकवसत करना विश्व कावत हावसल करने का एक ं ं तरवका हो सकता ह ै यवद अरने दके की बात कर तो दके म रल रहव कई सारवविुटनकारव कवक्तया कावत के मात ष म रो ा ह ं ं िसै े तो हम एक लोकतावत्रक दके ह रर वकसव अन्य देक के वलए यि को वकसव अरिद के अलाा ु कर्व नहीं छे ा ह ै रर हमारे दके की तवन दके ों से लतव सवमाय अक्सर सलततव रहतव ह हम वकसव अन्य ु दके के वलए यि रारर् तो नहीं करते रर आतकरक यि के वकए यह बात नहीं कहव ीा सकतव कर्व कछ ु ु ु ं ं लोत प्रायोवीत रूर से तो कर्व अप्रायोवीत रूर से दके की कावत र्त करते रहते ह ारत विविधता से ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 141 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 र ष इतना ब्रा ा दके ह ै रर इसकी मल बनिट ऐसव रहव ह ै वक कलह रर सुष ष को हमके ा हव ीतह वमल ू ू ं ीातव ह ै कई धमों् कई विचारों् कई सम्प्रदायों् विवर्न्न ीावतयों का ताना बना होने के कार टकरि की वस्ावत बनव रहतव ह ै रर ऐसे म कावत स्ारना हते ारतवय सविधान एक म्य र्वमका का वनिहष न ु ु ू ं ं करता ह ै ारतवय सविधान को कावत रर न्याय के म्य माध्यम के रूर म दखे ा ीाता ह ै वीसके

र् म ु ं ं विचार वनम्रित वदए तए ह अभ्यास रश्श्न 3. लोकतावत्रक कावत वसित क्या ह ै व ं ं 4. वद्वतवय विश्व यि के रश्चात कावत की स्ारना हते सम्र ष विश्व ने क्या प्रयास वकएव ु ु ू ं 1.5 स्क्तवनाधा स्घषय समाधा के साध के रूर म ें सामान्यतः सविधान का तात्रयष

Quotes detected: **0.02%** id: **169**

“वनयमों ि काननों के उस दस्तिी से ह ै वीनक आधार रर वकसव दके ू ं की कासन प्र ालव चलाई ीतव ह ै ”

एक लोकतावत्रक सविधान का तात्रयष

Quotes detected: **0.03%** id: **170**

“ीनता द्वारा या ीनता के ं द्वारा चन तये प्रवतवनवधयों के द्वारा बनाये तये वनयमों ि काननों के उस सग्रह से ह ै वीसके आधार वकसव ु ू ं दके की कासनप्र ालव चलाई ीतव ह ै ”

ारत का सविधान र्व इसव आधार रर तैयार वकया तया ह ै ीब ं ीनता के प्रवतवनवधयों ने वमलकर ीनता के वलए सविधान तैयार वकया ारतवय ससद िन म लते ं ं खम्र् े इसव बात का द्योतक ह एक लोकतावत्रक सविधान ीनता की ि्रानाओ रर इच्छाओ के ं ं ं अनसार व्यिहार करता ह ै इसके अततत्ष नातकरकों को कछ मलर्त अवधकार प्रदान वकये ीते ह,ै ीी ु ु ू ू ं व्यवक्त के व्यवततत् सामावीक् आवाषक् सास्कवतक या य ुँ कह तो व्यवक्तत्ि के हर आयाम

Plagiarism detected: **0.04%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **171**

के विकास के ृ ू ं वलए अत्यत आिश्यक होते ह एक लोकतावत्रक दके का विकास उसके नातकरकों के विकास रर हव ं आधाकरत होता ह ै यवद व्यवक्त या समी का विकास नहीं होता ह ै तो हम दके के विकास के ब

ारे म नहीं सोच सकते ह ै अतर वकसव दके के नातकरक प्रतवतकवल ि आधवनक लोकतावत्रक म्यों से यक्त होने के ु ू ु साा-साा ि् ावनक निाचार ि नैवतक म्यों से यक्

Plagiarism detected: **0.02%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **172**

त हो तो िह दके तवव्र रर सतत रूर से प्रतवत के रा ू ु रर अग्रसर होता ह ै र

्ारत की हव तरह विश्व के अन्य लोकतावत्रक दके ों म र्व कायषरावलका रर विधावयका के मनमानव से व्यवक्त की स्ितरता को सरव्तर खने के वलए नातकरकों को कछ आधारर्त ु ु ू ं अवधकार प्रदान वकये तए ह, वीनका स्िरुर र्ें हव वर्न्न-वर्न्न हो लेवकन उनकी प्रकवत एक ह.ै ृ ारतवय सविधान विश्व का सबसे ब्रा ा वलवखत सविधान ह ै ीी दवनया के सबसे ब्रा े लोकतर का ं ं ं ु मातदष कनष करता ह ै ऐसे दके ीहुँ की ीनसुँ्या 125 करो़ा से ँरर हो् ीहुँ लतर्त 8 से अवधक धम ष को मानने िाले रहते ह् ीहुँ 200 ाषाए ुँ ह रर 1600 बोवलयुँ बोलने िाले लोत रहते ह् ीहुँ कई प्रीावतयों रर ीावतयों के लोत रहते हों िहुँ रर इस विविधता म र्व सर्व को एक सर म बाुँधने के वलए ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 142 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ऐसे सविधान की आिश्यता ह ै ीी वबना वकसव र्दे -ि्रा के सबके वहत की बात करे रर वसरष इतना हव ं नहीं ि ह ीनसुँ्या ीी ारत के सविधान की प्रस्तिाना म हव कावत रर न्याय की अिधार ा दव तयव ह ै ं ं ारतवय सविधान म र्व विश्व के अन्यलोकतावत्रक सविधानों की तरह अरने नातकरकों को कछ ु ं ं मलर्त अवधकार प्रदान वकये तये ह, वीन्ह सविधान के ारात-3 म अनच्छेद 12 से लेकर अनच्छेद 35 के ू ू ु ु ं तक ह; रर इन्ह मशवलक अवधकारों के नाम से ीानते ह राष्टरवय आदोलनों के समय मशवलक अवधकारोंको सविधान म कावमल करने की मात तवन ं ं ं कार ों से की तई : रहला, कायषरावलका के स्ि्े छाचारव व्यिहार रर अकक लताने के वलए, दसरा, ु ं ू सामावीक-आवाषक न्याय के लक्य को प्रासे करने के वलए, ताा विवर्न्न अ्रस्यक समहों को सा्रा ू ु ं रर सर् प्रदान करने के वलए. सवि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… id: **173**

धान के अन्दर वकन –वकन अवधकारों को को ीतह दव ीाए क्योंवक ं ं हर एक को सविधान के अन

्दर कावमल नहीं वकया ीा सकता ाा इस रर सविधान सा्रा म रयाषसे बहस हई ं ं ाव रर विवर्न्न मद्दों के ँरर सदस्यों के मध्य मतर्दे र्व कायम ो रर अत म सिसष म्मवत से ारत का ु ं सविधान वनवमतष हआ रर 26 ीनिरव 1950 को लात कर वदया तया ू ं यवद सविधान की बात की कए तो यह अरने प्रस्तिाना या उद्दवे कका से यह सावबत करतव ह ै वक ं यह समानता् न्याय रर कावत ीसै े मद्दों को दके म कायम करने रर अवडत ह ै ु ं हम, भारत के ि्र्, भारत को एकसपर् य प्रभत्वसपन्न समाजवादी पर्क्तनरपेक्ष िोकतत्रात्मक र्ाज्य ू ु ं ं ं ं बनाने के क्तिए, त्रा उसके समस्त नार्रकों को:सामाक्तजक, आक्तर्यक और राजनैक्ततक न्याय, क्तवचार, अक्तभव्यक्ति, क्तवश्वास, धम य और उपासना की स्वतत्रता, प्रक्ततष्ठा और अवसर की समता,

Plagiarism detected: **0.01%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… + 2 resources! id: **174**

प्राप्त करान े के ं क्तिए, त्रा उन सबम,ें व्यक्ति की र्रमा और राष्ट्र

की एकता और अखडता सक्तनक्तित कराने विी, बधता ु ु ं ं बढाने के क्तिए, दृढ सकल्प होकर अपनी सविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ईस्वी ं ं (क्तमक्तत माघशीर् य शक्ि सप्तमी, सवत दो हजार छह क्तवक्रमी) को एतदवारा इस सक्तवधान को अ्रीकत, ृ ु ं ं ं ् अक्तधक्तनयक्तमत और आत्माक्तपयत करते ह।ैं ारतवय सविधान के उद्दवे कका से यह स्रस ह ै

वक लोकतर म सर्व इकाईया बराबर ह रर इन सर्व ं ं ं के विकास के वलए लोकतर कतसक्र ह ै सविधान की प्रस्तिाना म हव न्याय कब का उ्लेख वकया ृ ं ं ं तया ह ै रर ीब न्याय् आवाषक् रीनैवतक् सामावीक् धावमकष स्ितरता रर समान अिसर प्रासे होत े ं ह तो दके म कावत की स्ारना स्िय हव हो ीातव ह ै विर्दे विुटन रैदा करता ह ै यवद विर्दे नहीं होता ं ं तो यह स्रस ह ै वक सर्व के साा न्याय हो रहा ह ै रर ीब न्याय हो तो कावत होतव ह ै ं ं ारतवय सविधान के अन्य ारात ीी न्याय रर कावत का रोष करते ह उनम मशवलक अवधकार् ं ं नववत वनदकदेश क तत्ि रर मशवलक अवधकार आते ह ारतवय सविधान म ारात 3 ीी मशवलक अवधकारों ं से सम्बवधत ह ै रर ारात 4 ीी नववत वनदकदेश क तत्ि ह ये वमलकर ारतवय सविधान को सुष ष समाधान की ं ं ं कीव के रूर म तैयार करते ह यहव कार ह ै वक ये क्रमकः सविधान की आत्मा रर सविधान की चेतना ु ं ं के रूर म ीान े ीाते ह इन तत्िों म सविधान ताा सामावीक न्याय के दकनष का िास्तविक तत्ि वनवहत ं ह इनम सबसे रहले मशवलक अवधकारों का ि नष यहाँु वकया ीाएता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 143 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ारतवय सविधान म कल 6 मशवलक अवधकार वदए तए ह ीी ारत का नातकरक होने के साा हव प्रासे ु ं हो ीाते ह रर इसे वकसव र्व ारतवय नातकरक से छवना नहीं ीा सकता ह ै रर कछ ऐसव दकाए ह वीनके ु ं अततत इन्ह अविवधमान्य करार वकया तया ह ै यह मशवलक अवधकार नातकरक वहतों वक ारा करते ह ं रर ारत म न्याय रर कावत के वलए प्रमख र्वमका वनारते ह अनच्छेद -13 मल अवधकारों को ु ू ु ू ं स्िच्य स्ाान प्रासे ह ै इस अनच्छेद के अनसार ि े सर्व विवधयाँु ीी वकसव मल अवधकार से असतत ह ै ु ु ू ं या उसके प्रवतकल ह, उस सवमा तक अविवधमान्य होतव ीहाँु तक ि े मशवलक अवधकारों का हनन करते ह ू अतः न्यायरावलका को यह अवधकार ह ै वक ि ह ऐसव विवध को ीी सविधान के उरबधों से असतत ह,ै ं ं ं असिधै ावनक ुोवषत करे ये 6 अवधकार वनम्नित ह ं □ समानता का अवधकार िअनच्छेद 12 से अनच्छेद 18) ु ु □ स्ितरता का अवधकार िअनच्छेद 19 से अनच्छेद 22) ु ु ं □ कोष के विरि अवधकार िअनच्छेद 23 से अनच्छेद 24) ु ु □ धावमकष स्ितरता का अवधकार िअनच्छेद 25 से अनच्छेद 28) ु ु ं □ वक्ा रर सस्कवत का अवधकार िअनच्छेद 29 से अनच्छेद 30) ृ ु ु ं □ सिधै ावनक उरचारों का अवधकार िअनच्छेद 32) ु ं सविधान म मल अवधकारों से सम्बवधत उरबधों म

Quotes detected: **0%** id: **175**

'राय'

क्द का प्रयोत वकया तया ह.ै यहाँु राय क्द ू ं ं ं का अाष स्रस कर दने ा आिश्यक ह ै स्िच्य न्यायालय के अनसार, वकसव र्व उस वनीव इकाई या ु ईस व को, ीी बतशर राय की सस्ा काम कर रहव हो, ि ह अनच्छेद-12 के तहत

Quotes detected: **0%** id: **176**

'राय'

के अाष म ु ं आतव ह ै सें ा ि ा े अन्धेर: इसम रहला समानता का अवधकार ह ै ीी ारतवय सविधान म अनच्छेद 12 से ु ं अनच्छेद 18 तक ि व तष ह ै हमारा ारतवय समी बहत हव विविध ह ै वीसम विविधता हर ्ेर म रायव ु ीातव ह ै चाह े यह धम ष हो् सप्रदाय हो् ीावत हो या वरर ाषा हो इस आधार रर रहले हमारा समी ं सोरानवकत र्व रहा ह ै रर इसे हव लोकतावत्रक बनाने के वलए विवध के सम् समानता को स्िवकार ृ वकया तया अतः लोकतावत्रक ारत मय हाँु के समी को यादा समिाके व रर समानता रर आधाकरत करने के वलए सविधानके अनच्छेद 14 स े 18 के मध्य समानता के अवधकारों की बात की तई ह ै ु ं सविधानके अनच्छेद 14 के तहतविवध के सम् समानता ररविवधयों के समान सर् की बात की तई ु ं ं ह ै अनच्छेद 14 के अनसार राय ारत के राय ्ेर मव कसव व्यवक्त को विवध के सम् समता से या ु ु विवधयों के समान सर् सिवचत नहव कर सकता ह ै रर हमारे यहाँु समानता के साा समता की र्व ं ं बात की तयव ह ै ीी वक रकरवस्ावतयों की वर्न्नता के आधार रर अलत – अलत विवध लात करने से ु सम्बवधत ह ीसै े- समी के िवचत ितों रर मवहलाओ के वलए कोई विकेष उराय वकए तए ह तावक ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 144 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ि ह समी के अन्य ितों के समान स्तर रर आ सक समानता का आकय, विर्दे ों या विकषे ावधकारों का अत र्व होता ह ै अनच्छेद 15 म सिाीावनक ीविन म वकसव र्व प्रकार से र्दे ि्रा का प्रवतषधे वकया ु ं तया ह ै विकषे कर राय द्वारा वित्त रोवषत कुँ ओ, तालाबों रर सिीष ावनक स्ानों रर व्यवक्त के द्वारा ु ं वलत, ीन्म, ीावत , िक,धम ष आवद के आधार रर र्दे ि्रा नहव वकया ीा सकता अनच्छेद 16 के म ु ं ं ीावत, धमष, आवद आधारों रर रीकीय सिा म वबना वकसव र्दे ि्रा के सर्व के वलए समान अिसर प्रदान वकया तया ह ै लेवकन ारत के ऐवतहावसक असमानता रर र्दे ि्रा के कार उत्रन्न व्यारक े वय ि सामावीक असमानता को दखे ते हए सविधान वनमाषताओ ने ससद को यह अवधकार वदया वक, ं ं ं वकसव राय की सिा म उस राय विकषे के लोतों कोप्रावमकता दव ीा सकतव ह ै अनच्छेद 17,18 ु समानता हते विकषे ावधकारों ररविषमताओ के अत से सम्बवधत ह ु ं ं ं स्रिरि े ा अन्धेर (अ च्ेदायि 19 से अ च्ेदायि 22):स्ितरता मानि ीविन के वलए आिश्यक ह ै ु ु ां ं मनष्टय को एक सीनकवल प्रा व माना ीाता ह ै वीसका सम्र ष विकास स्ितर ितिार म हव सर्ि् ह ै ृ ु ू ं ं रर यह वसरष व्यवक्त के वलए हव नहीं बव्क राय के वलए र्व आिश्यक ह ै क्योंवक कोई र्व राय विकास की प्रवक्रया म अरने मानिवय ससाधन रर अत्यवधक वनर्रष करता ह,ै रर मानिवय ससाधन की ं ं उत्कसता इस बात रर वनर्रष करतव ह ै वक ि हा के मानि को वकतनव व्यारक रर यवक्तयक्त स्ितरता प्रदान ृ ु ु ं ं की तयव ह ै सविधान म अनच्छेद 19 से लेकर 22 तक म स्ितरता के मशवलक अवधकार ि व तष ह इनम ु ं ं से अनच्छेद-19 म वदए तये छह प्रकार की स्ितरताए के ि ल नातकरकों को प्रदान की तयव ह इन ु ं ं अवधकारों म िाक- अवर्व्यवक्त की स्ितरता, कावतरिकष वनरायध सम्मलेन की स्ितरता, सतम या सु ू ु ं ं ं ं ं बनाने की स्ितरता, ारत के राय-्ेर म अबाध सचर की स्ितरता रर देक के

वकसव ◌ात म वनिास ◌ं ◌ं ◌ं करने, बस ◌ीने एि ◌वत, आीवविका एि व्यारर की स्◌ितरता प्रदान की तयव ह◌ै रर इसके साा हव दके ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं की सप्रर्ता, एकता रर अखडता, दके की स◌ा, लोक व्यिस्◌ाा, न्यायालय की अिमानना रर ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं अनसवचत ◌ीनीावतयों के वहतों के आधार रर इन अवधकारों रर तावकष क प्रवतबन्ध आरोवरत वकये ◌ी◌ा ◌ु ◌ू सकते ह अनच्छेद-20 के अनसार ◌ारतवय सविधान म मल अवधकारों म वकसव अरराध म बदव व्यवक्त ◌ु ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं के वलए व मल अवधकारों का प्रिाधान ह◌ै इसवलए वकसव व्यवक्त को ◌ुटना के रश्चात विवध बनाकर ◌ू दवण्डत नहव वकया ◌ी◌ा सकता, रर नहव एक हव अरराध के वलए एक से अवधक बार वकसवव्यवक्त को दवण्डत वकया ◌ी◌ा सकता ह◌ै अनच्छेद-21 म प्रा एि दवै हक स्◌ितरता की ◌ुोष ◌ा की तई ह◌ै वक व्यवक्त ◌ु ◌ं ◌ं को उसके प्रा या दवै हक स्◌ितरता सेक्तवक्तध वारा स्◌ाक्तपत प्रक्तक्रयाके अनसार हव ◌िवचत वकया ◌ीयेता ◌ु ◌ं ◌ं अन्याा नहव न्यायरावलका के अनसार न्यनतम आीवविका का अवधकार् स्◌िास्◌्य का अवधकार् ◌ु ◌ू वनःक्क प्राावमक वक्◌ा का अवधकार् स्◌िच्छ रयाषिर ◌िील,हिा आवद) का अवधकार् त्◌िकरत ◌ु सनिाई का अवधकार ◌ीविन के अवधकार म अन्तवनषवहत ह अनच्छेद 22 वकसव व्यवक्त को वतरलतारव एि ◌ु ◌ु ◌ं वनरोध से सर् देता ह.◌ै अनच्छेद के अनसार वकसव व व्यवक्त को मनमानव रूरसे वतरलतार नहव वकया ◌ु ◌ु ◌ं ◌ी◌ा सकता ह◌ै ◌ं यवद वकसव व्यवक्त को वतरलतार वकया तया ह◌ै तो उसे अरने रूवच के विवध व्यिसायव स◌े उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 145 ◌ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ररामक ष करने का अवधकार होता, ताा उसे अवधकतम 24 ◌ुटे तक हव वहरासत म रखा ◌ी◌ा सकता ह◌ै ◌ं इसके रश्चात वहरासत मर खने के वलए उसे न्यावयक मवीस्रेट के सामने प्रस्तत करना होता ◌ु शोष◌े न्नरुद्ध अन्धेार (अ च्◌ेदायि 23 से अ च्◌ेदायि 24): कोष के विरि अवधकार अनच्छेद- ◌ु ◌ु ◌ु 23-24 ह ◌ी तकरमामय ◌ीविन से सम्बवधत ह◌ै इसवलए कोष के विरि रर मानि के दव्याषरार रर ◌ं ◌ु बलात ◌िम का व मल अवधकारों म प्रवतबन्ध ह.◌ै अनच्छेद 23 मानि दव्याषरार, बेतार रर इसव प्रकार के ◌ू ◌ु ◌ु अन्य बलात ◌िम के प्रकारोंरर व प्रवतबन्ध लतता ह.◌ै इस व्यिस्◌ाा के अततत्तष कोई व उ्लुन कानन के ◌ू ◌ं ◌ं अनसार दडनवय होता. यह अवधकार नातकरक एि तरै -नातकरक दोनों के वलए उरल्ध होता. यह वकसव ◌ु ◌ं ◌ं व्यवक्त को न के ◌िल राय के वखलार बव्क व्यवक्तयों के वखलार व स◌ा प्रदान करता ह.◌ै मानि ◌ु दव्याषरार का अवर्प्राय, मवहलाओ, बच्चों रर अरत व्यवक्तयों के अनैवतक दव्याषरार रर प्रवतबन्ध ◌ं ◌ं ◌ु ◌ु लतानाह◌ै धान्◌ें बे स्निरि◌ा अन्धेार (अ च्◌ेदायि 25 से अ च्◌ेदायि 28):धावमकष स्◌ितरता का अवधकार ◌ु ◌ु ◌ां ◌ं सविधान म अनच्छेद-25 स◌े 28 तक ◌िव तष ह ◌ारतम अनेक धमों के लोत वनिास करते ह वीनकी ◌ु ◌ं ◌ीनसुँ्या असमान ह◌ै चुँवक ◌ारतवय समी अर्व व धम ष रर आधाकरत ह,◌ै ररव्यवक्त समी म हव ◌ू

Plagiarism detected: **0.03%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **177**

विकास की प्रवक्रया से ◌ी◌ा ता ह,◌ै अतः व्यवक्त के व्यवक्तत्◌ि रर धम ष का प्र◌िा वन ◌ाषयक होता है, इसवलए ◌ु धावमकष स्◌ितरताका अवधकार व्यवक्त के विकास क

◌े वलए अत्यत आिश्यक ह,◌ै अतः इसे मशवलक ◌ं ◌ं अवधकारके रूर म सविधान म कावमल वकया तया ह◌ै ◌ं न्शक्षा और सस्◌ेन्◌ि◌ा अन्धेार (अ च्◌ेदायि 29 से अ च्◌ेदायि 30):अनच्छेद-29-30 वक्◌ा रर ◌ृ ◌ु ◌ु ◌ु ◌ां सस्कवत के अवधकार से सम्बवधत ह◌ै वक्◌ामनष्टय के व्यवक्तत्◌ि का वनमाष करतव ह◌ै यह व्यवक्त की ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं तकष कवल बनाते हए उसे सीनकवल रर ◌्मतिाान बनातव ह◌ै इसव प्रकार सस्कवत मनष्टय के व्यिहार ◌ि ◌ृ ◌ृ ◌ु ◌ं प्रकवत को तढ़ने का कायष करतव ह◌ै यह मनष्टय के व्यवक्तत्◌ि को वनधाषकरत करतव ह◌ै अनच्छेद-29 यह ◌ृ ◌ु ◌ु ◌ुोवषत करता ह◌ै वक ◌ारत के वकसव व ◌ारत म रहने ◌िाले नातकरकों को वीसकी अरनव अलत बोलव, ◌ाषा, वलवर रर सस्कवत हो, सरव्त करने का अवधकार ह◌ै इसके अवतकरक्त, वकसव व नातकरक को ◌ृ ◌ं ◌ं राय के अततत्तष आनिाले सस्◌ानों या उससे सहायता प्रासे ससाान म धमष, ◌ीवत या ◌ाषा के आधार रर ◌ं ◌ं ◌ं प्रिके से रोका नहव ◌ी◌ा सकता इसम से रहलव व्यिस्◌ाा एक समह के अवधकारों कीर ◌्◌ा स्◌ि सम्बवधत ह◌ै ◌ू ◌ं रर दसरव व्यिस्◌ाा नातकरक के व्यवक्ततत सम्मान की ◌ारा करतव ह◌ै अनच्छेद-30 म स्रस रूर म ◌ु ◌ू अ्रस्यकों को अरनव कवै ◌्क सस्◌ाओ कीस्◌ारना एि उनके प्रबध का अवधकार प्रासे ह◌ै इसके साा ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं हव यह व इसम कावमल ह◌ै वकराय द्वारा सस्◌ाओ को वदए तये अनदान म इस आधार रर दें ि◌ारा नहव ◌ु ◌ं ◌ं वकयी◌ायेता वक, ि◌े अ्रस्यकों के प्रबध हते ह◌ु ◌ं ◌ं सनैधान्◌े उपिारों◌ा अन्धेार (अ च्◌ेदायि 32):सिधै ◌ावनक उरचारों का अवधकार स◌े सम्बवधत ह◌ै ◌ु ◌ां ◌ं ◌ं सर्व मशवलक अवधकारों म सिधै ◌ावनक उरचारों का अवधकार अत्यत महत्◌ि र ष अवधकार ह◌ै इसके बतरै ◌ू ◌ं ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 146 ◌ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अन्य मशवलक अवधकारों की उरादये ता सवदग्ध हो ◌ीतव ह,◌ै क्योवक यह मशवलक अवधकार हव नातकरकों ◌ं को अन्य मशवलक अवधकारों की उ्लुन की दका म विवधक कारिाई करने का अवधकार प्रदान करता ◌ं ह,◌ै रर विधावयका या कायषरावलका द्वारा वकसव व मशवलक अवधकारों के उ्लुन करने ◌िालव विवध को ◌ं कन्य ◌ुोवषत करता ह◌ै यह मशवलक अवधकार ◌ारत म न्यायरवलका को न्यावयक समव्◌ा का अवधकार ◌ू प्रदान करता ह◌ै इस मशवलक अवधकार के महत्◌ि को देखे ते हए हव कायद बव. आर. अम्बेडकर ने इसे ◌ारतवय

Quotes detected: **0%** id: **178**

“सविधान की आत्मा”

क्दिालव से सबोवधत वकया ◌ाा (बस 2008 : 132) ◌ु ◌ं ◌ं अभ्यास रश्न 5. ◌ारत का सविधान कब लात हआ ◌ाव ◌ू ◌ं 6. कोष के विरि अवधकार वकन अनच्छेदों म ◌िव षत हवै ◌ु 7. सविधान के वकस ◌ारात को डी. आबेडकर ने सविधान की आत्मा कह कर सबोवधत वकया ह◌ै व ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ारत की विकालता, विविधता रर यहाुँरै ले सामावीक् आवाषक ◌ि सास्कवतक असमानता को ध्यान

ृ ं म रखते हए लोकतावत्रक रर क्या कारव ष्वसको अरनाते हए स्ितरता की सकारात्मक अिधार ा ं म विश्वास वकया रर नातकरकों के वलए कछ महत्िर ष सामावीक् आवाषक अवधका

Plagiarism detected: **0.02%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **179**

रों की मात उठाई ु ू ं सविधान सरा ने तत्कालवन ारतवय रकरवस्ावतयों के अनरूर दोनों प्रकार के मात

ों के बवच सतलन ु ु ं ं ं स्ावरत करनेका प्रयास वकया ररकछ प्रमख सामावीक-आवाषक अवधकारों को र्व नववत-वनदकदेश क तत्ि ु ु के रूर म सविधान का ारात बनाया ं राय के नववत वनदकदेश क तत्त्िों का उद्दश्े य सामवहक रूर से ारत मआ वाषक एि सामावीक ू ं लोकतत्र की रचना करना ताा क्या कारव राय कीस्ारना करना ह ारतवय सविधान के ारात 4 के ं अनच्छेद 36 से लेकर अनच्छेद 51 तक राय के नववत वनदकदेश क तत्ि कावमल वकए तये ह अन 37 के ु ु ु अनसार ये तत्ि वकसव न्यायालय म े लात नहव करिये ीा सकते यहतत्ि िधै ावनक न होकर रीनैवतक ु ू स्िरूर रखते ह ै ताा मार नैवतक अवधकार रखतेह ै ि े न तो कोई िधै ावनक बाध्यता हव राय रे लात करते ू ह ै न ीनता हते अवधकार कतषव्य ि े मार राय के वलये ऐसे सामान्य वनदकदेश ह ै वक रायकछ ऐसे कायष करे ु ु ीा राय की ीनता के वलये लार्दायक हो इन वनदकदेश ों कारालन कायषरावलका की नववत ताा विधावयका की विवधयुँ से हो सकता ह ै यवद नववत वनदकदेश क तत्िों का विकद विर द े तो नववत वनदकदेश क तत्िों म अनच्छेद 36 नववत ु वनदकदेश क तत्िों की रकरार्षा से सम्बवधत ह ै अनच्छेद 37 म अतविष्टष ट तत् िों का लात करने से सम्बवधत ु ू ं ं ं ह ै अनच्छेद 38 म रा य लोक क्य ा की अवर्ि के वलए सामावीक व् यिस् ाा् अनच्छेद 39 रा य ृ ु ु द्वारा अनसर वय कछ नववत तत् ि 39कसमान न् याय रर वन:क्क विवधक सहायता् अनच्छेद 40 म ु ु ु ु ग्राम रचायतों का सतठन् अनच्छेद 41 काम, वक्ा रर लोक सहायता राने का अवधकार् अनच्छेद ु ु ं ं 42 काम की न् यायसतत रर मानिोवचत दकाओ का ताा प्रसवत सहायता का उरबध् अनच्छेद 43 म ू ु ं ं ं कमकष ारों के वलए वनिाष्ह मीदरव् अनच्छेद 43क उद्योतों के प्रबध म कामकष ारों का ारात लेने् अनच्छेद ु ु ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 147 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 44 नातकरकों के वलए एक समान नातकरक सवहता् अनच्छेद 45 म 0-6 ि ष ष बच्चों के वलए वक्ा रर ु ं उनकी दखे ाल् अनच्छेद 46 अनसवचत ीावत, अनसवचत ीनीावत ताा अन् य दबषल ितों के वक्ा ु ु ू ु ू ु रर अ ाष सबधव वहतों की अवर्िवि् अनच्छेद 47 रोषाहार स् तर रर ीविन स् तर को ँचा करने ताा ृ ु ं ं ं लोक स् ि ास् ् य को सधार करने का रा य का कतषव् य् अनच्छेद 48 कवष रर रकरालन का सतठन् ् ृ ु ु ु ं अनच्छेद 48क रयाषिर का सर् रर सिधषन रर ि न ताा ि न् य ीविों की ारा् अनच्छेद 49 ु ु ं ं राष्ट रवय महत् ि के सस् मारकों, स् ानों रर ि स् तओ का सर् दने ्े अनच्छेद 50 कायषरावलका से ु ु ं ं ं न् यायरावलका का राक् कर रर अनच्छेद 51 अतरराष्ट रवय कावत रर सरा की अवर्िविसे सम्बवधत ृ ृ ु ु ं ं ं ह ै राष्टर म कावत रर न्याय हते मार अवधकारों रर नववत वनदकदेश क तत्ि हव कारी नहीं ह इस हते ु ु ं सर्व को कछ कतषव्य र्व रालन करने होंत े इस बात को ध्यान म रखते हए 1976 म सरकार द्वारा तवठत ु स्ि वष सह सवमवत की वसराकरकों रर् 42 सकोधन द्वारा सविधान म मल कतषव्य ीा े तए ो हमारे ू ं ं ं सविधान म कल 11 मल कतषव्य ह ये मल कतषव्य वीन वबन्दओ से सम्बवधत ह; ि ह- सविधान सवहत ु ू ू ं ं ं ं ु ारत के राष्टरवय प्रतवकों का सम्मान कर ् इसकी विरासत को सीाए इसकी वमवित सस्कवत का सर् ृ ं ं ं ं कर ताा इसकी सरा म सहायता द सर्व ारतवयों को सामान्य ाराईचारे की िरना को बढ़ाा दने ्े ु रयाषिर रर सिीष वनक सरवत्त की ारा करने् ि ावनक सोच का विकास करने् वहसा को त्यातने रर ं ं ीविन के सर्व ्ेरों म उत्कसता की वदका म प्रयास कर ् प्रत्येक माता-वरता या अवर्र्ाक को यह ृ सवनवश्चत करने वक उनके छः से चशदह ि ष ष तक के बच्चे या रा्य को वक्ा का अिसर प्रासे कर रह े ह ु ारतवय सविधान का विश्लेष करते हए आवस्टन कहत े ह वक

Quotes detected: **0.01%** id: **180**

“ारतवय सविधान सामवीक ं ं क्रावत या सामवीक न्याय का दस्तिी ह ै ”

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 2 resources! id: **181**

ारत म न्याय की प्रावसे हते समय-समय रर सकोधन वकए ु ं ं तए ह यह सामवीक न्याय

लोतों के अवधकारों की ारा करते हए ि मै नस्यता को कम करते हए समी म कावत लाता ह ै आवस्टन ि2003) ने इसे सामवीक क्रावत के दस्तिी का नाम वदया ह ै ीा कासन को ं ं चलने का यर मार नहीं ह ै इसप्रकार ारतवय सविधान मार कछ वनयमों का सग्रह नहीं ह ै बल्क कावत ु ं ं ं ं ं रर न्याय की अिस्ारना का माध्यम ह ै अभ्यास रश्न 8. नववत वनदकदेश क तत्िों म 39क वकससे सम्बवधत हवै ं 9. सविधान म मल कतषव्य कब ीा े तए व ू ं 10. आवस्टन ने ारतवय सविधान को क्या नाम वदया ह ै व ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 148 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 1.6 सारि् सविधान म न्याय रर कावत की स्ारना के वलए लें हव हर सि् प्रयास वकया तया हो रर आज़ादव के ं ं ं इतने ि षों के बाद या सविधान लात वकए ीाने के इतने ि षों के बाद र्व यह विषमता रर ि मै नष्टय स्रस ू ं करता ह ै वक ारतवय नातकरक के रूर म हम इन वनयमों को ररव तरह नहीं मान रह े रर स्िवहत के वलए ू इसम ीा -तो़ा कर रह े ह एक समाष् सबल रर स्म राष्टर के वनमाष के वलए आिश्यक ह ै वक हम मार क्दों म हव नहीं बल्क अरने कत्यों म र्व सविधान का रालन कर ृ ं 1.7 ि ब्द ावनाली 1. न्याय: एक विचार के रूर म न्याय की सक्रना वकसव स्ान विकष या दके विकेष म रहने िाले ं सर्व लोतों को को समान मानने से ह ै 2. कावत: कावत को एक ऐसे म्य

के रूर म रकर ्रावषत वकया ी सकता ह ै ीलोतों के बवच रर ू ं ं उनके वतर स्ितरता रर खकव का एक रकरचायक ह ै कावत का उद्दश्े य ररव दवनया म अवहसा् ु ू ं ं ं ु प्रेम रर ्राई-चारा स्ावरत करना ह ै 3. सविधान: सविधान का तात्रयष

Quotes detected: **0.02%** id: **182**

“वनयमों ि काननों के उस दस्तिी से ह ै वीनक आधार रर ू ं ं वकसव दके की कासन प्र ालव चलाई ीतव ह ै ”

1.8 तभ्य ास प्रश्नों के उत्त र 1 एक विचार के रूर म न्याय की सक्रना वकसव स्ाान विकेष या दके विकेष म रहने ाले सर्व लोतों ं को को समान मानने से ह ै 2 बव. आर. आबेडकर् राम मनोहर लोवहया् काकवराम् अरु ा रीय् मधे ा राटेकर् इरोम कवमलष ा ं ं इत्यावद सामावीक न्याय के वलए प्रयासरत अग्र व नेता रह े ह 3 लोकतावन्त्रक कावत वसिात के अनसार ि्ह दके ी लोकतावन्त्रक ह ि्ह अन्य दके ों के विरि कर्व ु ं ं यि नहीं छ़ेा ते ह सर्व दके धवरे धवरे लोकतावन्त्रक हो रह े ह ी यि की स्ि्राना को कम करता ह ै ु ु ं 4 वद्वतवय विश्व यि के रश्चात कावत की स्ारना हते सम्र ष विश्व ने वमलकर सयक्त राष्टर सु की ु ु ू ु ं ं ं स्ारना की 5 ्रारत का सविधान 26 ीनिरव 1950 को लात हआ ा ू ं 6 कोष के विरि अवधकार अनच्छेद 23 रर 24 म ि्व षत ह ु 7 सविधान के मशवलक अवधकारों म सिधै ावनक उरचारों के अवधकार को डी. आबेडकर ने सविधान ं ं ं ं की आत्मा कह कर सबोवधत वकया ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 149 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 8 नववत वनदकदेश क तत्ों म अनच्छेद 39क समान न् याय रर वन:क्क विवधक सहायता से सम्बवधत ह ै ु ु ं 9 सविधान म मल कतषव्य 1976 म सरकार द्वारा तवठत स्ि वष सह सवमवत की वसराकरकों रर् 4ि2 ू ं ं सकोधन द्वारा ी्ा े तए ो ं 10 आवस्टन ने ्रारतवय सविधान को सामवीक क्रावत के दस्तिी का नाम वदया ह ै ं ं 1.9 स्दर् य ग्रथ सची ू 1. Austin, G. (2003). Working a democratic constitution: a history of the Indian experience. USA: Oxford University Press. 2. Sharma, B.K. (2007). Introduction to the Constitution of India . New Delhi:PHI Learning Pvt. Ltd. 3. Wikipedia, (n.d.). Constitution of India.

Plagiarism detected: **0.01%** https://en.wikipedia.org/wiki/Ka_(Devanagari) + 3 resources! id: **183**

Retrieved from https://en.wikipedia.org/wiki/Constitution_of_India 4. Wikipedia, (n.d.). Social Justice. Retrieved from https://en.wikipedia.org/wiki

/Social_justice 1.10 क्त बधात्म क प्रश्न ् 1. न्याय को रकर ्रावषत करते हए स्रस कर वक यह दके के विकास के वलए क्यों आिश्यक ह ै व 2. कावत से क्या आकय हवै सम्र ष विश्व हते यह क्यों आिश्यक हवै ू ु ं 3. न्याय ए्ि कावत हते ्रारतवय सविधान एक माध्यम के रूर म कायष करता ह ै इस कान को ु ं ं ं अरने तकष के माध्यम से सत्यावरत कर 4. ्रारतवय सविधान म ि्व तष मशवलक अवधकार न्याय रर कावत की स्ारना वकस प्रकार ं ं करते ह व प्रकाक डाल उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 150 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ृ इकाई 2- रती वक्ति क, आर्ता क, सामाक्तिीक सा कक्ति क और राक्तिरस् ा क्ति क ् ों म चल रह स घषय क अध्यय , कास्न् क क्तिल सफल स घषय और स नाद कव चल रहव प्रक्तिक्रयाओ का अध्यय 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 रीवनवतक ्ेर म सुषष ं 2.4 आवाषक ्ेर म चल रह े सुषष ं 2.4.1 ्रारत म आवाषक उदारिाद ए्ि उसके दष्टप्रि्रा ं ु 2.4.2 सामावीक विषमता ए्ि आवाषक उदारिाद ं 2.5 सामावीक ्ेर म चल रह े सुषष ं 2.6 राकरवस्ावतक ्ेर म चल रह सुषष ं 2.6.1 रयाषिर सर् का महत्ि ं 2.6.2 राष्टरवय रयाषिर नववतया ं 2.6.3 ्रारत के कछ प्रमख रयाषिर सस्ान ु ु ं 2.7 कावन्त के वलए सरल सुषष रर सिाद की चल रहव प्रवक्रयाएुँ ं ं 2.7.1 आवाषक सामावीक ि सास्कवतक अवधकारों की अतराषष्टरवय प्रसविदा ृ ं ं ं 2.7.2 नातकरक ए्ि रीनववतक अवधकारों की अतराषष्टरवय प्रसविदा ं ं ं 2.7.3 मानिावधकारों से सम्बवन्धत अन्य प्रमख प्रसविदाए ु ं ं 2.7.4 कावन्त के वलए सरल सुषष रर सिाद की चल रहव प्रवक्रयाओ के कछ ु ं ं ं महत्त्ि ष प्रयास ू 2.7.5 कावन्त के वलए प्रयास हते कछ महत्त्ि ष वतवायुँ ु ु ू 2.7.6 राष्टरवय ए्ि अन्तराषष्टरवय स्तर रर कावन्त स्ावरत करने हते विद्यालयों की ु ं र्वमका ू 2.8 साराक ं 2.9 क्विालव 2.10 अभ्यास के वलए प्रश्न उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 151 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.11 सदर्ष ग्रन्ा सचव ू ं 2.1 प्रस्तावना ा कावन्त वक्ा के अततष कावन्त के मद्द े रर चनशवतयों से सम्बवन्धत यह दसरव इकाई ह ै इससे रहले की ु ु ं ू इकाई म े आरने न्याय ए्ि कावन्त के विषय म अध्ययन वकया ताा यह ीना वक सुष ष वनिार के वलए ं ं ्रारतवय सविधान की क्या र्वमका ह,ै अ ाषत कावन्त स्ावरत करने ए्ि सुष ष विराम म सविधान की ू ं ं ं ं र्वमका ए्ि महत्त्ि को समे प्रस्तत इकाई म रीनववतक, आवाषक, सामावीक सास्कवतक ए्ि ृ ू ु ं ं ं राकरस्ावतक ्ेरों म चल रह े सुषों के विषय म ए्ि साा हव साा कावन्त के वलए हए सरल सुषों ए्ि ं ं ं ं कावन्त के वलए चल रहव सिाद प्रवक्रयाओ के विषय म विस्तारिकष बताया तया ह ै ू ं ं इकाई के अध्ययन के बाद आर विवर्न्न ्ेरों म चल रह े सुषों को ीान सक त े ए्ि कावन्त के महत्त्ि को ं ं समे कर कावन्त के वलए प्रयासरत होंत े साा हव साा अब तक कावन्त के वलए हए सरल प्रयासों स े प्रेर ा लेकर स्ि्य र्व कावन्त के ्ेर म आने िालव चनशवतयों का सामना करने के वलए प्रेकरत होंत े ु ं 2.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उररान्त आर- 1. रीनववतक ्ेर म चल रह े सुषों के कार बता सक ते ं 2. आवाषक ्ेर म चल रह े सुषों को समे सक त े ं 3. सामावीक ए्ि सास्कवतक ्ेरों म चल रह े सुषों का ि नष कर सक त े ृ ं ं ं 4. रारवस्ावतक ्ेरों म चल रह े सुषों की व्याया कर सक त े ं 5. कावन्त के वलए सरल सुषों की सचव बना सक त े ू ं 6. कावन्त के वलए सिाद की चल रहव प्रवक्रयाओ का म्याकन कर सक त े ू ं ं ं चेकोस्लोावकया के विवध कास्त्रव कारेलिासक ने 1979 म मानिावधकारों के क्रवमक विकास ताा उनकी प्रकवत को ध्यान म रखते हए मानिावधकारों की तवन रववढ़याुँ बतायव ह इन तवनों रववढ़यों के ृ मानिावधकारों का विकास र्व इसव क्रम म हआ ह ै प्राम रवढ़व म नातकरक ि रीनववतक अवधकार कावमल ह दसरव रवढ़व म सामावीक ताा आवाषक अवधकार कावमल ह ताा तवसरव रवढ़व म सामदावयक ु ू अवधकार ीसै े विकास का अवधकार, स्ि्च्छ रयाषिर का अवधकार आवद कावमल ह अवत प्राचवन काल से हव कावन्त वक्ा की बात की ीतव रहव ह ै

ससार के सर्व धम-ष दकषन-मानि ीविन ं म कावन्त के महत्त्ि को बताते रह े ह ारतवय धमष-दकनष ों म विश्वबन्धत्ि मानि क्या , प्रेम एि कावन्त ु ं का उरदके वदया तया ह ै ीहाुँ एक ओर महिावर स्िामव ीव ने अवहसा को मानि का ररम धम ष स्िवकार ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 152 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वकया ह ै िहीं तशतम ब या ह ै ईसाई धम ष म प्रर् ईसा ि ीव ने मानि को करू ा रर कावन्त का सदके रहचुँ ा ु ु ं ी मसवह ने ससार को प्रेम, दया, कावन्त एि सिा की वक्ा प्रदान की ह ै इस्लाम धम ष ने र्व ससार के लोतों ं ं ं को समानता ि ाई-चारे का सदके वदया ह ै 1914 म प्राम विश्वयि हआ तब विटेन के बरदेशन्ड रसेल न े ु ं विटेन की यि नववत का विरोध वकया रर विश्व म यि के स्ाान रर कावन्त को महत्त्ि वदया, ररन्त विटेन ु ु ु की साम्रायिादव नववत के आत े उनकी आिी नहीं सनव तई वीसके रकर ामस्िरूर यि हआ रर इस ु ु यि म 1,12,000 सैवनक ताा 50,000 नातकरक मारे तए रर बहत नकसान हआ विश्वयि के ु ु ु दष्टरकर ामों को दखे कर विश्व के लोत कावन्त की स्ारना रर सोचने-विचारने लत े तब 1924 म सयक्त ु ं ु राष्टर सु की स्ारना की तई ं सयक्त राष्टर सु के राुँच मलर्त वसिान्त ह- ु ू ू ं ं □ कावन्तर ष सह-अवस्तत्ि ू □ सहयोत □ आतकरक मामलों म अहस्त्ेर ं □ अनाक्रम □ कावन्तर ष ढत से समस्याओ का समाधान ू ं ं सयक्त राष्टर सु के साा-साा ियै वक्तक रूर से र्व ससार की अनेक सस्ाओ एि अनेक महाररुषों ने ु ु ं ं ं ं ं ं ं ीनमानस को कावन्त का सदके वदया ररन्त वरर र्व विश्व म 1939 म वद्वतवय विश्व यि वछा तया यह ु ु ं विश्वयि प्राम विश्वयि से अवधक र्यकर ाा इस यि म ररमा अस्त्रों के प्रयोत न े ीारान के नतर ु ु ु ु ं वहरोवकमा रर नातासाकी म मानिता की नींि हव ेकेार कर रख दव सन 1939 के विश्वयि म लतर्त 1,70,000 सैवनक एि 1,90,000 नातकरक मारे तए ो रर ीान-माल ु ं की ारव हावन हई ाव अब विश्व रनः यि के स्ाान रर कावन्त की बात सोचने-विचारने लता ररन्त ु ु ु िास्तविकता आी र्व कछ रर हव ह ै आी विश्व तवसरे विश्वयि की सम्ििानाओ को नकार नहीं ु ु ं सकता ह ै आी विश्व का हर देक अरनव स्ा के वलए अरने राष्टरवय बीट का 40-50 प्रवतकत व्यय कर ु रहा ह ै हम एक ओर कावन्त का नारा द े रह े ह रर दसरव ओर ररमा अस्त्र तैयार कर रह े ह यवद हम ु ू अमके रका की बात कर तो उसके रास इतने ररमा अस्त्र ह वक यह ससार कई बार नस वकया ी सकता ह ै ु ं अब एक बात तो वनवश्चत हव ह ै वक यवद तवसरा विश्वयि नहीं रोका तया तो मानि अवस्तत्ि हव समासे हो ु ीाएता इस खतरे से विश्व को बचाने के वलए हव अब यि के बदले रर कावन्त अवधक बल वदया ी रहा ु ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 153 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.3 राज ीक्ततक क्षरे म चल रह े स्घषय ें ारत एक महान लोकतावरक दके ह ै लेवकन इसके सामने विवर्न्न समस्याए ुँ एि चनशवतयाुँ उत्रन्न हो तई ु ं ं ह वीससे ारत की कावन्त र्त होतव ी रहव ह ै कावन्त के मात ष म बाधक म्य चनशवतयों म ्ेरिाद, ु ु ं साम्प्रदायिाद, ्ेरवय विषमताए,ुँ अरराधवकर , वहसा, ीनस्या विस्ोट, तरवबव, अवक्ा, ीावतिाद, ं ं सामावीक-आवाषक -असमानता आवद प्रमख ह ु क्षेरनादायि- ारत म राष्टरवनमाष एि कावन्त के मात ष म ी बाधाए वदखाई दते व ह, उनम ्ेरिाद प्रमख ह ै ु ं ं ्ेरिाद ने कावन्त एि व्यिस्ा को बनाए रखने म तो बाधा उत्रन्न की हव ह,ै सा हव सा दके की एकता ं एि अखण्डता को र्व ीबरदस्त चनशतव दव ह ै ु ं ारत के रकररे् म ्ेरवयिाद का ाष-राष्टर की तलना म वकसव ्ेर विकषे अिा राय की अरे् एक ु छोटे ्ेर से लति, अरनारन उसके प्रवत र्वक्त या आकष ष रखने से ह ै ्ेरिाद राष्टरवयता की िहत ृ िाना का विरोध ह ै इसका ध्येय सकवचत ्ेरवय स्िाों को रर्ा करना ह ै ारत म ्ेरिाद ्ेर के ु ू ं अलिा ाषा एि धम ष से र्व सम्बवन्धत रहा ह ै ्ेरिाद एक दके व्यारव समस्या ह,ै ्ेरवय मद्दों को लेकर ु ं ारत के विवर्न्न लोतों म बहधा आदोलन एि अवर्यान होते रहते ह ारतवय रीनववत म आी ्ेरिाद ं ं वीस रूर म ह,ै िह मलतः स्ितरता प्रासे करने के बाद की ुटना ह ै ू ं भारिवय रीा वन्ि ें क्षेरनादायि उदायिय हो े ै ेार - i. आवाषक एि सामावीक ्ेर म विकास का असमान रूर ताा इन ्ेरों म विकास के अिरा से ं ीनता म ारव वनराका का ीन्म हआ, वीससे ्ेरिाद को बढ़ीाा वमला ii. ीवविका के वलए रीतार को लेकर र्वमरर की अिधार ा का ीन्म हआ महाराष्टर म वकिसेना, ू ु असम म असमत रकरषद, ेारखण्ड म ेारखण्ड मवक्त मोचाष ीसै े रीनववतक दलों ने र्वमरर ु ू ु की अिधार ा को अरना रीनववतक उरकर बनाया ह ै वीससे ्ेरिाद को बढ़ाा वमला ह ै iii. ्ेरवय दलों के वनमाष एि सकवक्तकर ने र्व ्ेरिाद को बढ़ाा वदया ह ै ाषायव आधार रर ं ीब से रायों का वनमाष हआ तब से ्ेरिाद को ाषिााद से बहत बढ़ाा वमला ह ै iv. सन 1990 के बाद दके म ीबरदस्त रूर से तठबधन की रीनववत का प्रारम्र् हआ ह ै वीसके ं कार ्ेरवय दलों के समाषन के वलए रैके ी की रीनववत का प्रचलन करू हआ ह ै वीससे ु रीनववत म ्ेरिाद को बढ़ाा वमला रर दके म कावन्त प्रयासों को ीबरदस्त ेटका लता ह ै साम्परश्दायियनादायि- साधार क्दों म साम्प्रदायिाद का ाष है-धम ष ाि सम्प्रदाय के आधार रर एक- दसरे के विरि र्दे ि रखना ू डी॰ ई. वस्मा के क्दों म , “साम्प्रदावयकता को आमतशर रर वकसव धावमकष समह के स्िाी, वि्रीक ू रर आक्रोकर ष ष्वसको से ी़ा ा ीता ह ै ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 154 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 साम्प्रदावयकता के अततषत ने सर्व ि़ानाए ुँ ताा वक्रया-कलार आते ह वीनके आधार रर वकसव विकषे ं समह के वहतों रर बल वदया ीाए रर उन वहतों को राष्टरवय वहतों से र्व ँरर की प्रावमकता दव ीाए ू ऐसव ि़ानाओ ताा कायषकलारों के रवछे स्िाष-वसवि का लक्य होता ह ै धम ष का प्रयोत रीनववत म ं तनि को उत्रन्न करता ह ै वीससे दके म अकावन्त रै लतव ह ै ारत म ‘मवस्लम लवत’, म’ुवस्लम ु मीवलस’,

Quotes detected: **0%** id: **184**

‘इस्लावमक स्िय सु’,

Quotes detected: **0%** id: **185**

‘मीवलसे मक्बरात,’

Quotes detected: **0%** id: **186**

‘वहन्द महास◌ा’,

Quotes detected: **0%** id: **187**

‘अकालव दल’,

Quotes detected: **0.01%** id: **188**

‘बीरत ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ू दल’,

Quotes detected: **0%** id: **189**

‘वकिसेना’

आवद सतठन साम्प्रदावयक सतठन ह ◌ी ◌ा्रारतवय रीनववत को प्र◌ा्रावित कर दके की ◌ं ◌ं कावन्त को र्त कर रह े ह ◌ं ◌ा्रारत म सम्प्रदाय की समस्या के वलए म्य कार सरकार की उदासवनता एि रीनेताओ की मवस्लम ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं तसवकर की नववत ह ै मसलमानों का आवाषक एि कवै ्क वरछ़ा ◌ारन र्व साम्प्रदायिाद के वलए वीम्मदे ◌ार ◌ु ◌ु ◌ं ह ै साा हव ◌ा्रारत म साम्प्रदावयकता का एक कार सकवचत दलवय, तटवय ताा चनिाव रीनववत र्व ह ै ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं भारि ें साम्परश्दायिायनादायि े दायिष्टपरर ों - ◌ु i. साम्प्रदायिाद-राष्टरवय एकता, अखण्डता, विकास एि राष्टरवय स◌ा्रा के वलए ◌ातक ह ै ◌ु ◌ं ii. साम्प्रदायिाद-दके म रीनववतक अवस्◌ारता उत्रन्न करता ह ै साा हव साम्प्रदावयक दतों म ◌ं अनेकों ◌ीाने चलव ◌ीातव ह एि राष्टरवय सम्रवत्त को र्व हावन रहचुँ तव ह ै ◌ं क्षेरवय असिल - ◌ा्रारत की ◌ीनस्या विश्व म दसरे स्◌ान रर ह ै ◌्ेररल की ष्वस से ◌ा्रारत का विश्व म ◌ु ◌ां ◌ं ◌ू सातिुँ स्◌ान ह ै इसका ◌्ेररल 32,87,782 ित ष वकलोमवटर ह ै र्शतोवलक आधार रर ◌ा्रारत म बहत सव विषमताए ◌ुँ राई ◌ीातव ह रीाब, हकरया ◌ा ि उत्तर प्रदके सबसे उरीाँ र्वम िाले ◌्ेर ह िहीं रीस्◌ान ◌ू ◌ं ◌ीसै े मरुस्◌ाल म अ्रमारा म र्व कवष उरी सम्र्ि नहीं ह ै इसव प्रकार वकसव ◌्ेर म अनी का, वकसव ◌ृ ◌्ेर म करास, चाय का उत्रादन होता ह ै वकसव ◌्ेर म खवनी सम्रदा का अरार ण्डर ह ै ◌ा्रारत म ◌ीावत, धम ष ि सास्कवतक विवर्वन्नताए ◌ुँ र्व राई ◌ीातव ह विकास की ष्वस से ◌ा्रारत म ◌्ेरवय असतलन ने ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं ◌ा्रारतवय लोकतर को प्र◌ा्रावित वकया ह ै वीसके कार ◌्रे ि◌ाद ताा प्राकतिााद की ि◌ा्राना का ◌ीन्म ◌ं हआ ह ै ◌्ेरवय असतलन के कार हव राक रायों की माँुत प्रबल हई ह ै वीससे वहसात्मक रीनववत का ◌ीन्म ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं हआ ह ै ताा विवर्न्न रायों म आदोलन, सुषष, तनिा आवद की वस्◌ावतयाँु रैदा हो रहव ह ◌ी राष्टरवय ◌ं ◌ं एकता म बाधक ह न् रक्षरि- ितषमान म वनर्रता ◌ा्रारतवय लोकतर के सम् एक तम्रवर चनशतव ह ै क्योंवक ◌ा्रारत की ◌ु ◌ं अवधकाक ◌ीनस्या वनर्र ह ै ◌ा्रारत म सा्रता का राष्टरवय प्रवतकत आी 52.21 ह ै वनर्रता मानि ◌ं ◌ं ◌ीावत के वलए अवर्कार ह ै वनर्र व्यवक्त को अरने कतषव्यों एि अवधकारों का बोध नहीं होता ह ै वीसके ◌ं कार न तो ि◌ह अरने अवधकारों को प्रयोत कर सकता ह ै रर न हव कतषव्यों का रालन कर सकता ह ै इसके कार ◌ा्रारत के विकास की तवत बहत धवमव हो तई ह ै ◌ीविन के सर्व ◌्ेरों म वनर्र व्यवक्त के उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 155 ◌ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कोष की सम्र्िानाए ◌ुँ बढ़ ◌ीातव ह साा हव वनर्रता ने ◌ा्रारतवय समी म आवाषक विषमताओ को ◌ं ◌ीन्म वदया ह,ै वीससे अरराधों म ि◌वि हई ह ै ताा अधविश्वासों म व्यवक्त आी तक वुरा हआ ह ै ◌ृ ◌ं न्हसा एन सम्परश्दायिायनादायि- ◌ा्रारतवय लोकतर ताा राष्टरवय एकता अखण्डता एि कावन्त के वलए वहसा एक ◌ां ◌ां ◌ं ◌ं ◌ं तम्रवर चनशतव ह ै ◌ी दके के आवाषक ि सामावीक ढाँुचे को वछन्न-वर्न्न कर दते व ह ै ◌ा्रारतवय समी म ◌ु वहसा कई रूरों म वदखाई दते व ह ै ◌ीसै े ◌ीावततत वहसा, चनिाव वहसा, ि◌तीय वहसा, साम्प्रदावयक वहसा, ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं उग्रिादव तटों की वहसा, रीनववत से प्रेकरत वहसा एि वहत समहों के द्वारा की ◌ीाने ि◌ालव वहसा ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ा्रारत म वहसा को बढ़िाा देने म अलत्तिााद की म्य र्वमका रहव ह ै अलत्तिााद से वहसा को ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं ◌ीबरदस्त बढ़िाा वमला ह ै अलत्तिााद्व आदोलनों म नाता आदोलन, ि◌विडनाड आदोलन, वर्मीं मात, ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं रीाब म अलत्तिााद, उ्रा आदोलन रर ◌ीम्म कश्मवर म अलत्तिााद्व ◌ुटनाए प्रमख ह ◌ा्रारतवय ◌ू ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं समी म वहसा के वलए वनम्रवलवखत म्य

Plagiarism detected: **0.02%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **190**

कार ों को वीम्मदे ◌ार माना तया ह-ै ◌ु ◌ं i. ◌ीब कासन लोतों की आिश्यकताए, आकाए रर अ◌ेाए ररव करने म असमाष होता ह ै त ◌ो ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं ◌ीनता म तवव्र असतोष ि वनराका उत्रन्न होतव हवे ◌ीससे लोत वहसा की ओर अग्रसर होते ह ◌ं ◌ं ii. के न्◌ि एि राय स्तर रर अयोग्य नेतत्◌ि र्व वहसा का आधार बनता ह ै ◌ृ ◌ं ◌ं iii. आवाषक वक्रयाकलार ◌ीसै े बेरो◌ीतारव, वनधषनता, तस्करव आवद र्व वहसा को बढ़िाा दते े ह ◌ं iv. ◌ा्रारतवय प्रकासवनक व्यिस्◌ाा की रवटयाँु ◌ीसै े:- प्रकासन द्वारा समो◌ा समाधान म अनिाश्यक ◌ू ◌ू दरे व होना, ्साचार, लालरीता काहव, अककलता आवद र्व वहसा को बढ़िाा दते े ह ◌ु ◌ं v. ◌ा्रारत के रीनववतक दल रर उसके नेतात सत्ता प्रावसे की लालसा म दके के वलए ◌ीातवय वहसा को अरना लेते ह ऐसे हव ◌ा्रारत के ◌ा्र ◌ोसव दके रावकस्तान ताा चवन र्व ◌ा्रारत म वहसा को ◌ं ◌ं बढ़िाा दने े म सवक्रय रहते ह रीाब ताा ◌ीम्म-कश्मवर राय म रावकस्तान वहसक तत्त्◌िों को ◌ू ◌ं ◌ं प्रोत्साहन दते ◌ा रहता ह ै साा हव चवन ताा रावकस्तान वमी ताा नाता ि◌ीवहयों को सैवनक ि अन्य सहायता दके र उकसाते रहते ह वहसा ताा अलत्तिााद दके के लोकतावरक को कमी◌ीर ◌ं ◌ं कर रह े ह वहसात्मक प्रिवतयों के कार दके के आवाषक, ि◌ावनक, रद्योवतक एि कैव्क ◌ृ ◌ं ◌ं आवद ◌्ेरों का समवचत विकास नहीं हो रा रहा ह ै िहीं वहसा ने राक स्◌ियतकासव रायों की ◌ृ ◌ु ◌ं मातों को र्व बढ़िाा वदया ह ै ये सब दके की रीनववत म अवस्◌ारता लाते ह एि कावन्त प्रयासों म ◌ं ◌ं बाधा उत्रन्न करते ह ◌ा्रारत म स्◌ितरता के समय सन 1947 म ◌ा्रारत वि◌ा्रीन ि◌ा्रारत-रावकस्तान) के दशरान साम्प्रदावयक दतों ◌ं ◌ं ि◌वहन्द-मवस्लम) ने विकराल रूर धार

कर वलया ाा िहीं सन 1961 म मध्य प्रदके के ीबलरर म र्व ु ु ू साम्प्रदावयक दत े हए सन 1964 म वबहार, बताल ताा मध्य प्रदके म साम्प्रदावयक दत े व्यारक रूर स े ं ं ं रै ले साम्प्रदावयक दतों का यह चक्र 1970 तक लतातार चलता रहा रर यह वबहार के अलिाा ं महाराष्टर, उत्तरप्रदके , तीरात, रवश्चम बताल, कश्मवर एि असम तक रै ल तया इसम लतर्त 1100 ु ं ं वहसक ुटनाए ुँ ुटीं सन 1984 की साम्प्रदावयक वहसा ने आध्र प्रदके राय के हदै राबाद एि महाराष्टर के ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 156 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 मम्बई एि ररताबाद कहरों को ररव तरह अरनव चरेट म ले वलया ाा िहीं 1989 म वबहार के ्रातलरर ु ू ु ं ं के दतो का रूर र्व कारी िवर्स ाा ्रारत म म्यतः दत े वहन्दओ रर मवस्लमों के बवच हए ररन्त ु ु ु ं ं ं ु 1984 म तत्कालवन प्रधानमरव इवन्दरा ताँुधव की हत्या के बाद वहन्द वसख दत े ्रा क तये 06 वदसम्बर ं ं ू 1992 म अयोध्या म ववािदत बाबरव मवस्ीद वतरा वदए ीाने से ररे दके म साम्प्रदावयक वहसा रै ल तई ू ं 2002 म तोधरा रेलि े स्टेकन रर साबरमतव एक्सप्रेस रर हमला कर चार वड्बों म आत लता दव तई तीरात म ्रा की वहसा 2 माह तक चलतव रहव वीसके रलस्िरूर िहाुँ के विधानसरा चनिों िवदसम्बर ु ु ं 2002) तक साम्प्रदावयक तनिा की वस्ावत बनव रहव इस प्रकार साम्प्रादवयक ताकत वहसा को बढ़िाा ं दते व ह ै ीान्िनादायि- ्रारतवय लोकतर को प्र्रावित करने म ीावतिाद एक महत्त्रि ष एि वन ाषयक तत्त्ि ह ै इसका ू ं ं प्रि्रा प्रत्येक स्तर रर ि ्रे र रर ़ा ता ह ै यह स्रस रूर से दखे ा ीा सकता ह ै वक ्रारत म रीनववतक व्यिस्ाा एि सामावीक व्यिस्ाा एक दसरे को प्र्रावित करतव ह ै सामावीक व्यिस्ाा म ीावतिाद एक ं ू प्रमख रहल ह ै ीा ररे ्रारत राष्टर की रीनववत को प्र्रावित करता ह ै डी. नमदष श्वे र प्रसाद के अनसार, ु ू ू ु

Quotes detected: **0.01%** id: **191**

"ीावतिाद, रीनववत म रकर त ीावत के प्रवत वनष्ठा ह ै "

अतः ीावतिाद एक ीावत के लोतों की िह ि्राना ह ै ीा उन्ह अरनव ीावत विकेष के वहतों की ्रा के वलए प्रेकरत करतव ह,ै साा हव अन्य ीावतयों के वहतों की अिहले ना र्व करतव ह ै रीनववत एि प्रकासन म ं र्व ीातवय आचर देखा ीाता ह ै ्रारतवय रीनववतक व्यिस्ाा रर ीावत का प्रि्रा वनम्नवलवखत रूरों म दखे ा ीाता हः ै - ्रारत म लोकस्रा ताा राय विधानस्रा चनिों म रीनववतक दल प्रत्यावकयों का चयन प्रायः ीावत के ु आधार रर हव करते ह यहाुँ तक वक रीनववतक दलों का तठन र्व ीाववतत आधार रर होने लता ह ै ्रारत म मतदाताओ का व्यिहार र्व ीावतिाद से अछता नहीं ह ै ीावतयाुँ सतवठत होकर रीनववतक एि ू ं ं ं प्रकासवनक वन यष प्रवक्रया को प्र्रावित करतव ह ्रारत म रीनववतक ररस्कारों के वितर म र्व ीावतिाद की ेलक दखे व ीा सकतव ह ै ु ीावतिाद के दष्टरकर ाम- ्रारतवय समाी म ीावतिाद ने ीातवय एि ितीय सुषों को बढ़िाा वदया ह ै ीा ं ं ु दके ि समाी के विकास म बाधक ह ै ीावत के आधार रर चयवनत व्यवक्त अरनव ीावत को सर्व प्रकार की सविधाए ुँ दने े का प्रयास करता ह ै इससे रीनववतक ्साचार का ीन्म होता ह ै ीा राष्टरवय एकता-एि ु ं अखण्डता के वलए उवचत नहीं ह ै ीावतिाद की ि्राना से प्रेकरत मतदाता अरनव ीावत के अयोग्य प्रत्यावकयों को हव ोट दते े ह वीससे योग्य व्यवक्तयों का चयन हव नहीं हो राता ह ै रा वन्ि ेा अपराधवेर - ितषमान म ्रारतवय रीनववत का अरराधवकर बहत तीव से बढ़ रहा ह ै दके के समस्त नातकरकों को चावहए वक िह आत्मिालोकन करे रर प्रयास करे वक ीा नैवतक म्य हम ू खो चके ह उन्ह हम सर्व रनः आत्मसात कर दके म सर्व ओर कालाबाारव, करश्वतखोरव, ्साचार, ु ु ्राई-र्तिवााद, ीावतिाद ि साप्रदायवकता का ीहर रै ल रहा ह ै ऐसा दखे ा तया ह ै वक ्रारतवय ं रीनववत म धन ि कवक्त का बोल-बाला ह ै एक आकलन के अनसार सामान्यतः 90 प्रवतकत से र्व ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 157 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अवधक हमारे नेतात या तो अत्यवधक धनाढय रकरिारों से होते ह अिाा उनका सबध आररावधक छवि ं ं िाले लोतों से होता ह ै त ित्ता कर्व र्व हमारव चनिा प्रवक्रया का आधार नहीं बन रायव ह ै कायद यहव ु ु कार ह ै वक योग्य व्यवक्त आत े नहीं आ राते ह रर यवद आते र्व ह तो धन कवक्त का अि्रा उन्ह रवछे खींच लेता ह ै इसवलए रीनववत म ि लोत आ ीाते ह वीनम स्ाषररता की ि्राना दके के प्रवत प्रेम की ि्राना से कहीं अवधक बलितव होतव ह ै यवद वकसव कायाषलय अिाा वि्रात का कवषस्ष ा अवधकारव हव अयोग्य, ्स अिाा अरराधव प्रिवत्त का होता, तब इन रकरवस्ावतयों म प्रकासन को स्िच्छ रखना बहत ृ कवठन हो ीाता ह ै हमारव रीनववत की विडम्बना र्व कछ इसव प्रकार ह ै ु दके के अवधकाक नेता हव ीब अरराधव प्रिवत्त के ह तब रकर ामतः दके की रीनववत का अरराधवकर ृ ं स्िा्रविक हव ह ै यहव ्स नेता अरने प्रकासन म ्साचार ि ्राई-र्तिवााद को ीन्म दते े ह दके के अनेक महत्त्रि ष रदों को यह सवधे प्र्रावित करते ह ताा रदों रर र्वतषयाुँ योग्यताओ के आधार रर नहीं ू ं अवरत इनकी वसराकरकों ि वनदकदेश ों के अनसार होतव ह ु ु हमारे दके की कानन-व्यिस्ाा म र्व सधार की आिश्यकता ह ै इस व्यिस्ाा म अनेक कमीर कव़ा याुँ ू ु ह अनेक ्स नेताओ रर आरोर लतते रह े ह रर्न्त अी तक कायद हव वकसव ब़ा े नेता को सीा के दायरे ु ं म लाना स्रि हआ हो ि े अरने रद, धन अिाा कवक्त के प्रि्रा से स्िय को अााद करा लेते ह ताा ं ं स्िय को स्िच्छ वसि करने म सरल हो ीाते ह ं दके के वलए अत्यत द्राषग्यर ष ह ै वक स्ितरता के छह दककों के बाद र्व हमारव रीनववत का आधार ू ं ं ु ीावतिाद, ्रेरवयिाद ताा ्राई-र्तिवााद ह ै अी र्व अवधकाक नेता इसव आधार रर चनिा ीवत कर ु ं रीनववत म आते ह ै ये लोत ीनमानस की कमीरव का ररा लार् उठाते ह कसी राने की लालसा म यह ू ु वकसव र्व स्तर तक वतर ीाते ह ताा लोतों को ीावत, ्रेर, ्राषा ि धम ष के नाम रर आरस म ़ला ाकर अरना स्िाष वसि करते ह

Quotes detected: **0%** id: **192**

"रट डालो रर री करो"

की नववत ारत की स्ितरता प्रावसे के समय राष्टर के तत्कालवन कवष ष नेताओ ू ं ं की हठधवमतष ा रर व्यवक्ततत स्ाष के कार दके का वि्रीन हआ क्योंवक ि े ीनते ा े वक एक साा रहकर अरना मतलब वसि नहीं कर राएत े ं सविधान म अ्रस्यकों को विकषे ावधकार ताा ीम्म-कश्मवर के वलए धारा 370 की व्यिस्ाा करके ू ं ं दके म सप्रदायबाद को बढ़ाा वदया तया ा्राषा के आधार रर रायों का तठन र्व

Quotes detected: **0.01%** id: **193**

'रट डालो रर रीा ू ं करो'

की नववत के वनिाषह के वलए वकया तया सर्व दल वकसव-न-वकसव मद्द े रर अरनव रीनववत चला रह े ह ै वरछ़ा ितों को आर्, मवदर-मवस्ीद ु ं ंविाद ओर वहदत्ि रनीाषतर ीसै े अनेक मद्द े प्रमख ह इन मद्दों रर ि े नातकरकों म ित-ष विर्दे , विद्वषे ु ु ु ु ं ु ताा तनिा ीसै व वस्ावतयुँ रैदा कर रह े ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 158 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कछ ्ेरवय रावटषयों, तेलतदके म डव.एम.के . नेकनल कीन्फ्र स, बसरा, समता राटी, ेारखण्ड-मवक्त मोचाष, ु ु ु वबहार रवन्स राटी, असम त रकरषद, वसवक्कम सग्राम रकरषद आवद सकवचत विचारधारा रर आधाकरत ु ं ं वि्रीन के हव प्रवतरल ह ये रीनववतक दल ीनता को ्रा काकर कर्व रिीचल के वलए कर्व िनाचल तो कर्व-बोडोल ड ीसै े ू ं अलत रायों की धार ा को लेकर उनसे तरह-तरह के अरराध ताा तो़ा -रो़ा करिाते ह इस प्रकार रीनववतक दलों ने आम ीनता के सवहष्ट स्ि्रि़ा को ररखकर अरनव दरव-बढ़ाई ह ै इसम अरनव प्रवतष्ठा ु ू समेकर

Quotes detected: **0%** id: **194**

'येन-के न प्रकारे '

Quotes detected: **0%** id: **195**

'रट डालो रर रीा करो'

की नववत के अनतामव बनकर

Quotes detected: **0.01%** id: **196**

'्स करो रर ू ु रीा करो'

की नववत अरनाई ह ै अरराविधयों के रीनववतक सबध होने के कार रवलस उनसे डरतव ह ै ताा उनके वखलार दी-ष ु ं ं मकदम रर कोई सनिाई नहीं होतव रलतः ऐसे असामावीक तत्ि रर हत्या ीसै े अरराधों के अवर्यक्त ु ु ु र्व ब़ा व स्या म सासद, विधायक रर कई बार तो मरव तक बनने म सरल हो ीाते ह ं ं ं नैत्र्श्े पटल पर रीा वन्ि क्षेर ें िल रहे सघषब ां ा्रारत-चवन विाद- कछ मद्दों को लेकर ा्रारत-चवन के सम्बन्धों म खटास उत्रन्न हई ह ै ीसै े- ु ु □ वत्बवतयों के धमतष रु दलाई लामा 1959 म ा्रारत आकर बस तये ो ताा विदके व त मान्य ु व्यवक्तयों के साा दलाई लामा की मलाकतों का चवन विरोध करता रहा ह ै दलाई लामा के साा ु अमरवकी राष्टररवत बराक ओबामा की मलाकात रर चवन को तम्रवर आरवत्त हई ु □ लद्दाख- अरु ाचल सवमा विाद ि वरछले वदनों हई ुसरैठ की ुटनाओ ने र्व ा्रारतवय ु ं रीनववत के वलए सकट उत्रन्न वकया ह ै ं □ कश्मवकरयों को स्टेरल िवीा की नववत एि राक अवधकत कश्मवर से होते हए ग्ि़ादर रोटष स े ृ ं वकनवीयात तक स़ा क वनमाष के कार र्व दोनों दके ों म तनिा की वस्ावत बनव ं □ दव् चवन सातर म ा्रारत की तेल करवनयों ि वियतनाम के साा चवन के विाद के साा हव ं वरछले सालों के रारस्राकरक व्यारार म ा्रारत को व्यारार ुाटा हआ □ छआई ि अन्य चवनव कम्रवनयों रर ीाससव के आरोर ने ा्रारतवय रीनववत म तनिा उत्रन्न ु ू वकया ह ै वीससे कावन्त के प्रयासों को ेटका लता ह ै ा्रारत-अरतावनस्तान सम्बन्ध कन्धार विमान अरहर ए 2014 म हरे ात म ा्रारतवय दतिाास रर हमला हआ वीससे ा्रारत ं ू अरतावनस्तान सम्बन्धों म तनिा रहा ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 159 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ रावकस्तान र्व ा्रारत के वलए तनिा की वस्ावत रैदा करता रहता ह ै वीससे ा्रारतवय रीनववत म आन्तकरक व्रि् उत्रन्न होता ह ै ताा ऐसे ि वै श्वक मद्द े र्व कावन्त के वलए ब़ा व चनशतव बनकर ु ु सामने ख़ा े वदखाई दते े ह ै वीससे कावन्त र्त होतव ह ै ं 2.4 आर्थथक क्षरे म चल रह े स्यष ें आवाषक ्ेर म चल रह े सुषों के अन्ततत आवाषक कोष रर र्रात, असन्तवलत आवाषक विकास, ु ं प्रवतस्रधाष का बाीार, अप्रसर कवल आवाषक व्यिस्ाा, ि वमकों का विस्ारन रर असमिाके न आवद ह ै आवाषक कार ों म अ्र ि ते न, महतुँ ाई, कालाबाीारव ए रीव सग्रह की प्रिवत्त का ्साचार के साा ृ ू ं ं ं तहरा सम्बन्ध ह ै ीसै े वीन कमषचाकरयों को ि ते न कम वमलता ह,ै ि े अरनव आिश्यकताओ ि दावयत्ि का ं वनिाषह नहीं कर राते वीससे ि े ्स आचर करने लतते ह वीस अनरात म महतुँ ाई ब़ढ़तव ह,ै उस ु अनरात म आम आदमव की आय नहीं बढ़तव व्यवक्त येन-के न प्रकारे अरनव ीरूरतों को रर करने म ु ू ीट ीाता ह,ै वीससे कालाबाीारव, धन सग्रह की प्रिवत्त ए अिधै तरवकों से धन सवचत करने म ै र्व ृ ु ं ं ं ररही नहीं करता ह ै समी के अन्दर िस्तओ को खरवदने की ्मता के आधार रर हव मनष्टय की वस्ावत का वनधाषर होता ह ै ु ु ं सयक्त-राष्टर ने यह सवमा 1 डीलर वनधाषकरत कर रखव ह ै अ्राषत ीी व्यवक्त प्रवतवदन 1 डीलर से कम म ु ं ंविन-यारन करते ह ि े वनधषन ह हाल म हव म ा्रारत सरकार ने वनधषनता का रैमाना 20 रुरये रोीना तय वकया ह ै वीसे वनधषनता रेखा कहा तया ह ै इस आधार रर ा्रारत म 20 रुरये से कम म तीारा करने िाले ु व्यवक्त िवनधषनता रेखा के नवचे) के रूर म ीाने ीाते ह यह वनधाषर नतरवय ए ग्रामव ्ेर म अलत- ं अलत ह ै क्योंवक दोनों स्ानों रर िस्तओ के म्य म अन्तर होता ह ै ितषमान आवाषक व्यिस्ाा म

उर◌ोत ु ू ं की ि स्तओ का ब़ा े रैमाने रर उत्रादन होता ह ै ताा इन उत्रादों को ब़ा े-ब़ा े कारखानों म अत्याधवनक ु ु ं मकवनों

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… id: **197**

द्वारा तैयार वकया ◌ीाता ह ै वीसम कम ि म लतता ह ै कछ दकक रि ष यहव उत्रादन ररम्ररातत ु ू मकवनों के द्वार ◌ा सम्रन्न होता ◌ाा वीसम लाखों ि वमकों को रीतार वमला हआ ◌ाा मकवनों के आधवनकीर ताा कम्तयटरवकत तकनवकी के कार ररम्ररातत ि म का महत्त्ि कम होता तया ृ ु ू ताा कारवतरव के कार तैयार माल को महत्त्ि कम होता तया क्योंवक ग्राहक ि हव माल खरवदते ह ै ◌ी सस्ता रर वटकाँ होता इसव का रकर ◌ाम यह हआ वक बाीर सामान से र्र तया रर प्रवतस्रधाष के कार ि हव हव सामान वबका ◌ी सस्ता एि ंसिष ेष्ठ ◌ाा ◌ीब ररम्ररातत तरवके म बना माल नहीं वबका तो ं उत्रादक उन मीदरों को तर्◌ाह र्व नहीं द े राए वीससे मावलक मीदर ंविाद उत्रन्न हआ रर ररान े ु ू ू कारखाने बद हो तए वीससे लाखों की स्या म मीदर बेरीतार हो तए यह वस्◌ावत ब़ा व र्यिह होतव ं ं ू ह ै वीसम समी का ताना-बाना बरव तरह प्र◌ावित होता ह ै बवसिीं कताद्व के उत्तरिाष म आवाषक ु विकास एि समवि की वदका म विश्व का हव नहीं, अवरत ◌ारत का र्व ध्यानाकष ष हआ आवाषक ु ं विकास के चलते क्रमकः आवाषक नववतयाुँ र्व बनाई तई ि तषमान काल म आवाषक नववतयाुँ र्व बनाई तई ं ं ि तषमान काल म आवाषक कायषक्रमों के सम्बन्ध म न के ि ल रीनेताओ की, बव्क 'ीनसाधार की र्व ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 160 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 रुवच रहव ह ै राष्टरवय अ◌ाषव्यिस्◌ाा के विविध रहलओ के सम्बन्ध म 1991 म वदए तए अनेक सरकारव ु ं नववत विषयक ि क्तव्यों ने नई आवाषक नववत को स्रस ताा ठोस रूर प्रदान वकया ह ै आवाषक नववत की प्रमख विकेषता आवाषक उदारवकर ह ै सरकार द्वारा उदारवकर को ◌ीारदार समाषन वमल रहा ह ै वीसके ु कार अनेक बहराष्टरवय कम्रवनया ◌ारत म व्यारार कर रहव ह ं 2.4.1. भारि ें ्न्ि बे उदायिारनादायि एन उसे दायिष्टरश्भान ां ु ◌ारत म रव.ि व. नरवसम्हा रि ◌ीव की सरकार को इसका ि ये वदया ◌ीाता ह ै वक उन्होंने दके म आवाषक उदारिाद की राह खोलव, ◌ीवक रि ष सरकारों की वनयत्र ि ादव आवाषक नववतयों के कार ररव तरह बन्द ू ू ◌ाव रर वीसम दके की अ◌ाषव्यिस्◌ाा का दम ुट रहा ◌ाा, लेवकन यह उदारिाद बराइयों से मक्त नहव रहा ु ु ु ह ै यह दखे ने म आता ह ै वक उदार अ◌ाषव्यिस्◌ाा के साा रीविाद की अनेक बराइयाुँ र्व दके म आ तई ह ू ु ं हषदष महे ता के कये र ोटाले ने दके को वहलाकर रख वदया ◌ाा आवाषक मामले म कोई र्व दके अन्तराषष्टरवय प्र◌ि ों ि तकी ीं की ररव तरह अिहले ना नहीं करता, ररन्त ू ु वीस प्रकार बहराष्टरवय कम्रवनयों को ◌ारत के आवाषक ्◌ेर म आने की खलव छट दव तई ह,ै उसने ु ू ◌ारतवय अ◌ाषव्यिस्◌ाा के सर्व सामावीक एि रीनववतक ्◌ेरों को अत्यन्त प्र◌ावित वकया ह ै बहराष्टरवय ं कम्रवनयाुँ रर विकवसत ◌ारत दके के साा बहलाओ रर ह्ा रों की नववत का रालन करतव ह 2.4.2. सों ◌ान्◌ी न्रषें ि ा एन ्न्ि बे उदायिारनादायि ◌ां सामावीक विषमता के कार हव ◌ारत अरबरवतयों की स्या के मामले म प्रतवत कर रहा ह ै ◌ारत रूस ं रर विटेन को रवछे छो़ा कर अमके रका रर चवन के बाद दवनया का तवसरा ऐसा दके बन तया ह ै ◌ीहाुँ ु सबसे यादा 97 अरबरवत ह, ि हीं दसरव तरर दके की 30-35 प्रवतकत आबादव तरवबव की रेखा के नवच े ू तीर बसर कर रहव ह ै ऑक्सरीम के एक सि देश के अनसार, विश्व की आधव सम्रवत्त रर विश्व के के ि ल एक ु ु प्रवतकत लोतों का हव आवधरत्य ह ै ि ष ष 2016 म विश्व के एक प्रवतकत सबसे अमवर लोतों के रास बाकी 99 प्रवतकत आबादव से र्व अवधक की सम्रवत्त होतव दसरव तरर आी विश्व म 9 म से एक व्यवक्त के ू रास खाने के वलए र्व रयाषसे रैसे नहीं ह ै हम कह सकते ह ै वक अमवर रर यादा अमवर होते ◌ी रह े ह ताा तरवब रर यादा तरवब इस आवाषक के न्ि वयकर ने लोतों के मन म लोकतर को लेकर र्व कका उत्रन्न कर दव ह,ै क्योंवक यह धार ◌ा बनतव ं ं ◌ी रहव ह ै वक सारे वनयम-कानन अमवरों के लार् के वलए हव बनाए ◌ी रह े ह ै तरवबों को ध्यान म हव न ू रखा ◌ीाता विचारकों का मानना ह ै वक आवाषक उदारिाद से समवि र्ें हव आए, मतर असमानता र्व ृ आतव ह ै सन 1991 म सरकार ने नई आवाषक नववत की ररचाकरक ोष ◌ा की ररन्त दखे ◌ा ◌ीए तो तरवब वकसानों ु का सामन्तव लोतों ने बहत कोष वकया अतर 70 साल के लोकतर रर स्◌िकासन म एक प्रवतकत ं बनाम 90 प्रवतकत का अनरात दखे ◌ा ◌ी रहा ह ै तो वरर क्या रकरितषन हआ ह ै सामावीक असमानता, ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 161 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 आवाषक असमानता, कवै ्क असमानता, ्◌ेरवय असमानता रर रद्योवतक असमानता हव दके को विकवसत होने से रोकतव ह ै यवद दखे ◌ा ◌ीए तो आवाषक न्याय हव सामावीक न्याय की नीं◌ि ह ै आवाषक न्याय के वबना हम सामावीक न्याय के विषय म सोच र्व नहीं सकते एक कररोटष सचेत करतव ह ै वक "वकसव र्व मार से हम सरर-धनिानों के काल म रह रह ह यह मलम्म का ु ु दसरा काल ह ै वीसम चमक-दमक ि ले मखशटे ने सामावीक समस्याओ एि ्साचार को ढ़क वलया ह ै " ु ं ं ू नातकरकों की सामवहक आिश्यकताओ को ररा करना, ि तषमान एि र्विष्टय के वलए ससाधनों के वितर ू ू ं ं ं को अनकलतम-स्तर रर बनाए रखना सरकारों का कतषव्य ह ै साा हव सर्व के वलए बाीरव स्ि तरताओ ु ू ं ं के ला◌र्ों को अवधकतम करने एि बाीरव कवक्तयों के द्वारा उठने ि ालव अस◌ारा रर आकका को ु ं ं न्यनतम करने के वलए अ◌ाषव्यिस्◌ाा के अवर्क्या की द्ता लोकतावरक सरकारों म होनव चावहए ू ं 2.5 सामाक्तजक अवना् सा्स्कृ क्ततक क्षरे म चल रह े स्यषय ें प्रत्येक राय की ◌ाषा रर उसकी विरासत की समवि के साा-साा उसकी सास्कवतक विविधता का ृ ृ ं सम्मान करते हए, सरकार ने "एक ◌ारत ि ष्ठ ◌ारत" कायषक्रम आरम्र् वकया ह ै यह कायषक्रम अलत- अलत रायों को एक ि षष तक विवर्न्न सस्कवतयों से ◌ीा ता ह,ै तावक प्रत्येक राय एक-दसरे की ृ ं ू सास्कवतक ि◌ानाओ को समेकर आत्मसात कर सके ृ ं ं व्यवक्त वीस समी म रहता ह ै उसका समवचत प्र◌ि ा उसके व्यवक्तत्त्ि रर स्रस रूर से ग़ाता ह ै व्यवक्त के ु व्यवक्तत्त्ि विकास के वनधाषर म उसके समी द्वारा प्रासे सामावीक अनर्वतयाुँ बहत महत्त्ि र ष र्वमका ु ू ू ू वन◌ारतव ह क्योंवक व्यवक्त का व्यवक्तत्त्ि उसके समी ताा सस्कवत के अनरूर होता ह ै प्रत्यके सस्कवत म ृ ृ ु ं ं वकक के समीवकर की एक विवध होतव ह ै इसव विवध के आधार रर हव वकसव समी की सस्कवत ृ ु ं सरक्त एि सरक्त रहतव ह ै

व्यवक्तत्त्ि विकास म अनेक सामावीक कारकों का प्रिया श्र ता ह ै ु ं ं वीनम से कछ प्रमख कारक वनम्नवलवखत ह- ु ु i. माता-वरता का प्रिया- वकक के ीन्मोररान्त उसके ँरर सबसे रहला प्रिया उसकी माता का ु श्र ता ह ै वरर उसके वरता का माता-वरता द्वारा प्रासे स्नेह वकक के व्यवक्तत्त्ि को स्िस्ा पि ु ं स्नेहर ष बनाता ह ै ररन्त अी के सामावीक ितिार म दखे ा ी रहा ह ै वक माता-वरता अरने ू ु बच्चे को रयाषसे समय नहीं द े रा रह े ह अतः ऐसे वकक वीन्ह रयाषसे स्नेह रर स ा प्रासे नहीं ु ु होतव ह,ै कालान्तर म उनम असामावीक व्यिहार वदखायव दने े लतते ह ै ीसै े बालकों का अरराधव व्यिहार करना ताा हवन ि्राना, आत्म-के वन्ित हो ीना ताा उनका अनेक असामावीक कायों म ्रातवदार बनना ii. रकरिार के सदस्यों के ररस्रर सम्बन्धों का प्रिया- वकक के प्रारवम्रक िषों के अनि्र उसके ु ु ि्राव व्यवक्तत्त्ि का वनधाषर करते ह मनी्वनकों ने अरने कोधों के माध्यम से इस बात की रवस की ह ै वक वीन रकरिारों म ला ाई-ता ा पि कलह का माहशल होता ह,ै ऐसे रकरिारों के ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 162 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 बच्चों म हवन ि्राना, पि सिावे तक अवस्ारता आवद कवलत विकवसत हो ीते ह, वीसस े ु ं ं उनम सामावीक समायोीन करने की ्मता का विकास नहीं हो राता ह ै iii. विद्यालय का प्रिया- विद्यालय म वक्क, सहराठव, विषय ताा विद्यालय के ितिार का बालक के व्यवक्तत्त्ि रर तहरा प्रिया श्र ता ह ै कोटषी, कोल ताा बेरोन ि1976) ने अरने अध्ययन के रलस्िरूर यह राया वक वक्क यवद कसमायोवीत व्यवक्तत्त्ि का ह ै तो उनके ु वकष्टयों म हवनता ताा असा आवद कवलत ों

Plagiarism detected: **0.04%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… + 5 resources! id: **198**

का विकास होता रर ीब वक्क समायोवीत ु ु व्यवक्तत्त्ि का होता ह ै तो उनके वकष्टयों म र्व सामावीक कवलत ों का विकास होता ह ै ु फ्रै न्सिष, 1975 ने अरने अध्ययनों म बताया वक ीब वक्क रर छार के सम्बन्ध बैरर ष होते ू ह त

ो छार की कवै ्क उरलब्ध न्यनतम हो ीतव ह ै ू अतः वक्क का व्यिहार र्व बालक के विकास को प्र्ावित करता ह ै यवद वक्क का व्यिहार बालक के साा अच्छा होता तो बालकों म आत्मविश्वास, उत्तरदावयत्ि की ि्राना ताा स्िस्ा सामावीक त ों का विकास होता बालकों रर अरने सहरावठयों के व्यिहार पि ु ं

Plagiarism detected: **0.07%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **199**

विद्यालय के ितिार का प्रिया र्व श्र ता ह ै iv. सामावीक स्िवकवत का प्रिया-सामावीक स्िवकवत से तात्रयष समी म रहने िाले ऐसे व्यवक्त ृ ृ वीसे बालक महत्त्ि र ष समेता ह ै उनके द्वारा प्रासे अनमोदन ताा स्नेह स े ह ै इसे हव सामावीक ू ु स्िवकवत कहते ह यवद बालक को सामावीक स्िवकवत प्रासे होतव ह ै तो उसम प्रसन्नता, ृ ृ आत्मसम्मान, उत्तरदावयत्ि आवद त ों का विकास होता ह ै इसके विररवत ीब बालकों को ु सामावीक स

्िवकवत नहीं वमलतव ह ै तो ि े सामावीक विलिता की दका म चले ीाते ह वीससे ृ उनम आत्महवनता, अन्तमषखता, अप्रसन्नता, आक्रामकता ीसै े व्यिहार की अवर्व्यवक्त होन े ु लततव ह ै ि्ह समी विरोधव कायष की तरर उन्मख हो ीाता ह ै रर असामावीक व्यिहार म ु वलसे होने के कार उसका व्यवक्तत्त्ि विघटत हो ीाता ह ै v. सास्कवतक कारकों का प्रिया-सस्कवत पि व्यवक्तत्त्ि एक-दसरे के ररक ह अरने आरवम्रक ृ ृ ू ं ं ं ू ीविन काल म बच्चे उन्हीं कायों को करते ह वीन्ह उनके माता-वरता उन्ह वसखाते ह बच्चे करू ु म प्रत्य् या अप्रत्य् रूर से अरने माता-वरता द्वारा वकए तए कायों को सवखता ह ै वकसव व्यवक्त के व्यिहार या आदतों की अवर्व्यवक्त द्वारा उसकी सस्कवत को हम सरलता स े ीान ृ ं सकते ह दके या समी म विवर्न्न प्रकार की सस्कवतयाँु राई ीतव ह वीनका व्यवक्त के ृ ं व्यवक्तत्त्ि रर बहत तहरा प्रिया श्र ता ह ै ीसै े ्रारत म रहने िाले व्यवक्तयों के व्यवक्तत्त्ि म ्रारतवय सस्कवत की ेलक राई ीतव ह ै चाह े ि्ह वहन्द हो, मवस्लम हो, वसख हो या ईसाई ृ ु ं ू वकसव र्व ीवत, धम ष या ि ष का हो, सर्व म ्रारतवय सस्कवत की हव ेलक वमलतव ह ै ृ ं िले क ि1974) ने अरने कोध म राया वक वीस सस्कवत के बच्चों को कारवकरक दण्ड यादा वदया ीाता ृ ं ह,ै ऐसे बच्चों म आक्रामकता, हवनता, ु ा ताा विद्वषे की ि्राना विकवसत होतव ह,ै अाषत व्यवक्तत्त्ि ृ विकास रर प्रवतकल प्रिया श्र ता ह ै ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 163 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 तावडषनर ि1969) ने अरने अध्ययन म विद्वके के कवलत का तलनात्मक अध्ययन वकया, वीसम उन्होंने ु ु चार अलत-अलत दके ों िअमके रका, ीमनष व, ताइिान ताा ाईलैण्ड) के बच्चों म विद्वके की ि्राना का तलनात्मक अध्ययन वकया रर राया वक अलत-अलत दके ों म रले-बढ़े बच्चों की सस्कवतयाँु वर्न्न- ृ ु ं वर्न्न ीं, इसवलए उनम विद्वेक के त र्व कम ताा यादा के रूर म हव राये तये, ीसै े-ाईलैण्ड के ु बच्चों म विद्वके की ि्राना अत्यवधक ाव, ीबवक अमके रकन बच्चों म सबसे कम विद्वके की ि्राना ाव अतः बालकों का वीस सस्कवत के रकरिके म विकास होता ह,ै उस सस्कवत के खान-रान, रहन-सहन, ृ ृ ं ं रवत-करिी, धम,ष ररम्रा, िािह, सामावीक समारोह रर सामावीक सस्ाओ आवद का उन रर प्रिया ं ं श्र ता ह ै ्रामों ि-आक्रामकता एक ऐसा व्यिहार ह ै ी वकसव व्यवक्त द्वारा वकसव अन्य व्यवक्त को नकसान ु रहचुँ ान,े उसे ठेस रहचुँ ाने या उसकी सम्रवत्त को नकसान रहचुँ ाने के उद्दश्े य से वकया ीाता ह ै अाषत ु दसरों के वलए कसकर या रढ़ा ादायक रकरवस्ावतयाँु उत्रन्न करना आक्रामकता का द्योतक ह ै िबक, ु ू 1961)यह एक आिछत पि असामावीक व्यिहार ह ै समी इसे अनवचत मानता ह ै आक्रामकता का ु ं ं प्रदकनष कारवकरक रूर म िीसै े, माररवट, लटराट पि अन्य प्रकार की वहसा) या मशवखक रूर म र्व होता ू ं ं ह ै ीसै े- बातों के माध्यम से वकसव को कस रहचुँ ाना आीकल समी म आक्रामकता की प्रिवत्त बढ़तव ृ हव ी रहव ह ै लोतों म एक-दसरे को सहने की कवक्त हव खत्म सव हो तई ह ै ीरा-ीरा सव बातों म बच्चों ू को, बा ों को आक्रामक होते हए दखे ा ी सकता ह ै वीससे सामावीक सशहि ष को नकसान रहचुँ ता ह ै ु आीकल बालकों के ीविन म वनयवमतता, समय की राबन्दव, बीतों का आदर करना, ीविों रर दया, ु ु वकसाचार, ईमानदारव, सिाि्रा, िम-वनष्ठा, सिदे

नकवलता, ्ातत्ि-िरा, राष्टरवय-प्रेम, राष्टरवय धरोहर की ृ ं ंरा आवद त ों का वदखना दलषर्-सा हो तया ह ै ु ु ितषमान म के िल ारत ने हव नहीं िरन सम्र ष विश्व म वि्रान ताा प्रशद्योवतकी ने अत्यावधक उन्नवत की ह ै ू ताा अर्व कर रहव ह ै इसने मानि ीविन को प्र ारावित वकया ह ै इससे एक ओर ीहा ुँ मानि को सख- ु सविधाए ुँ वमलव ह िहीं इससे मानि ीविन म कई प्रकार के मानवसक सुष ष एि वचताए बढ़व ह ताा ीविन ु ं ं ं ं ीवने की कलै व र्व बदल तई ह ै अी हम तेी रलतार वीन्दतव की सिारव चाहते ह, तो दुटष नाए न हों यह र्व चाहते ह हम कारवकरक िम ं ु न कर , वकन्त स्िस्ा रह यह र्व चाहते ह इस सबके रवछे कछ प्रमख कार सामने आए ह- ु ु ु □ द्वन्द्वात्मक ीविन कैलव □ अ ारीनष के प्रवत बढ़तव ललक □ खवण्डत होतव सामावीक की मान्यताए ुँ □ सकी तष ा रर आधाकरत रीनववतक विचारधाराए ुँ ं □ धावमकष सस्ाओ का स्ाी ि लालचव हो ीाना ं ं □ चल वचर एि दरदकनष ि इन्टरनेट का दष्टप्रि ं ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 164 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ म्य रवहत वक्ा-रद्धवत ू □ रीतारोन्मखव वक्ा ीी ीविन म्यों की अिहले ना करतव हो ु ू □ आवाषक ततव, बढ़तव ीनस्या ं ं □ ररातनता एि आधवनकता म विरोधा ारास ु ु ं □ उर ारोतिादव सस्कवत का विकास ृ ं □ टटते रकरिार, रकरिारों का अरने दावयत्ों से दर होना ताा सयक्त रकरिारों का टटना आवद ू ु ू ं ू राष्टरवय न्शक्षा- वन्ि (1986) ि ें ल्य- ू वतरते हए ीविन म्या रर राष्टरवय वक्ा नववत ि1986) म कारी वचन्ता ीताई तई ह ै वक्ा नववत म स्रस ू ं कहा तया ह ै वक म्यों के वतरने के कार अी मानि का म्यों म विश्वास हव उठता चला ी रहा ह ै ू ू इसवलए इस वक्ा नववत म ीविन म्यों के विकास रर कारी महत्ि वदया तया ह ै इस नववत म प्रमख रूर ू ु स े 5 ीविन म्यों को अवत महत्ि वदया तया ह ै ये म्य ह- ू ू (1) सराई ि2) सच्चाई ि3) रकरिम ि4) ्मता एि ि5) सहयोत इन रुँचों ीविन म्यों को राष्टरवय ू ं रचकवल का नाम वदया तया ह ै ं साम्परश्दायिान्यिा एन न्हसा- रद्योतवकर , रवश्चमवकर एि आधवनकीकर के कार लोतों के ु ां ां ं सामावीक ीविन म कई प्रकार के रकरितषन दखे े ी रह े ह ै ीसै े अलति, आक्रोक, वहसा, हत्या, ं आतकिाद ताा वहसा सम्बन्धव व्यिहार आधवनक ीविन म आम बा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… id: **200**

त ह ै ु ं ं साम्प्रदावयकता एक अन्तः धावमकष द्वान्द्वात्मक वस्ावत ह ै वीसके अन्ततषत ु ा, रिषग्रह एि सदहे का ृ ू ं ं बाह्य होता ह ै ी वहसा की ओर अग्रसर होता ह ै ं साम

्प्रदावयकता को स्रस करते हए वलखा तया ह,ै “साम्प्रदावयकता अरने हव ीतवय समह के प्रवत, न वक ू समग्र समी के प्रवत, तवव्र वनष्ठा की ि्राना ह ै ” ि्व कष्ट दत्त ि्र ने वलखा ह,ै

Quotes detected: **0.06%** id: **201**

“अरने धावमकष सम्प्रदाय से वर्न्न अन्य सम्प्रदाय ताा सम्प्रदायों के प्रवत ृ उदासवनता, उरे्ा, हये ष्वस, ु ा, विरोध रर आक्रम की ि्ह ि्राना साम्प्रदावयकता ह,ै वीसका ृ आधार ि्ह ि्रास्तविक या कार्वनक र्य या आकका ह ै वक उक्त सम्प्रदाय हमारे अरने सम्प्रदाय रर ं सस्कवत को नस कर दने े या हम ीान-माल के ्वत रहचुँ ाने के वलए कवटबि ह ै ”

ृ ं साम्प्रदावयकता के छह आयाम बताए तए ह ि-1) आत्मसात-कर ि्दव, (2) क्या कारव, (3) रलायनिादव, (4) प्रवतकोधर ,ष (5) अलाि्ताादव रर ि6) प्रि्ाादव इसम चशाा, रुँचिा रर छठा ू ं रूर समस्याए ुँ ख़ा व करता ह ै रर वीनके कार आन्दोलन, े ता े, आतकिाद ि बतिात उत्रन्न होते ह ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 165 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 साम्परश्दायिान्यिा ै े ारे ककर सरोवलया ने साम्प्रदावयकता के सन्दर् ष म बहकारक उरातम की व्याया दव वीसम दस प्रमख ु ं कार ों का उ्लेख वकया ह ै ये वनम्नवलवखत ह - □ सामावीक कारक-सामावीक कारकों म सामावीक ररम्राए ुँ ीवत एि ित ष अहम, असमानता ं रर धम ष रर आधाकरत सामावीक स्तरवकर सवम्मवलत ह □ ारत म वहन्द एि मसलमान दोनों की सामावीक सास्कवतक ररम्राए,ुँ सामावीक प्राए,ुँ ृ ु ं ं ू सामावीक रूवढ़याँु, रववत-करिी ि ीविन कलै व, खान-रान, रहन-सहन, रहनिा नामकर , अवि्रादन आवद म इतना अन्तर राया ीाता ह ै वक साम्प्रदावयक तनिा बढ़ता ह ै □ धावमकष कारक- धावमकष कारकों के अन्ततषत धावमकष वनयम रर धमवष नरे्र म्यों म वतरिट, ू सकी ष रर मतान्ध धावमकष म्य, रीनववतक ला ों के वलए धम ष का उरयोत रर धावमकष ू ं नेताओ की साम्प्रदावयक विचारधारा सवम्मवलत ह ै इसव के रकर ामस्िरूर ारत म ीहाुँ एक ं ओर वहन्द महास ा, राष्टरवय स्िय सैिक सु ि वकि सेना आवद रीनववतक दल बन तए िहीं ं ं ू दसरव ओर ज़मात-ए-इस्लामव, मवस्लम मीवलस ि अ्रस्यकों का सु आवद बन तए ु ं ं ू □ रीनववतक कारक- इसके अन्ततषत धमष रर आधाकरत रीनववतक हस्ेर, साम्प्रदावयक वहसा ं का रीनववतक रवचत्य रर रीनववतक नेतत्ि की असरलता सवम्मवलत ह रीनेता धम ष को ृ सत्ता हवायाने के उरकर के रूर म प्रयोत करते ह □ आवाषक कारक- साम्प्रदावयकता के आवाषक कारकों म आवाषक कोष रर र्ात, असन्तवलत आवाषक विकास, प्रवतस्रधाष का बाीर, अप्रसर कवल आवाषक व्यिस्ाा िवमकों ु का विस्ारन एि असमिाके न रर त्र से लाए हए धन का प्रि्रा सवम्मवलत ह ै अध्ययनों से ं स्रस होता ह ै वक आवाषक कारकों का साम्प्रदावयकता से ुवनष्ठ सम्बन्ध होता ह ै ‘कायषरत ितष’ को साम्प्रदावयक आधार रर वि ारावीत वकया ी सकता ह ै □ काननव कारक- काननव कारकों म समान कानन सवहता, सविधान म कछ समदायों के वलए ू ू ू ु ु ं ं विकेष प्रिाधान रर करयायत , कछ रायों को विकषे दीाष, आर् की नववत रर विवर्न्न ु समदायों के वलए विकेष कानन सवम्मवलत ह अतः ीब कछ विवकस समदायों के विकास के ु ू ु ु वलए विकेष काननव प्रिाधान ि करयायत दव ीाएतव, उनके वहताष कछ विकषे कानन बनाए ू ु ू ं ीाएत े तो ऐसे कानन साम्प्रदावयकता को बढ़ाा दते े ह ू ं □ मनी ावनक कारक- साम्प्रदावयकता के मनी ावनक कारकों म सामावीक रिषग्रह, रूवढ़ाद ू अवि्रवत्तयाँु, अविश्वास, दसरे समदाय के प्रवत विद्वषे रर ि्राकन्यता, अरिाह, र्य का मानस ृ ु ू ू ि ीनसम्रकष के साधनों द्वारा

तलत ीानकाकरयाुँ दने ा सवम्मवलत ह ै उदाहर स्िरूर -ारतवय मसलमान अकार हव वहन्दओ की प्रतवत को अरने कोष का कार मानकर असन्तस रहते ह ु ु ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 166 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 दसरव ओर वहन्दओ द्वारा अकार हव मसलमानों की राष्टरवय वनष्ठा म अविश्वास वकया ीाता ह ै ु ं ू ु यह वस्ावत साम्प्रदावयकता को बढ़ातव ह ै □ प्रकासवनक कारक- प्रकासवनक कारकों म रवलस ि दसरव प्रकासवनक इकाईयों म समन्ि य का ु ू अिरा, तसेचर विरातों की अककल कायषप्र ालव, रवलस का र्रातव रियै ा आवद र्व ु ु ु साम्प्रदावयकता को बढ़ाा दते ा ह □ ऐवतहावसक कारक- इसम विदेकव आक्रम , धावमकष सस्ाओ को ्वत, धम ष रकरितषन के वलए ं ं प्रयत्न, उरवनिके वय कासकों की रट डालो रर री करो की नववत, विरीन का मानवसक ू आुात, वरछले साम्प्रदावयक दत,े ीमवन, मवदर-मवस्ज़द के ररानेे ता े कावमल ह ीब ारत म ु ं ं मसलमान आए तो उन्होंने तलिार के बल रर लोतों को इस्लाम-धम ष म बदलना प्रारम्भ वकया ु इससे वहन्दओ रर मसलमानों के बवच म एक तहरव खाई वखच तई वरर अग्रेीं की कटनववत ु ू ं ं ं ु िरट डालो रर री करो) ने र्व साम्प्रदावयकता की िराना को बढ़ाया ू □ स्ानवय कारक- स्ानवय कारकों म धावमकष ीलस, नारेबाीव, अरिह, ीमवन के ेता े, ु ू स्ानवय असामावीक तत्ति रर तटों म प्रवतद्वन्द्वता कावमल ह ु □ अन्तराषष्टरवय कारक- ग्र ोसव दके ों द्वारा वदए ीा रह े प्रवक् ि वित्तवय सहायता, ारत की एकता को र्त करने रर कमीर बनाने के वलए दसरे दके ों द्वारा षडयर रचना रर वरर साम्प्रदावयक ं ं ू सतठनों को समाषन दने ा कावमल ह ै ं साम्परश्दायिान्यिा एन सों ान्ी-सास्ेन्ि सघषब -साम्प्रदावयकता अनेक दष्टरकर ामों को ीन्म दते व ृ ां ां ां ु ह ै ारत ीसै े धमवष नररे ीनतावरक व्यिस्ाा का यह एक ब्रा ा कर ह ै इससे राष्टरवय एकता-अखण्डता ु ं की र्व हावन होतव ह ै आतीनव, लटराट, माररवट, तोा रोा एि वहसा आवद इसके रकर ाम ह इसके ू ं ं दष्टरकर ामों को वनम्नावकत रूर से स्रस वकया ीा सकता ह-ै ं ु □ साम्प्रदावयकता राष्टरवय एकता म बाधक ह ै □ राष्टरवय सरा म बाधक ह ै ु □ राष्टरवय प्रतवत म बाधक ह ै □ साम्प्रदावयकता से रारस्रकरक अविश्वास एि तनिा उत्रन्न होता ह ै ं □ सिीष वनक धन ि ीविन की हावन होतव ह ै □ अरीकता रै लतव ह ै □ रीनववतक अवस्ारता होतव ह ै □ साम्प्रदावयक वहसाब दने े होते ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 167 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इस प्रकार स्रस ह ै वक सम्प्रदायिाद वकसव दके ि समी के वलए ताा उसकी सास्कवतक विरासत के वलए ृ ं बहत हव हावनकारक ह ै इसे मानि विरोधव ि राष्टर विरोधव कहा ीा सकता ह ै लैन्ते असें ा ि ा एन सों ान्ी उत्पव़ - समी के सदस्यों के बवच वलत रर आधाकरत अन्तर ां ं प्रकट करना ल वतक असमानता ह ै वीसम मवहला एि ररुष दोनों को अलत-अलत दखे ा ि समो ीाता ु ं ह ै ारतवय समी म ल वतक असमानता का विकत रूर सामन्तव व्यिस्ाा से हव चला आ रहा ह ै उस समय ृ सामावीक व्यिस्ाा वहन्द धम ष कास्त्रों के अनसार ाव ताा स्त्रव को ररुषों के समान कोई र्व अवधकार प्रासे ु ु ू नहीं ो यह व्यिस्ाा मनस्मवत के अनसार चल रहव ाव इसम मवहलाओ को ररुषों की सेविका के ृ ु ु ु ं अवतकरक्त कछ नहीं समो ीाता ाा वीससे स्त्रव की रहचान इसान के रूर म रराावित, अबला सेविका के ु ं रूर म बन तई ारत की 2011 की ीनत ना के अनसार ररुष ताा मवहला की सारता म 10 प्रवतकत ु ु का अन्तर ह ै ारत म मवहला सारता का प्रवतकत वनम्न प्रकार ह-ै िषष मवहला सारता 1971 18.4% 1981 25% 1991 39.0% 2001 54.0% (ोतः ारत की ीनत ना) ारत म ररुषों की तलना म मवहलाओ का अनरात सदै कम रहा ह ै ीनत ना 2011 के अनसार दके ु ु ु ु ं का वलत अनरात 1991 के 927 के मकाबले 2011 म बढ़कर 994 हो तया ह ै वकन्त वचन्ता का विषय ु ु ु ं यह ह ै वक 0-6 िष ष के वककओ का वलत अनरात 1991 के 945 के मकाबले ुटकर 911 हो तया ह ै ु ु ु ं ं समी म नारव को आवाषक स्ितन्त्रता प्रासे नहीं होन े से ि ह ररुषों के ँरर वनर्रष होतव ह ै वीसके कार ु ि ह कोई र्व वन यष स्िय नहीं ले रातव ह ै ताा मानवसक कठा ताा ुटन र्रव वीन्दतव व्यतवत करतव हई ु ु ं ं ीविन-यारन करने को विक ह ै इसव आवाषक असमानता के कार रढ़व-वलखव, सवकव्त ताा ु कामकीव मवहलाओ को र्व अरने ीविन म अनेक सामावीक समस्याओ का सामना करना ग्र ता ह ै ं ं क्योंवक सामावीक ताा आवाषक ढाुँचा मवहलाओ का आवधरत्य स्िवकार करने की वस्ावत म नहीं ह ै ये ं सब कार समी म सष ष उत्रन्न करने के वलए रयाषसे ह ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 168 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 भ्रष्टिार-क्द व्यत्रवत्त की ष्वस से ्स आचार को ्साचार कहते ह इस अाष म वकसव समी की ु आचार सवहता के विरि आचर ्साचार ह ै इस प्रकार ्साचार प्रत्य् या ररो् रुर म अरने व्यवक्ततत ं स्िाष की वसवि के वलए ीान-बेकर विकेष रुर से उ्लेवखत कतषव्य ी समी म अवस्तत्ति के वलए ू प्रावमक कतष ह-ै का उ्लुन ह ै ं ्साचार ितषमान ारत की एक तम्रवर समस्या बन चका ह ै आी सिीष वनक ीविन का ऐसा कोई र्व ु ्ेर नहीं ह ै ीहाुँ ्साचार व्यासे न हो सामावीक ीविन का ्ेर हो या रीनववतक; आवाषक ्ेर हो या क्ै व क, धावमकष ्ेर हो या वचवकत्सवय; रवलस तरौवय ्ेर हो या न्याय तरवय; -यह सिरष मशीद ु ू ं ं ह ै व्यवक्त रर समी एक-दसरे के ररक ह ीब व्यवक्त ्स ह,ै तो समी ्स होता ू ू आी समी म विलासव ीविन की ओर लोतों का आकषष बढ़ रहा ह ै रलस्िरुर येन-के न-प्रकारे अ्रीनष करना, विश्वासुात, चोरव एि वहसात्मक व्यिहार आवद समी का आधार बन तया ह ै ं ं वीसके कार सामावीक चकरर का रतन, समी म नैवतक म्यों का ्य स, समी की र्शवतकिादव ष्वस ू रर सामावीक वनयर का अिरा स्रस रूर से दखे ा ीा सकता ह ै व्यवक्त के समान समी का चकरर ं वनधाषकरत होता ह ै वीस समी का चकरर वतरा हआ

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindipunjab.com/र-के-विभिन्न-रूप + 6 resources! id: **202**

होता, िहाुँ के लोत ्साचाकरक म्यों म सदै वलसे ू रहत े सामावीक वनयर के अिरा म ्साचार का विस्तार होता ह ै ीब वनयर की सस्ाए ुँ ि अवर्कर ं ं ं कमीर हो ीते ह त

ो व्यवक्त स्िच्े छाचारव ि विचलनकारव व्यिहार करते ह इससे ्साचार बढ़ता ह ै न् धब ि- मानि समी म अनेक समस्याए ुँ ह, वीनम वनधषनता र्व एक ह ै यह एक ऐसव समस्या ह ै ी समी के प्रत्येक ित ष म सिषर व्यासे रहव ह ै तवसरव दवनया के दके

ों, अफ्रीका, ारत, बाग्लादके ताा ं ु रावकस्तान आवद म वनधषनता एक अत्यन्त हव िलन्त एि तम्रवर समस्या के रूर म सवदयों से विद्यमान ं रहव ह ै वनधषनता का तात्रयष मनष्टय की उस आवाषक वस्ावत से वलया ी

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.slideshare.net/slideshow/france-ki-… + 5 resources! id: **203**

ता ह ै ीब िह स्िय की या अरने ु ं आवितों की मलर्त ताा प्राकवतक आिश्यकताओ की रवतष करने म अ्म होता ह ै ृ ू ू ू ं िविर के अनसार,

Quotes detected: **0.02%** id: **204**

“वनधषनता एक ऐसव वस्ावत ह ै वीसम मनष्टय अरनव कारवकरक ताा स्ािस्य सम्बन्धव ु ु आिश्यकताओ की रवतष करने म अ्म होता ह ै ”

ू ं िसै े तो समस्त मानि इवतहास म हव ितों रर आधाकरत समी रहा है, वीनम एक कोवषत ित ष सदिै हव विद्यमान रहा ह ै ी अिों म ीविन-यारन करता आया ह ै कालष माक्सष के वसित के अनसार प्रत्येक समी म एक कोवषत ित ष रहा ह ै ी अरनव मलर्त ु ू ू ं आिश्यकताओ को वसरष ीववित रहने के वलए ताा समी के वलए रनरुत्रादन करन े र्ं के वलए कर ु ं राता ह ै यह ित ष तरवब ताा अिों म ीविन ीवने िाला िवमक ित ष ह ै ारतवय समी र्व इसव प्रकार के समी का अत ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 169 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ारतवय समी लम्बे समय तक सामन्तव ताा धावमकष रकरिके म रहा ह ै वीसम एक ऐसा कासक ित ष ताा ी कावसत ित ष को अवकव्त ताा धावमकष अन्धता म रखकर अरनव सत्ता कायम रख सके ताा ारतवय समी म ऐसव अिधार ा स्ावरत कर दव तई ाव वक सामन्तव ताा उसके द्वारा धावमकष आधार रर चलने िाला समी हव स्ित्तम ह ै र्ें हव उसम तरवब ित ष का व्यवक्त एक मामलव िस्त्र रहनकर ताा ू रूखव-सखव खाकर तीारा कर ल , िहीं रर कासक ित ष ऐको-आराम से महलों म ताा महतुँ े से महतुँ े िस्त्र, ू ु नतवने आर्ष आवद धार करता रहा हो, छतरन ारोत का आनन्द लेता रहा हो ताा वीसे सहव ठहराया ू ीाता रहा ह ै अनेक विद्वानों ने अरना मत वदया ह ै वक वनधषनता के वलए कछ सामावीक कार वीम्मदे ार रह े ह ीसै े- ु धम,ष अन्धविश्वास, करववतयाुँ ीावत व्यिस्ाा, रकरिार या दोषयक्त वक्ा-व्यिस्ाा ताा तकनवकी वक्ा ु ु की कमव आवद ारत का बहत ब्रा ा वहस्सा वक्ा से िवचत रहा ह ै ारतवय समी म िम विारीन का ं म्य आधार ीमानव व्यिस्ाा ाव ीहाुँ रर ारतवय ग्रामव समी म एक ीावत विकेष का वनयर ु ं कवष रर होता ाा यहव ीावत ‘प्रर्त्िकालव ीावत’ होतव ाव वीसे सब प्रकार के आवाषक ताा सामावीक ृ ु अवधकार ताा वनयर प्रासे ो यह व्यिस्ाा लम्बे समय तक चलव वीससे एक ित ष वनधषन बना रहा ं रद्योवतक क्रावन्त के बाद यहव ित ष िवमक ित ष म रकरिवतषत हो तया वनधषनता एक वस्ावतीन्य समस्या ह ै ताा समी के अन्दर व्यासे एक अवर्कार ह ै वीसके कार अनेक समस्याए ुँ उत्रन्न हो ीातव ह ताा समी के ताने-बाने ताा व्यिस्ाा को प्रावित करतव ह वीसके दष्टरकर ाम समी के सामने आते ह ु ीसै े- अरराध, वक्ावित्त, िश्े यावित्त ताा व्यवर्चार, सामावीक असन्तलन ताा यि ृ ृ ु ु अन्शक्षा- सयक्त राष्टर वक्ा, व्रिान रर सास्कवतक सतठन ियनेस्को) की एक कररोटष के अनसार, ारत ृ ु ू ु ं ं ं म सबसे यादा 287 लाख अवकव्त ियस्कों की स्या ह ै ये आकुँ ़ा े दके म वक्ा के े म चौंका दने े ं िालव असमानता की ओर इकारा करते ह कोई र्व राष्टर वस्ार आवाषक दर वकन्त नवचव सारता दर के ु साा होनहार राष्टर नहीं माना ी सकता ह ै ारत ि दके ह ै ीहाुँ असमानता इस हद तक ह ै वक एक राय ने र ष सारता प्रासे कर लव ह ै रर िहीं दसरव तरर, ऐसे राय र्व ह ीहा ुँ सारता दर बहत ू ू वनराकीनक ह ै ारत म अवक्ा एक तम्रवर समस्या ह ै ी इसके ीवटल आयामों के साा ी़ा व हई ह ै यहाुँ वलत ु ं असमानता, आय असमानता, राय असतलन, ीावत असतलन रर तकनवकी बाधाए ुँ ह ी दके म ु ु ं ं सारता की दर को वनधाषकरत करतव ह 2011 ीनत ना के अनसार ररुषों की सारता 82.14 रर ु ु मवहलाओ की सारता 65.46 ह ै वक्ा के स्तर रर राष्टरवय स्तर को उठाने के वलए कई योीनाए ुँ ीसै े ं 1986 की राष्टरवय वक्ा नववत वरर 2001 म सिष वक्ा अवर्यान चलाया तया उसके बाद वक्ा को अवनियष करने के वलए वक्ा का अवधकार अवधवनयम-2009 ;त्म 200ि लात वकया तया ररन्त ू ु आी र्व वक्ा का स्तर सोचनवय ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 170 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ारालश्रें - बालिम आमतशर रर मीदरव के र्तान के वबना या र्तान के साा बच्चों से कारवकरक कायष ु ु ू कराना ह ै बालिम के िल ारत तक हव सववमत नहीं है, बव्क यह एक िवै श्वक समस्या ह ै यनवसेर ने ू बाल मीदरव को 3 ि व म विारीत वकया है- ू □ रकरिार के साा बच्चे ुर के कायों म वबना वकसव िते न के लते होते ह □ रकरिार के साा रर ुर के बाहर-उदाहर के वलए कवष मीदर, ुरेल मीदर, सवमान्त मीदर ृ ू ू ू ू आवद □ रकरिार से बाहर-उदाहर के रूर म , व्यिासावयक दकानों ीसै े: होटलों म बच्चों से काय ष कराना, ु चाय बेचने का कायष कराना, िश्यिावत आवद ृ □ अत्यवधक ीनस्या, अवक्ा, तरवबव, ऋ ील आवद बालिम के सामान्य कार ह ं सविधान के तहत बच्चों की बालिम से सरा का वनयमन करने के िाले काननों का एक समह मशीद ह ै ु ू ू ू ं कारखाना अवधवनयम 1948, 14 साल तक की आय िाले बच्चों को कारखाने म काम करने से रोकता ु ह ै खदान अवधवनयम 1986, 18 साल से कम आय िाले बच्चों को खदानों म काम करना वनषधे करता ु ह ै इतने प्रिधान होने के बिीद आी र्व बाल मीदर ीतह-ीतह दखे ी सकते ह ू ू 2.6 राक्तरस्स्थक्ततक क्षरे म चल रह े स्घय ें व्रिान के ्ेर म असववमत प्रतवत ताा नये आविष्टकारों की स्रधाष के कार आी का मानि प्रकवत रर ृ र तष या वीय प्रासे करना चाहता ह ै इस कार प्रकवत का सतलन वबत़ा तया ह ै ि ावनक उरलब्धयों ृ ू ु ं से मानि प्राकवतक सतलन को उरे़ा की ष्वस से दखे रहा ह ै दसरव ओर धरतव रर ीनस्या की वनरतर ृ ु ं ं ं ू िवि, रद्योवतकीर एि कहरवकर की तवव्र तवत से ीहाुँ प्रकवत म हरे -र्रें ्ेरों को समासे वकया ी रहा ृ ृ ं ह ै 2.6.1. पयाबनर सरक्ष ेा ें हत्त- रयाषिर सर् का समस्त प्राव यों के ीविन ताा इस धरतव के ां ं समस्त प्राकवतक रकरिके से ुवनष्ठ सम्बन्ध ह ै प्रदष के कार सारव िव दवषत हो

रहव ह ै रर वनकट ृ ृ ू ू र्विष्टय म े मानि सभ्यता का अत वदखाई द े रहा ह ै इस वस्ावत को ध्यान म रखकर सन 1992 म ीवल ं म विश्व के 174 दके ों का िव सम्मले न आयोवीत वकया तया ृ इसके रश्चात सन 2002 म ीहावनसित ष म िव सम्मले न आयोवीत कर विश्व के सर्व दके ों को रयाषिर ृ सर् रर ध्यान दने े के वलए अनेक उराय सेाए तए ु ं रयाषिर प्रदष के कछ दरतामव दष्टप्रिा बहत ुातक ह, ीसै े- आ विक विस्रोटों म रेवडयोधवमतष ा का ु ू ू ु आनिावकक प्रिा ियमण्डल का तारमान बढ़ना, ओीन ररत को हावन, ्र आवद प्रत्् ु ु ू ं दष्टप्रिा के रूर म ील, िाय ताा रकरिके का दवषत होना एि िनस्रवतयों का विनस होना, मानि का ु ं ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 171 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अनेक नए रोतों स े आक्रान्त होना आवद दखे े ी रह े ह बडी कारखानों से विषलै ा अरवकस बाहर वनकलने से ताा तलावस्टक आवद के कचरे से प्रदष की मारा उत्तरोत्तर बढ़ रहव ह ै ू 2ठिीं कताद्व के उत्तराधष म रयाषिर प्रदष की समस्या ने एक तम्रवर रूर ले वलया ह ै ोराल तसै ू दुटष ना ि1984), चेरनोवबल दुटष ना ि1986) रर विश्व के अनेक दके ों म अकाल की विर्ववषका इस ु ु प्रिवत्त के नमने के रूर म वलए ी सकते ह अमरवकी प्रवतष्ठान यवनयन काबाषइड के ोराल वस्ात ृ ू ू कारखाने म करसिा के कार हीारों लोतों की ीान तई रर अनेक लोत विकलात हो तए ो सोवियत ं ं सु के चेरनोवबल ररमा वबीलवुर म दुटष ना के कार उत्रन्न विषाक्त विवकर ने न के िल ु ं ु ियमण्डल को ब्रा े रैमाने रर प्रदवषत वकया िरन आस-रास

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hurr.in/wp-content/uploads/2020/05… + 2 resources! id: **205**

के ्ेरों को र्व विषाक्त कर वदया वीसके ु ू चलते यरोर के अनेक दके ों स्िवडन, वरनलैण्ड, इग्लैण्ड ीमषनव आवद म रेवडयो धवमषता के प्रसार के कार

ू ं खते , बात एि चाराताह विषैले हो तए सन 1990 म कैित सकट के दशरान इराक ने कितै के 600 स े ु ु ं ं अवधक तेल कओ को आत लता दव ी लतर्त 1 िष ष तक ीलते रह े वीसके कार रयाषिर वीस ु ं प्रकार प्रदवषत हो रहा ह ै उससे मानि ीावत को व्यारक एि स्ाायव ्वत होना तय ह ै ं ू रै वलन तरान से ओवडका ि आन्ध्र प्रदके के तटिती ्ेरों म तबाहव रै लव- ू ारत के रिी तट रर अक्टबर, 2013 म चक्रितव तरान रै वलन ने ारव तबाहव मचाई बताल की खाा व ू ू ू ं से उठा यह तरान 12 अक्टबर, 2013 की रावर म ओवडका ि उत्तरव आन्ध्र प्रदके के तट रर ी रहचुँ ा ू ू ाा ओवडका के तट रर कवलता रिनमि राराद्ववर के बवच इस की तवत 200 वकमव. प्रवत ुण्टा तक ाव ं लतर्त 90 लाख लोत इस तरान से प्रारवित हए, 2.34 लाख मकान ्वतग्रस्त हए धान की रसल ू बबाषद हो तई उिराखण्ड ें पहाों पर रश्लय से ि्राहव- ीन, 2013 म समय से रि ष आए मानसन ने उत्तराखण्ड के रहाा व ्ेरों म तबाहव मचाई ाव ारव िषाष के ू ू ू कार उत्तराखण्ड, वहमाचल प्रदके , हकरया ा ए उत्तरप्रदके के कछ ्ेरों म बाढ़ की वस्ावत बन तई ाव ु ं लतातार तवन वदनों तक हई िषाष ि स्र्खलन ने के दारनाा, उत्तरकाकव, चमोलव, वराशरातढ़ ि रूिप्रयात ू आवद ्ेरों का सम्रकष केष देक से काट वदया ाा इसम लतर्त 70 हीार लोत विवर्न्न ारातों म रस तए ं ो 18 ीन, 2013 को के दारनाा म बादल रटने से र्वष स्र्खलन म सैक़ा ों वीदा लोत रानव म बह तए ू ू ं ो र्मण्डलवयकर बनाम आवाषक उदारिाद की धार ा ने प्रकवत का व्यिासावयक-दोहन वकया ह ै ृ ू वीससे इसने इसान को सहवलयत की वीन्दतव दने े से कहीं अवधक, प्राकवतक आरदाओ को बढ़िाा वदया ू ृ ं ं ह ै इसके दष्टरकर ाम ारत रर चवन ीसै े दके ों म मानसनव- प्राकवतक आरदा के रूर म स्रस वदखाई द े रह े ृ ू ु ह ै ारत म ीहाँु रसत बाकरक से हव नतर कहर बेहाल ह ै िहव चवन म वरछले वदनों हई र्वष बाकरक, स्र्खलन, आधुँ व ने तबाहव मचा दव ह ै चवन के 9 प्रातों की दका ददकष ा म त्दवल हो तई ह ै 2 करो़ा लोत ू ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 172 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विस्ावरत हो तए लाखों एक़ा र्वम की रसल चशरट हो तई लतर्त 3 अरब डीलर से र्व यादा के ू हए नकसान से चवन की अाषव्यिस्ाा चरमरा तई ु ये रासवदयाँु प्रत्् रूर म प्राकवतक आरदाए प्रतवत होतव ह ररन्त ास्ति म ये मानि उत्सवीतष ह इनकी ृ ु ं स्या ररव दवनया म दरष्वस की कमव की िीह से बढ़ रहव ह ै इसवलए न के िल रद्योवतक ताा ू ं ु ू प्रशद्योवतक विकास को वनयर के रखने की ीरूरत ह ै बल्क रसत बाकरक से हव मानि आरदा म बदल ं ीाने िले ऐसे वनमाष ों को वनयवरत करने की र्व ीरूरत ह ै ी आरदाओ को वनमन्त्र द े रह े ह ं ं रद्योतवकर की िीह से काबषनडाई ऑक्साइड के उत्सीनष म लतातार िवि हो रहव ह ै ी तारमान म ृ िवि करके ीलिाय रकरितषन का कार बन रहव ह ै ँ ी-ष उत्रादन के कार दवनया म प्रवतिष ष काबषनडाइ ृ ु ु ऑक्साइड का उत्सीनष 11.4 अरब टन के करवब हो रहा ह ै चवन के ियमण्डल म काबषन के इसव ु अवधकतम उत्सीनष की प्रवक्रया ने तारमान म बेतहाका िवि कर दव ह ै इससे ीलिाय म बदलि ए ृ ु ं िषाष का चक्र र्व ़ता ब्रा ा तया ह ै यहव वस्ावत ारत की र्व ह ै यवद हम आस्टे वलया को दखे ै तो एक ं समय म आस्रेवलया तहे ुँ का सबसे ब्रा ा उत्रादक रर वनयाषतक दके ाा रर्न्त आी वस्ावत यह ह ै वक ू ु अरनव आबादव के लायक अनी रैदा करने की आत्मवनर्रष ता र्व आस्टे वलया म नहीं रहव ह ै इस र्यिह रासदव के रवछे ीलिाय रकरितषन रर उर्रोक्ता िादव ीविन कलै व ह ै यवद प्रकवत का सतलन ृ ु ु ं बनाए रखना ह ै तो सबको वमलकर रयाषिर सर् रर सोचना-विचारना होता ं 2.6.2. राष्टरवय पयाबनर वन्ियाँ ारत की राष्टरवय रयाषिर नववत विवर्न्न विषयों के विकेष्ों के न्िवय मरालयों, ससद सदस्यों, राय ं ं सरकारों, रद्योवतक सुों कै्व क एि अनसधान सस्ाओ तरै सरकारव सस्ाओ रर ीनता के साा ु ं ं ं ं ं ं ं ं हए व्यारक विचार-विमक ष एि ररामकों का रकर ाम ह ै ं रयाषिर नववत की प्रस्तािना- रयाषिर प्रबन्धन सम्बन्धव ितषमान राष्टरवय नववतयाँु, राष्टरवय िन नववत 1988, राष्टरवय सर् कायष नववत ताा रयाषिर एि विकास िक्तव्य 1992 रर प्रदष उरकमन नववत ं ं ू सम्बन्धव िक्तव्य 1992 म वनवहत ह ै वीसम कहा तया है- ”राष्टरवय रयाषिर नववत का उद्दश्े य मशीदा ीानकारव रर सवचत अनिर्ों के आधार रर इसके कायष ्ेर ू ु ं म िवि करना ताा ितषमान म , ी कवमयाँु ह उन्ह दर करना ह ै “ ृ ू ितषमान समय म तवन म्य आकाओ रर ध्यान वदया ी रहा ह-ै ु ं ं □ सर्व मानि उत्तम कोवट का ीविन ीवने के वलए योग्य बन □ सर्व लोत ीमण्डल की रकरवमतता का सम्मान करने म स्म हो सके □

दके की आवाषक सामावीक एि रयाषिर वय आिश्यकताओ के मध्य सतलन म सामीस्य हो ु ं ं ं ं सके उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 173 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 राष्टरवय रयाषिर नववत की सविधान के अनच्छेद 48(क) रर 51(ख) म अवधदवे कत ताा अनच्छेद 21 ु ु ं की न्यावयक विचे ना द्वारा रवस की तई ह ै स्िच्छ रयाषिर के प्रवत हमारव राष्टरवय िचनबिता सम्बन्धव ु प्रवतवक्रया ह ै यह स्िवकार वकया तया ह ै वक स्िच्छ रयाषिर बनाए रखना के िल सरकार का हव दावयत्ि नहीं ब०

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **206**

क प्रत्येक नातकरक की वीम्मदे ारव ह ै अतएि देकर्र म रयाषिर के प्रबन्धन ्ेर म एक सह ्रावतता की ि्राना महसस की ीानव चावहए ू इसके वलए सरकार ताा प्रत्येक

नातकरक को प्राकवतक ताा सस्ावनक रयाषिर वय त ित्ता को बनाए ृ ु ं रखने ताा उनम बढ़ोत्तरव के वलए अरने उत्तरदावयत्ि को स्िवकार करना चावहए राष्टरवय पयाबनर वन्ि ै उ्ेय राष्टरवय रयाषिर नववत के उद्दश्े य वनम्नवलवखत ह - i. रयाषिर वय ससाधनों का सर् करना- उन सर्व महत्त्ि र ष राकरवस्ावतकीय प्र ावलयों, ू ं ं ससाधनों ताा प्राकवतक एि मानि वनवमतष म्यिान धरोहरों की स ्रा एि सर् करना, ीी ृ ू ु ं ं ं ं मानि क्या के वलए विकषे रूर से आिश्यक ह ै ii. समी के सर्व ितों के वलए रयाषिर वय ससाधनों तक रहचुँ - ितषमान रवढ़व म समता रर ं तरवबव के वलए आीविका ताा त ित्ता की समानता सवनवश्चत करना तावक वनधषन समदाय ीी ु ु ु आीविका के वलए सिषवधक रूर से रयाषिर वय ससाधनों रर वनर्रष ह,ै उन्ह ये ससाधन अिश्य ं ं हव वमल सक iii. ितषमान एि ि्राव रववढ़यों की आिश्यकताओ ताा अ्रेाओ की रवतष के वलए- ितषमान एि ू ं ं ं ं ि्राव रववढ़यों की आिश्यकताओ ताा अ्रेाओ की रवतष के वलए अ ाषत रववढ़यों म समता के ू ं ं वलए रयाषिर वय ससाधनों का न्यायोवचत प्रयोत होना आिश्यक ह ै ं iv. सामावीक एि आवाषक

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **207**

विकास म रयाषिर सरोकारों का एकीकर करना- सामावीक एि ं ं आवाषक विकास के उद्दश्े य से रयाषिर वय सरोकारों की य ोीनाओ, कायषक्रमों ताा रकरयोीनाओ ं ं के रूर म एकीकर की आिश्यकता ह ै v. रयाषिर वय ससाधनों के प्रयोत म द्ता होने के वलए- रयाषिर वय ससाधन सववमत होने के ं ं कार एि प्रवतकल रयाषिर प्र्रिों के न्यनवकर के वलए रयाषिर वय ससाधनों के प्रयोत म ू ू ं ं लोतों को द् होने की आिश्यकता ह ै vi. रयाषिर वय सचालन के वलए- रयाषिर वय ससाधनों के प्रयोत के प्रबन्ध ताा विवनयमन के ं ं सम्बन्धों म बेहतर सचालन ीसै े रारदवकतष ा, ि ीाबदहे व, न्यायोवचतता समय रर लाततों की ं कमव, सह ्रावतता रर वनयर की स्ितरता आवद के वसिान्त को लात करने की आिश्यकता ू ं ं ह ै vii. रयाषिर वय सर् के वलए ससाधनों की बढ़ोत्तरव के वलए- स्ानवय समदायों, सिीष वनक ु ं ं सस्ाओ, क्ै व क एि अनसधान समदाय, वनदके का रर बहर्वय ताा वद्ववय विकास ु ु ं ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 174 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 राटषनरों के मध्य ररस्र लार्कारव, बहीनवहताय सह ्रावतताओ के माध्यम से रयाषिर वय ं सर् हते वित्त, प्रशद्योवतकी, प्रबन्धन, कशकल आवद को कावमल करते हए अवधक-से-अवधक ु ं ससाधन प्रावसे सवनवश्चत करना ु ं उरयषक्त उद्दश्े यों को के न्ि्रिय, राय एि स्ानवय अवधकर ों के विवर्न्न ककल कायष नववत हस्त्ेरों द्वारा ु ु ं प्रासे वकया ीाता ह ै ताा यह सवनवश्चत वकया ीाता ह ै वक लोत उन ससाधनों के अिक्रम के बीाय उनम ु ं सस्कर द्वारा अरनव बेहतर आीविका प्रासे कर सक ं 2.6.3 भारि े े रश्ें ख पयाबनर सस्ि ु ु ां □ ि्रिन अनसधान सस्ान - दहे रादन ु ं ं ू □ वहमालय ि्रिन अनसधान - वकमला ु ं □ ्रारतवय ि्रिन प्रबन्धन सस्ान -्रोराल ं □ कष्टक र्वम अनसधान सस्ान -ीधरर ु ू ु ु ं ं □ के न्ि्रिय प्रदष वनयत्र बोडष -नई वद्लव ू □ ्रारतवय ि्रिन अनसधान एि वक् रकरषद -दहे रादन ु ं ं ू □ ्रारतवय ि्रिनस्रवतक सिदेश् -कोलकाता □ ्रारतवय ि्रिन सिदेश् - ीीरहाट 2.7 ि्रिस् त के क्तलअ सफल स्घषय और स्वनााद की चल रही प्रक्तक्रयाअँ विश्व कावन्त की स्ारना करन,े व्यवक्तयों के अवधकारों की ्रा करने रर यिों को समासे करने के वलए ु 24 अक्टबर, 1945 को सयक्त राष्टर सु की स्ारना की तई ू ु ं ं सयक्त राष्टर सु के ीी उद्दश्े य वनधाषकरत वकए तए, ि े वनम्नवलवखत ह- ु ं ं i. अतराषष्टरवय कावन्त रर स ्रा को कायम रखना रर इस उद्दश्े य की रवत ष के वलए उन सर्व ु ू ं सामवहक रर कवक्तकालव प्रयासों को सम्रावदत करना ीी इस कावन्त की चनशवतयों को दर करन े ू ु ू के वलए आिश्यक हों ताा कावन्तर ष साधनों द्वारा उन अतराष्टष रवय विवादों रर रकरवस्ावतयों को ू ं सलोने म सहायक हों, वीनसे कावन्त र्त होने की आकका हो ु ं ं ii. दसरा महत्त्ि र ष उद्दश्े य राष्टरों के बवच उन मरै वर ष सम्बन्धों का विकास करना, ीी समानता रर ू ू ू आत्मवन यष का सम्मान करने िाले वसिान्तों रर आधाकरत हों ताा उन कदमों को उठाना ीी विश्व कावन्त को सष्ढ़ बनाने के वलए आिश्यक हा ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 175 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 सयक्त राष्टर सु के वनमाष का मल उद्दश्े य हव अतराषष्टरवय कावन्त रर स ्रा की तारण्टव ह ै अरनव ु ू ु ं ं ं स्ारना के समय से हव सयक्त राष्टर सु ने यिों को रोकने म, विश्व कावन्त स्ावरत करने म, वनरस्त्रवकर ु ु ं ं की समस्या को हल करन े म, मानि अवधकारों के सर् म, आवाषक, सास्कवतक रर कवै क ्ेर म ृ ं ं प्रकसनवय कायष वकए ह ं सयक्त राष्टर महास ्रा ने मानिावधकारों की सिषर्शवमक ोष ा को 10 वदसम्बर, 1948 को अतवकार ु ं ं वकया ि ष ष 1966 म दो अतराषष्टरवय प्रसविदाओ को अतवकार वकया तया वीसम आवाषक, सामावीक ि ं ं ं ं ं सास्कवतक अवधकारों की अतराषष्टरवय प्रसविदा ताा नातकरक ि रीनववतक अवधकारों की अतराषष्टरवय ृ ं ं ं ं ं प्रसविदा कावमल ह ै ीी ि ष ष 1976 से लात ह ै बाद म महास ्रा ने नातकरक एि रीनववतक अवधकारों रर ू ं ं रर दो ि कै ्रक प्रोटोकील अतवकार वकए एक को ि ष ष ी1966 म अतवकार वकया, ीी 1976 को लात ू ं ं हआ मानिावधकार की सिषर्शवमक ोष ा को दोनों अतराषष्टरवय प्रसविदाओ ताा दोनों ि कै ्रक ं ं ं प्रोटोकोल को वमलाकर

Quotes detected: **0%** id: **208**

'अतराष्टरवय मानिवधकार वबल'

कहा ीाता ह ै ं 2.7.1. ्न्िबे सों ान्ी न सास्ेन्ि अन्धेारों ेी अिराबष्टरवय रश्सन्नदायिा ृ ां ां ां आवाषक, सामावीक ि सास्कवतक अवधकारों की अतराष्टरवय प्रसविदा को 16 वदसम्बर, 1966 को यएन ृ ू ं ं ं महासर्ा ने अतवकार वकया ाा 3 ीनिरव, 197ी6 को यह प्रसविदा लात हई ताा 164 राष्टरों न े ि ष ू ं ं 2015 तक इस प्रसविदा का अनसमाषन वकया ु ं इस प्रसविदा म कल 31 अनच्छेद ह, ीा रुँच ्रातों म वि्रावीत ह आवाषक, सामावीक ि सास्कवतक ृ ु ु ं ं अवधकारों का उ्लेख प्रसविदा के ्रात 3 म िअनच्छेद 6 स े 15 तक) वकया तया ह- ु ं □ कायष करने का अवधकार िअनच्छेद 6) ु □ िम सु वनवमषत करने का अवधकार िअनच्छेद 8) ु ं □ सामावीक स्रा का अवधकार िअनच्छेद 9) ु ु □ ीविन के वलए रयाषसे साधनों का अवधकार िअनच्छेद 11) ु □ वक्ा का अवधकार िअनच्छेद 13) ु □ वि्रान एि सस्कवत से सम्बवन्धत अवधकार िअनच्छेद 15) ृ ु ं ं ्रारतवय सविधान रर आवाषक, सामवीक एि सास्कवतक अवधकारों की अतराषष्टरवय प्रसविदा ृ ं ं ं ं ं आवाषक, सामवीक एि सास्कवतक अवधकारों का प्रसविदा को वदसबर, 1966 म यएन महासर्ा ने ृ ू ं ं ं ं अतवकार वकया ताा यह प्रसविदा ीनिरव 1976 म लात की तई इस प्रसविदा का समाषन ्रारत ने 1 ू ं ं ं अप्रैल, 1979 को वकया इस प्रसविदा म ि व षत बहत से अवधकारों को ्रारतवय सविधान के ्रात-4 ं ं (अनच्छेद 37 स े 51 तक) के नववत वनदकदेश क तत्त्िों म कावमल वकया तया ह,ै ीा इस प्रकार ह- ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 176 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अवधकार ्रारतवय सविधान के अनच्छेद ु ं □ समान कायष के वलए समान ितन □ काम का अवधकार □ प्रसवत सहायता ू □ कमकष ारों हते वनिाषह मीदरव ु ू □ बालकों हते अवनियष ि वनःक्क वक्ा ु ु □ रोषाहार-स्तर एि ीविन स्तर ँुँ चा करना ं अनच्छेद- 39 (ु) ु अनच्छेद-41 ु अनच्छेद-42 ु अनच्छेद-43 ु अनच्छेद-45, अनच्छेद-21 (क) ु ु अनच्छेद-41 ु आवाषक एि सामावीक रकरष्य बदलने के साा मानिवधकारों के सदर् ष म र्व अनेक बदलिा आए ह ं ं ीसै े-ीसै े विकास की तवत-बढ़तव ह,ै मानिवधकारों की सचव म र्व समय-समय रर नए-नए अवधकार ू ी़ा ते रह े ह ीसै े- ु □ आवाषक स्रा का अवधकार ु □ रोीतार राने का अवधकार □ तरवबव से मवक्त का अवधकार ु □ ्रोीन का अवधकारव ्वतरवतष का अवधकार ू □ स्िच्छ रयाषिर म ीवने का अवधकार □ कावन्त का अवधकार □ विकास का अवधकार य एन ओ की महासर्ा ने 28 ीलाई, 2010 म एक प्रस्ति राकरत वकया वीसम

Quotes detected: **0%** id: **209**

'स्िच्छ ील'

रर ू ु स्िच्छता/सराई को दो-नए मानिवधकारों के रूर म मान्यता प्रदान की तई ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 177 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 2.7.2. ातररे एन रीा वन्ि अन्धेारों ेी अिराबष्टरवय रश्सन्नदायिा ां ां ां नातकरक ि रीनववतक अवधकारों की अतराषष्टरवय प्रसविदा को यएन महासर्ा ने 16 वदसम्बर, 1966 को ू ं ं अतवकार वकया यह प्रसविदा 23 माचष, 1976 को लात हई सन 2015 तक 168 दके ों ने इसका ू ं ं अनसमाषन वकया ह ै यह प्रसविदा 6 ्रातों म वि्रावीत ह ै वीसम कल 53 अनच्छेद ह इस प्रसविदा के ु ु ु ं ं ्रात-3 म िअनच्छेद 6 स े 27 तक) वनम्नवलवखत नातकरक ि रीनववतक अवधकारों का उ्लेख वकया ु तया ह- □ ीवने का अवधकार िअनच्छेद 6) ु □ दासता ि बलात िम से स्ितरता िअनच्छेद 8) ु ं □ स्ितरता रर स्रा का अवधकार िअनच्छेद 9) ु ु ं □ वनिास के चयन का अवधकार िअनच्छेद 12) ु □ समानता का अवधकार िअनच्छेद 14) ु □ विचार ि अवर्व्यवक्त की स्ितरता िअनच्छेद 19) ु ं □ कावन्तरिकष सम्मले न का अवधकार िअनच्छेद 21) ू ु □ रीनववतक मामलों म ्रात लेने का अवधकार िअनच्छेद 25) ु □ अ्रस्यकों के अवधकार िअनच्छेद 27) ु ं भारिवय सन्नधा और ातररे एन रीा वन्ि अन्धेारों ेी अिराबष्टरवय रश्सन्नदायिा ां ां ां ां नातकरक एि रीनववतक अवधकारों की प्रसविदा को यन महासर्ा के द्वारा वदसम्बर, 1966 म अतवकार ू ं ं ं वकया तया इस प्रसविदा का ्रारत ने 1979 म समाषन वकया ्रारतवय सविधान के ्रात-3 (अनच्छेद ु ं ं 12 स े 35 तक) म नातकरकों को वदए तए बहत से अवधकार नातकरक एि रीनववतक अवधकारों की ं प्रसविदा म वदए तए ि व तष अवधकारों के समान ह, ीा इस प्रकार ह- ं अवधकार ्रारतवय सविधान के अनच्छेद ु ं □ विवध के सम् समानता □ र्दे ि्रा का प्रवतषधे □ लोक सिा म अिसर की समानता □ ्राष ि अवर्व्यवक्त की स्ितरता ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 178 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ अरराधों म दोष-वसवि वदए ीाने से सर् ं □ प्रा ि दवै हक स्ितरता का अवधकार ं □ बलात िम का प्रवतषधे □ आस्ाा एि धम ष की स्ितरता ं ं अनच्छेद-14 ु अनच्छेद-15 ु अनच्छेद-16 (1) ु अनच्छेद-19 (1) क ु अनच्छेद- 20 (2) ु अनच्छेद-21 ु अनच्छेद-23 ु अनच्छेद-25 ु 2.7.3. ें ा नान्धेारों से सम्पर्न्धि अतय रश्ें ख रश्सन्नदायिाए ु ां ां सयक्त राष्टर सु द्वारा मानिवधकारों से सम्बवन्धत विवर्न्न विषयौ रर लतर्त-85 प्रसविदाए रर ु ं ं ं ं ं ं ुोष ाए की तई ह कछ प्रमख प्रसविदाए वनम्नवलवखत ह- ु ु ं ं ं □ नरसहार की रोकााम रर सीा के बारे म प्रसविदा ि1948)-इस प्रसविदा म नरसहार को एक ं ं ं ं ऐसा तम्रवर अरराध बताया तया ह ै वक वीसका इरादा वकसव राष्टरिादव, ीातवय, नस्लिादव या धावमकष समह को नस करना रर दके ों के दोषव व्यवक्तयों को कानन के सम् लाने के वलए ू ू ि्चनबि करना इस प्रसविदा म ि ष ष 2015 तक 143 दके सवम्मवलत हए ो ं □ कर ावाषयों की प्रवस्ावत के बारे म प्रसविदा ि1951)-इसम कर ावाषयों के अवधकारों को ं रकर्रावषत वकया तया ह ै विकषे रूर से उनको ऐसे दके ों म न लशटाए ीाने का उ्लेख है, ीहाँु ीावखम रर खतरा होने के कार ि े लशटना नहीं चाहत े ह इस प्रसविदा म 145 दके सवम्मवलत ं हए ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 179 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ सर्व

Plagiarism detected: **0.01%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 4 resources! id: **210**

प्रकार का रतर्दे िनस्लर्दे) समासे करने के बारे म प्रसविदा ि1965)- सर्व प्रकार क

ा ं ं रतर्दे िनस्लर्दे) समासे करने के उद्दश्े य से सदस्य दके ों से िचन वलया तया ह ै वक ि े कानन रर ू ं व्यिहार दोनों स्तरों रर इसे समासे कर त े इसके तहत एक वनतरानव-व्यिस्ाा 'रत-र्दे समासे ं करने सम्बन्धव सवमवत र्व तवठत की तई, ीी सवम्मवलत दके ों की कररोटों रर सवध के उ्लुन ं ं के बारे म व्यवक्ततत वककायतों रर विचार करतव ह ै इस प्रसविदा रर ितषमान मै ं 177 दके ों ने ं हस्ताृ वकए ह □ मवहलाओ के प्रवत सर्व प्रकार के र्दे ि्रा समासे करने सम्बन्धव प्रसविदा ि1979)- इस प्रसविदा ं ं ं के तहत मवहलाओ के प्रवत 'र्दे ि्रा समासे करने सम्बन्धव सवमवत' का तठन र्व वकया तया ह,ै ं ीी यह वनतरानव करतव ह ै वक सदस्यों दके ों म मवहलाओ के प्रवत कोई र्दे ि्रा तो नहीं हो रहा ह ै ं रर यवद कोई वककायत वमलतव ह ै तो सवमवत कररोट् रर विचार करतव ह ै इसम 189 दके सवम्मवलत हो चके ह ु □ उत्रव़ा न रर अन्य अमानिवय या अरमानीनक व्यिहार रोकने सम्बन्धव प्रसविदा ि1984)- ं इसके अततत्तष 'अत्याचार िउत्रव़ा न) वनिार सवमवत तवठत की तई ह ै ीी सवम्मवलत दके ों की ं कररोटों रर विचार कर उन दके ों के विरि कायषिाहव करू करतव ह ै इसम 160 दके सवम्मवलत हो ु चके ह ु □ बाल अवधकारों के विषय म प्रसविदा ि1989)-बाल अवधकारों के विषय म प्रसविदा ने बच्चों ं ं को र्दे ि्रा से बचाने की तारण्टव दते े हए स्िवकार वकया तया ह ै वक ीी र्व कायष वकए ीाए, उनम बच्चों के वहतों को सरव्त रखा ीाए इसम सबसे यादा 196 दके सवम्मवलत ह ै ु □ विकलात व्यवक्तयों के अवधकारों रर प्रसविदा ि2006) विकलात व्यवक्तयों के अवधकारों रर ं ं ं प्रसविदा यएन महासा्रा द्वारा 13 वदसम्बर, 2006 को राकरत की तई इसम 172 दके सवम्मवलत ू ं हो चके ह ै ु 2.7.4 शान्ति े न्लए सफल सघषब और सनादायि ेी िल रहव रश्त्रामयाओ े े ें हत्तप ब ु ू ां ां ां रश्यास हाटब ऑफ एन्शया सम्पें ेल और भारि- हाटष ऑर एवकया सम्मेलन आतकिाद, ीातवय वहसा, यि ताा रीनववतक अवस्ारता से प्रावित ु ं ं अरतावनस्तान के रनवनषमाष का एक ्ेरवय प्रयास ह ै इस सम्मले न की करूआत 2011 म तकी के कहर ु ु ु इस्ताबल म हई ाव यह सम्मेलन प्रवतिष ष आयोवीत वकया ीाता ह ै इसम अरतावनस्तान के रनवनषमाष ु ु ं के विषय म सहयोत कायषक्रमों रर विचार वकया ीाता ह ै अरतावनस्तान के विकास ताा रनः वनमाष से ु सम्बवन्धत छठा हाटष ऑर एवकया सम्मले न 3-4 वदसम्बर, 2016 को ारत के कहर अमतसर म ृ आयोवीत वकया तया ाा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 180 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 न्द्वपक्षवय सम्पर्तधों े न्रस्ार एन पिशवल सन्ध ेी 60नीं नषबताठ े उपलक्ष्य ें भारि े ां ां ां ां उपराष्टरपन्ि हान्ें दायि असारव ेा ि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindivibhag.com/hindi-barakhadi/ id: **211**

व दायौरा- ां 5 वदन की उनकी इस मारा का म्य उद्दश्े य वद्वर्वय सम्बन्धों का विस्तार

एि 1954 म सम्रन्न रचकवल ु ं ं सवध की 6ठीं िषतष ाठ के उरलक्य म 28-29 ीन, 2014 बववीत म आयोवीत समारोह म ारातवदार ू ं ं ं होना ाा 28 ीन, 2014 के समारोह म , ितषमान तटवनरर्े माहशल म कावन्तर ष आरसव अवस्तत्ति के ू ु ू विचार को नए रूर म अरनाने ताा सम्र ष विश्व को इसके अनरूर ढालने का सक्र ारत, चवन ि ू ु ं म्यामार ने वलया रचकवल के महत्त्ि रर ीार दते े हए उरराष्टररवत ने कहा वक यह सर्व दके ों के अवधकारों ं की सा्रा करने के साा-साा ररस्रर सम्मान ि समानता को बढ़ाा दते ा ह ै इसव दशरे के दशरान ारतवय ु उरराष्टररवत हावमद असारव के समक् चवनव राष्टररवत लव रआन चाओ के साा वद्वर्वय सम्बन्धों रर ु ं िाताष, 29 ीन, 2014 को हई िाताषओ से वनकले वनष्टकष ष म , वद्वर्वय सहयोत के तवन समेशता ्ारनों ू ं रर दोनों राष्टररवतयों की उरवस्ावत मह स्ताृ हए ये समेशता ारत म रद्योवतक राकों म चवनव वनिके , ि्हरर म रानव के बहाि के सम्बन्ध म ारतवय ु विकेष्ों द्वारा आक़ा ों को एकवरत कर अरना-अरना अनिृ सोा करने के सम्बन्ध म ह ै अत म ु ं ं आवखरव वदन 30 ीन, 2014 को ारतवय उरराष्टररवत ने एके डमव ऑर सोकल साइवसी म "कै वलबेरेटेड ू ं लयरोलीीवः इवण्डया", चाइना एण्ड द ्िडष विषय रर व्याख्यान वदया ू ईीराइलव सैतय र्ल े द्वारा न्फल्स्िव े ेब्ी नाले क्षेर ें हें ास पर ीलाई, 2014 ें ेी ु तई सैतय ेायबनाहव े न्नरुद्ध भारि सन्हि अन्धोश दायिश एेीट- ु ां इस सम्बन्ध म सयक्त, राष्टर मानिावधकार रकरषद ;न्दरीमक छीरिद े भ्नउद त्रहवी े ु ं ं ं ्िनदबरस.न्छभ्त्ि म ारत सवहत अवधकाक दके ों ने ईीराइल के विरि प्रस्ताि का समाषन वकया 23 ं ीलाई, 2014 को 46 सदस्यवय रकरषद म 29 सदस्यों ने प्रस्ताि के र् म , ीबवक 17 दके ों म्यतः ु ु यरोरवय दके ों ने अरनव अनरवस्ावत दी ष की एि प्रस्ताि के विरोध म मत दने े िाला

Quotes detected: **0%** id: **212**

"अमके रका"

एकमार ू ु ं दके ाा स्ाायव प्रवतवनवध अकोक मखीी ने अरने ष्वसको से स्रस कर वदया वक ारत सयक्त राष्टर ु ु ं प्रस्ताि अरब कावन्त योीना के आधार रर स्ितर रर सम्प्रर्ता सम्रन्न वरवलस्तवन के विचार का ं समाषन करेता इसकी सवमा तय की ीाए, ईरायल के साा कावन्त से रह े ताा रीधानव रिी येरुकलम ू हो स्रच्ाि एन साफ-सफाई े रश्ि ीातरिा- ारत को सार सारा एि तदतव ि रोतमक्त बनाने के ु ु ां ं ं वलए राष्टरवहत म 'स्िच्छ ारत अवर्यान' का कारम्र हमारे प्रधानमरव िव नरेन्ि मोदव ीव ने ताधव ु ं ं ीयतव के अिसर रर 2 अक्टबर सन, 2014 को नरेन्ि मोदव ीव िप्रधानमरव) ने अरने कर् हाों से वकया ू ु ं ं इसकी कायषक्रम की ुोष ा नरेन्ि मोदव ीव ने 15 अतस्त सन 2014 को हव लाल वकले रर अरने हव उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 181 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 सम्बोधन म कर दव ाव उन्होंने कहा वक 2019 म महात्मा ताधव की 15ठीं ीयतव तक

दके को स्िच्छ ं ं ारत के रूर म प्रस्तत करना ह ै ु प्रधानमरव नरेन्ि मोदव ीव ने इसे आवाषक वस्ावत से ीा ते हए कहा वक ारत म , विश्व स्िास््य सतठन ं ं की कररोटष के अनसार

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.easyhindivyakaran.com/hindi-varna… + 3 resources! id: **213**

प्रत्येक ारतवय को तदतव के कार हर साल 6500 रुरए का नकसान होता ह ै ु ु ं व

ीनका सवधा कार बवमाकरयुँ ह यवद आवाषक वस्ावत से सम्रन्न लोतों को छोा द तो तरवबों रर हर ं साल 12-13 हीर का बो के िल प्रदष म अवधकता से हव होता ह ै ू ताँनों ै सें न्ि न्रास हि ए ई यी ा

Quotes detected: **0%** id: **214**

“सासदायि ्दायिशब ताँन यी ा”

ेा तठ ुः ु ु ां प्रधानमरव नरेन्ि मोदव ीव ने 15 अतस्त, 2014 को लालवकले की प्राचवर से दके को सम्बोवधत करते हए ं ताुँों के समवचत विकास के वलए एक नई सासद आदक ष ताुँि यीना का उ्लेख वकया ु ं प्रधानमरव ीव के अनसार इस यीना का उद्दश्े य ताुँि म रहने िाले लोतों को अच्छव बवनयादव सिाए रर ु ु ं ं अवधक-से-अवधक अिसर प्रदान कराना ह ै के न्ि सरकार द्वारा मानि ससाधन विकास मरालय के तत्त्िाधान म ताुँों का अवधकावधक विकास करने ं ं हते एि ताुँों के प्रशद्योवतवकयों के विकास के वलए एक नई यीना करू की तयव वीसे

Quotes detected: **0.01%** id: **215**

‘उन्नत ारत ु ु ं अवर्यान’

नाम वदया तया राष्टरवय वक्ा वदिस 11 निम्बर, 2014, रर इसकी बिसाइट राष्टररवत िव प्र ि मखीी ने ीारव की यह अवर्यान आईआईटव, वद्लव की वनतरानव म चलेता ु भारि ें खाद्य सरक्षा ेी ओर उठाए तए ेदायिें ों ेा सेारात्ें े परर ों ु ीमनष व के इटरनेकनल रड रीवलसव करसचष इस्टवटयट ;त्व्ि ि आयरलैण्ड के कन्सनष ्डषिाइड की ू ू ं ं इस सयक्त िावषषक कररोटष के अनसार विकासकवल दके ों म र्ख की 0-100 स्के ल िाले इस इण्डेक्स का ु ु ू ं मान वीतना अवधक होता ह ै सम्बवन्धत दके म र्ख की वस्ावत उतनव हव अवधक विकराल होतव ह ै इस ू प्रकार ि0) र्खरवहत एि 100 र्ख की अवधकता को दकाषता ह ै िष ष 2012 की ग्लोबल हतर कररोटष म ू ू ं ं ारत के वलए सचकाक 22.9 ाा ी 2013 म 21.3 एि यहव 2014 म ुटकर 17.8 आकवलत वकया ू ं ं ं तया ह ै आतकी तवतविवधयों ि मानि तस्करव रर रोक लताने हते ारत ि म्यामार द्वारा एक वद्वर्वय सवमा ु ं सहयोत समेशते रर मई, 2014 म हस्ता्र वकए तए इस समेशते का उद्दश्े य सवमिाती ्ेरों म , स्ा, सचनाओ के आदान-प्रदान को बढ़िाा दने ा ह ै इस ु ू ं समेशते म सेनाओ की तश्तों के समन्िय के वलए र्व सहमवत की बात ह ै वीससे सवमारार की अिधै ं आिाहव रर रोक लतायव ीाएतव रर सवमिाती ्ेरों म कावन्त एि वस्ारता को बढ़िाा वमलेता ं 19 निम्बर, 2014 को कावन्त, वनःकस्त्रवकर एि विकास के वलए 2014 का इवदरा ताधव ररस्कार इसरों ु ं ं ं को प्रदान करने की ुोष ा की तयव उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 182 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 12 वदसम्बर, 2014 से सामावीक न्यायरवठ द्वारा काय ष करू हआ ीवक सामावीक मद्दों से सम्बवन्धत ु ु मामलों की सनिाई के वलए स्िच्य न्यायालय म नितवठत वकया तया ाा ु ारत म ्साचार को रोकने के वलए उठाया तया एक महत्त्िर ष कदम ू ्साचार को रोकने के वलए ारतवय राष्टररवत द्वारा राकरत वबलः ारतवय राष्टररवत िव प्र ि मखीी द्वारा ्साचार को रोकने के वलए उस वबल को मीरव द े दव वीसे ु ू ं वव्हवसल ्लोअर प्रोटेक्कन वबल कहते ह ्स अवधकाकरयों के विरुि स्िच्य न्यायालय द्वारा वलया तया महत्त्िर ष रै सला- ू स्िच्य न्यायालय के म्य न्यायाधवक न्यायमवतष आर.एस. लोढ़ा की अध्ता िालव राच सदस्यवय ु ू ं सिधै ावनक रवठ ने 6 मई, 2014 को एक अहम रै सला लेते हए िसव.बव.आई. ्ण्ठण्त) के न्िवय ीाचुँ ं ्यरो की कवक्तयों म िवि कर दव वीसम काननव धारा 6 को तरै सिधै ावनक करार वदया तया धारा 6 के ृ ू ू ं तहत वकसव र्व िकरष्ठ अवधकारव के विरुि के न्िवय ीुँच ्यरो द्वारा ीाच नहीं की ाी सकतव ाव ू ं वकन्नरों के वलए आर् स्िच्य न्यायालय के न्यायमवतष के .एस. राधाकष्ट न एि न्यायमवतष ए.के . सवकरव द्वारा महत्त्िर ष वन यष ृ ू ू ू ं वलया तया वीसके तहत वकन्नर समी को तवसरे वलत के रूर म 15 अप्रैल सन, 2014 को काननव ू ं मान्यता प्रदान कर दव तयव इस कानन के तहत इस ित ष को वक् सस्ानों रर सरकारव नशककरयों म आर् का प्रिाधान ह ै ू ं िष ष 2003 की राष्टरवय यि नववत का स्ान नई राष्टरवय यि नववत “राष्टरवय यि नववत 2014“ ने ु ु ु वलया तत्कालवन प्रधानमरव डी. मनमोहन वसह ीव की अध्ता म 9 ीनिरव, सन 2014 को के न्िवय ं ं मवरमण्डल की बैठक म राष्टरवय यि नववत-2014 को मीरव दव तयव वीसका उद्दश्े य दके वनमाष म ु ू ं ं यिाओ को आत े लाने, एि उन्ह अिसर प्रदान करना ह ै वीसके अन्ततत ष 15 स े 29 साल उम्र के सर्व ु ं ं नातकरक आएत इसके अन्ततत ष वक्ा ;म्कनबीरिदि द्ता एि रीतार ;ारसस ं ं क्मअमसिचउमदी ैंदक मउचसिलउमर्दी उद्यमकवलता ;म्दीतमचतमदमनतेवरचि सामावीक म्यों को बढ़िाा दने ा, सामदावयक ारतवदारव, रीनववत ि कासन म ारतवदारव ताा सामावीक न्याय ू ु आवद कावमल ह मवहला सकवक्तकर की वदका म एक महत्त्िर ष कदम दके म प्राम मवहला ब क की स्ारना ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 183 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इसकी स्ारना निम्बर, 2013 म की तयव “मवहला सकवक्तकर -ारत का सकवक्तकर “ हव इस ब क की रचलाइन ह ै ारतवय मवहला ब क ;ठडठि का उद्घाटन 19 निम्बर, 2013 को स्ि. िवमतव इवदरा ं ं ताधव के 9ि6 ीन्मवदिस के अिसर रर मम्बई म तत्कालवन प्रधानमरव डी॰ मनमोहन वसह द्वारा वकया ु ं ं ं तया कोलकाता, तिाहाटव, लखनँ, चेन्नई, अहमदाबाद ताा ब तलरू म इसके उद्घाटन के साा हव ु ू सिीष वनक ्ेर म कामकी करू कर वदया तया ाा इस ब क का म्यालय नई वद्लव म

स्ावरत वकया ु ु तया ताा िकरष्ठ ब कर उषा अनत सिमण्यम को इस ब क का अध्् बनाया तया ह ै ु ं इस ब क को 1000 करो़ा की रुँीव से करु वकया तया सरकार का इरादा ाा वक माच,ष 2014 के अन्त ू ु तक इसकी कल 25 काखाए हो ीाए इस ब क के कमचष ाकरयों म र्व 70ः मवहलाए हो रखव ीाएतव, यह ु ं ं ं ं ं बात तत्कालवन वित्त मरव रव. वचदम्बरम ने कहव ाव इस बक की 55-60 काखाए दके के विवर्न्न ारातों ं ं म 2014-15 म स्ावरत की ीाएतव, ऐसा चैयररसषन सह प्रबन्ध वनदके क उषा अनत सिमण्यम ने कहा ु ं ं कास्त्रव िर्न िनई वद्लव) म माचष, 2013 म दके म रहला मवहला डाकुर स्ावरत वकया तया 5 माच,ष 2013 को अतराषष्टरवय मवहला वदिस के अिसर रर, सचार ि सचना प्रशद्योवतकी मरव कवरल ू ं ं ं वस्बल ने इसका उद्घाटन वकया आने िाले वदनों म ऐसे रर र्व मवहला डाकुरों की स्ारना की ीाएतव ऐसव ुोष ाा र्व की तयव इसका सचालन ररव तरह से मवहलाए कर तव एि इस प्रकार का यह दके ू ं ं ं का रहला ऐसा डाकुर होता नई वद्लव म व्रिान िर्न म रद्योवतक विकास तेी करने ताा दके को "मन्ै यरै क्चकरत हब" बनाने ू ं के वलए

Quotes detected: **0%** id: **216**

'मके इन इवण्डया'

अवर्यान को लाच वकया ं ारतवय प्रधानमरव नरेन्ि मोदव ीव ने 25 वसतम्बर, 2014 को इसक अवर्यान का कारार्र वकया इस ु ं ं अिसर रर प्रधानमरव िव नरेन्ि मोदव ीव ने वमकन का प्रतवक वचन्ह ;स्िंहि ीारव वकया इसम एक वसह ं ं की दकाषया तया ह ै ीी वक साहस, बविमत्ता ि कवक्त को प्रदवकतष करता ह ै रर दके के राष्टरवय प्रतवक ु वचन्ह अकोक चक्र का वहस्सा र्व ह ै प्रधानमरव िव नरेन्ि मोदव ने विकाल सारा को सम्बोवधत करते हए ं

Quotes detected: **0%** id: **217**

'एर डव आई'

के वलए नया नीकरया

Quotes detected: **0%** id: **218**

'रस्टष डिलर इवडया'

के रूर म ारतवय नातकरकों के सम्मख ु ं रकरारावषत वकया इस दशरान दके के अग्र व उद्यवमयों से यह हील ररव तरह से र्रा हआ ाा म्य ू ु कायषक्रम के अलिाा अन्य रायों म र्व इसके वलए कायषक्रम आयोवीत वकए तए, विदके म ारतवय दतिासों म इसका सवधा प्रसार र्व वकया तया ू विमिवकर ;क्मउिदमीर ीरिदि से 2016-17 म ग्रोा रेट रर 0 25 . 0 50ः का प्रवतकल प्रिरा ु ू ऱा ेता ऐसा अनमान आवाषक समव्ा म लताया तया ाा लेवकन दवुकष ाल म इससे लार् होंत े ु ऐसे नोट ीी चाल-चलन म नहीं ो िसवचत मिा) के रकरमा के आकलन के वलए

Quotes detected: **0.01%** id: **219**

'सीइल रेट ;िरस ु ं ं तीमि'

का आवाषक समव्ा म उ्लेख ह ै सीइल रेट ि दर ह ै वीस रर नोट इतने खराब हो ीाते ह ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 184 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 वक करिी ष ब क के रास उन्ह िरस ारी ा ीाता ह ै विमिवकर का उद्दश्े य- ;रि ्साचार रर अकक, ु ु ं ;ररि ीालव नोटों रर अकक, ;ररि आतकिादव तवतविवधयों के वलए उच्च म्य ित ष के नोटों के ु ू ं ं प्रयोत रर अकक लताना ताा ;रअि काले धन रर अकक लताना ह ै ु ु ं ं यह विमिवकर अन्तराषष्टरवय आवाषक इवतहास म इस अाष म महत्त्रि ष ुटना ाव वक यह सामान्य ु ू आवाषक ि रीनववतक रकरवस्ावतयों म तोरनवयता एि कवघ्रता से उठाया तया कदम ाा ं □ सार-सराई न होने के कार अवाषक वस्ावत रर र्व कमीीर होतव ह ै विकषे रूर से तरवबों की स्िास््य रर सरा सवनवश्चत करने के वलए

Quotes detected: **0%** id: **220**

'स्िच्छ ारत अवर्यान'

चलाया तया ह ै ु ु प्रधानमरव उिला योीना के तहत स्िच्छ ँीष प्रदान की ीाएतव वीससे मवहलाओ को ं ं धुआर्रव रसोई से होने िाले दष्टरकर ामों से बचाया ी सके ता ं ु □ प्रधानमरव यिा योीना वक् रर प्रवक् को बढ़िा दने े के वलए सात लाख विद्यावाषयों के ु ं वलए आरम्र् की तई ह ै आवाषक रूर से कमीीर ित ष के विद्यावाषयों के वलए नए रास्ते खोलकर वक्ा को अवधक सतम बनाया ह ै ु □ अक्टबर, 2016 को ारत ने रैकरस समेशते का अनसमाषन वकया रर ीलिाय न्याय ताा ू ु ु बहत रहले से चलव आ रहव ीविन कलै व रर ध्यान दते े हए ीलिाय रकरितषन के दष्टप्रिरों को ु ु रोकने के प्रवत अरनव प्रवतबिता का सके त र्व वदया ं □ एक नई वरवनटव "ीनधन-आधार-मोबाईल' के माध्यम से सव्सडव के प्रत्् लार् हस्तातर से ं ्साचार रर अकक लता ह ै 36000 करो़ा रुरए की बचत हई ह ै विश्व की सबस े ब़ा व स्कीम ु ं रहल ह ै वीससे दो िषों म 21000 करो़ा रुरए की बचत हई ह ै 5 लाख से अवधक लोतों को रीतार वमला ह ै रर वडवीटल सारता बढ़व ह ै □ Give it up अवर्यान के अन्ततष लतर्त 1.2 करो़ा से अवधक ारतवयों ने रसोई तसै सव्सडव छो़ा व ह,ै वीससे िवचत लोतों को रसोई तसै कनैक्कन वदया ीा सके इसव प्रकार स्िच्छ ं ारत अवर्यान के अन्ततष 1.4 लाख तुँिों, 450 से यादा कहरों, 77 वीलों ताा 3 रायों ने अरने ्ेर

को खले म कशच से मक्त ुोवषत कर वदया ह ै ु ु □ 26 करो़ा से अवधक ीन-धन खाते खोलकर लोतों को ब वकत व्यिस्ाा से रहलव बार ीा़ा ा ं तया ह ै

Quotes detected: **0%** id: **221**

'ीनधन'

से ीनस्ा की वदका म तीव से आत े बढ़ते हए लतर्त 13 करो़ा तरवबों की ु विवर्न्न सामावीक स्ा योीनाओ म कावमल वकया तया ह ै ु ं □ लोतों तक ब वकत सविधाए रहचुँ ाने के वलए

Quotes detected: **0%** id: **222**

'्ारतवय डाक र्तान ब क'

प्रारम्र् वकए तए ह ै ु ु ं ं □ प्रधानमरव मिा योीना के अन्ततत ष रुरये दो लाख करो़ा के 5.6 करो़ा ऋ उरल्ध कराए तए ु ं ह ै वीससे छोटे व्यिसायों को प्रोत्साहन वमलेता इस योीना के अन्ततत ष 70 ऋ का लार् मवहला उद्यवमयों को वमलेता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 185 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 □ प्रधानमरव रसल बवमा योीना म ीावखम किरी को विस्तत वकया तया ह,ै बवमा रावक दोतनव ृ ु ं की तई ह ै □ िन अवधकार अवधवनयम के तहत 55.4 लाख एक़ा िन र्वम के ्ेररल म 16.5 लाख ू व्यवक्तत त िन अवधकार स्ावमत्ि प्रदान वकए तए ह ै कै लाक सत्याी ि्ारत) ि मलाला यसरीई िरावकस्तान) को 2014 म नोबेल कावन्त ररस्कार सयक्त ू ु ु ु ं रूर से वमला ह ै ्ारत म बाल-अवधकारों के वलए सुषरष त रह े कै लाक सत्याी मलतः मध्य प्रदके के ू ं विवदका वीले के रहने िाले ह

Quotes detected: **0%** id: **223**

'बचरन बचाओ आन्दोलन'

नाम का एक तरै -सरकारव सतठन चलाते ह ं ीी बालिम ि बाल तस्करव म रसे बच्चों को मक्त कराने की वदका म कायष करता ह ै सत्याी ीव ने ु ं ताधव ीव की ररम्परा को कायम रखा ह ै ताा आवाषक लार् के वलए बच्चों के कोष के विरि कई ं कावन्तर ष विरोध प्रदकनष ों की अतिाई की ह ै ू ु रावकस्तान म ल़ा वकयों की वक्ा के वलए सुष ष करने िालव मलाला यसरीई ने तावलबान के हमले म ू ु ं ीविन को दाुँि रर लताने के बाद र्व रावकस्तान म बाल अवधकारों रर बावलकाओ की वक्ा के वलए ं अरना सुष ष ीारव रखा ह ै 17 िषीय मलाला को 2012 म रावकस्तान म मवहलाओ के वलए वक्ा ं ं अवनायष करने की मात के बाद तावलबान की तोलव का वककार होना श़ा ाा नोबेल ररस्कार प्रासे करन े ु ं िालव िह सबसे कम उम्र की विीते ा ह ्ाल श्रें ै न् यें ें सशोध ां 26 ीलाई, 2016 को बाल िम सकोधन विधेयक, 2016 लाया तया रायस्ा म यह विधेयक रहले हव ु ं 19 ीलाई, 2016 को राकरत वकया ीा चका ाा वकन्त राष्टररवत की अनमवत के बाद यह अवधवनयम बन ु ु ु ु तया वीसम 14 िष ष तक के बालक को रौीतार तो वदया ीा सकता है, ररन्त िह अरने रकरिार की ु सहायता कर रहा ह ै इसव कतष रर ऐसा वकया ीाएता यवद ऐसा नहीं होता ह ै तो 14 िष ष की आय के बालक से काम कराने रर दो िष ष की सीा का प्रिाधान ह ै ु 2.7.5. शान्ति े न्लए रश्यास हि े ें हत्तप ब न्ि्ियाँ ु ु ू 24 ीनिरव - राष्टरवय बावलका वदिस (कन्या र्ै हत्या ीसै व सामावीक करववतयों के बारे म लोतों को ीातरूक करने के उद्दश्े य से के न्ि ू ु सरकार ने 24 ीनिरव, को राष्टरवय बावलका वदिस के रूर म मनाने का रै सला िष ष 2009 म वकया ाा) 25 ीनिरव - राष्टरवय मतदाता वदिस- उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 186 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 चनिा आयोत ने 25 ीनिरव को राष्टरवय मतदाता वदिस 2011 म ुोवषत वकया ाा यह मतदाताओ म ु ं ीातरूकता लाने का प्रयास ाा 26 ीनिरव - ्ारत का त तर वदिस ं 27 ीनिरव - विध्िस के वककार लोतों की स्मवत म सयक्त राष्टर वदिस ृ ु ं ं 20 ररिरव - सयक्त राष्टर सामावीक न्याय वदिस ु ं 21 ररिरव - अन्तराषष्टरवय मात्ाषा वदिस ृ 28 ररिरव - राष्टरवय व्िान वदिस 3 माचष - विश्व िन्य ीवि वदिस 4 माचष - राष्टरवय स्ा वदिस ु 8 माचष - अन्तराषष्टरवय वदिस 21 माचष - सामावीक अवधकाकरता स्मवत वदिस ृ 21 माचष - विश्व बावलका वदिस 22 माचष - विश्व ील वदिस 23 माचष - विश्व मशसम वदिस 27 माचष - विश्व रतमच वदिस ं ं 5 अप्रैल - समता वदिस 7 अप्रैल - विश्व स्ाास्् य वदिस 18 अप्रैल -विश्व विरासत वदिस 22 अप्रैल -ि्व वदिस ृ 1 मई - अन्तराषष्टरवय िम वदिस 21 मई - सिाद एि विकास हते सास्कवतक विविधता वदिस ृ ु ं ं ं 22 मई - अन्तराषष्टरवय ीा विविधता वदिस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 187 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 29 मई - सयक्त राष्टर कावन्त सैवनकों के वलए अन्तराषष्टरवय वदिस ु ं 5 ीन - विश्व रयाषिर वदिस ू 10 ीन - विश्व र्तर् ष ील वदिस ू ू 12 ीन - बालिम वनषधे वदिस ू 20 ीन - विश्व कर ाी वदिस ू 11 ीला- विश्व ीनस्या वदिस ु ं 6 अतस्त - वहरोवकमा वदिस 9 अतस्त - नातासाकी वदिस 15 अतस्त - ्ारत का स्ितन्त्रता वदिस 5 वसतम्बर - वक्क वदिस 8 वसतम्बर - अन्तराषष्टरवय सा्रता वदिस 16 वसतम्बर - ओीीन ररत सर् वदिस ं 21 वसतम्बर - अन्तराषष्टरवय कावन्त वदिस 2-8 अक्टबर - िन्य प्रा व ससोह ू 2 अक्टबर - ताुँधव ीयन्तव िअन्तराषष्टरवय अवहसा वदिस) ू ं 8 अक्टबर - अन्तराषष्टरवय प्राकवतक आरदा वनिार वदिस ृ ू 11 अक्टबर - अन्तराषष्टरवय बावलका-वदिस ू 24 अक्टबर - सयक्त राष्टर सु स्ारना वदिस ू ु ं ं 31 अक्टबर - राष्टरवय एकता वदिस ू 11 निम्बर - राष्टरवय वक्ा वदिस एि प्राम विश्व यि की समावसे का स्मर ु ं वदिस 14 निम्बर - बाल वदिस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 188 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 19 निम्बर - विश्व कशचालय वदिस 19-15 निम्बर - राष्टरवय एकता वदिस 25 निम्बर - मवहलाओ के विरि वहसा उन्मलन हते अन्तराषष्टरवय वदिस ू ु ं ं 3 वदसम्बर - विश्व विकलात वदिस ं 6 वदसम्बर - नातकरक स्ा वदिस ु 10 वदसम्बर - अन्तराषष्टरवय मानिावधकार वदिस इस प्रकार इन राष्टरवय ि अन्तराषष्टरवय महत्त्ि की वतवायों एि

ससोहों म विकषे आयोीनों को वकया ीाता ं ह ै तावक उस ्ेर म हो रहव प्रतवत एि अिनवत का आकलन वकया ीा सके , एि सधार हते सदि ु ु ं ं ं प्रयासरत रहा ीा सके 2.7.6. राष्टरवय एन अतिराबष्टरवय स्ि पर शान्ति स्ान्पि ेर े हि न्नद्यालयों ेी भन्ें ेा- ु ू ां आी के रकरप्रेक्य म विद्यालयों से वनम्नवलवखत कायों को करने की अेा की ीातव है- i. अरने समी की सस्कवत का हस्तान्तर करना रर उसका सर् करना ृ ं ं ii. छारों को वदन-प्रवतवदन के निवन ्ान को प्रदान करना iii. निवन ्ान के माध्यम से छारों म सीनात्मक कवक्त का विकास करना ृ iv. बच्चों म सामावीक आदतों का वनमाष करना v. समी म सामावीक, आवाषक, रीनैवतक, धावमकष ताा ्िावनक एि प्रोद्योवतक ितिार म ं प्रवत छारों को सीत एि सचेत बनाना ं vi. सामावीक समस्याओ की समे उत्रन्न कराकर उन्ह सिदे नकवल बनाना ं ं vii. सामावीक कायों म ात लेने के वलए प्रोत्सावहत करना viii. लोकतावरक म्यों के अनसार एक उत्तरदायव नातकरक के रूर म वन यष लेने की ्मता का ू ु ं विकास करना ix. सामावीक म्यों एि आदकों के प्रवत वनष्ठिान ताा उसम सिाहक के रूर म छारों का तैयार ू ं ं करना x. सस्कवत का निवनवकर करना एि समी म रै लव-करववतयों का विरोध करने की ्मता उत्रन्न ृ ु ं ं करना xi. समी म आने िाले रकरितषनों के वलए छारों को तैयार करना xii. सामावीक विुटन की प्रवक्रया एि उसके रूर को समेने के योग्य बनाना ं xiii. अन्तराषष्टरवय नातकरक बनाना उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 189 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 xiv. करनाकवक्त, सशन्दयाषनर्वत ताा सामवहक ि्राना

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/development-linked-to-fa… id: **224**

का विकास करने के वलए राठयसह सद्रामव ु ू ू वक्रयाओ का आयोीन करना चावहए ं xv. ्ि ावनक एि लोकतावरक-मनिोवत्त का विकास

करना चावहए ृ ं ं xvi. कारवकरक िम के प्रवत स्िस्ा ष्वसको विकवसत करना xvii. धम ष वनरर्ेता ताा सामावीक न्याय के वसिान्तों को बतलाना xviii. दके की एकता ि अखण्ा ता के वलए प्रेकरत करना xix. अन्तराषष्टरवय समे को बढ़ाा दने ा xx. विश्व कावन्त की ओर अग्रसर करना 2.8 सारि् इस इकाई म आरने रीनववतक, आवाषक, सामावीक-सास्कवतक एि राकरवस्ावतक ्े ों म चल रह े ृ ं ं सुषों के विषय म एि साा-हव-साा कावन्त के वलए सरल सुषों एि कावन्त के वलए चल रहव सिाद ं ं ं ं ं प्रवक्रयाओ के विषय म अध्ययन वकया इकाई के आरम्र म आरने कावन्त की स्ारना के वलए सयक्त ु ं ं राष्टर सु की स्ारना एि कायष के विषय म रढ़ा रीनववतक ्ेर म चल रह े सुषों के अन्ततष ्ेरिाद, ं ं ं सम्प्रदायिाद, ्ेरवय असन्तलन वनर्रता, वहसा, ीावतिाद एि इनके दष्टरकर ामों की चचाष के साा हव ु ं ं ु आरने कोष रर र्ात, असन्तवलत आवाषक विकास, प्रवतस्रधाष का बाीर, एि उदारिादव ु ं अाषव्यिस्ाा ताा उसके दष्टप्रि्रा का अध्ययन वकया सामावीक एि सास्कवतक ्ेर म चल रह े सुषों ृ ं ं ं ु म बालक के व्यवक्तत्ि के विकास एि उसके समीवकर म सहयोत दने े िालव सस्ाओ के विषय म ं ं ं चचाष की तई, साा-हव-साा कछ असामावीक त्यों के विषय म ीसे आक्रामकता, साम्प्रदावयकता एि ु ं वहसा, ल वतक असमानता एि सामावीक उत्रव़ा न, ्साचार वनधषनता, अवक्ा, बालिम आवद मद्दों रर ु ं ं र्व चचाष की तई ह ै राकरवस्ावतक ्ेरों म चल रह े सुषों के अन्ततष रयाषिर सर् का महत्ि, एि ं ं ं राष्टरवय रयाषिर की नववतया ताा ारत के कछ प्रमख रयाषिर सस्ानौ को र्व बताया तया ह ै ु ु ं ं ं कावन्त के वलए सरल सुष ष रर सिाद की चल रहव प्रवक्रयाओ के अध्ययन के अन्ततष सयक्त राष्टर सु ु ं ं ं ं ं ं एि मानिावधकार से सम्बवन्धत प्रमख िअन्तराषष्टरवय) प्रसविदाए बतलाई तई ह साा-हव-साा ारतवय ु ं ं ं ं सविधान म उलेवखत मानिावधकारों की र्व चचा ष की तई ह ै कावन्त के वलए ीातरूकता रै लाने के ं उद्दश्े य से कछ महत्ि ष वतवायुँ एि ससोह वदए तए ह साा हव आरने विद्यालयों की र्वमका के विषय ु ू ू ं म र्व अध्ययन वकया 2.9 िब्दावनाली 1. राकरवस्ावतकी- ीवि वि्रान की िह काखा ह ै वीसम ीवि समदायों के रारस्रकरक सम्बन्धों का ु उसके ितिार के साा अध्ययन करते ह राकरवस्ावत् इस बात का रता लताते ह वक ीवि उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 190 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 आरस म रर रयाषिर के साा वकस तरह वक्रया करते ह रर ि े ि्रव रर ीविन की ीवटल ृ सरचना का र्व रता लताते ह ं 2. मानिावधकार- मानिावधकार से अवर्प्राय मशवलक अवधकारों एि स्ितरता से ह ै वीसके सर्व ं ं मानि प्रा व हकदार ह ै उनम नातकरक रर रीनववतक अवधकार सवम्मवलत ह ीसै े वक ीविन रर आीाद रहने का अवधकार, अवर्व्यवक्त की स्ितरता रर कानन के सामने समानता एि ू ं ं आवाषक, सामावीक रर सास्कवतक अवधकारों के साा सास्कवतक तवतविवधयों म ात लेने ृ ृ ं ं का अवधकार, ार्ीन का अवधकार, काम करने का अवधकार एि वक्ा लेने का अवधकार ं 3. सयक्त राष्टर- सयक्त राष्टर एक अन्तराषष्टरवय सतठन ह,ै वीसका उद्दश्े य, अन्तराषष्टरवय कानन को ु ु ू ं ं ं सविधीनक बनाने म सहयोत, अन्तराष्टरवय स्ा, आवाषक विकास, सामावीक प्रतवत, ु ु मानिावधकार रर विश्वकावन्त के वलए कायष करना ह ै इसकी स्ारना 24 अक्टबर, 1945 को ू सयक्त राष्टर अवधकार रर रर 50 दके ों के हस्ार होने के साा हई ु ं 4. व्यवक्तत्ि- व्यवक्तत्ि-व्यवक्त की उन मनोकारवकरक रिवतयों का िह आन्तकरक तत्यात्मक सतठन ं ह ै ीवक रयाषिर म उसके अनन्य समार्योनों को वनधाषकरत करता ह ै 5. बालिम- बालिम से तात्रयष ऐसे कायष से ह ै वीसम वक कायष करने िाला व्यवक्त कानन द्वारा ू वनधाषकरत आय सवमा से छोटा होता ह ै ु 6. समीवकर - समीवकर िह प्रवक्रया ह ै वीसके

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **225**

माध्यम से बालक समी के विवर्न्न व्यिहार, रवत-करिी, तवतविवधयुँ इत्यावद सवखता ह ै इसव के माध्यम स

े सस्कवत के अनरूर आचर ृ ु ं करने का विके विकवसत होता ह ै इसके वलए व्यवक्त द्वारा सास्कवतक म्यों का ीी ृ ू ं अभ्यतरवकर वकया ीाता ह ै िह समीवकर का हव रूर ह ै ं ं 7. साम्प्रदावयकता- साम्प्रदावयकता एक अतः धावमषक द्वन्द्वात्मक वस्ावत ह ै वीसके अन्ततष ु ा, ृ ं रिषग्रह एि सदहे का बाह्य होता ह ै ी वहसा की ओर अग्रसर होता ह ै ू ं ं ं 2.10

स दर् य ग्र्थ सची ू 1. प्रो॰ रचशरव, (2016), वक्ा के दाकवष नक एि समी कास्त्रवय रकरष्ट्य, आर॰ लाल बक वडरो, ु ं मरे ठ 2. कमाष, वतरधारव लाल, (2015), कावन्त वक्ा एि सतत विकास, अग्रिाल रव्लके कन्स, ं आतरा 3. प्रवतयोवतता दरष , मावसक रवरका ि2017), के न्िवय बीट 2017-18 एि आवाषक समव्ा ं 2016-17, प्रवतयोवतता दरष , आतरा 4. प्रवतयोवतता दरष , मावसक रवरका ि2017), के न्िवय बीट 2017-18 एि आवाषक समव्ा ं 2016-17, प्रवतयोवतता दरष , आतरा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 191 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 5. माइकल, मोस,े (2009), “द सोकल माकदेश टस ऑर डेमोक्रे वटक रवस“ इटरनेकनल वसक्योकरटव, ं खण्ड 33, स्या 4, 52-86 ं 6. विश्व कावन्त-विवकरववडया 7. रयाषिर सर् -विवकरववडया ं 8. कावन्त वक्ा-एन.सव.ई.आर.टव. वद्लव 2.11 क्त ब धात्मक प्रश्न 1. ारत म कावन्त के वलए रीनववतक ्ेर की र्वमका का ि षन कीवीए ू 2. कावन्त को बनाए रखने म सामावीक एि सास्कवतक ्ेरों की क्या र्वमका होनव चावहए, ृ ू ं ं विचे ना कीवीए 3. विश्व कावन्त एि राकरवस्ावतकी म क्या सम्बन्ध ह?ै सविस्तार बताइए ं 4. कावन्त स्ावरत करने के वलए वकए तए कछ सरल प्रयासों की चचाष कीवीए ु 5. ितषमान म कावन्त म्यों को स्ावरत करने के वलए विद्यालयों की र्वमका स्रस कीवीए ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 192 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इकाई 3 - राष्टरनाद और इसकव आलोच ा; युद्ध और बाज़ार; नैश्ववकरण का अा और इसका अा व्यन ा ा, रा वक्ति क, य य क वकव क्ति क्तिह ाा य Nationalism and its Critics; War and Markets; Globalization: Economy, Politics, Technology; Meaning and Implications 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 राष्टरिाद रर इसकी आलोचना 3.3.1 राष्टरिाद 3.3.2 राष्टरिाद रर इसकी आलोचना 3.4 यि रर बाज़ार ु 3.5 िश्ववकर 3.6 साराक ं 3.7 क्द िालव 3.8 अभ् यास प्रश्नों के उत् तर 3.9 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 3.10 वनबधात् मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना ा राष्टरिाद की सक्रना कारी प्राचवन ह ै ारत म यवद राष्टरिाद का प्रारर् माना ीाए तो यह 3857 म हई ं ं ाव वकसव र्व राष्टर के विकास के वलए िहा के नातकरकों म राष्टरिाद की िराना होनव चावहए रर उसव ं समय राष्टरिाद का अवतरेक दके म तहयि रर विनाक को ला सकता ह ै आी ीब उदारवकर के ृ ु रलस्िरूर ररे विश्व को एक ताँुि म बदल वदया ह ै ीब स्ानवय सिार्ष शवमक ह ै रर सिार्ष शवमक ू स्ानवय ह ै ऐसे म सकी ष राष्टरिाद की िराना सम्र ष विश्व के वलए नकसानदायक ह ै िश्वै वकर ने वसरष ू ु ं बाज़ार को हव नहीं प्रारवित वकया ह ै बव्क इसने आवाषकी् रीनववत रर तकनवकी ्ेरो को र्व उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 193 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 प्रारवित वकया ह ै इस अध्याय म हम राष्टरिाद् इसकी आलोचना् यि रर बाज़ार रर इसके प्रिरा् ु िश्वै वकर रर इससे सम्बवधत ारों का अध्ययन कर त े ं 3.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उररात विद्याी ं 1. राष्टरिाद को रकरारावषत कर सक त े 2. राष्टरिाद की समालोचना कर सक त े 3. यि रर बाज़ार के मध्य सम्बन्ध को स्रस कर सक त े ु 4. िश्वै वकर को रकरारावषत कर सक त े 5. आवाषकी को रकरारावषत कर सक त े रर िश्वै वकर का इसके प्रिरा की व्याया कर सक त े 6. रीनववत को रकरारावषत कर सक त े रर िश्वै वकर का इसके प्रिरा को विश्लेवषत कर सक ते 7. तकनवकी को रकरारावषत कर सक त े रर िश्वै वकर का इसके प्रिरा की विचे ना कर सक त े 3.3 राष्टरवनााद और इसकी आलोच ा “राष्टरिाद” रीनववतक वचतन ताा विचारों म एक उर्यिराव अिधार ा रहव िह चाह े साम्रायिाद स े ं धमवष नरर्िाद, उदारिाद से समदायिाद, ्ेरिाद से अतराषष्टरवयिाद हो, राष्टरिाद की अिधार ा इनम ु ं सबसे अवधक विमवकतष ताा प्रवतस्रधाषत्मक रहव ह ै राष्टरिाद की आलोचना से रहले यह ीानना आिश्यक ह ै वक राष्टरिाद क्या ह ै व 3.3.1 राष्टरनादायि राष्टरिाद एक ीवटल रर बहआयामव अिधार ा ह ै ी वकसव दके के साा सोा साप्रदावयक रहचान को ं कावमल करतव ह ै राष्टरिाद एक रीनववतक विचारधारा ह ै ी समह िउदाहर स्िरुर- दके या मातर्वम) के ृ ू ू ऐवतहावसक महत्ि के ्ेर म स्ावर्मान या र ष सप्रर्ता को प्रासे करने रर बनाए रखने के वलए उन्मख ू ु ु ं रहतव ह ै अतः एक राष्टरिादव सक्रना इस विचार से चलतव ह ै वक राष्टर को वबना आिवछत बाहरव ं ं हस्ेर के अरने आर कासन करना चावहए यह आत्मवन यष की अिधार ा से ी़ा व होतव ह ै राष्टरिाद ु राष्टर रर िाद के वमलने से बना ह ै राष्टर की रकरारषा एक ऐसे ीन समह के रूर म दव ी़ा सकतव ह ै ी ू वक एक र्शतोवलक सवमाओ म एक वनवश्चत दके म रहता हो, समान ररम्रा, समान वहतों ताा समान ं िराना ओ से बुँधा हो रर वीसम एकता के सर म बाँधने की उत्सकता ताा समान रीनैवतक ू ु ं महत्ाका्ाए ँ राई ीातव हों इस रकरारषा के आधार रर राष्टरिाद को रकरारावषत करते हए कहा ी़ा ं सकता ह ै वक ‘राष्टरिाद, सोा सस्कवतयों, सस्कवत, ारषा, ीावत, धम,ष रीनववतक लक्यों या एक समान ृ ृ ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 194 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 िक म एक विश्वास के आधार रर एक राष्टरवय रहचान को विकवसत करने रर बनाए रखने की ओर ं उन्मख होने की अिधार ा ह ै ‘ ु राष्टरिाद म यह प्रयास वकया ीाता ह ै वक राष्टर की सस्कवत को अ्ण् बनाए रखा ीाए यह ृ ं ु राष्टर की उरलब्धयों म ति ष की िराना को कावमल करतव ह ै राष्टरिाद की अिधार ा रर दके र्वक्त की अिधार ा से कारी वमलतव-ीलतव ह ै ु राष्टरिाद को समेने वक वलए कई प्रवतमान ह एक रीनववतक या सामावीक ष्वसको से, राष्टरिाद के मल रर आधार को समेने के वलए तवन म्य प्रवतमान ह रहले प्रवतमान को Primordialism या ू ु Perennialism के नाम से ीानते ह ी राष्टरिाद को एक प्राकवतक ुटना के रूर म देखता ह ै यह मानता ृ ह ै वक राष्टरिाद की अिधार ा र्ले हव नयव हो ररन्त राष्टर हमके ा से अवस्तत्ि म ह ै दसरे प्रवतमान को ु ू Ethnosymbolism कहा ीाता ह ै ी एक ीवटल सक्रना ह ै ी राष्टरिाद को एक तवतकवल, ं विकासिादव ुटना के रूर म इवतहास के सदर् ष म समेने का प्रयास करतव ह ै तवसरा प्रवतमान ं Modernism आधवनकताािद ह ै ी राष्टरिाद को एक हावलया ुटना के रूर म दखे ता ह,ै वीसे अरने ू अवस्तत्ि को बनाए रखने के वलए आधवनक समी की सरचनात्मक वस्ावतयों की आिश्यकता होतव ह ै ु ं अतला प्रश्न यह ह ै वक वकसव र्व राष्टर को राष्टरिाद की आिश्यकता क्यों होतव ह ै तो यह इस कार से वक राष्टरिाद की सहायता से हम वबना वकसव बा्य हस्ेर के स्ितरता रिकष ीव सकते ह, ू ं अरने विचार, सस्कवत रर सभ्यता के वलए स्ितर रहत े, ीब राष्टर के र्शतोवलक ्ेर के स्ितरता के ृ ं ं ं ं ँरर अतर हमला होता ह ै तो सब एकीट होत वीससे हमारव स्ितरता बरक़रार रहते व रर हम स्ितर रह ु ं ं सके त 3.3.2 राष्टरनादायि और इसी ्लिो ा राष्टरिाद सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता ह ै राष्टरिाद की

समय-समय रर आलोचना र्व होतव रहव ह ै कछ विद्वानों का मानना ह ै वक अरने सर्व स्ि्रूरों म राष्टरिाद वकसव र्व रकरितषन या समस्या से राष्टर ु को मक्त करने की मात करते समय बल रर वहसा को ीायी बताने का प्रयास करता ह ै रविन्ि नाा ु ं ं टैतोर र्व उररोक्त विचार से सहमत ह राष्ट रिाद की आलोचना के तवन प्रमख आधार ीी रविनाा टैतोर ु ं ने प्रस् तत वकए, ि े ो- राष्ट रवय रा य की आक्रमक नववत, प्रवतयोतव िाव यि-िद की विचारधारा, रर ु प्रीावतिाद । रन्नद्र ि ा टैतोर े उस राष्ट रनादायि ेी ्लिो ा ेी, न्ीसें शसिा, रुग् ि ा ि ि ृ ां ां पिपिा न्दायिखाई दापियिव है. ने राष्ट रनादायि ेो शन्ग ेा सतन्ठि सें न्रृति रूप ें ा ि हए राज् य ै ृ ु ां शोष ेारव पक्ष ेो दायिशाबि हैं. उनके अनसार रवश्वमम िाव य ताा रीनववत की राष्ट रवय मकवन द्वारा ु मानिता की सार-सारव दबाई हई ताठ तैयार कीं ह ै अ्बेयर काम र्व वलखते ह वक , "म अरने दके को ु ू इतना तयार करता ह ुँ वक म राष्टरिादव नहीं हो सकता" समस्या यह ह ै वक यह वसरष राष्टर वहत की बात नहीं ू होतव बव्क कछ लोतों का स्ि्वहत र्व होता ह ै यह सक्रना ररव तरह क्रना रर हव आधाकरत ह ै ीी ु ू ं राष्टरवयता के नाम रर सम्र ष राष्टर की बात करतव ह ै सम्र ष राष्टर की बात करने के साा हव इसम ररव ू ू ू ीनस्या को ले आना अवनियष हो ीाता ह ै क्योंवक दके की प्रत्येक इकाई इसका ंरात ह ै काव्दक रूरों ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 195 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 म यह इसकी बात र्व करतव ह ै ताा यह प्रयास करतव ह ै वक लोत इससे प्रेर ा ल रर इसके साा हव उनलोतों को समह से बाहर र्व कर दते ा ह ै ीी अरने वकसव एक विचार से र्व इससे सहमत नहीं ह ू इवतहास तिाह रहा ह ्ै वक ीब र्व राष्टरिाद की बात हई ह ै या राष्टरवयता के वलए व्यारक प्रयास वकया तया ह ै यह अरने मात ष से र्टक तयव ह ै रर रकर ाम अच्छे नहीं रह े ह यवद राष्टरिाद की सक्रना के उदय ं की बात को हव दखे तो इसकी नेरोवलयन बोनाराटष ने इसकी करुआत ीहाँु स्ितरता् समानता रर ु ं ंरातत्ि से की ाव िह अरना मात ष र्टक तयव रर स्िलार् के मात ष रर आ तयव राष्टरवयता की उग्र ृ ि्राना सदिे वहसात्मक रहव ह ै रर ीहाँु र्व यह हई ह ै ि हाँु उसने तानाकाहों को ीन्म वदया ह ै रर ं रलतः उस दके की र्वम रक्त से रवीत हई ह ै ू ं महान अ ाषकास्लव एडम वस्मा कहते ह वक ‘राष्टर के धन स’े 'राष्टर की महानता', रर समवि लाने ृ के वलए यह तवव्र इच्छा इसके साा वनवश्चत हव एक अवर्कार लाता ह ै बात ीब राष्टरवयता रर राष्टरिाद की होतव ह ै तो अतराषत्मा की आिाज़ को कहीं दबा वदया ीाता ह ै रर उससे ीडव सारव चवीं को वनवषि ु ं करार द े वदया ीाता ह ै ीी वक तलत ह ै यहाँु बस यह आिश्यकता ह ै वक व्यवक्त कहीं बहार से वनदववदेश कत ना हो रर अरनव आिाज़ को सन सके रर उससे वनदववदेश कत हो सके वक उसे इन रकरवस्ावतयों म क्या करना ु चावहए राष्टर रर धमवष नररेवकर के नाम रर व्यवक्त के अतद्वदी ों को दबा दने ा रर उसकी ि्राना ओ ं ं को वनषवे धत करना वबलकल हव तलत ह स्ि्विके से कायष करना तर्व सि्र् होता ह ै ीब व्यवक्त वन यष ु ं लेने के वलए स्ितर होता ह ै इसका आकय यह ह ै वक सस्ातत आदके ों म अन्य बातों के अलिा धमष ं ं रर रीनववत के बवच मक्त स्ाान छो़ा वदया ीाता ह ै रर यह सवनवश्चत वकया ीाता ह ै वक व्यवक्त अरने ु ु मक्त अतरात्मा के अनसार वन यष कर सके रर कायष कर सके मक्त चेतना या अतराषत्मा का अ ाष ह ै वक ु ु ु ं ं व्यवक्त अरने अनसार वन यष ले सके ु यहाँु यह यह स्रस कर दने ा आिश्यक ह ै वक आलोचना राष्टरिाद की नहीं बव्क छि राष्टरिाद की ह ै क्योंवक सहव राष्टरिाद सर्व नातकरकों को साा लेकर चलने म ह ै विनाक हमके ा छि राष्टरवयता से हव होता ह ै विकास म राष्टरिाद की र्वमका को नकारा नहीं ी सकता ह ै उदारतिादव रर ू लोकतावरक राय से तठीी़ा करके ग़रवबव रर वरछ़ा ेरन के वककार समीीं को आत े ले ीाने म ं राष्टरिाद ने ऐवतहावसक र्वमका वन ंराया ह ै सर्व उत्तर-ररवनिवे कक समीीं ने अरने ि कै ावसक लक्यों ू को राने के वलए राष्टरिाद का सहारा वलया ह ै ख़ास तशर से ंारत ीसै े बहलतामलक समीीं को एक ू रीनववतक समदाय म विकवसत करने म राष्टरिाद एक प्रमख कारक रहा ह ै ु ु ि सै े मण्डलवकर की प्रवक्रया ने राष्टरिाद को चनशतव दव ह ै ितषमान समय म विश्व का एक ब्रा ा ित ष एक ू ु सव ंराषा बोलता ह,ै एक सव रस्तक रढता ह,ै एक सा ख़ाना खाता ह ै रर कई मद्दों रर एक सा सोचता ह ै ु ु अभ्यास रश्न 1. Primordialism अिधार ा के अनसार राष्टरिाद क्या ह ै व ु 2. Modernism के अनसार राष्टरिाद को रकर ंरावषत कर ु 3. राष्टरिाद की आलोचना रविनाा टैतोर ने वकन आधारों रर वकए ो व ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 196 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.4 युद्ध और बाज़ार यद ध का इवतहास मानि सभ्यता के उदय के साा हव प्रारर् हो तया यद ध रहले र्व होते ो रर आी ु ु ं र्व हो रह े ह यह सत्य ह ै वक समय-समय रर कारक रकरिवतषत होते रह े ह वक्ि्सव राइस ने यि को ु ं रकर ंरावषत करते हए कहा ह ै वक

Quotes detected: **0.01%** id: **226**

“यि दो वर्न्न ररन्त दो समान इकाईयों के मध्य वहसात्मक सुष ष ह ै ”

ु ु ं ं िहव क्लीविटज़ यि के वलए कहते ह वक

Quotes detected: **0.01%** id: **227**

“यि रीनववत को वक्रयावन्ित करने का माध्यम ह ै ”

ुँ ु ु यि रर बाज़ार एक दसरे को सवधे तशर रर प्र ंरावित करते ह ि्श्वै वकर ् उदारवकर रर वनीवकर न े ु ु बीारवकर को बढ़ाा वदया ह ै रर दवनया के हर ्ंेर म बाज़ार का विस्तार वकया ह ै इस तरह दके की ु अ ाषव्यिस्ाा र्व प्र ंरावित होतव ह ै सन 2003 म अमके रका रर हआ ीबरदस्त हमला इसका ि लत ं उदाहर ह ै वीसम रल र्ं म हीारों लोत असमय काल के वककार हो तए रर सारे विश्व की अ ाषव्यिस्ाा की नींि वहल तई ाव एडआड् तवलयानो का कान ह ै वक ‘यि ि सै े हव बेचे ीाते ह ीसै े कार , ेठ बोल कर’ एडआड् ु ु ु ू तवलयानो ने यह बात साम्रायिादव कवक्तयों की सावीकों के वखलार कहव ाव. ऐसव

साम्रायिादव कवक्तया, वीनका ररे मववडया रर क्ी ह,ै ी बीार को अरने वहतों के अनकल सचावलत करतव ह ू ु ू ं ं क्राउार का मानना ह ै वक

Quotes detected: **0.01%** id: **228**

“आी-कल यि स्त्रातीव ि समरतर की अरे्ा अ ाषकास्त्र से अवधक प्र ्रावित ु ं होते ह ”

ीहाँु एक ओर एक ऐसा बाज़ार ह ै वीसे यि का रायदा होता ह ै क्योंवक िह ऐसा बाज़ार ह ै ी ु यि बेचता ह ै रर अतः यि को प्रायोवीत करता ह ै यि न होने रर यि का र्य वदखाकर यि के ु ु ु ु ु बाज़ार सामवग्रयों म तेज़व बनाए रखता ह ै रर दसरव ओर उदारवकर रर ि श्वै वकर के रलस्िरूर ीब ू ररा विश्व एक बाज़ार बन तया ह ै तो यि का प्रि्रा एक दके की अ ाषव्यिस्ा रर नहीं श्र ता बव्क ररा ू ु ू विश्व इससे प्र ्रावित होता ह ै इवतहास की सबसे ब़ा व महामदव ने इस प्रकार विश्व को प्र ्रावित वकया वक ं रासविाद का प्रारर् हआ रर ररव दवनया वद्वतवय महायि के चरेटे म आ तयव रर इसके रश्चात यि के ू ु ु ं ु रलस्िरूर दवनया महामदव से बाहर र्व वनकलव ीब र्व यि होता ह ै अ ाषव्यिस्ा धाह ीावत ह ै रर ु ं ु बाज़ार नवचे वतर ीाता ह ै कई बार माँुत तो होतव ह ै रर रवतष नहीं हो रातव वीससे वस्ावत र्यिह हो ीातव ू ह ै वीन दके ों के मध्य यि होता ह ै या वीस दके म यि होता ह ै उसके वनिके ों को ेटका लतता ह ै रर ु ु उस मिा की कीमत वतर ीातव ह ै ी उसकी अ ाषव्यिस्ा को नकसान रहचता ह ै यि के रकर ाम स्िरुर ु ु ु ं वनमाष उद्दश्े यों को र्व नक्सान रहचता ह ै ी बाज़ार को प्र ्रावित करता ह ै ु ं अत म लेवनन की उवक्त को यि रर बाज़ार के सबधों के सन्दर् ष म दव ीा सकतव ह ै वक ु ं ं ं

Quotes detected: **0.02%** id: **229**

“यि रीविादव विस्तार का हव उत्राद ह ै रुँीविाद से साम्रायिाद बनता ह ै रर साम्रायिाद से यि ु ू ू ु ं होता ह ै ”

अभ्यास रश्न 4. यि का वकसव दके की अ ाषव्यिस्ा रर क्या असर होता हवै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 197 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3.5 वनौश्वीकर ि वै श्वकर या ग्लोबलाईीकन ि ह प्रवक्रया है, वीसम व्यारार, सिाओ या तकनववकयों का ररे ससार म ू ं ं ि वि, विकास रर

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindi.economictimes.com/wealth/tax/if-y… id: **230**

विस्तार वकया ीाता ह ै यह विवर्न्न व्यारारों या व्यिसायों का ररे ससार के विश्व ृ ू ं बीार म विस्तार

करना ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **231**

“अविश्व विश्व यथा स्यात तथा इवत ि श्वीकरण ।”

अ ाषत ी विश्व नहीं ह ै ि ह ीसै े विश्व बन ीाए ृ ृ ं ं ं ि सै ा करना ि श्वै वकर ह ै अग्रीव क्द ग्लोबलाईीकन को वहदव म ि श्वै वकर या र्मडलवकर के नाम से ीानते ह ै का काव्दक ू ं ं ं अ ाष स्ानवय या ृ्ेरवय ि स्तओ या ुटनाओ के विश्व स्तर रर रूरातर की प्रवक्रया ह ै “वश्वै ीकरर्” ु ं ं ं क्द का उरयोत अ ाषकावस्त्रयों के द्वारा 3980 से वकया ीाता रहा ह,ै हालाँुवक 3960 के दकक म इसका उरयोत सामावीक वि्रान म वकया ीाता ाा इसे एक ऐसव प्रवक्रया का ि नष करने के वलए र्व प्रयक्त ु वकया ी सकता ह ै वीसके द्वारा ररे विश्व के लोत वमलकर एक समी बनाते ह ताा एक साा कायष करत े ू ह ि श्वै वकर का म्य बल सयोीन रर ह ै यह आवाषक, तकनवकी, सामावीक रर रीनववतक ताकतों ु ं का एक सयोीन ह ै ि श्वै वकर का उरयोत अक्सर आवाषक ि श्ववकर के सन्दर् ष म वकया ीाता ह,ै अ ाषत, ं व्यारार, विदके व प्रत्य् वनिक, रीव प्रिाह, प्रिास रर प्रशद्योवतकी के प्रसार के माध्यम से राष्टरवय ं अ ाषव्यिस्ा का अतरराष्टरवय अ ाषव्यिस्ाओ म एकीकर होना हव ि श्वै वकर ह ै इस प्रकार " ं ं ि श्वै वकर " का अ ाष आवाषक प्रयोीनों के वलए राष्टरवय सवमाओ का विलोरन् ह ै ि श्वै वकर म ी ं स्ानवय ह ै ि ह सिार्ष शम ह ै रर ी सिार्ष शम ह ै ि ह स्ानवय ह ै प्रो. एन्ोनव वतवन्डस के कहा ह ै वक “र्मडलवकर विश्वव्यारव सामावीक सबधों का तहनवकर ह ै ी ू ं ं ं दर-दर वस्ात आबावदयों को एक दसरे से इस तरह ीा ता ह ै वक बहत दर रर होने िलव ुटनाओ का ं ू ू ु ू स्ानवय ुटनाओ रर स्ानवय ुटनाओ का मवलों दर होने िलव ुटनाओ रर प्रि्रा श्र ता ह ै ं ं ं ं ू i. अिबव्यनस्ि- अ ाषव्यिस्ा को रकर्ावषत करते हए यह कहा ी सकता ह ै वक यह उत्रादन, वितर ताा खरत की एक सामावीक व्यिस्ा ह ै यह वकसव दके या ृ्ेर विकषे म अ ाषकास्त्र का तवतत वचर ह ै ी वकसव विकषे समय काल से सम्बवधत होता ह ै यवद इसके अ ाष को दखे ा ं ीाए तो अ ाषव्यिस्ा दो क्दो से बना ह;ै रहला अ ाष रर दसरा व्यिस्ा अ ाष का तात्रयष ह ै ू मिा या धन रर व्यिस्ा का मतलब ह ै एक स्ावरत कायषप्र ालव इसप्रकार अ ाषव्यिस्ा धन ु से सम्बवधत कायष प्र ालव ह ै ी वकसव दके से सम्बवधत होतव ह ै इस क्द का सबसे प्राचवन ं ं उ्लेख कशवट्य द्वारा वलवखत ग्रन्ा अ ाषकास्त्र म े वमलता ह ै ii. नैर्श्वर और ्न्िबी न् न्हिाब: ि श्वै वकर का अ ाषव्यिस्ा से सवधा सम्बन्ध ह ै ि श्वै वकर के यत म ीब ररा विश्व एक तााँुि बन चका ह ै वीसका एक हव बाज़ार ह ै तब ु ू ु अतराषष्टरवय आवाषक बाज़ारों म चलने िाले आन्दोलनों द्वारा वकसव दके की राष्टरवय सरकार की ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 198 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 आवाषक नववतयों का वनधाषर होता ह ै लतर्त सम्र ष विश्व का आवाषक ि श्वै वकर हो चका ह ै ू ु सम्र ष विश्व को एक समग्र इकाई के रूर म ताा बाज़ार को इसके एक उरकर के रूर म ू स्िवकार वकया ीाता ह ै एक ि श्वै वकत दवनया म खला् उदार एि मक्त बाज़ार ताा मक्त व्यारार ृ ु ु ु ं ु अ ाषव्यिस्ा की प्रमख विकषे ताए ह वीसे अतराषष्टरवय वनिक रर तात्कावलक रुँीव के प्रिाहों ु ू ं ं

द्वारा वचवन्हत वकया ीाता ह ै राष्टरवय अ ाषव्यिस्ाय िष्ठ आवाषक रकरवधयों म आ रहव ह रर इनका अतराषष्टरवय व्यिसाय ताा वित्तवय बाज़ारों की दवनया से एकीकर हो रहा ह ै रर इसे ं ु कतयटर

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ + 2 resources! id: **232**

के माध्यम से सम्र ष विश्व म तत्काल सम्रन्न वकया ीाता ह ै ू ू ं विदके व प्रत्य् वनिक िF.D.I.) की तवत ताा इसके विस्तार रर दवनया के विवर्न्न वहस्सों म ु ताात्कावलक रुँीव के प्रिाह को आवाषक िश्वै वकर के रूर म दखे ा ीाता ह ै इसके ू रकर ामस्िरूर अन्तराषयवय ताा बहराष्टरवय कम्रवनयाँु इस दके रर ्ेर म रहचने के वलए ं ं प्रयासरत ह ीहाँु सस्ता िम उरल्ध ह ै इससे राष्टर-राय की आवाषक स्ियत्तता प्र ावित हो रहव ह ै ारत म रेतसव् कोकाकोला ीसै व करवनयों की स्ारना रर टाटा ग्रतस द्वारा नैनो के ु ं वलए तीरात म तलाट की स्ारना इसका उदाहर ह बाज़ारों् व्याराकरक िस्तओ ताा ु ु ं ं विवनयोतों के ्ेर म िश्वै वकर का स्रस प्रिा ह ै ी अ ाषव्यिस्ा के ात ह िश्वै वकर का उदारवकर से स्िा ाविक मेल ह ै क्योंवक रुँीव का बहिा हो रहा ह ै ताा दवनया के दके म ू ु बहराष्टरवय करनव रर वनतम अरना ील रै ला रह े ह आी विदके व रुँीव का वनिके विश्व- ू ं व्यारव ह ै हर दके म मकै डोना्डस् डोवमनोी रर के .एर.सव. खल तए ह आर. वतव्रन के ु अनसार िश्वै वकर विश्व की अ ाषव्यिस्ा का एकीकर ह ै ु िश्वै वकर का ीन्म उदारवकर के रलस्िरूर हआ ह ै उदारवकर ीब ब्रा े स्तर रर फ़ै ल ीाता ह ै यावन विश्व स्तर रर फ़ै ल ीाता ह ै तब विश्व एक बाज़ार बन ीाता ह ै एक दके की अ ाषव्यिस्ा का म्याकन विश्व अ ाषव्यिस्ा का म्याकन विश्व अ ाषव्यिस्ा से वकया ीाने लतता ह ै रर ू ू ं ं ऐसा इसवलए वकया ीाता ह ै वक अतराषष्टरवय बाज़ार म आये उछाल या मदव ररे विश्व की आवाषक ू ं ं व्यिस्ा को प्र ावित करने लततव ह ै इस प्रकार स्रस ह ै वक ितषमान समय म ररा विश्व एक हव ू अ ाषव्यस्ा से बधा ह ै रर ी िश्वै वकर का रकर ाम ह ै ं अभ्यास रश्न 5. िश्वै वकर म्य रूर से वकस रर बल दते ा हवै ु 6. अ ाषव्यिस्ा क्द का सिप्रष ाम प्रयोत वकसके द्वारा वकया तया ाव iii. री वन्ि: रीनववत का अग्री व क्द Politics का ीन्म मल रूर से यनानव ्राषाके रोवलस ू ू ं क्द से हई ह ै रोवलस का अ ाष समदाय या ीनता या समाी ह ै यनानव दाकवष नकों तलेटो रर ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 199 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अरस्त ने ऐसव हर चवज़ को रीनववत माना ह ै वीसका सम्बन्ध ररे समदाय को प्र ावित करन े ु ू ु िले प्रश्नों से ह ै रीनववत को नातकरक स्तर रर या व्यवक्ततत स्तर रर कोई विकषे प्रकार का वसिान्त एि व्यिहार के रूर म रकर्ावषत वकया ी सकता है । यवद रीनववत को सकी ष रूर ं ं से रकर्ावषत करने का प्रयास वकया ीाए तो कहा ी सकता ह ै वक यह कासन म रद प्रासे करना ताा सरकारव रद का उरयोत करना ह ै रीनववत के कई स्तर होते ह - तोंु की ररम्रराटत रीनववत से लेकर, स्ानवय सरकार, सम्प्रर्त्ि ष राय या अन्तराष्टरवय स्तर रर ु ू iv. नैर्श्वर और री वन्ि न् न्हिाब: ितषमान समय म विश्व म अतराषष्टरवय सबधों का ं ं ं रीनववतक अ ाषकास्त्र िश्वै वकर या र्मडलवकर से प्र ावित ह ै अतराषष्टरवय रीनववत रर ू ं ं र्मडलवकर का प्रिा स्रस ह ै आधवनकता के आरवर्क दशर म समी रर राष्टर-राय के ू ु ं ं विषयों के ऐवतहावसक सन्दर्ष म विद्वानों ने र्विष्टयिा व की ाव वक अवधराष्टरवय रीनववतक सरचना के द्वारा एक विश्व समी प्रस्तत वकया ीाएता विद्वानों का तकष रहा ह ै वक तलनात्मक ु ु ं ष्वस से अतराषष्टरवय सतठनों आर कासन की वनर्रष ता बढ़ेतव् वद्वर्वय ताा बहर्वय समेशतों ं ं द्वारा इसम िवि होतव; इस प्रकार से स्ितरता ुटेतव िश्वै वकर ने राय की प्रर्सत्ता के बाहरव ृ ु ं र् को अकक म वलया ह ै ताा लोक क्या कारव राय के अत की ओर सके त वकया ह ै यह ु ं ं ं राय का नया प्रवतमान स्ावरत कर रहा ह ै ी तरै -राय अवर्कताषओ के सहयोत रर कायष कर ं रहा ह ै सचना प्रशद्योवतकी के विकास ने राष्टर-राय के सवमाओ को तो़ा वदया ह ै यह कहा ी ू ं सकता ह ै वक रीनववतक िश्वै वकर अवधक कावतर ष विश्व व्यिस्ा रर समी की रचना कर ू ं रहा ह ै उदारवकर ीब ब्रा े स्तर रर फ़ै ल ीाता ह ै यावन विश्व स्तर रर फ़ै ल ीाता ह ै तब विश्व एक बाज़ार बन ीाता ह ै एक दके की अ ाषव्यिस्ा का म्याकन विश्व अ ाषव्यिस्ा का म्याकन विश्व ू ू ं ं अ ाषव्यिस्ा से वकया ीाने लतता ह ै रर ऐसा इसवलए वकया ीाता ह ै वक अतराषष्टरवय बाज़ार म ं आये उछाल या मदव ररे विश्व की आवाषक व्यिस्ा को प्र ावित करने लततव ह ै तो इसे ू ं र्मडलवकर का नाम द े वदया ीाता ह ै ीसै ा रहले वलखा तया ह ै वक िश्वै वकर का ीन्म ू ं उदारवकर के हव रलस्िरूर हआ ह ै यह व्यारक स्तर रर तमाम उदारिादव विकेषताओ को ं स्िवकार करता ह ै रर उसे लात करता ह ै ू समकालवन विश्व म अतराषष्टरवय सम्बन्ध आवाषक तत्ों रर आधाकरत ह आी विश्व के सर्व दके ं अरने राष्टरवय वहत की रवतष के रूर म अ ाषव्यिस्ा रर ध्यान द े रह े ह सामकरक अस्रा ि ाना ू ु राष्टरों के बवच अब नहीं रहव ह ै ऐसव वस्ावत म र्मडलवकर ने अतराषष्टरवय सबधों का ू ं ं ं ं रीनववतक अ ाषकास्त्र बदल कर रख वदया ह ै कल तक ी राष्टर अतराषष्टरवय रीनववत म र्वमका ू ं वनर्ाते ो उनका उद्दश्े य कवक्त प्रासे करना ा लेवकन अब िश्वै वकर के यत म अरने राष्टरवय वहत ु को वकसव-न-वकसव रूर म सहव ढत से ररा करना चाहते ह आी राष्टरों के बवच के सम्बन्ध इस ू ं बात रर वनधाषकरत हो रह े ह वक िह िश्वै वकर म वकतने ्रातवदार ह रर उसकी बाज़ार व्यिस्ा क्या ह ै ीहाँु इस बात का ध्यान नहीं रखा ी रहा िहाँु इसका प्रिा दखे ने को वमल रहा ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 200 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 एक ताज़ा उदाहर चवन रर ्ारत का ह ै वीसम ररमा आरवतष सवध या रावकस्तान के मसले ु ू ं रर सहव रुख ना वदखने के वलए चवन को ब्रा े बाज़ार से हाा धोना श्र ा िश्वै वकर ने रीविाद को बढ़ाा दते े हए अतराषष्टरवय रीनववत म विचारधारा के महत्ि को ू ं लतर्त समासे कर वदया ह ै या समासे करने रर तले ह कल तक ी दके आरस म विचारधारा ु के आधार रर ी़ा े ो आी िह अरने आवाषक वहत के वलए विचारधारा रर ध्यान दने ा छो़ा वदया ु ह ै अतराषष्टरवय रीनववत म िश्ववकर के कार अतराषष्टरवय मिा कोष IMF अतराषष्टरवय व्यारार ु ं ं ं सतठन िWTO) रर विश्व ब क ीसै े अतराषष्टरवय सतठन प्रिाकारव हए ह रर सयक्त राष्टर सु ु ं ं ं ं ं िUNO) के स्रा रकरषद की र्वमका म ो़ा व कमव आई ह ै ु ू अतराषष्टरवय रीनववत म िश्वै वकर का ीहाँु

ारत रर प्रि्रा का सिाल ह ै ि्ह कारी महत्ि्र ष ू ं ह ै ि्श्वै वकर ने ारतवय अाषव्यिस्ाा को विश्व अाषव्यिस्ाा से ीा्ा वदया ह ै यहव नववत के कार अमके रका रर ईीरायल के करवब हो रहा ह ै रीनैवतक ि्श्वै वकर विश्व सरकार का एक तठन ह ै ीा राष्टरों के बवच सबध का वनयमन करता ह ै ताा सामावीक रर आवाषक ि्श्वै वकर स े ं उत्रन्न होने िाले अवधकारों की तारटव दते ा ह ै रीनववतक रूर से, सयक्त राय अमके रका ने विश्व ु ं ं कवक्तयों के बवच एक कवक्त के रद का आनद उठाया ह;ै ऐसा इसकी प्रबल रर सरन्न ं ं अाषव्यिस्ाा के कार ह ै हि ड अरनव रस्तक कीन्सेतटस इन रीवलवटक्स म कहते ह वक ि्श्वै वकर ने र्शतोवलक दरव को ु ु ू कम कर वदया ह ै ताा प्रादवे कक सवमाओ का महत्ि् वनरतर कम होने लता ह ै हि ड का कहना ह ै ु ं ं वक ि्श्वै वकर ने स्ानवय तत्ि् को राष्टरवय रर राष्टरवय तत्ि् को ि्श्वै वकर तत्ि् के अधवन नहीं वकया ह ै अवरत स्ानवय राष्टरवय एि ि्श्वै वकर स्तरों रर सर्व प्रकार की प्रवक्रयाओ म सामीस्य ु ं ं ं रैदा वकया ह ै यह मार सचनाओ मानि ससाधनों का स्ितर आदान-प्रदान नहीं ह ै अवरत यह ू ु ं ं ं आवाषक् रीवनवतक् सामवीक् सास्कवतक आवद रूरों का लोतों रर राष्टरों के बवच सयोीन ृ ं ं ह ै ि्श्वै वकर एक सामवीक रीनववतक प्रवक्रया ह ै v. ि् वी: तकनवक क्द यनानव क्द “टेक्ने” से बना ह ै वीसका अाष ह ै वक्र या कला एक ू अन्य क्द

Quotes detected: **0%** id: **233**

"प्रशद्योवतकी "

र्व उसव मल से आया ह ै ीब वि्रान के साा व्याहाकरक कला रर ू रद्योवतक कला प्रयक्त की ीातव ह ै तो उसे तकनवकी कहते ह सम विषयक ्ेरों् कवै ्क रर ु मानिवय कायष-प्रदकनष के वलए तकनवकी का अाष

Quotes detected: **0%** id: **234**

"व्याहाकरक वि्रान ह ै "

दसरे क्दों म् ू ि् ावनक रिवत के उरयोत के द्वारा मशवलक कोध से व्यत्रन्न कोई र्व प्रवक्रया या प्रवक्रयाए ु ं तकनवकी मानव ीा सकतव ह आवदकाल से मानि तकनवक का प्रयोत करता आ रहा ह ै आधवनक सभ्यता के विकास म ु तकनवकी का बहत बडा योतदान ह ै ीा समाी या राष्टर तकनवकी रूर से स्म ह ि े सामकरक रूर से र्व सबल होते ह रर रर इवतहास साव रहा ह ै वक वरर ि े कालातर म आवाषक रूर से ं र्व सबल बन ीाते ह उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 201 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 vi. नैर्श्वर और ि् वी न् न्हिाब: ि्श्वै वकर तकनवकी द्वारा प्र ावित हो रहा ह ै रर उसको प्र ावित कर र्व रहा ह ै यवद ि्श्वै वकर अरने इस रूर को प्रासे कर राया ह ै तो इसके रवछे तकनवकी हव ह ै विचार् रुँीव् िस्त रर लोतों की विश्व म विवर्न्न ातों म आाीहव म ू ु आसानव के रवछे कार विकवसत तकनवकी हव ह ै तकनवकी ने उत्रादन् यातायात रर सचार ं के साधनों म ऐसव ि्वि की ह ै वक सारव दवनया एक ताुँि म बदल तयव ह ै ृ ु तकनवकी ि्श्वै वकर के द्वारा विकवसत र्व हो रहव ह ै रर ि्श्वै वकर के द्वारा सदर ्ेरों को र्व ु ू प्र ावित कर रहव ह ै एक ि्वै श्वक दरसचार बवनयादव सरचना का विकास रर सवमा रार ु ं ं ू आकडों का अवधक प्रिाह, साा हव ऐसव तकनवकों का उरयोत ीसै े इटरनेट् सचार उरग्रहों् ं ं ं समि के र्वतर ऑवतटक के बल् ियरलेस टेलवरोन का प्रयोत विकवसत तकनवकी के सहयोत ु से हव सि्र् ह ै ि्श्वै वकर के कार विवर्न्न लोत रर दके एक दसरे के तकनवकी से अितत हो ं ू रह े ह रर इस कार से विश्व स्तर रर लात मानकों की स्या म ि्वि् कीरवराइट का कानन् ृ ू ू ं रेट ट् रर विश्व व्यारार समेशतों की स्या वनत प्रवतवदन बढ़तव ीा रहव ह ै तकनवकी वक्ा ं ककल ीन कवक्त का सीन कर् रद्योवतक उत् रादन को बढ़ाकर रर लोतों के ीविन की ृ ु त ित् ता म सधार करके देक के मानि ससाधन विकास म महत् ि्र ष र्वमका वनरातव ह ै ु ु ू ू ं तकनवकी वक्ा म ईीववनयकरत् प्रशद्योवतकी् प्रबधन् ि्रास् तकला् नतर योीना् रामसदेश व् ु ं ं ं अनप्रयक् त कला एि वक्र् होटल प्रबधन रर के टकरत प्रशद्योवतकी के कायषक्रमों को कावमल ु ु ं ं ं वकया ीाता ह ै रर ये सर्व कायषक्रम ि्श्वै वकर म योतदान कर रह े ह लोत वक्ा प्रासे कर विवर्न्न अिसरों की तलाक म अन्तराषयवय- अतराषष्टरवय रूर से प्रीिनष करते ह ि्ह ि्श्वै वकर ं म योतदान करता ह ै इसके साा हव ि्श्वै वकर के रलस्ि्रूर इन ्ेरों म बढ़े माुँतों को दखे ते हए उररोक्त ्ेरों म वक् सस्ाए खल रहव ह ीा इसका प्रि्रा के रूर म दखे ा ीा सकता ह ै ु ं ं ं ारत से लेकर दवनया के हर एक दके म बहराष्टरवय करनव खल रहव ह ीा तकनवकी रर ु ं ु ि्श्वै वकर का वमला ीला प्रि्रा ह ै हर एक दके अरने दके के सामान को हीारों की स्या म ु ं लेकर ख़ा ा ह ै इस समय म यह आिश्यक हो ीाता ह ै वक अन्य दके र्व अरने उत्राद के वलए त ित्ता बनाए रखने के साा हव कम कीमत म उत्रादों को उर ोक्ताओ तक रहचाय अन्याा ु ं ि्ह बाज़ार से तायब हो ीाय ते यह र्व दके ों रर करनव को बेहतर तकनवकी सबलता के वलए ं दबिा बनाये रखता ह ै उदाहर के वलए बाज़ार म मोबाइल फ़ोन की वस्ावत दवे ख ीा सकतव ह ै आी हर दसरे वदन एक नयव करनव नए रर बवढ़या सविधाओ के साा नए हण्ै ड सेटस बाज़ार म ु ं ं ू ला रहव ह ै चवन के उत्रादों का म्य र्व कम ह ै रर सविधाओ के रूर म र्व अच्छव ह ऐसे म ू ु ं हर एक दके रर उसकी करनव रर दबिा ह ै वक ि े कम दाम म अच्छा रोन उर ोक्ताओ को ं ं उरल्ध कराय उरसहार के रूर म इस राठ म यह कहा ीा सकता ह ै वक उररोक्त म ि्व तष सर्व त्य एक-दसरे ं ू से ीा् े हए ह राष्टरिाद की सक्रना वकसव र्व देक की प्रतवत के वलए आिश्यक ह क्योंवक उस ु ं रकरवस्ावत म दके की सम्र ष ीनस्या एक साा वमल कर दके वहत के वलए काय ष करतव ह ै रर ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 202 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ीब यह ि्राना अध राष्टरिाद से ीा् ीातव ह ै तब वस्ावत विकत हो ीातव ह ै रर ऐसे म दसरे ृ ु ं ू दके ों के साा या तहयि की वस्ावत उत्रन्न हो ीातव ह ै आी के यत म ीब रद्योवतकीकर ने ृ ु ु उदारवकर को रर उदारवकर ने ि्श्वै वकर रर वनीवकर को ीन्म द े वदया ह ै ऐसे म यि ु ीसै व वस्ावत का सम्र ष विश्व रर प्रि्रा ग़ ना स्रस ह ै साा हव ि्श्वै वकर ने सम्र ष दके की ू ू अाषव्यिस्ाा् रीनववत रर तकनवकी को ीा् रखा ह ै ऐसे म एक

दके की होने िलव ुटनाए ुँ प्रत् रूर म अन्य दके ों को प्र ावित करते ह अभ्यास रश्न: 7. यनानव क्द रोवलस का क्या अ ाष ह ै व ू 8. ितषमान समय म दो दके ों के मध्य के रीनववतक सम्बन्ध को कशन से से प्र ावित करते हव 9. तकनवकी ने ि श्वै वकर को वकस तरह प्र ावित वकया हवै 3.6 सारि् प्रस्तत राठ म हमने दखे ा वक राष्टरिाद क्या ह ै रर इसकी आलोचना क्यों की ीातव ह ै यवद उग्र ु राष्टरिाद हो तो यि की वस् ावत उत्रन्न हो ीातव ह ै रर यह यि वकस प्रकार से बाज़ार रर असर डालता ु ु ह ै ऐसे ि क़्त म ीब दवनया का बाज़ार एक हो् ररव दवनया का एक वहत हो रर सर्व दके ों की ू ु ु अ ाषव्यिस् ाए एक दसरे ी़ा व हों रर निवन नववतयों रर ि् ावनक उरलब्धयों ने रे विश्व को एक मच ु ू ं ं ू रर ला वदया हो तो कै से ये सारे तत्ि एक दसरे को प्र ावित करते ह ु 3.7 िब्द ावनाली 1. राष्टर: एक ऐसे ीन समह ी वक एक र्शतोवलक सवमाओ म एक वनवश्चत दके म रहता हो, समान ू ं ररम्रा, समान वहतों ताा समान ि्रानाओ से बुँधा हो रर वीसम एकता के सर म बाुँधने की ू ं उत्सकता ताा समान रीनैवतक महत्ि ाका ाए ुँ राई ीातव हों् राष्टर कहलाता ह ै ु ं 2. राष्टरिाद: राष्टरिाद, सोा सस्कवतयों, सस्कवत, ्राषा, ीावत, धमष, रीनववतक लक्यों या एक ृ ृ ं ं समान िक म एक विश्वास के आधार रर एक राष्टरवय रहचान को विकवसत करने रर बनाए ं रखने की ओर उन्मख होने की अिधार ा ह ै ु 3. ि श्वै वकर : र्मडलवकर विश्वव्यारव सामावीक सबधों का तहनवकर ह ै ी दर-दर वस्ात ू ं ं ं ू ू आबावदयों को एक दसरे से इस तरह ी़ा ता ह ै वक बहत दर रर होने िलव ुटनाओ का स् ानवय ं ु ू ुटनाओ रर स् ानवय ुटनाओ का मवलों दर होने िलव ुटनाओ रर प्रि ा ़ा ता ह ै ं ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 203 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4. अ ाषव्यिस् ाा: अ ाषव्यिस् ाा उत्रादन, वितर ताा खरत की एक सामावीक व्यिस् ाा ह ै यह वकसव दके या ्ेर विकषे म अ ाषकास्त्र का तवतत वचर ह ै ी वकसव विकषे समय काल से सम्बवधत होता ह ै ं 5. रीनववत: रीनववत नातकरक स्तर रर या व्यवक्ततत स्तर रर कोई विकषे प्रकार का वसिान्त एि ं व्यिहार ह ै 6. तकनवकी: ि् ावनक रिवत के उरयोत

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… id: **235**

के द्वारा मशवलक कोध से व्यत्रन्न कोई र्व प्रवक्रया या ु प्रवक्रयाए ह ं 3.8 तभ्य ास प्रश्नों क

े उत्त र 1. Primordialism राष्टरिाद को एक प्राकवतक ुटना के रूर म दखे ता ह ै यह मानता ह ै वक ृ राष्टरिाद की अिधार ा र्ले हव नयव हो ररन्त राष्टर हमके ा से अवस्तत्ि म ह ै ु 2. Modernism राष्टरिाद को एक हावलया ुटना के रूर म दखे ता ह,ै वीसे अरने अवस्तत्ि को बनाए रखने के वलए आधवनक समी की सरचनात्मक वस् ावतयों की आिश्यकता होतव ह ै ु ं 3. र्रविनाा टैतोर ने राष्टर िाद की आलोचना राष्ट रवय रा य की आक्रमक नववत, प्रवतयोतव िाव य- ं िाद की विचारधारा, रर प्रीावतिाद के आधार रर की ाव 4. वीस दके म यि होता ह ै उसके वनिके ों को ेटका लतता ह ै रर उस मिा की कीमत वतर ीातव ु ु ह ै वीससे उसकी अ ाषव्यिस् ाा को नकसान रहचता ह ै ु ं 5. ि श्वै वकर म्य रूर से सयोीन रर बल दते ा ह ै ु ं 6. अ ाषव्यिस् ाा क्द का सिप्रष ाम प्रयोत कशवट्य के द्वारा अ ाषकास्त्र नामक रस्तक म वकया तया ु ाा 7. यनानव क्द रोवलस का अ ाष समदाय या ीनता या समी ह ै ू ु 8. ितषमान समय म राष्टरों के बवच के सम्बन्ध बाज़ार के रूर म राष्टरवय वहत की प्रावसे् ि श्वै वकर म दसरे दके की ातवदारव रर उसकी बाज़ार व्यिस् ाा से प्र ावित हो रह े ह ू 9. तकनवकी ने उत्रादन् यातायात रर सचार के साधनों म ऐसव िवि की ह ै वक सारव दवनया एक ृ ं ु ताुँि म बदल तयव ह ै रर ि श्वै वकर को प्रोत्साहन वमला 3.9 स्दर् य ग्र्थ सची ू 1. Wikipedia. (n.d.). Globalization. Retrieved from https://en.m.wikipedia.org/wiki/globalozation 2. Wikipedia. (n.d.). Nationalism. Retrieved from https://en.m.wikipedia.org/wiki/nationalism उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 204 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 3. वसह् ए. के . ि2009). आधवनक स्ातेवीक विचारधारा एि राष्टरवय स ्रा. इलाहाबद: प्रयात ु ु ं ं रस्तक िरन. ु 4. वसह् एल. ि2037). राष्टरवय ्रा रर स ्रा. बरेलव:प्रकाक बक वडरो. ु ु ं 3.10 क्त बधात्म क प्रश्न ृ 1. राष्टरिाद को रकर ्रावषत करते हए इसकी समालोचना कर 2. यि रर बाज़ार के सबधों को स्रस कर ु ं ं 3. ि श्वै वकर क्या ह ै व ि श्वै वकर के आवाषकी् रीनववतक रर तकनवकी वनवहताों की व्या्या कर उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 205 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ु इकाई 4- बाल्यान ा ा म द्व द क्तिनन्यासः कछ ृ ों का क स अध्यय ीहा क्तिनक्तिर्न्न प्रकार क द्व दों क्तिन ा ार , हहसा अ ा ना सामाक्तिीक अका क्ति कव ओर प्र क्तिर क्तिकया 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 बा्यिास् ाा ताा द्वद ं 4.3.1 बा्यिास् ाा की सक्रना ं 4.3.2 द्वद की सक्रना ं ं 4.3.3 द्वदों के प्रकार ं 4.3.4 बा्यिास् ाा म द्वद ं 4.4 बा्याबस् ाा म द्वद के स्रोत ं 4.5 व्यवक्त अध्ययन 4.5.1 उन प्रमख ्ेरों का के स अध्ययन वीसम विवर्न्न प्रकार के द्वदों ने ु ं विस् ारन, वहसा अ ाा सामावीक अकावत को प्रेकरत वकया ह ै ं ं 4.5.2 कछ अन्य ्ेरों का के स अध्ययन ी बालकों को विस् ारन, वहसा ु ं ताा सामावीक अकावत की ओर ले ीाते ह ं 4.6 द्वदों को समासे कर कावत वनमाष कत्ताष के रूर म वक्क की र्वमका ू ं ं 4.7 साराक ं 4.8 क्दिालव 4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 4.10 सदर्ष ग्रा सचव ू ं ं 4.11 वनबधात्मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना ा कावतः मद्दो ताा चनशवतयों से सबवधत यह तवसरव इकाई ह,ै इससे रहले की इकाईयों के अध्ययन के बाद ु ु ं ं ं आर बता सकते ह वक रीनववतक, सामावीक, सास्कवतक ताा रयाषिर से ी़ा े हए कावत के क्या मद्द े ृ ु ु ं ं ताा चनशवतयाुँ ह?ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 206 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कावत के महत्ि को समेते हए बा्यिास् ाा म होने िाले विवर्न्न द्वदो ताा उन ्ेरों का अध्ययन प्रस्तत ु ं ं इकाई म विस्तार से वकया तया ह ै वीसन बा्यिास् ाा म विस् ारन, वहसा ताा सामावीक अकावत को ं ं उत्रन्न करने म एक उत्प्रेररक का कायष वकया ह ै सा हव एक कावत वनमाष कत्ताष के रूर म वक्क की ं र्वमका का र्व ि ष वकय तया ह ै ू इस इकाई के अध्ययन के रश्चात आर बा्यिास् ाा म द्वद विन्यास को समो सक त े ताा उन ्ेरों का ं विश्लेष कर सक त े वीन्होंने विस् ारन, वहसा अ ाा सामावीक अकावत की ओर प्रेकरत वकया रर एक ं ं ि्राव वक्क के रूर म अरनव र्वमका को र्व समे सक ते ू 4.2. उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के

उरारान्त आर 1. बा्यिास्ाा ताा द्वद की सक्रना को समे सक ते ं ं 2. बा्यिास्ाा म द्वद के स्त्रोतों का ि नष कर सक त े ं 3. बा्यिास्ाा म द्वद के प्रकारों को सचवबि कर सक त े ू ं 4. बा्यिास्ाा म द्वद विन्यासों को बता सक त े ं 5. व्यवक्त अध्ययन को रकर ारावषत कर सक त े 6. उन प्रमख ुे रों की व्याया कर सक त े वीसम विवर्न्न प्रकार के द्वदों न े विस्ाारन, वहसा अिा ु ं ं सामावीक अकावत को प्रेकरत वकया ह ै ं 7. एक कावत वनमाषता के रूर म वक्क की र्वमका का ि्विचे न कर सक त े ू ं 4.3 बाल्यावनास्था तथा द्वद् ‘‘ीविन की

Plagiarism detected: **0.03%** https://brainly.in/question/45925158 id: **236**

प्रत्येक अिस्ाा म कावत सि्र् ह ै ताा यह र तष ः मनष्टय रर वनर्रष करता ह ै वक ि्ह अरना ू ु ं ं ाग्य चन या यि के र ्य से ग्रवसत रह े आी मानिता उस दोराह े रर ह ै ीहाुँ उसे साहस, ष्ढ़ वनश्चय ताा ु ु करना के साा उवचत रा को चनना होता” फे डेररे ें ेयर ु कावत के वलए वक्ा ीविन के वलए वक्ा ह ै ना वक ीवविका के वलए प्रवक् मार कावत वक्ा का ं ं उद्दश्े य ह ै लोतों को ऐसे म्यों, कशकलों रर अवि्र्वत्तयों से लैस करना वीनसे उन्ह दसरों के साा ृ ू ू सशहिारष ष व्यिहार रखनिाले र ष व्यवक्त रर उत्तरदायव नातकरक बनने म सहायता वमले विद्यालयीं ू ू वक्ा के वलए राष्टरवय राठयक्रम की रूररेखा 2000 के अनसार, “धम ष म्य-सीन का एक स्त्रोत ह ै ृ ु ू म्य रर अवि्र्वत्तयाुँ कावत की सस्कवत का वनमाष करने िालव ि्रन-सामग्रव की तरह ह ै “म्य ृ ृ ू ू ं ं वक्ा, कावत के वलए वक्ा क्ातत द्वदों से अवधतम स्ितरता का आिाहन करतव ह ै ताा इसका ं ं रूरान्तर ीातरूकता के उत्सि म करतव ह ै ी खोी करने के बवी को अनप्राव त िसीवि) करतव ह ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 207 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 बा्यिास्ाा विकास की ि्ह अिस्ाा होतव ह ै वीसम ि सामान्यतः अरनव अवस्मता से धवरे -धवरे रकरवचत होते ीाते ह ि े स्ितर व्यवक्त बनने की कतार रर होते ह यद्यवर उनम रकररक्िता की अर्व र्व कमव होतव ं ह ै रकर ामतः यह क्रम सावायों, अर्र्िाकों रर वक्कों के साा द्वदों की ओर ले ीाता ह ै ं 4.3.1 ाल्यानस्ि ेी सेल्प ा ां साधार क्दों म बा्यिास्ाा, ककै िास्ाा के बाद की अिस्ाा ह ै हरलीक के क्दों म “उत्तर बा्यिस्ाा 6 ि्ष ष की आय से लेकर यशवनक रकररक्िता के आरर् होने तक ग्यारह रर बारह ि्षों के ु ं बवच होतव ह ै “ इससे स्रस होता ह ै वक बा्यिास्ाा 6 से 42 ि्ष ष तक होतव ह वक्ाकावस्त्रयों के अनसार इस अिस्ाा म ु वनयवमत रूर से बालक विद्यालय ीाने लतता ह ै कछ अर्र्िाक इस अिस्ाा को “चस्तव की आय” ु ु ु (ैउती ैंहमि कहते ह्ै- क्योंवक इसम बालक दश्ा -धर, कायष आवद म लता रहता ह ै कछ अर्र्िान ू ु ं त इसे ‘तदव आय’ (क्रतील ैंहम) कहते है, क्योंवक इस समय बालक तदा, मलै ा-सा रर लाररिह ु ं ं सा वदखाई श्र ता ह ै मनी्ि ावनयों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.successcds.net/class-9/hindi/cours… id: **237**

के द्वारा इस अिस्ाा को ‘समह की आय‘(ळदह ैंहम) कहा तया ह ै ू ु ं क्योंवक इसम ल़ा के -ल़ा वकयाुँ अरना-अरना समह या ि्त ष बनाते ह ै रर उसके सदस्य होते ह

ै ू ‘हावलतिाष‘ नामक मनोवि्ानव ने इसे ‘डितिद भ्नतकसम‘ ्व बशविक बाधा की अिस्ाा कहा ह ै ं वीसम आतामव ि्यस्क ीविन को प्रासे करन े के वलए सरल प्रयास वकये ीाते ह क्योंवक बा्यिास्ाा म ‘हावलतिाष‘ के अनसार ि्रााके रर आतम ष्वस का अि्रा राया ीाता ह ै “रनः ‘हरलीक‘ के क्दों ु ु ं को सदवर्तष करते हए कहा ी सकता ह’ै ‘ ि्ह अरनव नाक से आत े नहव दखे सकता, रर ि्ह ्व क ं ि्रोक म रकर ाम की ररिाह न करके काम करता ह ै “ इससे स्तस होता ह ै वक बा्यिास्ाा 6 ि्ष ष से लेकर 42 ि्ष ष तक की आय के बवच का समय ु होता ह ै ताा इसम बालक वक्रयाकवल रहता है, समह म काम करता ह ै रर ि्रोकव र्व होता ह,ै ररन्त ू ु ि्यस्क ीविन म प्रिके के वलए सरल प्रयास करता ह ै अभ्यास रश्न 1. बा्यिास्ाा से आर क्या समेते ह?ै 2. वकस मनी्ि ावनक ने बा्यिास्ाा को ‘Moron Hurdle’ की अिस्ाा कहा ह ै ? 4.3.2 द्वदायि ेी सेल्प ा ां ां द्वद क्द का प्रयोत हम अरनव वदन -प्रवतवदन की वीन्दतव म कई रूरों म करते रहते ह ै वकन्हीं

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/question-answer/संयुक्त-व्यंज… id: **238**

दो या दो से ं अवधक मतालवम्बयों, सस्कवतयों, धमों ताा सतठनों से हम प्रायः विवर्न्न प्रकार क

े ि्चै ाकरक रर ृ ं ं सामावीक सुष ष द्वद दखे ने म वमल सकते ह ै द्वद का सामान्य अाष ह्ै- “विररवत विचारों, इच्छाओ, ं ं ं ं उद्दश्े यों आवद का विरोध “ द्वद की दका म व्यवक्त म सिते ात्मक तनिा उत्रन्न हो ीाता ह,ै उसक ं ं मानवसक कावत नस हो ीातव ह ै रर ि्ह वकसव प्रकार का वन यष करने म असमाष होता ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 208 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 द्वद के अनेक रूर हो सकते ह,ै ीसै े- एक व्यवक्त का दसरे से द्वद ,व्यवक्त का उसके ितिार से द्वद, ं ं ं ू राकरिाकरक द्वद, सास्कवतक द्वद आवद इन सबसे अवधक तर्वर ह्ै- आतकरक द्वद यह द्वद व्यवक्त

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… id: **239**

के ृ ं ं ं ं ं ं ं ं विचारो, सिते ों, इच्छाओ, ि्रानाओ, ष्वसको ों आवद म होता ह ै ं ं ं द्वद का म्य आधार-उवचत रर अनवचत का विचार होता ह

ै उदाहर ाष, बालक ीानता ह ै वक उसके ु ु ं वरतीव का बटआ आलमारव म रखा रहता ह ै ि्ह उसके बारे म सोचने लतता ह ै ि्ह उसम से कछ धन ु ु वनकाल लेना चाहता ह ै रर ि्ह यह समेता ह ै वक चोरव करना अनवचत कायष ह ै रर यवद उसकी चोरव ु का रता लत ीाएता तो उसको दण्ड वमलेता ि्ह इन विरोधव बातों रर विचार करता ह रलस्िरूर, उसम मानवसक

द्वद आरम्र् हो ीात ह ै िह इसका अत के िल उत्तम रर उवचत कायष को करने का वन यष करके ं ं हव कर सकता ह ै डतलस एि हील ड के अनसार “द्वद का अ ाष है- विरोध रर विररवत इच्छाओ म तनिा के ु ं ं ं रकर ामरिूरूर उत्रन्न होन िालव कसदायक सिते ात्मक दका” ं क्रो एि क्रो के क्दों म, “द्वद उस समय होत ह ीब एक व्यवक्त को अरने ितिार म ऐसव कवक्तयों का ं ं सामना करना ऱा ता ह,ै ीी उसके स्ि य के वहतों रर इच्छाओ के विरिू कायष करतव ह ै ं ं इस प्रकार स्रस ह ै वक द्वद एक ऐसव कसदायक सिदे ात्मक दका ह ै वीसम व्यवक्त को ऐसव रकरवस्ातयों का ं ं सामना करना ऱा ता ह ै ीी उसके स्ि य के वहतों रर इच्छाओ के विरिू होतव ह ै ं ं 4.3.2.1 द्वदायिों े रश्ोर ां द्वद दो

Plagiarism detected: **0.06%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-vicha… + 2 resources! id: **240**

प्रकार के होते हः ै -कायाषत्मक ताा दवष्टक्रयात्मक कायाषत्मक द्वद तब उत्रन्न होत ह ै ीब द्वद ं ं ं ु कायषकवल समह, वि ्रात, सतठन या समदाय का समाषन करते ह ीबवक दसरव तरर दवष्टक्रयात्मक द्वद ू ु ं ं ू ु ेता ों, असहमवतयों आवद के रूर म उत्रन्न होते ह ै ीी समह के वनष्टरादन को रोक दते े ह ै वनम्नावकत ू ं वचर द्वदों के प्रकारों क

ा ितीकर प्रस्तत करता ह-ै ु ं द्वदायि े रश्ोर ां ेायाबत्ें े द्वदायि दायिन्ष्टरामयात्ें े द्वदायि ां ां ु 1. सामावीक द्वद 1. सिते ात्मक द्वद ं ं ं 2. आवाषक द्वद 2. म्य सबधव द्वद ू ं ं ं ं 3. ्ेरवय द्वद 3. रूवच सबधव द्वद ं ं ं ं 4. अतसाषमावीक द्वद 4. कायषस्ाल द्वद ं ं ं 5. अन्तरा सामावीक द्वद 5. सतठनात्मक द्वद ं ं ं 6. आतकरक/राय स्तरवय द्वद 6. सामवहक द्वद ू ं ं ं 7. सैवनक द्वद 7. आक़ा सबधव द्वद ं ं ं ं ं 8. र्मण्डलवय द्वद ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 209 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अभ्यास रश्न 3. द्वद का सामान्य अ ाष अरने क्दों म वलवखए? ं 4.3.3 ्राल्यानस्ि ें द्वदायि ां यह िह अिस्ाा होतव ह ै ीब नन्हीं कलव प्रस्रवटत होकर वखलने के वलए

Plagiarism detected: **0.02%** https://es.slideshare.net/slideshow/indian-railwa… id: **241**

तैयार होतव ह ै बालक ु राकरिाकरक ितिार के साा-साा नये विद्यालयव ितिार को स्िवकार करने के वलए तैयार ह

ोते ह ै ररन्त खदे का विषय ह ै वक हमारा अी का विद्यालयव ितिार कावत के स्ान रर द्वदों को बढ़ाा दने े ु ं ं िाला हो तया ह ै बच्चों म सामावीक, आवाषक ताा सास्कवतक रष्ठर्वम म अत्यवधक विविधता होन के ृ ृ ू ं कार विद्यालयव ितिार म द्वदों की उरवस्ावत रायव ीातव ह ै इसके अवतकरक्त अन्य मद्दे ीसै े- ल़ा के - ु ं ल़ा वकयों का सबध, राकरिाकरक तनिा, अवर्ि ाकों का ध्यान न दने ा, वहसात्मक प्रिवत्त आवद र्व ृ ं ं ं बा्यिास्ाा म द्वदो को बढ़ाा दते व ह ै ं वीस प्रकार “आिहम मासलो“ (4960) ने मनष्टय की रीच मलर्त आिश्यकताएैच बतायव ह ै उसव ु ू ू प्रकार “ई0 िालेट“ (4974) ने मासलो के मीडल का अनसर करते हए बालकों की रीच ु आिश्यकताओ को रहचानन े का प्रयास वकया वीनका अि्रा म्य रूर से बालकों म द्वद को उत्रन्न ु ं ं करता ह ै 1. मनी्ि ावनक आिश्यकताएुँ- उदाहर ाष, र्ीन, करा ा, मकान, स्िास््य 2. तयार रर अिधान- उदाहर ाष, प्रोत्साहन, प्रवतवनवधत्ि ता, कारवकरक छअन रर तमाषहट, ु समाषन 3. सीनात्मक अवर्व्यवक्त- उदाहर ाष, सिदे ना, खकव की ्मता का विकास, सीनात्मक ृ ृ ु ं आत्मावर्व्यवक्त, खकव, आत्मावर्व्यवक्त के नये उरायों को खोीना ु 4. स्ानात्मक ककलताओ की उरलब्ध- उदाहर ाष, ीानने के वलए सवखना ु ं ं 5. सामावीक ककलता- उदाहर ाष, साव-समह द्वारा स्िवकवत अन्य लोतों के साा अतवक्रष या ृ ु ू ं ताा अन्यों से सबवधत रहने की आिश्यकता ं ं 4.4 बाल्यावनास्था म द्व्द के स्रोत ें द्वद के स्त्रोतों को समेना एक कवठन विषय ह ै द्वदों की तवतकी को समेने के वलए विविध रकरप्रेक्य ं ं प्रयोत वकए ीा सकते ह ै वकसव विकषे ता के प्रवत र्रत ीवक दसरों रर दोषारोर करके वकया ीाता ह ै ू ीब व्यवक्त समेते ह ै वक वकसव िस्त की आिश्यकता रर म्य सबके वलए ह ै ररन्त उसका समान ु ू ु वितर नहीं हो सका द्वद का अन्य सदर् ष ह ै वक द्वद वकसव रकरवस्ावत के उत्राद के रूर म ह ै वीसम ं ं ं अलत-अलत आिश्यकताए ुँ ररेकावनयी उत्रन्न करतव ह ै सबसे महत्ि ष आतकरक वचताय ह ीी दबिा ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 210 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 का वनमाष करतव ह ै रर द्वद उत्रन्न करतव ह वरर र्व, उरयक्त रकरप्रेक्यों के साा बा्यिास्ाा म ु ं वनम्नवलवखत विन्यासों के कार द्वद उत्रन्न होता ह-ै ं i. पाररनारे न्रतयास –राकरिाकरक व्यिस्ाा म असतलन बा्यिास्ाा के द्वद का सबसे ब़ा ा ु ं ं स्त्रोत होता ह ै रकरिार की अरनव प्रकवत, अन्तषवक्रया कलै व ताा मान्यताएुँ, स्िास््य, स्ि- ृ सक्रना, अवस्तत्ि, अवि्रवत्त, विश्वास ताा रिषग्रह म अतर उत्रन्न करते ह ै ीी एक बालक ृ ू ं ं को कावत उन्मख या आक्रामक अिाा वहसात्मक बनाते ह स ्रा, तमाषहट, तयार ताा दखे ्राल ु ु ं ं की ि्राना ीी बालक को रकरिार म उरल्ध होतव है, यहव रि ष कावत अवि्रवत्तयुँ ताा म्य ृ ू ू ं का वनमाष करतव ह ै ीबवक आक्रामकता, करता ताा उरे्रा वहसा की ओर ले ीातव ह ै ीी ु ं बच्चे माता-वरता की अरे्राओ के अनसार अक या ग्रेड नहव प्रासे कर रात,े उन्ह योग्यहवन वसि ु ं ं वकया ीाता ह ै एक हव रकरिार म ्राई-बहन अलत-अलत ितिार अनि्र करते ह ै ीी उनको ु वमलने िालव सरलता/असरलता रर वनर्रष करता ह इसके अवतकरक्त रकरिार म होने िाले वलतवय र्दे ि्रा एि र्रत, असरल होने रर वतरस्कार, उरे्रा, सरल ्राई-बहनों से तलना ु ं ं द्वद की वस्ावत उत्रन्न कर दते े ह ै ं पररनार ेी सरि ा-रकरिार की सामावीक सरचना र्व द्वद का स्त्रोत बन ीातव ह ै उदाहर ाष ां ं ं , रकरिार म रैसे खचष करने का वन यष सामान्यतः ु र के मवखया या माता-वरता का होता ह ै ीी ु आी के समय द्वद का एक प्रमख स्त्रोत बन तया ह क्योंवक रूवचयों म अतर होने के कार ु र के ु ं ं छोटे अरनव इच्छा से खचष करना चाहते ह ससाध सर्धव- इस तरह के द्वद को समेना सरल ह ै क्योंवक ये असानव से रहचाने ीा सकते ां ां ां ं ह ै उदाहर ाष, यवद वकसव राकरिार म दो ्राई-बहन ह ै रर वरतीव द्वारा नया लच बाक्स लाया ं ीाता ह ै तो ि ें दोनों उसे प्रासे करने वलए ल़ा ते ह ै रर ि ह ससाधन द्वद का कार बन ीाता ह ै ं ं ii. न्रद्यालयव न्रतयास - बा्यिास्ाा म हव बालक विद्यालय ीाना प्रारर् करता ह ै विद्यालय के ं विवर्न्न ससाधन- मानि ताा र्शवतक ससाधनों की अनरल्धता ताा

िही का ितिार र्व ु ं ं कर्व-कर्व बा्यिास्ाा म द्वद के स्त्रोत बन ीाते ह ं सि ा अिना ज्ञा - हो सकता ह ै वक आरको लत े वक सचना या ्ान द्वद का कार कै से बन ू ू ं सकता ह?ै ररन्त यह र्व द्वद का एक स्त्रोत ह हालावक सचना या ्ान का आदान-प्रदान अच्छा ु ू ं ं माना ीात ह ै ररन्त उस सचना को कछ हव लोतों के बवच रखना, अन्य के वलए द्वद का कार ु ू ु ं बन ीाता ह ै उदाहर ाष, क्ा म तवन वमर ह ै -समन, रेखा रर िकै ालव समन ने एक रस्तक ु ु ु खरवदव रर रेखा का बता वदया ररन्तु िकै ालव को नहीं क्योंवक िकै ालव को समन अरना ु ु प्रवतस्री मानतव ह ै ी उन विद्यावाषयों म द्वद का कार बन सकता ह ै ं दायिैन्हे दायिण्ड- बा्यिास्ाा म विद्यालयों म द्वद का सबस े ब़ा ा स्त्रोत दवै हक दण्ड ह ै वबीनेस ं स्टैन्डडष द्वारा वकए तए सि देश के अनसार ारत के प्रत्येक तवन बच्चों म से एक बच्चा अरनव ु विद्यालयव स्रा से वचवन्तत रहता ह ै अिसरचना ताा सशचालयों के अिरा के अवतकरक्त सि देश ु ं म सवम्मवलत बच्चों ने दवै हक दण्ड, अरमानीनक क्दों का प्रयोत ताा धौंस वदखाने को र्व उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 211 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अरने वचवतत विषयों म वलखा ह ै अनकासन बहत महत्िर ष ह ै ररन्त यवद अनकासन के नाम रर ु ू ु ु ं बच्चों को वतरस्कत वकया ीाय ताा कारवकरक रूर से रवटा ीाए तो यह आुात प्रशढ़िास्ाा तक ृ चलता ह ै इस तरह की वहसा के िल कारवकरक हव नहीं होतव बव्क मशवखक ताा ढुँचातत वहसा ं ं होतव ह ै ीवक वलत, ीावत ताा ्ेरवय मतर्दे के रूर म र्व ष्वसतोचर होतव ह ै ं iii. सों ान्ी न्नतयास - समाी का सतठनात्मक विन्यास र्व द्वद का स्त्रोत होता ह ै इस प्रकार के ं ं द्वद की करना करना र्व कवठन ह ै ीवक उन सबधों म, विकेषरूर से अत्यवधक नीदवकी करश्तों ं ं ं म राया ीाता ह ै वीसे िरात्मक ताा सामावीक समाषन को स्त्रोत माना ीाता ह ै बा्यिास्ाा म बालक सामावीक रूर से र ष वक्रयाकवल नहीं होता ररन्त उसका सामावीक समह बन ीाता ह ै ू ु ू अतः यह द्वद ाई-बहनों के साा, माता-वरता के साा, साव-समह ताा वमरों के मध्य र्व राया ू ं ीाता ह ै iv. सों दायिान्ये न्नतयास -द्वद होना अरकरहायष ह ै क्योंवक हम सर्व अरने रयाषिर को ताा अन्य ु ं िस्तओ को अलत-अलत ष्वसको से दखे ते ह ै हमारव अवि्वत्तयाुँ हमारे रकरिार, साव-समह, ृ ु ू ं श़ा ोसव, समाी ताा हमारे चारो ओर के ससार के प्रवत अिश्यक रूर से एक-दसरे से अलत ं ू होतव ह ै उदाहर ाष, हम म से कछ आतकिद, रयाषिर वय असतलन, सामावीक अरराधों से ु ु ं ं इस हद तक प्रिाव हो ीाते ह वक िो ीलस वनकालते ह,ै रैवलयी करते ह ै ताा अन्य ऐसव प्रकार ु ू की वक्रयाओ म लत ीाते ह ररन्त कछ ऐसे र्व होते ह ै ी इन सब कायों म ारात नहीं लेते ररन्त ु ु ु ं इसका अाष यह नहीं ह ै वक ि े इन सब मद्दों के बारे म नहीं सोचते ु इसव प्रकार वकसव समदाय म रहने िाले विविध, धम,ष ीावत, ित ष ताा ाषा के लोत काम करत े ु ह िहाुँ वन यष लेने का अवधकार के न्ि म े होता ह ै वीससे द्वद उत्रन्न हो ीाता ह ं 4.5 व्यक्ति तध्यय के स अध्ययन एक या व्यवक्त अध्ययन एक ऐसव विवध ह ै वीसम वकसव सामावीक इकाई के ीविन की ुटनाओ का अन्िषे िए विश्लेष वकया ीाता ह ै सामावीक इकाई के रूर म वकसव एक व्यवक्त, एक ं ं रकरिार, एक सस्ाा, एक समदाय, ुटना, नववत, सतठन आवद को वलया ी सकता ह ै ु ं ं रव0 िव0 यति4974) के अनसार “के स अध्ययन एक ऐसव विवध ह ै वीसके द्वार सामावीक इकाई के ु ं ीविनव का अन्िषे ताा विश्लेष वकया ी सकता ह ै “ तडे ताा हाट ि4987) ने र्व के स अध्ययन विवध के बारे म बतलाते हए कहा ह ै वक यह एक ऐसव विवध ह ै ु वीसके सहारे वकसव र्व सामावीक इकाई ी एक व्यवक्त र्व हो सकता ह ै या कोई अन्य सामावीक समह ू र्व हो सकता ह,ै के एकात्मक स्िरूर को बरकरार रखते हए उसका अध्ययन वकया ीाता ह ै वबसाी रर वबसाी के अनसार “व्यवक्त अध्ययन एक प्रकार का त ात्मक विश्लेष ह ै वीसम वकसव ु ु ं ं व्यवक्त, वस्ावत, या सस्ाा का साधानवर ष वकया तया अिलोकन कावमल होता ह”ै ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 212 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 इस प्रकार स्रस ह ै वक के स अध्ययन विवध वकसव र्व इकाई के बारे म तहराई से वकया तया त ात्मक ु अध्ययन ह ै अभ्यास रश्न 4. व्यवक्त अध्ययन को अरने क्दों म रकरारवषत कर ? 4.5.1 उ क्षेरों ों े स अध्य न्ीसें न्नम्नत रश्ार े द्वदायिों े न्नस्ाप , न्हसा अिना ां ां सों ान्ी अशान्ि ो रश्ेरि न्ेया ां काम करने की ीतहों रर वनवश्चत कायषसचव यि, ुरों म वलत र्दे यि, विद्यालयों म र्रातयक्त ू ु ु ु ं व्यिहार, समानता ताा न्याय की अिहले ना, सिीष वनक ीतहों रर दष्टप्रचार यि आवद ने अनीाने म हव ु ु बच्चों को द्वद के ीाल म रसा वदया ह ै वकसव र्व राष्टर का सबसे ब़ा ा रर बरा अरकार ह,ै उसके ु ं बच्चों के मवस्तष्टक को वहसा से प्रदवषत करना ं ू आइए, हम उन ्ेरों का के स अध्ययन करते ह वीसम द्वद ने बच्चों को विस्ारन, वहसा अिा ं ं सामावीक अकावत की ओर प्रेकरत वकया ह?ै ं 4.5.4.1 न्नद्यालयव निानर आी हम स्ानवय, राष्टरवय रर र्मडलवय स्तर रर अर्तरि ष वहसा के यौुत म ीव रह े ह ै यह एक ू ू ू ं ं तर्वर वबद ह ै वक विद्यालय, वीन्ह कावत की रशधकाला बनना ाा, ऐसे द्वदों को बढ़िा दने े िाले के न्ि बन ं ं ं ु तए ह ै ी हमारे बालकों को वहसात्मक ताा आक्रामक व्यिहार की ओर ले ी रह े ह ै हाल हव की एक ं ुटना म वद्लव के एक ीाने-माने कीली का एक ररााना विद्याी रटना म अरहर -वतरोह चलाता हआ ु रक़ा ा तया अरने अनिरों के आधार रर विद्यालयव रकरितषन व्यिस्ाा म आए बदलिों रर एक कहरव ु अध्यारक क्या कहते ह दवे खए:“वहसा म अप्रत्यावकत उछाल आया ह ै बच्चे वीन क्दों का उरयोत ं करते ह,ै ि े वहसक ह ै उनके खले रर उनकी रूवचयाुँ वहसक ह अनके करश्ते वहसक ह लेवकन म उन्ह दोष ं ं ं नहीं दते ा उनके ुर हव वहसा को बढ़िा दते े ह ै ं एक अध्ययन दखे ते ह ै वक एक 44 िषीय बावलका रवश्म िरकरिवतषत नाम) ी एक वनीव विद्यालय की विद्याी ह ै , के बारे म बाल अवधकारों के सर् के वलए बने कमवकन के समाचार रर म कररोटष वकया ं तया उसने बताया वक उस्तरे के सामने तीे धार िालव वक्कों की ीबान को उसे इस सामा तक प्रारित ु कर वदया तया वक िह आत्महत्या करने के बारे म सोचन े लता ीब एक बार वक्क ने एक विद्याी को यह कहते हए रटकार लतायव वक िह िरवश्म) “वकसव म र्व अच्छव नहीं है“ अिा उसे एक “विवकस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 213 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 विद्यालय“ म ारी दने ा चवहए अिा “वक्कों को उसके मख से एलीी ह ै “ ऐसे िाक्यों ने उसे बहत ु समय तक डराकर रखा वीससे िह आन्तकरक द्वद म रच सव रहव ं शान्ि े न्लए न्शक्षा, राष्टरवय फोस सें ह ो ्धारपर, NCERT ू ां अब सवनये दव् ारतवय स्कल की एक सराईकमी की मनोव्याा- विद्यावाषयों को वहसा स े खतरा ह ु ू ं कावत के वलए वक्ा राष्टरवय रोकस समह द्वारा आयेवीत एक

सि देश के सदर् ष म कैावत वक्ा के वलए ू ं ं ं वक्ा को लेकर बने रोकस ग्रर के एक सदस्य ने उनका सा्त्कार वलया ाा ु म 40 साल की ाव ीब 4945 के सत्याग्रह आदोलन म मेरे वरता की मशत हो तई महात्माीव हम देखने ं आए ये दखे े, ये मरे ा खीाानिाह एक चरखा रर एक सरे द टोरव की ओर इकारा करते ह)ै उन्होंने मै ु यह वदया रर कहा, “रोओ मत, तम्हारे वरता एक हवरो ो, आओ रर िानरसेना म कावमल हो ु ीाओ “मरे ा ब़ा ा ोराई र्व इवदरा ताँुधव के साा आदोलन म कावमल ाा हम लोत आी के समय के ं ं वहसाब से वनर्र ो, क्योंवक हम कर्व विद्यालय नहीं तए ो लेवकन अब म मानतव ह ुँ वक हम लोत ू वकव्त ो हम रढ़ाने िाले राष्टर के महान नेता ो मरे ा रोता, यह छोटा-सा बच्चा, अर्व वसरष 43 साल का ह ै 40 साल रहले ीब इसकी माँु मर तई, तब से म इसकी दखे रेख कर रहव ह ुँ एक वदन इसने सवना ू ठोककर सच बोला, वीसके एिी म इसे बैुरव वरटाई वमलव रर इसकी रसवलयाँु टटीं इस वदन से रहले ू ं यह अच्छा, दयाल, सच्चा ओर सयमव बालक ाा यह बदलिा तब हआ ीब एक वदन

Plagiarism detected: **0.01%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **242**

विद्यालय ु ं वनरव्क ने बच्चों से विद्यालय, अध्यारकों रर सविधाओ के बारे म

रछा उसने वनर्ीकता वदखाते हए ु ू ं सब सच-सच कह वदया उसने वनरव्क को बताया वक एक ल़ा के को वि्न की ररव्ा म इसवलए नकल करने दव तई वक िह हडे मास्टर का र्वीा ाा वनरव्क ने हडे मास्टर के वखलार करिाई की रर हडे मास्टर ने बालक की वरटाई की उसने कछ तडों से उसकी ीमकर वरटाई करिाई म रवलस के रास ु ु ु ं तई, लेवकन कोई लार् नहीं हआ आी यह बालक ररव तरह से बदल तया ह ै अब िह दसरों को डरा ू ू ं धमकाकर अरना काम वनकालता ह ै िह दसरे स्कल म चला तया ह ै अरनव कद-काठव रर ताकत के ू ू चलते िह दसरे विद्यालय म हवरो बन बैठा ह ै म नहव मानतव इस बालक ने ु र से वहसा सवखव ह ै मन े ं ू अरना ररा ि्वन ताँुधविादव सत्य रर अवहसा को आधार बनाकर तीारा ह क्या म उस समय चैन से ू ु ं दम तो़ा सकुँ तव, ीब मरे ा हव खन वहसा म लता हआ हो करा कर स्कल से वमलने िालव इस तलत सवख ृ ू ू ू ं को बदलने के वलए कछ करो उससे कावत की बात करना तयाषसे नहीं ह ै हम उन्ह कावत के वलए प्रवकव्त ु ं ं करने की आिश्यकता ह ताँुधव ने हम कावतमात ष के वलए सत्य रर अवहसा म प्रवकव्त वकया ाा तम ु ं ं मेसे कहते हो वक िह सब वद्लव म वकया ीाता ह-ै उनसे कहो- कम-से-कम अब तो ीातो उन्ह ताँुधव ु का आकविषद प्रासे ह ै आत े बढ़ों रर बच्चों को कावत का राठ रढ़ाओ अरने रोते के के बारे म मे े ु ं कर्व -कर्ार र्यानक विचार आते ह ै क्या िह आतकिादव बनेता या तडा? ीब उसका अवहसा

Plagiarism detected: **0.03%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **243**

म ु ं ं ं विश्वास हव नहीं ह,ै तो म उसे कै से यह विरासत िचरखा रर टोरव) दतुँ व? ू तलसवअम्माः तावमलनाड के एक विद्यालय

म 70 िषीय एक सराई कमी ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 214 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 कावत के वलए वक्ा, राष्टरवय रोकस समह का आधार रर,NCERT ू ं ऐसव दवश्वता की वककार अके लव तलसव अम्मा हव नहीं ह कहरव ारत म उनके ीसै े अनवतनत लोत ह ु ं ु इनम से हर कोई कारवकरक वहसा से हव वचवतत नहीं ह कईयों की वचता क्दहवन ि्ात्मक वहसा का ं ं ं ं लेकर ह ि ं सर्व इस बात से ररेकान नहव ह ै वक उनके बच्चे आतकिादव हो सकते ह ै लेवकन यह सोचकर ं ीरूर ररेकान ह ै वक कर्व उनका अरने बच्चों के साा आत्मा को तवसे दने े िाला हावदकष करश्ता बन ृ राएता घर ो नािानर ुर का ितिार हव बालकों को कावत उन्मख अिा वहसा उन्मख बनाता ह ै ी बच्चे ऐसे राकरिाकरक ु ु ं ं ितिार म बढ़ते ह ै ीही मवहलाओ रर ुरेल वहसा एक आम बात ह ै ि े बडे होकर इस बात के वलए ू ं ं तैयार रहते ह वक मवहलाओ रर वहसा करना कोई तलत बात नहव इसके विररवत ि बच्चे ी ऐस े ं ं राकरिाकरक ितिार म बढ़ते ह ीहाँु मवहलाओ का सम्मान होता ह ै तो उनकी मवहलाओ के प्रवत ं ं अवि्वत्त दसरे प्रकार की होतव ह ै ृ ू आी ुर के सदस्यों म आत्मा को तवसे दने े िाले हावदकष करश्तों का अि्रा ह ै बढ़ता ि्ात्मक ृ अलति, वीसके रकर ामस्ि्रूर धरों म आरसव लति का ृ हो रहा ह ै रर सिाद मतप्राय होता ी ृ ं रहा ह,ै यह सब हव उनकी मशन रव़ा ा के मल म ह ै ऐसा लतता ह ै वक यह चवी महामारव के रैमाने रर रै लने ू िालव ह ै अलति वहसा का बवी ह ै इस तरह की वक्ा बच्चों को ऐसे वदमातव सयरों म बदल दते व ह ै ी ं ं त्यों रर अरना अवधकार ीमाते ह रर वरर स्ि्य उनके द्वारा ि्कवर्त हो ीाते ह, लेवकन यह उनके ू ं ि्ात्मक रर सबधात्मक कशकलों को विकावसत नहीं कर राता रकर ामतः एक व्यवक्त वीतना हव ं ं उरलव्धयों के रवछे दश्ा ता ह,ै उतना हव अरने वप्रय लोतों तक के साा सिदे नकवल, अन्योन्य रर ं उत्तरदावयत्ि्र ष तरवके से ी़ा राने म अ्म र्व हो ीाता ह ै अधरव समी-करना के वनकान ढ़ोता ू ु ू असतवलत विकास बच्चों को वहसा के प्रवत सर्द्ध बनाता ह ै कावत के वलए वक्ा, राष्टरवय रोकस समह ु ु ू ं ं ं द्वारा आयेवीत सि देश म राया तया वक हमारे दायरे म े आने िाले 48ः बच्चे ऐसे ह ै वीनह वहसा से ी़ा व ु ं विवर्न्न तवतविवधयों म आनद आता ह व्लों रर वब्लव के बच्चों को रत्ार मारना, रलों की ू ं कवलयों को तो़ा ना, उतवलयो के बवच वततवलयाँु रक़ा कर रखना उन्ह अच्छा लतता ह ै कछ ब़ा बच्चों ु ं को छ़ो खानव रर ीानलिा होने की हद तक उत्रव़ा न करना आनददायव लतता ह ै ं अर्व हाल हव म विवर्न्न सामावीक साइटों म वदख रहा िववडयो वीसम कत्त े के बच्चे को बेददी से उरर ु से नवचे र कना अिा ईीववनयकरत के छारों द्वारा बदर को कर ट दके र मार दने ा वहसात्मक प्रिवत्तयों के हव ृ ं ं ं ं उदाहर ह ै प्रत्येक िष ष ीब लाखों बच्चे स्कलों म प्रिके लेते ह,ै राष्टर का र्विष्टय अिै वक्तक दःस्ितन का प्रदकनष ू ु करता ह तवन साल की उम्र म मोमव रत, धाक या रवसल रक़ा ना अरने आर म एक महत्ि्र ष कदम ह ै ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 215 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 चशो ीन्मवदन तक छोटे बच्चे से अरे ा की ीातव ह ै वक िह ीाने: 30, 25 से अवधक होता ह ै क्ा म दसरे स्ान रर आना 2ि5 स्ान रर आने से अवधक प्रकसनवय होता ह ै राचुँ ि े ीन्मवदन स े रहले, उससे ं ू वसरष 500

तक वतनने की हव नहीं, बव्क वलखने को र्व उम्मवद की ीातव ह ै उसके िदी रहनने अरै उसके ीते के रहले ीा ेे रहनने तक यह स्या 4000 तक रहचुँ ीातव ह ै क्या तम ीी सबसे अच्छा कर ू ु ं सकते हो िह यहव ह?ै इसव तरह के प्रश्न उसे सर ष विद्यालयव वदनों म सताते ह ै अवधकतर बच्चे ीब दस ू ं या बारह साल के होते ह, अरना प्राकवतक आकिाद रर खकव खो दते े ह उनम से कई तो र्य, तनिा ृ ु ताा द्वद की वस्ावत म हते े ह, ियस्क वीसे बतिात या वीद्ववरन मानते ह शान्ि े न्लए न्शक्षा, ं ां राष्टरवय फोस सें ह ेा ्धारपर, NCERT ू अभ्यास रश्न 5. बा्यिास्ाा की कछ वहसात्मक तवतविवधयी वलख ? ु ं अिद्वंदायि और ेण्ठाय ु ां द्वदो के विवर्न्

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.easyhindivyakaran.com/vyanjan/ id: **244**

न प्रकारों म सबसे तर्वर ह ै अतद्वदी ीी बच्चों को इस सवमा तक प्र ावित करता ह ै वक ि े न ं ं ं तो स्ि य प्रसन्न रहते ह,ै न हव दसरों को तयार करत े ह विवर्न्न प्रकार क

ी क्रता हर ीतह रर बढ़ते स्तर ू ं ू रर दखे व ीा सकतव ह ै ीसै े, तैुडातदी की हद तक वचढ़ाना, चतलखोरव, अकालवनता, अि् ाषा का ु ं प्रयोत रर चोरव रानव सरवखव रासवदयाँु इस बात के वलए तकष करतव ह वक हम बच्चों के नैवतक

Plagiarism detected: **0.02%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **245**

विकास की अनदखे व कर रह े ह दस ि षीय रानव ि रकरिवतषत नाम) एक प्रवतवष्ठत अग्रीव माध्यम विद्यालय

म रढ़तव ाव अचानक उसम ं रकरितषन आना करू हो तया उसने बदतमववीयाँु करू कर दव िह अरने सहरावठयों की कलम चरातव ु ु ु रर वटवरनबीक्स तो़ा दते व वकव्का ने इस रर उसे ीमकर डाँुट लताई रानव ुर लशटव उसने अरने ँरर के रावसन वछ़ा ककर आत लता लव उसे 50 वरसदव ीलने के साा अस्रताल म तीं कराया तया कछ वदनों तक िह मशत से ीतव रहव आवखरकार उसने दम तो़ा वदया उसके स्थ माता-वरता बोल,े ु ु “हम कहाँु तलत ो “ रानव ने हम म ियै वक्तक रर सामवहक अरराध की ि ाना को ीातत वकया हम ृ ू ीानते ह, हमने व्यिस्ाओ की ऐसव क़ा व तैयार की ाव वीसम बच्चों की मासवमयत की अनदखे व हो रहव ू ं ह ै क्या रानव वहसक माहशल म ब़ा व हो रहव ाव? उसम आक्रामकता के करूआतव सके तों को स्कल को ु ू ं ं कछ अलत ष्वसको से नहीं दखे ना चावहए ाा? ु कावत के वलए वक्ा, राष्टरवय रोकस समह का आधाररर, छम्त्ी ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 216 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4.5.2 े अतय क्षेरों ेा अध्यय ीी ्रालों ेो न्नस्ाप , न्हसा ि ा सों ान्ी द्वदायि ेी ु ां ां ओर ले ि ी हैं- पाठय-पस्ि लेख -राठयरस्तक वलखते समय सिाधानव बरतना ीरूरव ह,ै वीसम क्द कलै व रर ु ु वचरों म वहसा से बचा ी सकता ह ै कई बार प्र ि ा डालने के उद्दश्े य से वदए तए उदाहर रर वचर ं वहसार ष रर अवत नाटकीयता ि ाले र् को मीबत करते ह वहसा के अस्रस रूर राठयरस्तक लेखन म ू ू ु ं ं आम ह ि े रिषग्रहों रर दें ि ों की रूढ़ता को ोरते प्रतवत होते ह ू मध्य प्रदके म सरकारव स्कलों की क्ा 45 रर 6 की राठयरस्तकों का विश्लेष वकया तया उनम एक ू ु र्व चकरर ऐसा नहीं ाा ीी अनसवचत ीावत की रष्ठर्वम का हो हालावक इन स्कलों म आनिाले ृ ु ू ू ू ं विद्यावाषयों का एक ब़ा ा वहस्सा अनसवचत ीावत रर अनसवचत ीनीावत से ह इस तरह का वनष्टकासन ु ु ु ू र्व एक प्रकार का वहसा ह ै ी हवनता के ि ा को ीन्म दते व ह ै ं उत्तरप्रदके की क्ा तवन की वहन्दव की राठय-रस्तक ि ान ारतव) म 49 वचर ररूषों के ह ै इनम ु ु ि ावनक, वसराहव, दो डीक्टर, एक अध्यारक, एक रीा रर कवि कावमल ह िहव इसके विररवत वसरष 44 मवहलाओ या ल़ा वकयों को स्ाान वदया तया ह लतर्त सर्व को सहयोतव र्वमकाओ या मानक ू ं ं “ररत“ की र्वमका म रेक वकया तया ह ै यह राष्टरवय वक्ा नववत ि1986) के वनदकदेश ों के वखलार ह ै ू वीसम स्कलव रठयचयाष म “वलत रूढ़ता“ से बचने के व बात कहव तई ह ै ू ं रश्ोर् (पव0 ्र0 ओ0 र्व ई0 ररपोटब राठयरस्तक लेख म कावत बोध को समावहत कर इन अवनयवमतताओ के दर वकया ी सकता ह सचना ु ू ं ं ू प्रदान करने के एकमार उद्दश्े य के साा राठयरस्तक लेखन एकदम नवरस होता ह ै रर विद्यावाषयों म रूवच ु ीताने म र्व असरल इस प्रवक्रया म कावन्त म्यों को बढ़ाने रर कावत सबधव अतष्वष स को तहरा करने ू ं ं ं ं के बेककीमतव मशके खो ीाते ह ै ें ल्यो एन परवक्षा - कावत के वलए वक्ा के अततषत म्याकन हमारे सामने दो म्य आयामों के ू ू ु ां ां ं ं ं रूर म आता ह ै रहला, राठयक्रम के बो से दबव मशीदा ररव्ा एि म्याकन प्र ालव वहसा से दवषत ह ै ू ू ं ं ं ू सवखना ीी वक मनोरीक अनि् होना चवहए, इसे बो रर यही तक वक दमन म रकरिवतषत कर वदया ु ं तया ह ै इसका कार ह ै इसका लक्य, ीवक ररव्ा आधाकरत ि ष्ठता ह ै वीसकी अरे ा रीतार के दशरान की ीातव ह ै स्त प्रवतयोवतता - तब रर र्व क़ा व हो ीातव ह ै ीब उच्च वक्ा के वलए रयाषसे अिसरों की अनदखे व की ीातव ह ै- ँरर से िह कलक ीी असरलता के कार लतता ह ै वीसके कार लाखों ं बच्चे दख के सातर म डब ीाते ह रर कई तो आत्महत्या तक कर लेते ह ै ू ु ें वन्डया - अी मववडया की व्यारक मशीदतव ह ै रर इसके विस्तार को वकसव र्व तरह कम विकास की ू बाधाओ से सववमत नहीं वकया ी सकता ह ै ग्रामव ारत म सरव्त रेयील की अरे ा बच्चों को ु ं टेलवविीन आसानव से उरल्ध ह ै हीारों तिीं म कशचालयों की अरे ा टेलवविीन ह बच्चे अरना उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 217 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अवधकतर समय टेलवविीन कायषक्रम दखे ने म हव दते े ह कोधकताषओ ने अनमान लताय वक रसतन ु ं बच्चा साल म लतर्त 2400 से अवधक ुटे टेलवविीन दखे ता ह ै इस प्रवक्रया के दशरान बच्चा हीारों ं बार वहसा के विवर्न्न प्रकर ों ीसै े हत्या, दष्टकम ष रर दतों से तीरता ह मववडया अनीाने म हव वहसा की ु ं ं ं ु सस्कवत को बढ़ीा दने े म म्य र्वमका वन ारा रहा ह टेलवविीन रर वहसा को आकषषक, प्र ि ाव रर ृ ु ू ं ं अवधकतर सुषों के हल के रूर म वदखाया ीाता ह मववडया वहसा के रकर ामों को वछराकर रखता ह ै ं ं स्क्रीन रर वहसा मनोरीक ह ै ीबवक असल वीदतव म यह एक दःस्ितन ह ै बच्चों से इस सच्चाई को ं ं ं ु वछराकर रखा ीाता ह ै वीसके चलते ि े ि ास्तविकता के बारे म तलत विचारों को ग्रह कर लेते ह ै ि े यह वनष्टकष ष वनकालते ह वक वहसा ठवक ह ै रर

सरव्त र्व ु ं दरदकनष रर वहसा दखे ने िाले दककष ों म एक ब़ा व स्या बच्चों की ह ै ीी समानर्वत रर विरोध करने की ु ू ं ं ू योग्यता खो दते े ह ै रर वहसा के िास्तविक ीविन कत्यों से तनिा म रहते ह ृ ं अर्व तक द्वदों को हल करने के वलए वहसा को प्रि्राव रर स्िवकत तरवके के रूर म मववडया द्वारा ृ ं ं प्रदवकतष वकया ीाता रहा ह ै इसवलए अवहसा िाले विक्र बच्चों को आकवषषत नहव करत रीचर ं वन्मों म अवधकतर वहसा को बढा-चढ़ा कर वदखाया ीाता ह ै इसके रकर ामस्िरूर बहत सारे बच्च े ं वहसक, क्रोधव रर असमावीक उरातमों का समस्याओ के समाधान के वलए र् लेते ह ं ं एक के स लेते ह, सवनयेः वकसव र्व विद्यालय म एक वकव्का द्वारा दविालव राठ रढ़ाते समय यह रछा ु ू तया वक आर सर्व बच्च वदिालव ताा ईद कै से मनाते ह ? तर्व उस क्ा म से एक विद्याी ने वरछल े वदन हए बम-विस्रोट के बारे म बताया ीवक ठवक दविालव से रहले वकया तया ाा तावक आतकिादव ं वकसव विकेष समदाय के लोतों को मार सके वकव्का न छार से रछा तम्ह कै स े रता वक सर्व लोत ीी ु ू ु उस विकेष समदाय से सबध रखते ह,ै आतकिादव होते ह ै िह छार ताा क्ा के सर्व छार हसच ने लत े ु ं ं ं तब उस छार ने कहा वक बस िो ीातना ह ै बाद म उसन यह र्व कहा वक उसने यह टेलवविीन रर दखे ा ह ै यवद उरयषक्त के स को वलया ीाय तो समेा ी सकता ह ै वक टेलवविीन वकस प्रकार से सामावीक ु अकावत को उत्रन्न करने का कार बन सकतव ह िह छार उस विकषे समदाय के सर्व लोतों के बारे म ु ं एक रिषग्रह बना लेता रर एक द्वद की वस्ावत उत्रन्न हो ीाएतव तब ीब िह अरने आस-रास उस ू ं विकेष समदाय के लोतों को दखे ते ा ी न के िल उसे मानवसक अकावत ताा तनिा की वस्ावत म ला ु ं दते ा बव्क बालक सामावीक अकावत का कारक र्व बन सकता ह ै ं इस प्रकार हम कह सकते ह ै वक बालक वीस ितिार म रहता है, उसकी सोच उसव प्रकार विकवसत होतव ह ै ताा व्यिहार वनयवरत होता ह ै अतः यह हमारव वीम्मदे ारव ह,ै एक वक्

Plagiarism detected: **0.02%** http://krishipravahika.vitalbiotech.org/form/202… id: **246**

क के रूर म , माता-वरता ं के रूर म ि समी ताा समदाय के वक्रयाकारव सदस्य के रूर

म हम बच्चों के ा ऐसा रयाषिर द तावक ि े ु न के िल कावत के ग्रह कत्ताष बन बव्क कावत के सवक्रय वनमाष कत्ताष के रूर म र्व अरनव सह्रावतता ं ं सवनवश्चत कर सके ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 218 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 अभ्यास रश्न 6. मववडया अनीाने म हव _____की सस्कवत को बढ़ीा दने े म म्य र्वमका वन्रा रहा ह ै ृ ु ू ं 7. मववडया वहसा के रकर ामों को _____रखतव ह ै ं 4.6 द्वद् ों को समाप्त कर िक्तित क्त मष का उत्तरदाक्तयत्वना के रूर म क्तिक्षक की ें ्रूक्तमका कावत वक्ा म वक्क की र्वमका एक वक्क के रूर म न होकर, एक सविधाकताष के रूर म होतव ह ै ू ु ं एक वनयोक्ता के रूर म , वक्क लक्य वनधाषकरत करता ह ै ताा स्रियक्त अवधतम तवतविवधयों का चनिा ु ु करता ह ै एक अवधतम प्रारर्कताष के रूर म िह रूवच उत्रन्न करता ह ै ताा तवतविवधयों से रकरचय ं कराता ह ै िह राठ के वलए उरयक्त ितिार का वनमाष करता ह ै िह सम्र ष अवधतत प्रवक्रया को वदषा ु ू वनदषदेश न, समाषन ताा छटे हए वबन्दओ को सामने लाकर लक्यों की ओर ले ीाने म उत्प्रेरक का काय ष ू ं ु करता ह ै िह समहों अिा विवर्न्न व्यवक्तयों के बवच मध्यस्ाता करता ह ै ीब ि े वकसव समस्या म रस ू ं ीाते ह तवतविवध के अत म वक्क उनके ्ान को चचाष के द्वारा सतवठत करता ह ै अत म िह म्याकन ू ं ं ं ं करता ह ै वक लक्यों को वकस सवमा तक प्रासे वकया तया उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 219 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 एक कावतर ष ता ीातरूक समी के वनमाष का उत्तरदावयति वक्क के ँरर होता ह ै कावत को बल ू ं ं द्वारा स्ाावरत नहव वकया ी सकता, इसे के िल सहयोत एि सामीस्य द्वारा हव प्रासे वकया ी सकता ह ं ं ि्रिडष, 2004) कहने का अाष यह ह ै वक कावत कोई िस्त नहीं ह,ै वीसे बलरिकष हावसल वकया ी सके ु ू ं अतर सच्चे अों म इसे प्रासे करना ह ै तो हम व्यवक्त-व्यवक्त के बवच समेदारव को ओर अवधक विकवसत करना होता इसके अलिा न तो यह िकानतत ल् ह ै बव्क इसको व्यिहार म वसखाया ीाता ह ु ं यवनसेर ने कावत वक्ा को एक ऐसव प्रवक्रया के रूर म रकर्रावषत वकया ह ै ी ्ान, कशकल, ष्वसको , ू ं म्यों ि व्यिहार म रवितषन लाने के वलए आिश्यक तत्िों को प्रोत्सावहत करतव ह ै वीससे बच्चे, वककोर ू ि यिा इस योग्य हो सक वक िह वकसव र्व

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 4 resources! id: **247**

प्रकार के मत्रेदों ि वहसा को रोकने ताा ऐसव रकरवस्ावतयों ु ं को उतरन्न करने म ी कावत स्ारना की ओर ले ी सके , स्म हो सके इस प्रकार की कावत क ं ं उरयोवतता को बच्चों के सदर् ष म कनि कन ऑन वद राइट ऑर चाइ्ड ि1998) म यह कहा तया ह-ै ं बच्चों की वक्ा को इस प्रकार

वनदवदेश कत करना होता वक ि े स्ितर समी म वीम्मदे ारवयक्त ीविन ीवने ु ं के वलए तैयार हो सके , वीसम समेदारव, कावत, सहनकवलता, ल वतक समानत की ओर सर्व के बवच ं वमरता वनवहत हो कावत की सस्कवत की अिश्यकता को दखे ते हए सयक्त राष्टर की सामान्य स्रा म ृ ु ं ं ं दकक 2004-2040 को विश्व के बच्चों के वलए कावत की सस्कवत ि अवहसा के वलए अतराष्टरवय दकक ृ ं ं ं ं ं के रूर म ोवषत वकया तया ह ै न्रद्यालयव न्रतयास कावत स्ावरत करने के प्रयास म हम इसकी करूआत विद्यालयों से करना होता विद्यालयों म कावत का ु ं ं ितिार स्ावरत करना होता बच्चों को कावत स े सबवधत तवतविवधयों से ीा ना होताा इसव सदर्ष ं ं ं ं म ताँुधव ीव ने कहा ाा “यवद हम विश्व म िास्तविक कावत का राठ रढ़ाना ह ै तो इसकी करूआत बच्चों ु ं से करनव होतव “ कावत वक्क के रूर म हमारव र्वमका विद्यालयों म विद्यमान सामावीक ितिार को समेना ताा ू ं रकरितषनकत्ता ष के रूर म मध्यस्ाता करना ह ै हम सर्व स्तरों रर विद्यावाषयों, वक्कों, अवर्ि्राकों ताा स्टीर कमचष ाकरयों ताा अरसरों के मध्य, ीही तक सि्र हो, स्िस््य अवि्रवत्तयों ताा करश्तों के विकास ृ ं को सरल बना सकते ह ै विद्यालयों म अवधकतर विवर्न्न करश्तों म द्वद ताा तनिा हमारव उनके प्रवत वन यष ात्मक अवि्रवत्तयों के ृ ं कार उत्रन्न होता ह ै

इनका वनराकर अवन यष ात्मक सकारात्मक ष्वसको अरनाकर, वक्रयाकवल सनने ु की सप्रेक ्मता का विकास करके ताा तद्भर्वत का विकास करके स्ि य ताा रिाषग्रहों से ी व ू ू ु ं ं ु नाकारात्मक ँ ीाष को समासे करके वकया ी सकता ह ै न्नद्यालयों ें सभान्नि हस्ि क्षेप ां कावतर ष उन्मखवकर को प्रोत्सावहत करने म ी अवि्वत्तयों ताा म्यों का विकास करता ह,ै विद्यालय ृ ू ु ू ं एक महत्ि ष र्वमका वन ाता ह यह ि ह स्ान ह ै ी "कावत के वलए सिषनस्ान" होना चवहए, ीही ू ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 220 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 उत्साह, लतन ताा इच्छारिषक कायष करने की सस्कवत का प्रवतवनवधत्ि हो ना वक र्य, द्वद ताा वहसा ृ ू ं ं ं उत्रन्न करने का रकरिके हो न्नद्यालयव तन्ि न्नन्धयाँ ि ा रश्ोक्टस विद्यालयव ीविन म रकरितषन लाने के वलए हम बहत ब्रा े प्रोीक्े ट प्रारर् करने की आिश्यकता नहीं ह ै आर ं न हव बहत रड चावहए विद्यालयों म होन िलव प्रवतवदन की तवतविवधयों रि ष कावत रकरप्रेक्य दके र र्व ू ं ं रकरितषन की प्रवक्रया को बढ़ाया ी सकता ह उदाहर ाष, प्रातःकाल की प्राषना स ा बहत हव यावरक ं तरवके से प्रारर् होतव ह;ै इसे कावत ताा सतलन के विषयानसार वनयोवीत वकया ी सकता ह ै वीसम ु ु ं ं ं नातकरकता, उत्तरदावयत्ि की ि ाना, रिाषग्रह ताा द्वद का वनिार , न्याय के अततत्तष सवम्मलत मद्द े ताा ू ु ं ं लोकतर के म्य आवद सवम्मवलत हो ू ं विद्यावाषयों को ि ाद-ि ाद प्रवतयोवतता, सेवमनार, नाचना, नाटक ताा अन्य प्रदकवष नयों, ताना ताा कविताओ को वलखने आवद म कावत सबधव मद्दों को सवम्मवलत करने के वलए प्रोत्सावहत वकया ी ु ं ं ं ं ं सकता ह ै महत्ि ष वदनों ीसै े - त तर वदिस, स्ितरता वदिस, त्योहार ताा अन्य अन्तराषष्टरवय वदिस ीसै े ू ं ं मानिावधकार वदिस, बाल वदिस, अन्तराषष्टरवय सु वदिस, विकलातों के वलए, रयाषिर वदिस आवद ं ं विद्यालयों म मनाये ी सकते ह वीसके अन्ततत्तष कावत के सदके को प्रमख रूर से वदखाया ी सके ु ं ं कायषक्रम, प्रोीक्े टस ताा उन तवतविवधयों को प्रोत्सावहत करना चावहए ी मवहलाओ, रयाषिर , अरत ं ं ताा वनधषन आवद लोतों के प्रवत सम्मान को बढ़ातव हो रस्तकालयों म कावत वक्ा से सबवधत रस्तकों ताा अन्य सामग्रव को व्यिवस्ात करके एक अलत ु ु ं ं ं ं सेक्कन बनाया ी सकता ह कावत वनमाष म बच्चों को सवम्मवलत करना ं समान आय ि ाले बच्चों के समह बनाये ी सकते ह ै ी द्वद ताा अकावत से ी ं े अन्य तत्ि ों की सचना ु ू ु ू ं ं एकर करे इस र नववत के अन्ततत्तष बच्चों को कावत वनमाष का प्रवतवनवध बनाना सवम्मवलत ह ै तावक उन्ह ं खला के वलए तैयार वकया ी सके ी कावत वक्क द्वारा वकए तए प्रयासों को रकरितषनकत्ताष की लम्बव ृि ं ं लात करने म सहायता कर सके ू घर ि ा न्नद्यालयव अिरापष्ठवय ृ ां व्यवक्त को प्र ाावित करने ि ाले अन्य प्रि ों म , ु र ताा रकरिार सबसे अवधक कवक्तकालव ह ु र ताा

Plagiarism detected: **0.02%** https://no2jaipurcantt.kvs.ac.in/ id: **248**

विद्यालय रर सर्व कवै ्क प्रयत्नों म माता-वरता को सवम्मवलत होना ि ाछनवय ह ै ु र ताा विद्यालय

दोनों ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 221 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 हव ि ाछनवय रकरितषनों को प्रारर् करने ताा बनाये रखने म आिश्यक ह ै यह सत्य ह ै वक माता-वरता ताा ं ं रकरिार को विद्यालय द्वारा वकए तए प्रयासों के वलए ररक की तरह कायष करना चावहए ू एक कावत वक्क के रूर म बालकों की सिवि म हस्ते र करने के वलए रकरिार के प्रि ा को ीनना ृ ं ं अिश्यक ह ै हालावक अवधकतर वक्क माता-वरता की ँ ु ँ चव अरा ाओ ताा व्यिसाय सबधव वचताओ ं ं ं ं ं ं से अितत रहते ह इसके विररवत कछ रकरिार ऐसा होते ह ै ी अरनव ीवविका कमाने के दबिा म बच्चों ु के अध्ययन ताा स्ि ास््य को कोई महत्ि नहीं दते े ह अतः इन वस्ावतयों म कम से कम एक कावत ं वक्क ीातरूकता कायषक्रम की व्यिस्ाा कर सकते ह सें दायिाय ी सहभान्तिा ु माता-वरता का स्ानवय समदाय विद्यालय म क्या कायषक्रमों को तवतकवल बनाने म योतदान द े सकता ु ह ै हम अरने प्रयासों से अरने चारो ओर उरल्ध ससाधनों की रहचान कर विवर्न्न व्यिसाय के ं विकेष्ों ीसै े-डीक्टर, मनी ाविनक, ईीवनयर आवद को माता-वरता, बच्चों ताा वक्को से स्ि ास््य, ं सम्प्रेष , सबधों के वनमाष , मातत्ि -वरतत्ि ताा व्यिसाय-उन्मखवकर मद्दों रर बोलने के वलए ृ ृ ु ु ं ं आमवरत कर सकते ह ै ं ें वन्डया मववडया के अन्ततत्तष वप्रट, ऑवडयो ताा ि ाववडयो स्रोतों को ी हम सचना उरल्ध कराते ह,ै सवम्मवलत ू ं वकया ीाता ह ै मववडया हमारव ीविन-कलै व का आन्तकरक ताा अविलतवय र् हो तया ह ै यह कहा ीाता ह ै वक ारत म ग्रामव बच्चों की रहच स्ि च्छ रेयील की तलना म टेलवविीन तक अवधक ह ै ु ि ातषमान समय म व्यवक्तयों रर, विकेषकर बढ़ते हए बच्चों ताा यिाओ तक मववडया एक प्रि ाव ससाधन ु ं ं ह ै उदाहर ाष, अर ाषा का प्रयोत समयानसार रकरिवतषत हो रहा ह ै रहले लोत एक दसरे से वमलने रर ु ू सर ेका कर नमस्कार कहते ो, वीसे अब समकालवन ने प्रवतस्ावरत कर वदया हालावक यह सत्य ह ै वक ं ु वककोर ताा नियिक हव मववडया से अवधक प्र ाावित ह,ै ररन्त यहव समय अवस्तत्ि वनमाष का होता ह ु ु एक वक्क के रूर म मववडया के प्रि ा को आलोचनात्मक रूर से सोचन े के वलए विद्यावाषयों को प्रेकरत करना चावहए हम उनकी सोच रर श्र ने ि ाले प्रि ों को खोीने म उनकी सहायता करनव होतव एक वक्

Plagiarism detected: **0.03%** https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/8… + 7 resources! id: **249**

क के रूर म कमाषन के स्ान रर वनवश्चत समाचारों या रेवडयो या टव0 ि व0 कायषक्रमों या वन्म रर चचाष के वलए अिसरों का वनमाष करना चावहए एक कावत वक्क के रूर

म कावत वक्ा को ि ढ़ाा दने े के वलए विद्यावाषयों को उरदके दने े के स्ान रर ं ं सचनाओ को प्रासे करने के वलए ताा ि ातषमान अवि्वत्तयों, तवतविवधयों ताा प्रयासों के अन्य रकरप्रक्े य ृ ू ं दने े के वलए व्यिहार म रकरितषन लाना चावहए विद्यावाषयों से सदै प्रश्न रछने चावहए वक क्या सहव ताा ू क्या तलत ह ै रर कम वहसा ताा तनिार ष सिों के वलए प्रेकरत करना चावहए ू ु ं एक कावत वक्क के रूर म हम प्रयास ीारव रखना होता हो सकता ह ै वक ये छोटव-छोटव बुँद हो रर्न्त य े ू ु ं हमके ा छोटव नहीं रहत व ताा समय ए धैयष के साा धवरे-धवरे ब्रा व हो ीाएतव ीसै ा वक मदर टेरेसा ं ं उत्तराखण्ड मक्त

विश्वविद्यालय 222 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 ि4175) ने कहा ह ै “हम स्ि य म अनि् करते ह वक हम ी कर रह े ह,ै ि ह सातर म एक बुँद के समान ह,ै ु ू ं ररन्त सातर की महत्ता उस बद की अि्रा म कम हो ीएतव “ अतः इन छोटे-छाटे प्रयासों की र्व अरनव ु ू हव महत्ता ह ै अभ्यास रश्न 8. कन्ि क न ऑन द राइट ऑर चाइ्ड वकस ि ष ष राकरत हआ? 9. सयक्त राष्टर स्रा म दकक 2004-2040 को वकस अतराषष्टरवय दकक के रूर म ुोवषत वकया ु ं ं तया ह?ै 4.7 सारि् इस इकाई के अध्ययन के बाद आर ीान चके ह वक बा्यिास्ाा म बालक को विवर्न्न प्रकार के द्वदों ु ं का सामना करना ऱ ता ह ै बा्यिास्ाा ीविन की ि ह अिस्ाा है वीसम नन्हीं कलव प्रस्रवटत होकर ु रष्टतर बनने को तैयार हो तव ह ै ीविन का यह काल अनोखा काल ह ै वीसम बालक वक्रयाकवल रहता ह,ै ु समह म काम करता ह ै रर ि्आिाके व र्व हौा ह ै ताा साा हव ियस्क ीविन के वलए तैयार र्व हते ा ह ू इस अिस्ाा म बालक को ुर ताा रकरिार, विद्यालय, समी एि समदाय म विवर्न्न द्वदों का सामना ु ं ं करना ऱ ता ह ै ी आत े चलकर उसके र्विष्टय का वनमाष करता ह ै इन इकाइयों म सामान्य ि्रातिार न वमलने के कार बालक विस्ाावरत, वहसात्मक, आक्रामक ताा सामावीक अकावत को उत्रन्न करने का ं ं कार बन ीाता ह ै अतः एक वक्क के रूर म हम न के ि्रल विद्यालयव ि्रातिार बव्क ुर ताा विद्यालय, समी एि समदाय के सहयोत से एक ऐसा महशल बालक को प्रदान करना होता ी उसके द्वदों ु ं ं को समासे कर उसे न के ि्रल कावत ग्रह कत्ताष बव्क कावत वनमाष कत्ताष के रूर म तैयार कर सके इस ं ं इकाई के अध्ययन से आर कावत वनमाष कत्ताष ि्राव अध्यारकों के रूर म अरनव सह्रावतता सवनश्चत कर ु ं सक त े 4.8 ि्बदावनाली 1. सज्ञा ात्ें े ेशलि- स्ानात्मक ककलता से तात्रयष अवधतम ककलताओ से ह ै ीसै े - ु ु ु ां ं ं अिधान, स्मर ताा वचतन ं 2. अन्भनन्ि- व्यवक्त के वकसव ि्स्त, व्यवक्त, क्रया एि विचार आवद के प्रवत मनोि्रा को ृ ु ं अवि्रवत्त कहते ह ृ 3. ें ल्य-व्यिहार के मानक अि्रा वसित ी व्यवक्त को यह वन यष लेने म सहायता करे वक ू ं ीविन म क्या महत्ि्र ष ह ै ताा क्या उवचत अि्रा अनवचत ह ै ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 223 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 4.9 तभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. बा्यिास्ाा, ककै ि्रास्ाा के बाद की अिस्ाा ह ै ी 6 से 42 ि ष ष तक होतव ह ै इसम बालक वक्रयाकवल रहता ह,ै समह म काम करता ह ै रर ि्रााके व र्व होता ह,ै ररन्त व्यस्क ीविन म ु ु प्रिके के वलए सरल प्रयास करता ह ै 2. हावलतिाष नामक मनी्ै ावनक ने बा्यिास्ाा को ‘MORON HURDLE’ की अिस्ाा ं कहा ह ै 3. द्वद का सामान्य अ ाष ह- विररवत विचारों, इच्छाओ, उद्दश्े यों आवद का विरोध यह एक ऐसव ं ं कसदायक सिदे ात्मक दका ह ै वीसम व्यवक्त को ऐसव रकरवस्ावतयों का सामना करना ऱ ता ह ै ी ं उसके स्ि य के वहतों रर इच्छाओ के विरू्ि कायष करतव ह ै ं ं 4. व्यवक्त अध्ययन एक ऐसव विवध ह ै वीसम वकसव सामावीक इकाई के ीविन की ुटनाओ का ं अन्ि ष ए िि विश्लेष वकया ीाता ह ै ं 5. वन्लों ताा वब्लव के बच्चों को रत्ार मारना, रलों की कवलय्ुँ तो़ना, उतवलयों के बवच ु ं वततवलय्ुँ रक़ा कर रखना, बच्चे द्वारा कछ मातने रर रर अवर््िाकों द्वारा न द े राने रर उनको ु ं मारना आवद 6. मववडया अनीाने म हव वहसा की सस्कवत को बढ़ाा दने े म म्य र्वमका वन्रा रहव ह ै ृ ु ू ं ं 7. मववडया वहसा के रकर ामों को वछराकर रखतव ह ै ं ं 8. 1998 9. सयक्त राष्टर की सामान्य स्रा म दकक 2004-2010 को विश्व के बच्चों के वलए कावत की ु ं ं सस्कवत ि अवहसा के वलए अन्तराषष्टरवय दकक के रूर म ुोवषत वकया तया ह ै ृ ं ं 4.10 स्दर् य ग्र थ सची ू 1. तावडषया, ए0 ताा राठक, रव0 ि2040). “ कावत वक्ा एि विद्यालयों म कावत सस्कवत की ृ ं ं ं ं अिधार ा“ , ारतवय आधवनक वक्ा, राष्टरवय कवै ्क अनसधान एि प्रवक् रकरषद, नई ु ु ं ं वद्लव 2. एन0 सव0 ई0 आर0 टव0 2006, नेकनल करवककलम फ्रे मिकष 2005. रोवीकन रेरर नेकनल ु रोकस ग्रर ऑर ऐकेकन रीर रवस, नई वद्लव ु ु 3. राठक, रव0 डव0 ि2008). ारतवय वक्ा रर उसकी समस्याएैच, अग्रिाल रव्लके कन्स, आतरा 4. राष्टरवय कवै ्क अनसधान एि प्रवक् रकरषद. कावत के वलए वक्ा. नई वद्लव: राष्टरवय ु ं ं ं कवै ्क अनसधान एि प्रवक् रकरषद , 2002 ु ं ं 5. िवकष्ठ, के 0 सव0 ि2046). कावत वक्ा एि सतत विकास. ि्व विनोद रस्तक मवदर, आतरा ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 224 ु शान्ति न्शक्षा CPS 21 6. यनेस्किो2004), लवनीत द ि े ट रवस- ए टवचसष ताइड ट ऐकेकन रीर रवस, नई वद्लव: यनेस्को ू ू ू ु ू 7. यनाइटेड नेकन ीनरल एसेम्बलव, 4998, वद कन्ि के न वद राइटस ऑर वद चाइ्ड ू 4.10 क्त बधात्मक प्रश्न ् 1. बा्यिास्ाा ताा द्वद की सक्रना को समेाते हए बा्यिास्ाा म द्वद के स्त्रोतों को ि नष ं ं ं कीवीए 2. द्वदों को समासे कर कावत वनमाष कत्ताष के रूर म वक्क की र्वमका की ि्विचे ना कीवीए ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 225 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC